हिन्दी सूफी काव्य मे पौराणिक आख्यान

कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ के तत्वावधान में आगरा
विश्वविद्यालय की पी एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध
'मध्ययुगीन हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्य में पौराणिक आख्यान
का मुख्यांश

हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आख्यान

डॉ॰ उमापतिराय चन्देल

अभिनव प्रकाशन

हिन्दी-विभाग पत्राचार पाठ्यक्रम एवं अनुवर्ती शिक्षा विद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

प्रकाशक
अभिनव प्रकाशन
२१-ए, दरियागंज दिल्ली ६

•

प्रथम संस्करण १९७६

•

मुद्रक
सतीश कम्पोजिंग एजेंसी द्वारा
नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस
शाहदरा दिल्ली ३२

मूल्य
पचपन रुपये
५५.००

HINDI SUFI KAVYA MEN PAURANIK AKHYAN
By
Dr UMAPATI RAI CHANDEL
First Ed 1976 Price Rs 55 00
Published by R S CHAUHAN

जीवन - संगिनी

उषा

को

प्राक्कथन

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में सूफी काव्य धारा का एक विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान है। सूफी कवियों ने हिन्दू जनता में बहुप्रचलित लोककथाओं और पौराणिक आख्यानों को लेकर लोकभाषा में सरस काव्यों की रचना की। उनकी एक विशेष परम्परा ही हिन्दी साहित्य में स्थापित हो गयी। यद्यपि उनके प्रेमाख्यान भारत में दीर्घकाल से चली आ रही प्रेमाख्यान-परम्परा की ही एक कड़ी के रूप में विकसित हुए तथापि उनके कथ्य और शैली में निजी वैशिष्ट्य था। सूफी सन्तों और सूफी कवियों के दृष्टिकोण की यह विशेषता रही कि उन्होंने स्थानीय तत्त्वों की अवहेलना नहीं की। यह सत्य है कि उन्होंने अपने साम्प्रदायिक जीवन-दर्शन के प्रचार और प्रसार को दृष्टि में रखकर इन प्रेमगाथाओं की रचना की किन्तु भारतीय लोकजीवन के सांस्कृतिक तत्त्वों को अपनाने के कारण उन्होंने देश की सांस्कृतिक और भावात्मक एकता के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया। वे भारतीय जीवन की सांस्कृतिक अन्तर्धारा से कितने घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध थे इसका एक ज्वलन्त प्रमाण है उनके द्वारा अपने काव्यों में हिन्दू पौराणिक आख्यानों का प्रयोग।

अब तक हिंदी शोध और आलोचना के क्षेत्र में अनेक विद्वानों द्वारा सूफी कवियों की साहित्यिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक उपलब्धियों तथा देन का मूल्यांकन और विवेचन प्रस्तुत किया जा चुका है।

इनमें से कुछ समीक्षकों ने अपने इतिहास ग्रन्थों में सूफी कवियों के कृतित्व और व्यक्तित्व पर आलोचनात्मक तथा परिचयात्मक प्रकाश डाला है। ऐसे समीक्षकों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल[1] डा० रामकुमार वर्मा[2] और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी[3] के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल[4] डॉ० वासुदेव-

---

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास

२ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

३ (क) हिन्दी साहित्य की भूमिका

(ख) हिन्दी साहित्य उसका उद्भव और विकास

४ जायसी ग्रन्थावली

शरण अग्रवाल[1], डॉ० माताप्रसाद गुप्त[2] और डॉ० मुन्शीराम शर्मा[3] आदि ने कतिपय सूफी कवियों के ग्रंथों का पाठालोचन, सम्पादन एवं व्याख्या की है तथा अपनी भूमिकाओं में यतगत सूफी प्रेमाख्यानों के साहित्यिक और दार्शनिक पक्षों का तलस्पर्शी विवेचन किया है। आचार्य चन्द्रबली पांडेय[4] डॉ० रामपूजन तिवारी[5] डॉ० विमलकुमार जैन[6] आदि ने सूफी दर्शन तत्त्व का सम्यक उद्घाटन किया है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी[7] डॉ० कमल कुलश्रेष्ठ[8], डॉ० जयदेव[9], डॉ० सरला शुक्ल[10] डॉ० श्याम मनोहर पाण्डेय[11] आदि के आलोचनात्मक एवं शोधात्मक प्रबन्धों में प्रेमाख्यानों की साहित्यिक और दार्शनिक प्रवृत्तियों का मूल्यांकन हुआ है। डॉ० लक्ष्मीधर[12] ने सोलहवीं शताब्दी की अवधी के सन्दर्भ में पदमावत की भाषा का भाषातात्त्विक अध्ययन किया है। डा० निरंजनलाल शर्मा ने सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में नायिका की परिकल्पना पर विचार किया है।[13]

डा० सत्येन्द्र[14] ने मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य के लोकतात्त्विक स्वरूप पर विचार करते हुए कतिपय सूफी प्रेमाख्यानों के अभिप्रायों, कथाचक्रों और लोकपक्ष से सम्बद्ध उनकी अन्य प्रवृत्तियों की सम्यक विवेचना की है। कुछ अन्य विद्वानों ने भी सूफी कवियों पर समीक्षात्मक ग्रन्थ और स्फुट निबन्ध लिखे हैं जिनका उल्लेख प्रस्तुत प्रबन्ध में यथास्थान कर दिया गया है।

किन्तु इस समस्त अध्ययन विवेचन और समीक्षण में हिन्दी सूफी कवियों द्वारा पौराणिक आख्यानों के विविध प्रयोगों के स्वरूप का अनुशीलन अछूता ही रहा।

'जायसी-ग्रन्थावली' की भूमिका में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस बात की ओर संकेत किया था कि जायसी ने भारतीय पौराणिक आख्यानों एवं प्रसंगों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है। जायसी ने राम तथा रावण के प्रकरणों का स्थान स्थान

---

१ पदमावत मूल और संजीवनी व्याख्या
२ जायसी ग्रन्थावली, मधुमालती, लोरकहा, चाँदायन
३ पदमावत की टीका
४ तसव्वुफ अथवा सूफीमत, अनुराग-बाँसुरी, भूमिका
५ सूफीमत साधना और साहित्य, सूफी काव्य की भूमिका, जायसी
६ सूफीमत और हिन्दी साहित्य
७ सूफी काव्य संग्रह, भूमिका, भारतीय प्रेमाख्यानों की परम्परा, मध्यकालीन प्रेम साधना, हिन्दी काव्य धारा में प्रेम प्रवाह, हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यान
८ हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य
९ सूफी महाकवि जायसी
१० जायसी के परवर्ती सूफी कवि और काव्य
११ मध्ययुगीन प्रेमाख्यान, सूफी काव्य विमर्श
१२ पदमावती, दि लिंग्विस्टिक स्टडी आव् दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी हिंदी (अवधी)
१३ हिन्दी सूफी महाकाव्यों में नायिका की परिकल्पना (शोधप्रबन्ध अप्रकाशित)
१४ मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्त्विक अध्ययन

पर उपयोग किया है परन्तु उन्होंने कहीं कहीं इनका उपयोग ठीक उसी अर्थ और भावना से नहीं किया जो सामान्यतः हिन्दी रामकथा में मिलती है। इसने यह प्रश्न प्रस्तुत किया कि आखिर जायसी ने पौराणिक आख्यानों को कितना और किस रूप में ग्रहण किया है और वह क्या केवल जायसी का निजी प्रयत्न रहा है या सूफी प्रेमाख्यानों में इसकी कोई परम्परा भी रही है। इसी जिज्ञासा ने मुझे इस शोध में प्रवृत्त किया। आगरा विश्वविद्यालय के 'कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ' आगरा के तत्त्वावधान में मध्ययुगीन हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आख्यान विषय पर किये शोध-कार्य पर मुझे १९६६ में पी एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई।

मध्ययुगीन हिन्दी सूफी कवियों की रचनाओं का अध्ययन करने पर मुझे पता चला कि इन कवियों ने अपनी भावात्मक अभिव्यंजना और अपने दार्शनिक तत्त्व-निरूपण के निमित्त हिन्दी पौराणिक आख्यानों का प्रतीक, अलंकार, दृष्टान्त, उल्लेख एवं कथानक-रूढ़ियों के रूप में प्रचुर प्रयोग किया है।

इस प्रकार का यह अध्ययन सूफी काव्य धारा के अध्ययन के क्षेत्र में तो अपने ढंग का प्रथम प्रयास है ही, जहाँ तक मुझे ज्ञात है अन्य काव्य धाराओं को लेकर भी इस प्रकार का विवेचन अभी तक नहीं हुआ है। प्रस्तुत प्रबन्ध में १४ वीं से १८ वीं शती तक की सूफी काव्य धारा के १२ कवियों के ३५ काव्यों को आधार बनाकर पौराणिक आख्यानों के विविध प्रयोगों का अध्ययन किया गया है। आशा है मेरा यह प्रबन्ध, हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों के अध्ययन की दिशा में एक मौलिक और विनम्र प्रयास समझा जाएगा।

इसमें सूफी कवियों द्वारा रचित ऐसे प्रेमाख्यानक काव्यों को तो लिया ही गया है जिनमें सूफी दर्शन-तत्त्व का निरूपण मिलता है, परन्तु उनके द्वारा लिखित कुछ ऐसे काव्यों को भी इसमें समाविष्ट कर लिया गया है जो मात्र शुद्ध प्रेमाख्यान हैं। जायसी रचित चित्ररेखा और जान कवि द्वारा रचित कई प्रेमाख्यान इसी श्रेणी में आते हैं। इस प्रकार मेरा यह प्रयास हिन्दी के सूफी कवियों के काव्यों का एक विशिष्ट दृष्टिकोण से किया हुआ पूर्ण अध्ययन बन गया है। मैंने अपने को उत्तरी भारत के सूफी कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यानों तक ही सीमित रखा है तथा दक्खिनी हिन्दी के प्रेमाख्यानों को नहीं लिया है। अभारतीय परम्परा से विशेष प्रभावित होने के कारण दक्खिनी हिन्दी के सूफी कवि भारतीय पौराणिक आख्यानों के प्रयोग की ओर से उदासीन भी रहे हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इस कथन को कि इस परम्परा में मुसलमान कवि ही हुए हैं स्वीकार नहीं किया जा सकता। सूरदास लखनवी हिन्दू थे किन्तु उनका प्रेमाख्यान नलदमन सूफी काव्य परम्परा में परिगणित होने योग्य है। जान को कई विद्वान सूफी कवि नहीं मानते, परन्तु उनके कुछ काव्यों के आधार पर मैंने उन्हें सूफी माना है। इसी तरह शेख आलम के ग्रन्थ माधवानल कामकंदला

को कई लोग शुद्ध प्रेमाख्यान मानते हैं किन्तु उसके प्रेम निरूपण के स्वरूप को देखकर मैंने उसे सूफी काव्य माना है। अत मैंने शेख आलम जान कवि और सूरदास लखनवी की रचनाओ को अपने इस अध्ययन का अग बनाया है।

अपने शोध काय के निर्देशक डा० सत्येन्द्र के सुझाव पर मैंने मध्ययुगीन (१४वी से १८वी शती ईस्वी) हिन्दी सूफी कवियो के प्रेमाख्यानक काव्यो म आगत पौराणिक आख्यानो के प्रयोग के स्वरूप पर विचार करने के साथ-साथ उनके क्रमिक विकास का सधान भी किया, जो अपने आपम एक बडा काम रहा। इससे शोध प्रबन्ध का कलेवर बढ गया। प्रबध के प्रकाशन मे माग म उसका स्थूल कलेवर बाधक बनता रहा। अतत मुझे पौराणिक आख्यानो के विकास इतिहास सम्बन्धी अश को कुछ परिवतन-परिवद्धन के साथ एक स्वतत्र ग्रथ के रूप म प्रकाशित कराने का निणय करना पडा। वह ग्रन्थ पौराणिक आख्यानों का विकासात्मक अध्ययन शीषक से कोणाक प्रकाशन, ६१ एफ कमलानगर दिल्ली ७ द्वारा १९७५ ई० म प्रकाशित किया जा चुका है। शोध प्रबन्ध का मुख्य म दिलष्ट अश हिन्दी सूफी काव्य मे पौराणिक आख्यान शीषक से आपके हाथ म है।

इस अध्ययन का सारा श्रेय गुरुवर डॉ० सत्येन्द्र को है जिनकी प्रेरणा और माग दशन के बिना यह काय सम्भव न हो पाता। उनकी सतत प्राप्त अनुकम्पा और स्नेह के प्रति आभार प्रकट करने म मेरी वाणी अशक्त है। कन्हैयालाल मुशी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ आगरा के तत्कालीन निदेशक स्वर्गीय डा० माता-प्रसाद गुप्त से भी मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा था। विद्यापीठ के पाण्डुलिपि विभाग के अध्यक्ष श्री उदयशकर शास्त्री ने अपने निजी पुस्तकालय से कइ हस्तलिखित ग्र थ तथा अन्य सामग्री प्रदानकर और मेरी कई जिज्ञासाओ का समाधान कर मेरी बहुत सहायता की है। बन्धुवर डा० कलाशचन्द्र भाटिया तथा अनुज-तुल्य डा० श्याममनोहर पाडेय के परामर्शो से भी मैं लाभान्वित हुआ हूँ। इन सभी विद्वानो के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। प्रबन्ध लखन म प्राप्त अनवरत सहायता के लिए मैं अपने पूज्य पितव्य स्वर्गीय गौरीशकर सिंह चन्देल श्री राम-लक्ष्मण गुप्त डॉ० श्रीकृष्ण वार्ष्णेय और आयुष्मान अवधेश कुमार का भी आभारी हूँ। जिन विद्वानो की कृतियो और जिन सस्थाओ (विशेषत हिन्दुस्तानी एकडमी इलाहाबाद और नागरी प्रचारिणी सभा काशी) के ग्रथागारो स मैंने लाभ उठाया है उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

बुद्ध जयन्ती
२०३३ वि०

—उमापति राय चन्देल
हिन्दी विभाग
पत्राचार पाठ्यक्रम एव अनुवर्त्ती शिक्षा विद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली ११०००७

अनुक्रम

पृष्ठ

पृष्ठ

जाना अरना सवम्व दान कर दना विष्णु द्वारा बलि का छला जाना—बलि द्वारा समुद्र मथन करना—भगीरथ द्वारा गगा को पृथ्वी पर लाकर अपन पितरा को तारना—बालि द्वारा परस्त्री हरण और उसक दुष्परिणाम—भीम द्वारा कीचक-वध—भीम का कुम्भकरण की खापडी म डूबना—भीम का अधिक भाजन करना—भीम द्वारा दुशासन की भुजा उखाडना—भीम द्वारा दुर्योधन का वध—महाभारत-युद्ध कौरवों और पाण्डवो क मध्य, पाण्डवो की कौरवो पर विजय—राक्षसो की दिशा दक्षिण म हाना—सीता का जनक द्वारा पालित हाना—सीता-स्वयवर म राम द्वारा शिव धनुष को ताडना—राम और सीता का आदश दाम्पत्य प्रम सीता का सतीत्व—राम का राज्याभिषेक—राम बिना अयोध्या सूनी (राम वन-गमन)—दशरथ का सुत वियाग म प्राण दना—राम का सीता क हठ क कारण वन म ल जाना—वन म सीता द्वारा जोगी-वशधारी रावण को भिक्षा दना—रावण द्वारा सीता का हरण, राम सीता क वियाग म आकुल—सीता से वियोग हो जान पर राम का विलाप करना—सीता द्वारा अशोक वक्ष क नीचे बठी रहकर राम का विरह दु ख सहना—सीता को पास रखत हुए भी रावण द्वारा उनका भोग न कर पाना—सुग्रीव का बालि को बाँधना बालि द्वारा परस्त्रीहरण, इसस उसका नाश—हनुमान का राम के आदेश पर सीता का पता लगान के लिए लका जाना सीता की सुध लाकर राम को दना हनुमान की सहायता स राम-सीता का पुनर्मिलन सम्भव हाना—विभीषण का लका को छोडकर राम की शरण म आना—राम द्वारा नल और नील की सहायता स समुद्र पर सतु बाँधा जाना—अगद का रावण की सभा म पाँव रापना—लक्ष्मण का शक्ति-बाण लगना हनुमान द्वारा सजीवनी बूटी लाकर उनके प्राण बचाना—राम रावण का युद्ध, राम द्वारा लका का विनाश करना सीता को रावणके बधन स छुडा कर लाना, वनवास स लौटकर राम का कौसल्या स मिलना—राम और परी की कथा—राहु के शरीर क दो टूक करना—विष्णु का मत्स्यावतार शखासुर का लील जाना और वेदो का उद्धार करना—शकुन्तला का दुष्यन्त से वियोग और पुन सयोग—श्रवणकुमार की मात पित भक्ति दशरथ द्वारा अनजान म श्रवणकुमार की हत्या—अधतापस का शाप—शिव के ललाट

पृष्ठ

१ प्रेमाख्यानक काव्य-परम्परा

हिन्दी को आख्यान-काव्यों का दाय वदिक साहित्य 'रामायण', 'महाभारत', पुराणो संस्कृत के कथा-काव्यों, प्राकृत और अपभ्रंश के जनचरित-काव्यों, जैन पुराणो बौद्ध जातक कथाओं तथा अवदानों आदि से प्राप्त हुआ। लोक परम्परा से प्राप्त दाय भी नगण्य नहीं है। इस विपुल आख्यानक साहित्य म प्रेमाख्यानों की संख्या बहुत अधिक है। हिन्दी के इस दाय पर एक विहंगम दृष्टि डाल लेना अनुचित न होगा।

प्राचीन साहित्य में प्रेमाख्यान

वदिक साहित्य म ही कई प्रेमाख्यान जसे पुरूरवस और उवशी[1], यम यमी[2] तथा श्यावाश्व और रथवीति[3] की कन्या के प्रेमाख्यान बीजरूप म वर्णित हैं। इनमे से पुरूरवस और उवशी का प्रेमाख्यान पौराणिक साहित्य तथा उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य म बहुत लोकप्रिय हुआ। कालिदास के विक्रमोवशीयम् और 'कथा-सरित्सागर म आगत इस आख्यान की विच्छिन्न कड़ी को आधुनिक युग म हिन्दी के कवि दिनकर ने अपने 'उवशी' काव्य द्वारा फिर से जोड दिया है। महाभारत के नलोपाख्यान[4] म वर्णित नल दमयन्ती की दाम्पत्य प्रेम कथा भी परवर्ती साहित्य म कवियों तथा नाटककारों के लिए प्रिय विषय बनी। महाभारत का ही एक दूसरा उपाख्यान—'शकुन्तलोपाख्यान जिसम दुष्यन्त शकुन्तला की प्रेम-कथा वर्णित है संस्कृत और इतर भारतीय साहित्य म अनेक काव्यों की वस्तु बना। कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' को देश और विदेश म जो प्रसिद्धि हुई उससे इस प्रेमाख्यान पर आधुनिक युग म भी रचनाए हुइ। पौराणिक स्रोत के प्रेमाख्यानों म उषा-अनिरुद्ध, रुक्मिणी-कृष्ण, प्रद्युम्न मायावती, अजुन सुभद्रा आदि के प्रेमाख्यान भी भारतीय साहित्य म बहुत लोकप्रिय हुए।

---

१ ऋग्वेद १०।९५, शतपथ ब्राह्मण ११।५।१।१६
२ ऋग्वेद १।१०
३ वही ५।५२ ६१
४ महाभारत वन पव अ० ५२ ७९

बौद्ध जातकों, जैन धर्म कथाओं, गुणाढ्य की बृहत्कथा के उत्तराधिकारी ग्रन्थ बृहत्कथा मंजरी और कथासरित्सागर में भी बहुत से प्रेम कथानक मिलते हैं जिनका मूल रूप तत्कालीन लोक साहित्य में रहा होगा। जातकों में प्रेमाख्यानों में कट्टहारि जातक[1] की राजा ब्रह्मदत्त और उसकी लकड़हारिन प्रेमिका की कथा एक धम्म गाथा में आगत सुभा की कथा जिसमें सुभा भिक्खुणी अपने ऊपर आसक्त युवक को अपना सुन्दर आँखें निकाल कर दे देती है[1] सुन्दर प्रेमाख्यान हैं। जैन धर्म-कथाओं में सबसे प्राचीन तरंगवती की कथा है जिसके आधार पर प्राकृत में पादलिप्त सूरि ने तरंगवई कहा लिखी जिसका रचना-काल पाँचवीं शती है और जो प्राकृत का सर्व प्रथम प्रेमाख्यान काव्य माना जाता है। प्राकृत में ही कोउहल लिखित लीलावई कहा एक अन्य प्रसिद्ध प्रेमाख्यानक काव्य है जो आठवीं शती की रचना है। इनके अतिरिक्त भी प्राकृत में कुछ प्रेमाख्यान काव्य मिलते हैं जिनमें मलय सुन्दरी कथा, सुर सुन्दरी चरिउ, सिरिसिरिवाल कहा तथा रयण सेहर कहा प्रमुख हैं।

प्राकृत के प्रेमाख्यानों में संस्कृत के प्रेमाख्यानों की तुलना में एक विशेष बात यह दिखाई देती है कि इनके नायक राजकुमार ही नहीं होते अपितु सामान्य जन भी होते हैं। अधिकतर ये वणिक वर्ग के होते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि जैन कवियों द्वारा लिखित होने के कारण इनका उद्देश्य साम्प्रदायिक हो गया है। ये प्रचारात्मक प्रेमाख्यान जैन धर्म की महत्ता सिद्ध करने के उद्देश्य से लिखे गए हैं।

अपभ्रंश में भी जैन धर्म द्वारा प्रभावित कई प्रेमाख्यानक काव्य लिखे गए। धनपाल विरचित भविसयत्तकहा (भविष्यदत्तकथा) पुष्पदन्त कृत णायकुमार चरिउ (नागकुमार चरित)[2] नयनन्दी कृत सुदंसण चरिउ (सुदर्शन चरित)[3] करकंडु चरिउ[4] धाहिल कृत पउम सिरी चरिउ (पद्मश्री चरित) आदि अपभ्रंश के इसी श्रेणी के प्रमुख प्रेमाख्यान हैं। इन जैन चरित-काव्यों की मुख्य विशेषता नायक नायिका द्वारा अन्त में सांसारिक भोग से विरक्त होकर जैन धर्म में दीक्षित हो जाना है। इसलिए इनको उस अर्थ में प्रेमाख्यान नहीं कहा जा सकता जिस अर्थ में पदमावत या माधवानल कामकंदला को। सूफी प्रेमाख्यानों में तो प्रेम ही सर्वस्व है परन्तु जैन चरित काव्यों में प्रेम को नायक नायिका के जीवन में यह महत्व नहीं प्राप्त है।

हिंदी की प्रेमाख्यान-परम्परा

हिन्दी में प्रेमाख्यान साहित्य-सम्बन्धी जो अनुसंधान पिछले वर्षों में हुए हैं, उनसे हिन्दी में इस साहित्य की लगभग एक सहस्र वर्षीय प्राचीन परम्परा का पता

---

१ थेरीगाथा ३६६-८६

२ रचना काल १० वीं शता

३ वही ११० ई

४ वही १ ६५ ई०

चना है। इस दिशा में हुए कार्यों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के ऐतिहासिक कार्य का महत्त्व असंदिग्ध है। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' और 'जायसी-ग्रन्थावली' की भूमिका में उन्होंने प्रेमाख्यानों का परिचय देते हुए उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी किया था। डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपने 'हिन्दी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास' में प्रेम-काव्यों के सम्बन्ध में विस्तृत विचार किया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'हिन्दी साहित्य : उसका उद्भव और विकास' और 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' में प्रेमाख्यानक काव्यों के स्वरूप पर प्रसंगत प्रकाश डाला है। इसी प्रकार डा० सत्येन्द्र ने अपने ग्रन्थ 'मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्त्विक अध्ययन' में प्रेमाख्यानों के लोकतात्त्विक स्वरूप को स्पष्ट किया है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने 'पदमावत की संजीवनी व्याख्या' और डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'बीसलदेव रास' तथा 'मधुमालती' आदि की भूमिकाओं में इस साहित्य के मर्म-दर्शन का सुष्ठु प्रयास किया है। डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय का 'मध्ययुगीन प्रेमाख्यान' सूफी और असूफी प्रेमाख्यानों के तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी है। डॉ० सरला शुक्ल ने 'जायसी के परवर्ती सूफी कवि और काव्य' में कई नवप्राप्त सूफी प्रेमाख्यानों का आलोचनात्मक परिचय दिया है। परन्तु भारतीय प्रेमाख्यानक साहित्य की परम्परा को विशद रूप से सामने लाने में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के 'भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा' और डा० हरिकान्त श्रीवास्तव के 'भारतीय प्रेमाख्यान काव्य' का योगदान अविस्मरणीय है। इन ग्रन्थों में पौराणिक, लोकगाथात्मक तथा अन्य प्रकार के प्रेमाख्यानों का विस्तृत परिचय मिल जाता है। यहाँ उस सामग्री का पिष्ट-पेषण अनावश्यक है। केवल इस काव्य-परम्परा का एक सामान्य परिचय ही यहाँ दिया जा रहा है।

अपभ्रंश के दायरे से हटकर हिन्दी के आदिकाल में जो प्रेमाख्यानक साहित्य लिखा गया उसका आरम्भ रासो ग्रन्थों से माना जा सकता है।[1] 'बीसलदेव रास' तो शुद्ध प्रेमाख्यानक काव्य है ही उसे तो भ्रमवश वीरगाथा काव्यों के अन्तर्गत गिना जाता है परन्तु 'पृथ्वीराज रासो' में से भी यदि युद्ध और शौर्य प्रदर्शन के अंश निकाल दिए जायें तो वह एक प्रमाख्यान काव्य ही बच रहेगा। उसमें पद्मावती, हंसावती तथा इन्द्रावती आदि रानियों की जो विवाह-कथाएँ हैं वे प्रेमाख्यान ही तो हैं। प्रेमाख्यान की सभी विशेषताएँ उनमें हैं। फिर भी, रासो ग्रन्थों को प्रेमाख्यानक काव्य की श्रेणी में नहीं गिना जाता क्योंकि उनमें प्रेम प्रसंग होते हुए भी, प्रेम प्रसंग ही प्रधान नहीं है। नायक की वीरता उसका युद्ध-कौशल और विभिन्न राजाओं के साथ उसके होनेवाले युद्धों को 'रासो' काव्यों में इतनी प्रमुखता मिल गई है कि उनमें वे प्रेमाख्यान दब गए हैं।

1. भारतीय प्रेमाख्यान काव्य : डॉ० हरिकान्त श्रीवास्तव पृ० २७ और हिन्दी की काव्य शैलियों का विकास : डॉ० हरदेव बाहरी पृ० १२५

हिन्दी में लोककथात्मक प्रेमाख्यानों की एक स्पष्ट परम्परा मिलती है। राजस्थानी में लिखित ढोला मारू रा दूहा (सं० १०००-१६१८)[1] ढोला और मारवणी की प्रेम कथा पर आधारित है। इसके आधार पर कई काव्य लिखे गए जैसे 'ढोला मारवणी दूहा', 'ढोला मारू रा दूहा', 'ढोला मारवणी रा दूहा', 'ढोला मारू री वात', 'ढोला मारूई चउपई' तथा 'वात्ता ढोला मारवणी री' एवं 'मारू ढोला सूं' आदि।[2]

ढोला-मारवणी की कथा के समान ही एक दूसरी प्रेम-कथा नायिका चन्दा और नायिक मनावती मध्ययुग में बहुत लोकप्रिय हुई। इसी कथा के आधार पर मुल्ला दाऊद ने अपना 'चन्दायन' लिखा जो सूफी प्रेमाख्यान-परम्परा का प्रथम काव्य माना जाता है। मंझन का 'मधुमालती'[3] भी इस कथा पर निर्मित अन्य काव्य है। चन्दा ने प्रेमिका का और मैना या मैनावती में सतवती पत्नी का रूप निखारने की चेष्टा हुई है।

पद्मावती की कथा भी एक ऐसी लोक कथा है जिसका प्रचार मध्ययुग में बहुत था। सम्भव है सूफी महाकवि जायसी ने अपने 'पद्मावत' में इसी कथा को आधार बनाया हो। परन्तु एक उपपुराण कल्कि पुराण में भी पद्मावती और कल्कि जी की कथा आती है[4] जिसमें सिंहल द्वीप की राजकन्या पद्मावती के लिए वर ढूंढने का काम उठाकर 'शुक' नामक एक सुग्गा सम्भल निवासी कल्कि जी के पास आता है और पद्मावती का सौन्दर्य-वर्णन कर उनके मन को उसके प्रति अनुरक्त कर देता है। फिर आकर वह पद्मावती के मन में कल्कि जी के प्रति अनुराग उत्पन्न करता है और पुनः सम्भल जाकर कल्कि जी को पथ प्रदर्शन करता हुआ उनको सिंहल ले आता है। एक सरोवर के तट पर कल्कि जी (जो विष्णु के अवतार हैं) और पद्मावती मिलते हैं फिर दोनों का विवाह हो जाता है। यह भी सम्भव है कि बाद में पुराण में वर्णित यह कथा कुछ रूप-परिवर्तन के साथ पद्मावती के प्रवाद की कथा स्रोत बनी हो।[5] पद्मावत की रचना के बाद उसकी कथा-रूप हिन्दी के अनेक कथा-काव्यों के लिए प्रेरणा-स्रोत बन गया। हेमरतन की 'पद्मिनी चउपइ' (१६४५ वि०) जटमल की 'गोरा-बादल री वात' (१६८० ८६ वि०) लब्धोदय (लालचन्द) का 'पद्मिनी चरित्र' (१७०७ वि०) किसी-न किसी रूप में जायसी के पद्मावत से प्रभावित हैं।

---

1. भारतीय प्रेमाख्यान काव्य भूमिका।
2. भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी पृ० २६
3. डॉ माताप्रसाद गुप्त ने इसका रचनाकाल सं० १६२४ (१५६७ ई०) के पूर्व माना है। दक्खिनी हिन्दुस्तानी अकाई दिसम्बर १९२९ ई० में प्रकाशित उनका लेख—'इलादक हिंदा और मनामन'।
4. कल्कि पुराण प्रथमांश अ० ४-७ और द्वितीयांश अ० १ ३
5. डॉ दशरथ शर्मा का 'भारत पद्मावती' शीर्षक लेख 'साहित्य सन्देश' सितम्बर १९५१ पृ० २४६ ५०

दामोकृत लखमसेन पदमावती' (१४५६ ई०) हिन्दी के प्राचीनतम प्रेमाख्यानों में से है पर वह इस पद्मावती कथा की शृंखला में नहीं आता।

पदमावती कथा के समान ही एक अन्य प्रेम कथा मध्यकाल में हिन्दी-कवियों की प्रिय बनी, वह है—माधवानल-कामकन्दला कथा। इस कथा का मूलस्रोत आनन्दधर के संस्कृत-गुजराती मिश्रित नाटक 'कामकन्दला' (१३०० ई०) को बताया जाता है।[1] इस प्रेमाख्यान पर हिन्दी में कई काव्यों की रचना हुई। गणपति ने १५८४ वि० में अपना माधवानल-कामकन्दला प्रबन्ध' लिखा। माधव शर्मा ने १६०० वि० में ब्रजभाषा में माधवानल-कामकन्दला रस विलास' लिखा।[2] कुशललाभ कृत माधवानल-कामकन्दला चउपई' (सं० १६१६ वि०) भी लोकप्रिय रचना रही। इसमें माधवानल के साथ जयन्ती नामक अप्सरा का प्रेम प्रसंग वर्णित है। और यह भी कि कामकन्दला पूर्व जन्म में जयंती ही थी जो इन्द्र के शापवश गणिका के रूप में जन्मी थी। आलम कवि ने माधवानल कामकन्दला प्रेमाख्यान काव्य सं० १६४० वि० (१५८३ ई०) में अवधी में लिखा। इस ग्रन्थ की दो प्रकार की हस्तलिखित प्रतियाँ मिलती हैं—एक बड़ी और दूसरी छोटी। बड़ी प्रति में जयन्ती अप्सरा का प्रसंग है, परन्तु छोटी प्रति में नहीं है। जयन्ती अप्सरा का प्रसंग इस कथा को अर्द्ध-पौराणिक भी बना देता है।

नल दमयन्ती की पौराणिक कथा पर भी मध्यकाल में कई हिन्दी काव्य लिखे गये। सूरदास लखनवी ने अपना नल दमन' १६५७ ई० में लिखना आरम्भ किया। जान कवि ने कथा नल-दमयन्ती' की रचना १६६१ ई० में की। नरपति व्यास ने भी एक नल दमयन्ती कथा' लिखी।[3] प्रेमाख्यानों की इस परम्परा में ही नन्ददास कृत रूपमंजरी (१६२५ वि० के आसपास), पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलिक्रिसन रुक्मिणी री (१६४७ वि०) पुहकर कृत 'रसरतन' (सं० १६७५ वि०) दुखहरनदास कृत 'पुहुपावती (१७२६ वि०) जीवनलाल कृत उषा-हरण' (सं० १८८६ वि०) रामदास कृत उषा की कथा (१८६४ वि०) और रघुराज सिंह जू देव कृत रुक्मिणी परिणय (१९०७ वि०) आदि प्रेम-कथा-काव्य भी आते हैं।[4]

प्रेमाख्यानों की परम्परा में ही हमारे आलोच्य सूफी कवियों द्वारा लिखित वे ३५ प्रेमाख्यान भी हैं जिनका परिचय आगामी अध्याय में दिया जायगा। सूफी प्रेमाख्यानों में 'चंदायन 'मृगावती पदमावत 'मधुमालती 'चित्रावली', ज्ञानदीप, नल दमन हंस जवाहिर, इन्द्रावती और यूसुफ जुलेखा' महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी सूफी

---

१ भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा पृ० ७८

२ इसकी एक खण्डित प्रति हिन्दी साहित्य सम्मेलन संग्रहालय प्रयाग में सुरक्षित है।

३ रचना-काल अज्ञात, प्रतिलिपि काल सं १६८७ वि। इसकी एक खण्डित प्रति प्रयाग के संग्रहालय में सुरक्षित है।

४ इन काव्यों सहित डॉ हरिकान्त श्रीवास्तव ने अपने भारतीय प्रेमाख्यान काव्य में १ ०० वि० से १६१२ वि० तक रचित ३१ प्रेमाख्यानों का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

प्रेमाख्यान काव्य का रचनाकाल १३७० ई० से १७६० ई० तक की कालावधि में विस्तीर्ण रहा।

हिन्दी प्रेमाख्यानों का वर्गीकरण

[illegible] वर्गों में रचित हिन्दी प्रेमाख्यान काव्य को वर्गीकृत करने के विभिन्न प्रयास विद्वानों ने किये हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने एक विशेष आध्यात्मिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए लिखित [illegible] प्रेमाख्यान काव्यों को जब प्रेमगाथा [illegible] और अन्य कवियों की प्रेमगाथाओं [illegible] कवि का मत था तब उन्होंने प्रेम को आधार बनाकर लिखे गए सम्पूर्ण साहित्य को वर्गीकृत करने का पहला प्रयास किया था। शुक्ल जी के बाद प्रेमाख्यान काव्य को जिस समय [illegible] का उत्थान हुआ उसके सम्यक् अध्ययन के पश्चात् विद्वानों ने प्रेमाख्यान-काव्यों के कुछ और वर्गीकरण भी किये। यहाँ उन वर्गीकरणों का उल्लेख आवश्यक है। सब प्रथम इस रूप में अपना आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा किये गये वर्गीकरणों को ले लें। चतुर्वेदी जी ने प्रेमाख्यान काव्य के पाँच प्रकार के वर्गीकरण प्रस्तुत किये हैं। उनका पहला वर्गीकरण उन काव्यों से सम्बन्धित है जो सूफी प्रेमाख्यान रचना की परम्परा के आरम्भ काल से पूर्व प्रेम से किसी न किसी प्रकार का सम्बन्ध रखते हुए लिखे गये। इन काव्यों को चतुर्वेदी जी ने पाँच वर्गों में विभक्त किया है[1]।

प्रथम वर्ग उन कथाओं का है जिनका स्रोत पौराणिक है जैसे राधा-कृष्ण, कृष्ण-रुक्मिणी, उषा-अनिरुद्ध, नल-दमयन्ती और दुष्यन्त-शकुन्तला आदि की कथाएँ। दूसरा वर्ग उन लोकगाथाओं और लोकगाथाओं से सम्बन्धित है जो मौखिक रूप में किसी अज्ञात समय से चली आ रही हैं। राजस्थान के ढोला मारवणी की प्रेम-कहानी जो दोनों [illegible] में प्रचलित रही, इस वर्ग के अन्तर्गत आती है। तीसरे वर्ग में [illegible] वे पौराणिक आख्यान आते हैं जिनमें प्रेम की बातें कलह-युद्ध गौण सी हो गयी हैं और जिनका मुख्य उद्देश्य धार्मिक है। चौथा वर्ग वीरगाथा काल की उन प्रेमगाथाओं का है जिनमें वीर रस सम्बन्धी घटनाओं का भी समावेश रहता है और जो अधिकतर कुछ न कुछ ऐतिहासिक आधार भी रखती हैं। इनके [illegible] रासो तथा [illegible] हैं। पाँचवाँ वर्ग कल्पना के आधार पर लिखे गए उन प्रेमाख्यानों का है जिनमें तिलिस्मों और चमत्कारों का प्राधान्य है। इन पाँचों प्रकार के प्रेमाख्यानों में से [illegible] विकास की परम्परा आज लुप्त हो गया है।

चतुर्वेदी जी ने सूफी प्रेमाख्यानों को [illegible] किसी भी वर्ग में न मानकर 'उनमें सभी वर्गों की विशेषताओं का आंशिक समावेश होना माना है और उनकी कथा रूपक प्रणाली का [illegible] सूफीमत के प्रेम-सम्बन्धी सिद्धान्तों के प्रचार की चेष्टा है उनकी

---

१ सूफी काव्य-संग्रह, पृ० ६०

निजी एव मौलिक विशेषता स्वीकार किया है।[1] परन्तु ऐसा लगता है कि चतुर्वेदी जी को अपना उपर्युक्त वर्गीकरण कुछ अधिक वैज्ञानिक नहीं जान पड़ा इसलिए उन्होंने भारतीय प्रेमाख्यानक काव्यों को तीन अन्य वर्गों म विभाजित किया। वे वग हैं—(१) इतिवृत्तात्मक (२) मनोरजनात्मक और (३) प्रचारात्मक।[2] प्रथम वर्ग म उन्होंने वल्कि पौराणिक तथा ऐतिहासिक आख्यानो वाली रचनाओ की गणना की है। द्वितीय वग म उन कहानियो को लिया है जिनको जन समाज के मनोरजनार्थ लिखा गया है। तृतीय वग में उन्होंने उन रचनाओ को रखा है जिनका लक्ष्य कोरा मनोरजन न होकर किसी धम या सिद्धान्त का प्रचार करना है, जस बौद्धो जनियो, सूफियो अथवा भक्तो द्वारा लिखी रचनाएँ।

चतुर्वेदी जी न एक तीसरा वर्गीकरण और प्रस्तुत किया है जो प्रम के विभिन्न स्वरूपो की अभिव्यक्ति के अनुसार है (१) दाम्पत्य प्रेमपरक काव्य (२) विशुद्ध भावपरक प्रेम काव्य (३) कामासक्तिपरक काव्य (४) पातिव्रतपरक प्रेम-काव्य तथा (५) अध्यात्मपरक प्रेम-काव्य। प्रथम वर्ग के अन्तगत उन्होंने नल दमयन्ती से सम्बन्धित प्रेमाख्यानो को द्वितीय वग म उषा-अनिरुद्ध की कथा को तृतीय वग म 'कहुहारि जानक' वाली कथा को चतुथ वग म बतासा पचविशति की धमन्त्त और मदनमेना वाली कथा को और पचम वग म जन कवियो की उपमिति कथाओ को रखा है।[3] पाचवें वग म ही सूफी प्रेम काव्यो का भी समावेश हो सकता है।

चतुर्वेदी जी द्वारा किय गय उपयुक्त तीन वर्गीकरणो म से प्रथम दो वर्गीकरण तो वस्तु परक है और अन्तिम भाव परक। अन्तिम दो वर्गीकरणो का आधार ही अधिक वज्ञानिक जान पड़ता है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवदी न हिन्दी प्रेमाख्यानो को तीन वर्गों म विभाजित किया है[4]-

(१) आध्यात्मिक सिद्धान्तो के प्रचार के लिए लिखे गय काव्य,
(२) विशुद्ध लौकिक प्रेम-काव्य
(३) शुद्ध ऐतिहासिक प्रमगाथाए।

द्विवदी जी न प्रथम वग म सूफियो के प्रेमाख्यानो को रखा है। इसी वग मे उन्होंने उन काव्यो को भी रखा है जिनको आचाय परशुराम चतुर्वेदी ने सन्त या भक्त कवियो द्वारा लिखे होने के कारण एक अलग वग म रखा है। विवेचन की दृष्टि से आचाय द्विवेदी न अध्यात्मिक काव्यो का (क) सूफी, (ख) भक्त कवियो द्वारा लिखित—दो उपवर्गों म विभक्त कर दिया है। विशुद्ध लौकिक प्रेम-काव्यो के

---

१ सूफी काव्य सग्रह पृ० ६०
२ भारतीय प्रमाख्यान की परम्परा पृ० १४६
३ हिन्दी क सूफी प्रमाख्यान आचार्य परशुराम चतुर्वेदी प्र० स पृ० २१
४ हिन्दी साहित्य उसका उद्भव और विकास डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी पृ० २६२

अन्तर्गत उन्होंने भारतीय परम्परा के अनुसार लिखे गये प्रेम-काव्यों और अर्द्ध ऐतिहासिक प्रेम-काव्यों जैसे – बीसलदेव रासो आदि को रखा है।

डा० हरिकान्त श्रीवास्तव ने भारतीय परम्परा के अनुसार लिखे गये प्रेमाख्यानों को तीन वर्गों में विभाजित किया है—(१) शुद्ध प्रेमाख्यान (२) अवतार चरित और (३) नीति प्रधान काव्य।[1]

डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय ने मध्ययुगीन प्रेमाख्यान (१५०० – १७०० ई०) में डा० हरिकान्त श्रीवास्तव के उक्त वर्गीकरण को विषयवस्तुगत बताते हुए प्रेमाख्यानों का प्रवृत्तिगत वर्गीकरण किया है। उन्होंने हिन्दी के भारतीय परम्परा के प्रेमाख्यान काव्य के चार वर्ग बनाये हैं (१) सम्प्रदायपरक प्रेमाख्यान (२) कामपरक प्रेमाख्यान (३) मनपरक प्रेमाख्यान और (४) अध्यात्मपरक प्रेमाख्यान।[2] डॉ० पाण्डेय ने प्रथम वर्ग में नागामाल रा दूहा, बीसलदेव रास तथा लखमसेन पद्मावती जैसे प्रेमाख्यानों को रखा है। दूसरे वर्ग में आलम कृत माधवानल कामकन्दला प्रबन्ध, चतुर्भुजदास कायस्थ कृत मधुमालती, पुहकर कवि कृत रसरतन तथा सम्यक्त्व मार्वलिगा आदि प्रेमाख्यानों की गणना की है। तीसरे वर्ग में नारायणदास कृत 'छिताई-वार्ता' तथा माधनकृत मनामत आदि को रखा है। चौथे वर्ग में नन्ददास कृत रूपमंजरी, पृथ्वीराज राठौर कृत वेलि क्रिसन रुकमिणी री, बाबा धरणीदास कृत प्रेम प्रगास तथा संत दुखहरन दास कृत पुहुपावती की गिनती की है। इन असूफी प्रेमाख्यानों के अतिरिक्त सूफी प्रेमाख्यानों का भी एक वर्ग है जिसे अध्यात्मपरक प्रेमाख्यानों की श्रेणी में गिना जा सकता है। डा० पाण्डेय के इस वर्गीकरण को आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने कुछ हेर फेर के साथ अपने तृतीय वर्गीकरण में स्वीकार कर लिया है। अन्तर केवल इतना ही है कि चतुर्वेदी जी ने विशुद्ध भावपरक प्रेमाख्यानों की अलग श्रेणी मानी है और डा० पाण्डेय ने उनका अन्तर्भाव अपने प्रथम वर्ग में कर लिया है।

उपर्युक्त सभी वर्गीकरणों पर विचार करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इन सभी विद्वानों ने प्रेमाख्यानों के दो स्पष्ट वर्ग स्वीकार किए हैं (१) वे प्रेमाख्यान जिनका उद्देश्य शुद्ध मनोरंजन है और जिनमें प्रेम के लौकिक स्वरूप की अभिव्यक्ति हुई है और (२) वे प्रेमाख्यान जिनका उद्देश्य मनोरंजन प्रदान करने के साथ साथ मत प्रचार करना भी है और जिनमें प्रेम के आध्यात्मिक स्वरूप पर विशेष बल दिया गया है दूसरे शब्दों में जिनका पर्यवसान आत्मा-परमात्मा का चिर मिलन दिखाने में हुआ है।

अतः हम हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यों को दो ही स्पष्ट वर्गों के अन्तर्गत रखना उचित समझते हैं—

---

१ भारतीय प्रेमाख्यान काव्य भूमिका।

२ मध्ययुगीन प्रेमाख्यान डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय पृ० १५ और १६

(१) लौकिक प्रेम प्रधान काव्य
(२) आध्यात्मिक प्रेम प्रधान काव्य।

दूसरे वर्ग के दो उपवर्ग होंगे

(क) सूफी मत का प्रचार करने वाले काव्य,
(ख) संत मत या अन्य किसी भारतीय धर्म का प्रचार करने वाले काव्य।

प्रथम वर्ग में ही दाम्पत्यपरक संतपरक, विशुद्ध भावपरक और अर्द्ध ऐतिहासिक प्रेम गाथाओं का सरलता से अन्तर्भाव किया जा सकता है। बात यह है कि दाम्पत्य-प्रेम और सतपरक प्रेम में कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती। जहां तक दाम्पत्य प्रेम और स्वच्छन्द प्रेम का प्रश्न है उनमें भी प्रेम के स्वरूप में ऐसा कोई विशेष अन्तर नहीं लक्षित होता, जिसके कारण उनकी दो श्रेणियां निर्धारित की जायें। उनका एक ही वर्ग में रखा जा सकता है। परन्तु प्रेम के लौकिक और आध्यात्मिक निरूपण में इतनी स्वरूपगत भिन्नता है कि दोनों का अलग वर्ग में रखना अपरिहार्य हो जाता है। आध्यात्मिक प्रेम प्रधान काव्यों में सूफी कवियों का काव्य चूंकि वस्तुगत और शैलीगत दृष्टि से निजी वैशिष्ट्य रखता है इसलिए उसका एक अलग उपवर्ग बनाया जा सकता है। सन्तमत जैन मत तथा धार्मिक प्रचार के उद्देश्य से लिखे गये अन्य प्रेमाख्यानों का दूसरे उपवर्ग में रखा जा सकता है।

२ हिन्दी सूफी कवियों के प्रेमाख्यानक काव्य

[illegible] दाऊदी [illegible] भारत [illegible] कवियों द्वारा रचित [illegible] प्रेमाख्यानक काव्यों का [illegible] अध्ययन [illegible] से प्रस्तुत ग्रन्थ में अध्ययन किया गया है। [illegible] सूफी [illegible] काव्य [illegible] सुविधानुसार [illegible] अनुराग बाँसुरी और दुःख [illegible] प्राप्त [illegible] हैं।

[क] सूफी कवियों व प्रेमाख्यानों का परिचय

चंदायन

कृति और कवि—यह सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा की अब तक उपलब्ध रचनाओं में सर्वाधिक प्राचीन रचना है। इसके चार सम्पादित संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं (१) लोरकहा (२) चंदायन (इन दोनों संस्करणों के सम्पादक क्रमशः डॉ० माताप्रसाद गुप्त और डॉ० विश्वनाथ प्रसाद हैं। ये दोनों पाठ एक ही जिल्द में 'चंदायन' शीर्षक से कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा से १९६२ ई० में प्रकाशित हो चुके हैं) (३) चंदायन (सम्पादक डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, १९६४ ई०)[1] (४) चाँदायन (सम्पा० डॉ० माताप्रसाद गुप्त, प्रका० प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, १९६७ ई०)। इस प्रेमाख्यानक काव्य की रचना ७८१ हिजरी[2] (१३८० ई०) में मुल्ला दाऊद ने

---

१ हमने पौराणिक कथा सूत्र और उसके प्रयोग-स्वरूप के लिए प्रथम तीन प्रतियों का उपयोग किया है विशेषतः डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त द्वारा सम्पादित प्रति का। — लेखक

२ बरस सात सै होइ इक्यासी। तहिया यह कवि सरसउ भासी॥
साह फिरोज दिल्ली सुलतानू। जौना साहि वजीर बखानू॥
डलमऊ नगर बसै नौरंगा। ऊपर कोट तरे बहु गंगा॥
(सूफी काव्य संग्रह, सम्पा० आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, द्वि० सं०, पृ० ७८)

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ने चंदायन की भूमिका में अन्तःसाक्ष्य बदायूँनी के इन [illegible]

थी। मुल्ला या मौलाना दाऊद के विषय में इतना ही पता चला है कि ये डलमऊ के निवासी थे। डलमऊ रायबरेली से ४४ मील और कानपुर से ६१ मील दूर स्थित है। इन्होंने दिल्ली के सुल्तान फीरोज शाह तुगलक के मंत्री जूनाशाह के प्रीत्यर्थ 'चंदायन' की रचना की थी। इनके गुरु शेख जैनुद्दीन[1] सूफी मत के चिश्तिया सम्प्रदाय के अनुयायी थे। (विशेष द्रष्टव्य चंदायन संपादक—परमेश्वरीलाल गुप्त पृ० ८२ पाद-टिप्पणी)।

कथा—गोबरगढ़ के अहीर राजा महदेव (सहदेव महर) की पट्टमहिषी फूल-रानी के गर्भ से एक कन्या का जन्म हुआ जिसका नाम चंदा (चाँद) रखा गया। चार वर्ष की ही अवस्था में उसका विवाह बावन नामक व्यक्ति से हो गया। विवाह को बारह वर्ष बीत गए। चंदा बालिका से युवती हो गई। बावन की रुचि व्यायाम और शस्त्राभ्यास में अधिक थी विषय भोग की ओर नहीं। अतृप्तकाम चंदा अपने पति और अपनी सास से असंतुष्ट होकर अपने मैके चली आई। एक दिन वह शृंगार किये अपने धौराहर पर खड़ी थी, कि एक बाजिर (वज्रयानी साधु) गाना भीख माँगता उधर से आ निकला। बाजिर उसके रूप को देखते ही मूर्च्छित हो गया।

वह घूमता फिरता राजापुर के राव रूपचन्द के पास गया। उससे उसने चंदा के नख शिख सौंदर्य का बढ़ा चढ़ाकर वर्णन किया। रूपचन्द चंदा पर आसक्त हो गया। उसने एक बड़ी सेना लेकर गोबरगढ़ पर चढ़ाई कर दी। सहदेव महर का उसके साथ भला क्या मुकाबला था। सहदेव की हार पर हार होने लगी। लोगों के कहने से उसने गोबर के वीर लोरिक को बुलाया। लोरिक और उसके लड़ाके साथियों के युद्ध क्षेत्र में पहुँचते ही पासा पलट गया। रूपचन्द की सेना के पाँव उखड़ गये।

सहदेव महर ने लोरिक को सम्मानित करने के लिए उसका जुलूस निकाला। चंदा ने लोरिक की कीर्ति तो सुनी थी पर उसको देखा नहीं था। जुलूस को देखने के लिए वह अपनी सखी बिरस्पत के साथ धौराहर पर खड़ी हो गई। हाथी पर बैठे सुंदर-सजीले लोरिक को उसने जो देखा तो बेचैन हो गई। सुध आने पर उसने बिरस्पत से कहा कि बस अब मुझे लोरिक से मिलाओ। बिरस्पत की सलाह से उसने अपने पिता से कहकर विजय के उपलक्ष में एक ज्योनार का आयोजन किया। लोरिक भी उसमें आया। वह जब खाने के लिए पंगत में बैठा तब चंदा शृंगार करके धौरा-हर पर आ खड़ी हुई। लोरिक उसे देखकर खाना भूल गया मूर्च्छित हो गया। घर

तवारीख—सपा० मौलवी मुहम्मद अली बिब्लियोथिका इण्डिका सिरीज १८६८ ई० भाग १ पृ० २५० और जॉन एस० ए० रैंकिंग कृत इसके अंग्रेजी अनुवाद जो इसी सिरीज में भाग १ पृ० ३३३ पर १८८७ ई० में इसी सोसायटी से प्रकाशित हैं का हवाला दिया है जिसके अनुसार चन्दायन का रचनाकाल ७७२ हिजरी (१ ३ ई०) के बाद किसी समय होना चाहिए। बीकानेर वाली प्रति जिसका संपादन शंकर सारस्वत कर रहे हैं के अनुसार इसका रचनाकाल ७८१ हिजरी है। अतः ७७२ हि० से ७८१ हि० के मध्य इसकी रचना मानना ठीक है।

1 सेख जैनदी [illegible] पथि लावा। धरम पंथ जिहँ पाप गवावा॥ —मुल्ला दाऊद

गोरा ही उसका लाट यश भी । चंदा ने निश्चय किया कि इसे प्रेम रोग लग गया है । बिरस्पत ने लोरिक से भेंट कर उसे सुझाया कि वह नगर के बाहर मन्दिर में जोगी बनकर बैठ जाय, वहीं चंदा से उसका मिलन होगा ।

लोरिक बिरस्पत से जोगी की वेश भूषा धारण कर मन्दिर में जा बैठा । एक पक्ष तक उसकी तपस्या चली पर चंदा से भेंट न हुई । श्रावण की रात को चंदा अपनी सखियों के साथ मन्दिर में आई । उसको देखते ही लोरिक मूर्छित हो गया । चंदा उसे पहचान न पाई । बाद में पता चला तो पछतायी । उसने अपने प्रेम के चिह्न स्वरूप पान मिठाई आदि बिरस्पत द्वारा लोरिक के पास भेजा । लोरिक ने जोगी का वेश उतार डाला । पर चंदा से मिलने के लिए विकल हो उठा । बाजार से पटसन लाकर उसने एक रस्सा (बरहा) बनाया और रात की एक पहर अंधेरी रात में वह उस रस्से के सहारे चंदा के धौराहर पर चढ़ गया । रात रति क्रीड़ा में बीत गयी । सवेरा होने पर चंदा ने उसे अपने पलंग के नीचे छिपा लिया । रात हो गयी तो लोरिक अपने घर गया । उसकी पत्नी मैना ने उस पर संदेह किया । परन्तु लोरिक की माँ खोलिन (खोइलिन) ने दोनों में समझौता करा दिया ।

चंदा के जोर देने पर लोरिक उसे भगा ले गया । उसने अपने दोनों हाथों में तलवार ले रखी थी और चंदा ने धनुष बाण । लोरिक और चंदा हरदी की ओर चले । चंदा के पति बावन को जब इस घटना का पता चला तब उसने उनका पीछा किया और गंगा पार आकर उन्हें पकड़ लिया । परन्तु चंदा ने उसकी कमीनता के लिए उसे भगाया । वह अपना सा मुँह लेकर लौट आया ।

लोरिक और चंदा आगे बढ़े । एक ब्राह्मण के घर में उन्होंने विश्राम किया । वहाँ शय्या पर बिछे फूलों की सुगंध से आकृष्ट होकर एक साँप ने चंदा को डँस लिया । चंदा बेहोश हो गयी । लोरिक रात भर विलाप करता रहा । एक गारुडी (मन्त्रोपचारी) ने झाड़ फूँक करके चंदा का विष उतार डाला । लोरिक और चंदा फिर हरदी पाटन की ओर चल पड़े । परन्तु रात को जब वे एक पाकड़ के पेड़ के नीचे सोये, तब एक साँप ने चंदा को पुनः डँस लिया । विष के प्रभाव से वह मृतप्राय हो गयी । लोरिक उसके साथ चिता में जलने को तैयार हो गया । तभी कहीं से एक गारुडी आया और उसने मंत्र प्रयोग करके चंदा को जिला दिया । गारुडी ने लोरिक से कहा कि हरदी पाटन मत जाना और जाना ही पड़े तो दाहिने रास्ते को अपनाना ।

लोरिक चंदा के साथ आगे बढ़ा । चार दिन बाद वे एक नगर में पहुँचे । चंदा को नगर के बाहर एक मन्दिर में ठहराकर लोरिक नगर के बाजार में गया । इसी बीच एक टूँटा योगी आया । उसने अपनी सिंगी बजायी । सिंगी-नाद से मोहित हो चंदा उसके पीछे हो ली । लोरिक ने लौटने पर जब चंदा को मन्दिर में न पाया तब वह बहुत घबराया । ढूँढ़ते ढूँढ़ते एक अन्य नगर में उसने टूँटा योगी को जा घेरा । पंचों ने बीच बचाव करके टूँटा से चंदा उसे दिला दी । अनेक कष्ट झेलते हुए दोनों हरदी पहुँचे । वहाँ के राजा महतम ने उनकी बड़ी आवभगत की ।

उधर गोवरगढ़ म मैना लोरिक के वियोग म रो रोकर दिन काट रही थी। सिरजन नामक ब्राह्मण अपना टाड (व्यापारियो का दल) लेकर हरदीपाटन जा रहा था। उसने गोवरगढ़ म पडाव किया। मैना न अपनी विरह व्यथा उसे कह सुनायी। सिरजन मैना का विरह सन्देश लेकर हरदीपाटन चल दिया। लोरिक को खोजकर वह उससे मिला। मैना का सन्देश उसे सुनाया। लोरिक को बहुत अनुताप हुआ। उसने गोवरगढ़ लौट चलने का निश्चय किया। अनमन भाव से चदा भी उसके साथ चली। हरदी के राजा ने लोरिक को सैनिक अस्त्र शस्त्र अश्व तथा धन देकर प्रेम-पूर्वक विदा किया।

दवहा (घाघरा) नदी पार कर लोरिक जैसे ही गोवर के निकट पहुँचा यह समाचार फल गया कि किसी राजा ने पुन आक्रमण किया है। लोरिक ने मैना के सतीत्व की परीक्षा लेने के लिए नगर के घर घर म फूल बँटवाये। परन्तु मैना ने फूल लेने से इनकार कर दिया। वह दूध बचने के बहाने लोरिक के शिविर म पहुँची। वहा चदा से उसकी नोक झोक हुई। सहदेव महर ने लोरिक के साथ चदा के रहने पर अब कोई आपत्ति नही की। मैना और चदा दोनो पत्नियो के साथ लोरिक सुखपूर्वक रहने लगा।

मृगावती

कृति और कवि— मृगावती के रचयिता कुतुबन है। इसका सपादन डा० शिवगोपाल मिश्र ने किया है और प्रकाशन हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने शक स० १८८५ म। इसम चौपाई दोहा तथा सोरठा छन्दों का प्रयोग हुआ है। मुद्रित प्रति म ३६० छन्द हैं। अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर म भी इसकी एक हस्त-लिखित प्रति है जिसम ४५७ छन्द बताये जाते हैं। मृगावती का रचनाकाल स० १५६० वि० या १५०३ ई० या ९०९ हिजरी है[1]। डॉ० शिवगोपाल मिश्र की सूचना के अनुसार हरिश्चन्द्र पुस्तकालय चौखम्बा वाली प्रति म ९०९ हि० मे मोहरम के महीने म दो माह दस दिन म ग्रन्थ की रचना होने का स्पष्ट उल्लेख है।[2]

कुतुबन जौनपुर के सुल्तान हुसेनशाह शर्की के आश्रित थे। जब हुसेनशाह ने दिल्ली के बादशाह बहलोल लोदी के डर स जौनपुर छोड दिया और गौड़ (बगाल) के शासक अलाउद्दीन हुसेन या हुसेनशाह के यहा शरण ली, तब कुतुबन भी उनके साथ ही बगाल चल गये। अभी तक यह विवादग्रस्त है कि 'मृगावती' म कुतुबन ने जिस शाहेवक्त हुसेनशाह की प्रशसा की है वह हुसेनशाह शर्की था, या

---

१ जहिया होते पन्द्रह स साठी। तहिया एहु रे चौपई गाँठी॥
 बट भाखा माहहि एहि मोंडा। पढ़ित बिन बहुत होइ सोंडा॥
 पहिले पाख भादों छठि यहा। सिंघ रासि सिंघनी राबहो॥
 —मृगावती ३८६।३४

२ मृगावती पृ० २०३

[illegible] (गो [illegible]) [illegible] [illegible] मृगावती [illegible] [illegible] [illegible] सुल्तान [illegible] [illegible] मुलाकात [illegible] [illegible] थे। [illegible] [illegible] [illegible] परन्तु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आर्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अनुसार [illegible] [illegible] थे और सुल्तान [illegible] [illegible] समकालीन थे।

कथा [illegible] [illegible] राजा [illegible] धर्मात्मा राजा था। [illegible] [illegible] [illegible] सन्तान [illegible] [illegible] नहीं थी। [illegible] बहुत [illegible] रहता था। ईश्वर की कृपा से [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। राजकुमार [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] की आयु में ही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का ज्ञाता और अच्छा [illegible] हो गया।

एक दिन वह अपने [illegible] साथियों के साथ जंगल में शिकार खेलने गया। वह [illegible] [illegible] [illegible] गया। उसने एक [illegible] [illegible] देखी जिस पर वह [illegible] गया। [illegible] सरोवर [illegible] [illegible] और [illegible] हो गयी। राजकुमार सरोवर पर ही बैठ गया और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की प्रतीक्षा करने लगा। [illegible] [illegible] [illegible] लिया कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

समाचार पाकर राजा आए। [illegible] राजकुमार के लिए सरोवर के पास ही एक [illegible] बनवा दिया। राजकुमार और [illegible] धाय उसमें रहने लगे। धाय को उसने [illegible] [illegible] की [illegible] बतायी। धाय ने [illegible] कि [illegible] सुना है कि वह [illegible] रानी है जो [illegible] [illegible] [illegible] को सरोवर में स्नान करने आती है। अगर उसका चीर छिपा दिया जाए तो [illegible] [illegible] किया जा सकता है।

[illegible] [illegible] भी राजकुमार को प्यार करने लगी थी। किन्तु अपना भेद उसने अपनी सखियों पर भी प्रकट नहीं किया था। अगली निर्जला एकादशी के दिन वह अपनी सखियों सहित मानसरोवर में स्नान करने आयी। सारी अप्सराएँ अपने वस्त्र उतारकर [illegible] में पैठ गयीं और [illegible] करने लगीं। राजकुँवर ने अवसर पाकर मृगावती के वस्त्र छिपा दिए। राजकुँवर को [illegible] मृगावती की सखियाँ अपने वस्त्र पहनकर भाग गयीं। परन्तु मृगावती नग्नावस्था में [illegible] में [illegible] पैठी रह गयी। उसने बहुत अनुनय विनय की परन्तु राजकुँवर ने उसका चीर न दिया। दूसरा वस्त्र पहनाकर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। मृगावती ने उससे वचन [illegible] लिया कि वह उसमें सुरति रखा करेगा — "अवर भाव सब मानहुँ माहि स एक सुरति नहिं होइ।"

उनका साथ [illegible] रहते कई दिन बीत गए। एक दिन जब राजकुँवर अपने पिता से मिलने के लिए राजधानी में गया हुआ था तब मौका पाकर मृगावती ने अपना

चार हूर निराश और चीर पहनकर उड़ गयी। वह जानना चाहती थी कि राजकुंवर को उससे सच्चा प्रेम है या नहीं। सच्चा प्रेम होगा तो वह उसको खोजते हुए उसके नगर तक आएगा। जाते जाते मृगावती ने धाय को बतला दिया कि मैं कंचनपुर की राजकुमारी हूँ और मेरे पिता का नाम रूपमुरारी है।

राजकुमार लौटा, तो मृगावती को न पाकर उसका बुरा हाल हो गया। वह जोगी का वेश धारण कर उसकी खोज में निकल पड़ा। समुद्र पार कर वह एक अम राई में पहुँचा। वहाँ एक महल बना था जिसमें एक राजकुमारी को एक राक्षस ने बंदी बना रखा था। राजकुमारी का नाम रुकमिन (रुक्मिणी) था। राजकुमार ने राक्षस को मार डाला। कृतज्ञतावश रुकमिन के पिता ने उसके साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया। दहेज में आधा राजपाट दे दिया।

परन्तु राजकुंवर को मृगावती के बिना चैन नहीं था। एक दिन वह जोगी का वेश धारण कर चुपके से वहाँ से निकल गया। घोर वन में उसे एक गड़रिया मिला, जो असल में मनुष्यभक्षी था। उसने राजकुंवर को ले जाकर एक गुफा में बंद कर दिया। गड़रिया जब सो गया तब राजकुंवर ने एक गरम सलाख से उसकी दोनों आँखें फोड़ दीं। एक बड़ी-सी बकरी को मार कर उसकी खाल खींच ली और उसे ओढ़कर वह युक्तिपूर्वक उस गुफा से बाहर आ गया।

उधर मृगावती के पिता का स्वर्गवास हो गया। मन्त्रियों ने सलाह करके मृगावती को ही राज्य भार सौंप दिया। मृगावती ने एक धर्मशाला बनवा दी, जहाँ योगी-यति ठहर सकें।

राजकुँवर मृगावती की खोज में बराबर भटक रहा था। एक रात जिस वृक्ष के नीचे वह सो रहा था, उसकी एक डाल पर बैठे दो पक्षियों को उसने इस प्रकार बात करते सुना। एक पक्षी दूसरे से कह रहा था—

एक कुंवर मृगावती को प्यार करता है। अब तक उसने इतना दुःख झेला जिसका वर्णन नहीं। अब कुछ ही दिनों में उसके सुख के दिन आने वाले हैं। राजकुंवर ने यह सुना तो बड़ा प्रसन्न हुआ। पक्षी जिस दिशा में उड़े उसी दिशा में वह चल दिया। आगे जाकर उसे एक सुंदर सा नगर मिला। वह अपनी किंगरी पर वियोग के गीत बजाता नगर में घूमने लगा। उसकी चर्चा राजमहल तक पहुँची। मृगावती ने उसे पहचान लिया और अपने पास बुला लिया।

राजकुंवर का जोगी वेश उतारा गया। फिर मृगावती ने कहा—

चलहु सेज पर बैठहु, तु रे पुरुष हौं नारि।

एक रात को मृगावती अपनी एक सखी के घर गयी हुई थी। राजकुंवर ने उत्सुकतावश एक बंद कोठरी खोल दी। उसमें एक कठघरा था जिसमें एक राक्षस बंद था। राजकुंवर ने दयार्द्र होकर उसे मुक्त कर दिया। बदले में राक्षस मृगावती

पर आसक्त था। वह राजकुंवर को कंधे पर बैठाकर आकाश में उड़ चला और समुद्र में ले जा पटका। मधुमालती ने राजकुंवर को सन्ध्या पतन में पाकर उसका उद्धार किया। राजकुंवर बारह वर्ष तक कंचनपुर में राजपाट करता रहा। उसके दो पुत्र भी हुए। उधर चन्द्रागिरि के राजा गनपतिदेव (राजकुंवर के पिता) अपने पुत्र के लिए चिंतित थे ही। उन्होंने दुलम नामक पुरोहित को कुंवर का पता लगाने के लिए भेजा। दुलभ को मार्ग में अयोध्या पड़ी जहाँ उसे रुक्मिन मिली। कंचनपुर आकर उसने राजकुंवर से रुक्मिन का विरह मदन कहा। राजकुंवर को रुक्मिन और अपने वृद्ध पिता की याद सताने लगी। मधुमालती को साथ लेकर वह चल दिया। रास्ते में उसने रुक्मिन को भी ले लिया। राजा गनपतिदेव अपने बिछुड़े पुत्र से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। राजकुंवर राजकाज देखने लगा। एक दिन वह शिकार खेलने गया। एक सिंह ने उसे मार डाला। मधुमालती और रुक्मिन उसके शव के साथ चिता में जल मरीं।

कुतुबन ने कहा है— यह कथा पहले हिन्दुओं में प्रचलित थी। हिन्दुओं से तुर्कों में गयी। मैंने इस कथा का रहस्य समझाया है। इसमें योग के अतिरिक्त शृंगार तथा वीर रसों का समावेश है—

> पहिले हिन्दुइ कथा अहइ। पुनि रे मान तुरकइ लै गहइ ॥
> पुनि हम खोल अरथ सब कहा। जोग सिंगार बीर रस अहा ॥

पदमावत

कृति तथा कवि—सूफी प्रेमाख्यान-परम्परा का तीसरा काव्य पद्मावत मलिक मुहम्मद जायसी की रचना है। इसे उन्होंने ९४७ हिजरी (१५९७ वि० या १५४० ई०) में रचा था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी ग्रन्थावली[1] के द्वितीय संस्करण में ९२७ हिजरी (१५२१ ई०) को पद्मावत का रचना-काल माना है। डा० माताप्रसाद गुप्त ने ९४७ हि० को ठीक बताया है।

मलिक मुहम्मद जायसी अवध के जायस नगर के निवासी थे। इनकी बायीं आँख कानी थी और बायाँ कान बहरा था।[3] इनकी मृत्यु अमेठी में हुई जहाँ इनकी कब्र अब तक मौजूद है। इन्होंने अपने चार गुरुओं का उल्लेख किया है—(१) पीर

---

१ सन् नौ सै सतालिस अहै। कथा अरंभ बैन कवि कहै।
—जायसी ग्रन्थावली सपा० डॉ० माताप्रसाद गुप्त छ० २४

२ जायसी-ग्रन्थावली का सम्पादन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और डा० माताप्रसाद गुप्त ने अलग-अलग किया है। पाठ की दृष्टि से डॉ० माताप्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित प्रति अधिक प्रामाणिक है हमने इस प्रबंध में सर्वत्र पद्मावत मूल और संजीवनी व्याख्या (डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल) का उपयोग किया है। अग्रवाल जी ने डा० गुप्त की प्रति को अपनी टीका का आधार बनाया है।

३ पद्मावत २१।१ ३६७।८

यद अशरफ जहाँगीर[1] और शेख मोहिदी या मुहीउद्दीन।[2] जायसी ने महदवी सम्प्रदाय के शेख बुरहान को उसी रूप में अपना गुरु माना है जिस रूप में चिश्तिया सम्प्रदाय के सयद अशरफ जहाँगीर को। ऐसा लगता है कि जायसी सूफियों के इन दोनों सम्प्रदायों से जुड़े हुए थे।

कथा—'पदमावत' के चौबीसवें छन्द में जायसी ने कथा का संक्षिप्त रूप इस प्रकार दिया है—

सिंहल दीप पदुमनी रानी। रतनसेन चितउर गढ़ आनी॥
अलाउदीं दिल्ली सुलतानू। राघौ चेतन कीन्ह बखानू॥
सुना साहि गढ़ छेंका आई। हिन्दू तुरकहिं भई लराई॥
आदि अंत जस कथा अहै। लिखि भाषा चौपाई कहै॥

'पद्मावत' की कथा के दो अंश हैं—पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध में चित्तौड़ के राजा रतनसेन का सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मिनी पर मोहित होना, उसके प्रेम में जोगी बनकर निकलना और अनेक कष्ट पाकर उससे विवाह करके उसे चित्तौड़ लाना वर्णित है। उत्तरार्द्ध में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन द्वारा पद्मिनी को हथियाने के लिए चित्तौड़ पर चढ़ाई करने, चित्तौड़ दुर्ग पर घेरा डालने, रतनसेन को कैद करने, गोरा बादल द्वारा रतनसेन को कैद से छुड़ाने, और कुंभलनेर के राजा देवपाल से युद्ध करते हुए रतनसेन के मारे जाने का वर्णन हुआ है।

पद्मावती या पद्मिनी सिंहल द्वीप के राजा गंधर्वसेन की सर्वगुण-सम्पन्न पुत्री थी। उसने एक तोता पाल रखा था जिसका नाम हीरामन था। तोता वेद शास्त्र का ज्ञाता था। एक बार वह बहेलिये के जाल में फंस गया। चित्तौड़ का एक ब्राह्मण उसे खरीदकर चित्तौड़ ले आया। राजा रतनसेन ने तोते के गुणों की प्रशंसा सुनकर एक लाख मुद्राएँ देकर ब्राह्मण से उसे खरीद लिया।

हीरामन तोते ने रतनसेन से पद्मावती के सौंदर्य की प्रशंसा की। रतनसेन के हृदय में पद्मावती के प्रति प्रेम जाग्रत हो गया। वह जोगी-वेश धारण कर अपने बहुत से साथियों के साथ हीरामन तोते के मार्ग निर्देशन में सिंहल द्वीप के लिए चल

१ द्रष्टव्य—पदमावत संजीवनी व्याख्या पृ० ३८ जायसी-ग्रंथावली रामचंद्र शुक्ल में पदमावत छन्द १८।१६ 'अखरावट' छंद २६ आखिरी कलाम छंद ३ चित्ररेखा पृ० ७३

२ द्रष्टव्य—पदमावत २०।१२ 'जायसी ग्रंथावली' माताप्रसाद गुप्त पृ० ६६० 'पदमावत सं० व्याख्या प्राक्कथन पृ० ३७। हिन्दी अनुशीलन धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक वर्ष १८ अंक १२ पृ० ३७८ पर प्रकाशित डा० रामअवध पाण्डेय का 'जायसी शिष्य क्रम और गुरु परम्परा' शीर्षक लेख। डा० रामअवध पाण्डेय का मत है कि जायसी के गुरु शाह बुरहान थे और वह मेंहदवी सम्प्रदाय से संबंधित थे। उन्होंने सयद अशरफ जहाँगीर को जायसी का कुल-पूज्य तथा शेख बुरहान को दीक्षा-गुरु बताया है।

पड़ा। सात समुद्रों को पार कर और मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ सहते हुए रतनसेन सिंहल द्वीप में पहुँच गया। तोते ने उसे शिव मंदिर में ठहरा दिया। इधर उसने पद्मावती को रतनसेन के आने की सूचना दी। पद्मावती के हृदय में रतनसेन के प्रति प्रीति उत्पन्न हो गयी। वह उससे मिलने के लिए शिव मंदिर में आयी परन्तु उसके अद्भुत सौंदर्य को देखकर रतनसेन मूर्छित हो गया। पद्मावती उसकी छाती पर चन्दन से कुछ लिख आयी। सुध आने पर रतनसेन ने उस लेख को पढ़ा और विलाप करने लगा। शिवजी ने आविर्भूत होकर रतनसेन को सिद्ध गुटिका प्रदान की और सिंहलगढ़ में प्रवेश करने का गुप्त मार्ग बतला दिया।

रतनसेन को राजा गंधर्वसेन के सैनिकों ने पकड़ लिया। उसको सूली पर चढ़ाने का दण्ड मिला। तभी एक भाट ने आकर रतनसेन के कुल शील का परिचय दिया। हीरामन तोते ने भी साक्ष्य दिया। गंधर्वसेन ने पद्मावती का विवाह रतनसेन से कर दिया। विवाहोपरान्त रतनसेन एक वर्ष तक सिंहल में रहा।

एक दिन वह आखेट करने वन में गया हुआ था। थककर वह एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगा। तभी एक पक्षी ने उसे उसकी पूर्व विवाहिता पत्नी नागमती का विरह संदेश कह सुनाया। रतनसेन को चित्तौड़ की याद हो आयी। गंधर्वसेन से विदा लेकर वह पद्मावती के साथ समुद्र मार्ग से स्वदेश के लिए रवाना हुआ।

समुद्री तूफान में उसका जहाज टूट गया। पद्मावती और वह परस्पर बिछुड़ गये। समुद्र और उसकी पुत्री लक्ष्मी की कृपा से पद्मावती के साथ उसका पुनर्मिलन हुआ। चित्तौड़ पहुँचकर वह अपनी दोनों रानियों के साथ सुखपूर्वक रहने लगा।

राघवचेतन नामक एक तांत्रिक ब्राह्मण रतनसेन से असंतुष्ट होकर दिल्ली के शाह अलाउद्दीन के दरबार में आया। उसने शाह के सामने पद्मावती के सौन्दर्य की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा की। पद्मावती को प्राप्त करने के लिए अलाउद्दीन ने सदल बल चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। चित्तौड़गढ़ के चारों ओर उसने घेरा डाल दिया। रतनसेन ने संधि प्रस्ताव किया। अलाउद्दीन को गढ़ के भीतर बुलाकर एक दर्पण में पद्मावती का प्रतिबिम्ब दिखा दिया। प्रतिबिम्ब देखकर शाह मूर्छित हो गया। वह धोखे से रतनसेन को दुर्ग के बाहर तक ले गया और उसको उसने बंदी बना लिया। गोरा बादल ने युक्तिपूर्वक रतनसेन को बंदीगृह से छुड़ाया। शाही सेना के साथ युद्ध करते हुए गोरा ने वीरगति पायी।

रतनसेन के चित्तौड़ वापस आ जाने पर पद्मावती ने उससे शिकायत की कि उसकी अनुपस्थिति में कुम्भलनेर के राजा देवपाल ने एक दूती भेजकर उसे फुसलाने की कुचेष्टा की थी। रतनसेन ने देवपाल पर चढ़ाई कर दी। दोनों में द्वन्द्व-युद्ध हुआ जिसमें रतनसेन की मृत्यु हो गयी। पद्मावती और नागमती राजा के शव के साथ चिता पर सती हो गयीं। शाह अलाउद्दीन ने चित्तौड़गढ़ में आकर पद्मावती की केवल राख पायी।

चित्ररेखा

कृति और कवि—यह जायसी की वृद्धावस्था की एक छोटी-सी रचना है। इसकी कथा 'पदमावत' की तरह दुखान्त नहीं, वरन् सुखान्त है। यह शुद्ध प्रेम कथा है। कहीं कहीं परोक्ष सत्ता की ओर इंगित है। ससनवी पद्धति पर दोहे चौपाई में रचित है। सात अर्द्धालियों के बाद एक दोहे का क्रम निर्वाह हुआ है। इस काव्य के प्रकाशक हैं हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी और संपादक हैं श्री शिवसहाय पाठक।

कथा—अवध भोजपुर जनपद में आज भी प्रचलित 'चित्ररेखा की कथा' नाम से प्रसिद्ध एक लोक-कथा इस काव्य का आधार है। कथा इस प्रकार है चन्द्रपुर के राजा चन्द्रभानु की रूप-गुण-शील-सम्पन्न कन्या का नाम था चित्ररेखा। उसका विवाह ब्राह्मणों ने सिंघल के राजा सिंघनदेव के कुबड़े बेटे से तय कर दिया। परन्तु यह विवाह न हो पाया।

कन्नौज के राजा कल्याणसिंह के कोई सन्तान न थी। घोर तप करने के बाद उसकी रानी से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजकुमार का नाम प्रीतम कुंवर रखा गया। ज्योतिषियों ने बताया कि राजकुमार अल्पायु है—केवल बीस वर्ष तक जीवित रहेगा। मरने के ढाई दिन रह गये, तब प्रीतम कुंवर काशी गति पाने के लिए काशी की ओर चल पड़ा।

रास्ते में चन्द्रपुर पड़ा। वह थककर एक वृक्ष के नीचे सो गया। उधर से सिंघल के राजा की बारात गुजरी। सिंघनदेव ने उससे अनुरोध किया कि कुछ देर के लिए वह उसके कुबड़े बेटे का स्थान ग्रहण कर ले और बारात का दूल्हा बन जाय। प्रीतम कुंवर ने स्वीकार कर लिया। विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ परन्तु रात में प्रीतम कुंवर चित्ररेखा की ओर से पीठ करके सोता रहा। राजकुमारी के सो जाने पर उसके आंचल पर अपना परिचय लिखकर वह काशी की ओर चल पड़ा। जागने पर चित्ररेखा ने आंचल पर का लेख पढ़ा। वह सती होने के लिए प्रस्तुत हो गयी। उधर काशी में प्रीतम कुंवर साधु संन्यासियों को दान-पुण्य कर रहा था। व्यास मुनि के मुंह से 'चिरजीव हो' आशीर्वाद निकल पड़ा। प्रीतम की आयु बढ़ गयी। प्रीतम घोड़ा दौड़ाता चन्द्रपुर पहुंचा। राजकुमारी चित्ररेखा चिता पर चढ़ने ही वाली थी। वह रुक गयी। राजकुमारी और प्रीतम कुंवर का पुर्नमिलन हुआ।

मधुमालती

कृति और कवि—'मधुमालती'[1] सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा की एक

---

१ मधुमालती के अब तक दो संस्करण प्रकाशित हुए हैं। पहले संस्करण का संपादन डा० शिव गोपाल मिश्र ने और दूसरे का डा० माताप्रसाद गुप्त ने किया है। इनके प्रकाशक क्रमश हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी और मित्र प्रकाशन इलाहाबाद हैं। इन दोनों में डॉ० गुप्त की पुस्तक पाठ शोधन की वैज्ञानिक विधि से संपादित होने के कारण अधिक प्रामाणिक है। हमने प्रस्तुत प्रबंध में इसी का उपयोग किया है। —लेखक

मानवन कृति है। इसकी रचना मंझन ने सलीम शाह के काल में ९५२ हिजरी[1] अर्थात् १५४५ ई० में की।[2] ये मिर्जापुर जिले के चुनार नामक स्थान के रहने वाले थे। इनके गुरु शेख मुहम्मद गौस थे। गौस सूफियों के शत्तारी सम्प्रदाय के थे।[3] मंझन की ६० वर्ष की अवस्था में आगरा में देहान्त हुआ। (विशेष द्रष्टव्य— मधुमालती डॉ० माताप्रसाद गुप्त द्वारा लिखित भूमिका)।

कथा—कनगिरि गढ़ के निःसंतान राजा सूरजभानु ने संतान प्राप्ति के लिए एक तपस्वी की सेवा की। तपस्वी द्वारा प्रदत्त पिण्ड को खिलाने से पटरानी को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। उसका नाम मनोहर रखा गया। ज्योतिषियों ने पन्द्रहवें वर्ष में उसके प्रेम वियोगी होने की भविष्यवाणी की। बारहवें वर्ष उसका राजतिलक कर दिया गया।

जब वह चौदह वर्ष ग्यारह मास का हुआ तब एक रात अप्सराओं ने उसे निद्रावस्था में उठाकर महारस नगर के राजा विक्रम की कन्या मधुमालती की शय्या पर ला सुलाया। मनोहर और मधुमालती के हृदय में एक-दूसरे के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया। पुनः अप्सराओं ने प्रातःकाल होने से पहले मनोहर को उसके महल में पहुँचा दिया।

मनोहर विरह व्याकुल होकर जोगी वेश धारणकर मधुमालती की तलाश में निकल पड़ा। मार्ग में प्रेमा नामक एक राजकुमारी से उसकी भेंट हुई जिसे एक राक्षस ने कैद कर रखा था। प्रेमा चित्त बिसराउ नगर के राजा चित्रसेन की कन्या थी। वह मधुमालती की बाल-सहेली निकली।

मधुमालती की माँ रूपमंजरी विद्याधरी थी। वह प्रत्येक मास की द्वितीया तिथि को प्रेमा की माँ से मिलने आया करती थी। मनोहर ने प्रेमा से राक्षस की मृत्यु का रहस्य जान लिया। राक्षस के प्राण दक्षिण दिशा में स्थित एक अमृत वृक्ष में बसते थे। मनोहर ने उस वृक्ष को जड़ से काट डाला। राक्षस मर गया। प्रेमा को उसने चित्त बिसराउ नगर में उसके माता-पिता के पास पहुँचा दिया। द्वितीया तिथि को रूपमंजरी मधुमालती को लेकर आयी। प्रेमा ने मनोहर और मधुमालती को मिला दिया। रूपमंजरी ने मंत्रबल से मनोहर को सुप्तावस्था में कनगिरि भेज दिया और मधुमालती को लेकर अपने घर आ गयी।

---

१ सन नौ सौ बावन जब भए सती पुरुष कलि परिहरि गए।
जब हम जिय उपजी अभिलाषा कथा एक बाँधउँ रस भाखा॥
— मधुमालती सं० माताप्रसाद गुप्त १६।१-२

२ मंझन का जीवनवृत्त शीर्षक लेख डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय त्रिपथगा जुलाई १९५९ सूचना विभाग लखनऊ।

३ डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय का हिन्दुस्तानी प्रयाग भाग २ अंक ३ जुलाई-सितम्बर १९५९ में प्रकाशित मंझन के गुरु शेख मुहम्मद गौस शीर्षक लेख।

मधुमालती जब विरह-व्यथित होकर रुदन करने लगी तब रूपमंजरी ने उसे पानी का छींटा मारकर पक्षी बना दिया। मधुमालती पक्षी बनकर उड़ गयी। वह पौनरिपुरी (पद्मनगर।) के राजकुमार ताराचन्द के पास पहुँची। ताराचन्द उसे लेकर महारस नगर में गया। रूपमंजरी ने पक्षी को पुनः नारी बना दिया। उधर मनोहर मधुमालती को खोजता हुआ प्रेमा के पिता के नगर चित विसराउँ में पहुँच गया। प्रेमा ने यह समाचार महारस नगर में भेज दिया। विक्रम और रूपमंजरी मधुमालती को लेकर आ गए। वहीं मधुमालती और मनोहर का विवाह हुआ। प्रेमा का विवाह ताराचन्द से हो गया। दोनों अपनी अपनी वधुओं को लेकर अपने अपने देश को लौट गये।

माधवानल-कामकंदला

कृति—आलम कृत 'माधवानल कामकंदला' की दो प्रकार की प्रतियों के हस्त लेख मिले हैं। एक प्रति छोटी है और दूसरी बड़ी। छोटी प्रति में, जो नागरी प्रचारिणी सभा काशी में सुरक्षित है और कुछ पाठ भेद के साथ जिसका एक रूप 'हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद से हिन्दी प्रेमगाथा काव्य-संग्रह' में प्रकाशित हो चुका है, जयती अप्सरा का प्रसंग नहीं है। कुछ विद्वान छोटी प्रति को ही आलम की प्रामाणिक रचना मानते हैं और बड़ी प्रति के अधिक पाठांश को प्रक्षिप्त मानते हैं।[1]

आलम ने माधवानल कामकंदला की रचना ९९१ हिजरी (१६३९-४० वि०) में की। इस सम्बन्ध में आलम ने लिखा है —

सन नौ से इक्यावन जबहीं। कथा आरम्भ कीन्ह यह तबहीं॥

श्री उदयशंकर शास्त्री 'इक्यावन' का पाठ 'इक्यानबे' होना मानते हैं और इसका रचना काल आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार ९९१ हिजरी निर्धारित करते हैं। हमें भी ९९१ हिजरी वाली तिथि ही ठीक जान पड़ती है, क्योंकि यदि हम इसका रचना-काल ९५१ हिजरी मानें, तो इसका अर्थ यह होगा कि इस काव्य की रचना के समय अकबर की आयु ३ वर्ष की रही होगी, जो शाहेवक्त की जगह अकबर की प्रशंसा को देखते हुए असंगत है।

माधवानल कामकंदला को हमने सूफी काव्य और आलम को सूफी कवि माना है। इसके कई कारण हैं—(१) काव्य मसनवी पद्धति में लिखा गया है। (२) आलम के गुरु (पीर) सैयद मुहम्मद गौस सूफियों के कादरिया सम्प्रदाय के थे। अतः आलम का सूफी मतानुयायी होना सिद्ध होता है। (३) यद्यपि आलम का यह काव्य लौकिक प्रेम (इश्क मजाज़ी) के सहारे अलौकिक प्रेम (इश्क हक़ीक़ी) की मंजिल की ओर स्पष्ट रूप से बढ़ता नहीं दिखायी देता, तथापि इसमें प्रेम की उत्कटता और

---

१ हिन्दी अनुशीलन, धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक, वर्ष १२, अंक १-२ में प्रकाशित श्री उदयशंकर शास्त्री का लेख 'माधवानल-कामकंदला का रचयिता आलम सूफी था ?'

विरह की व्यापकता का सम्यक् चित्रण है। अन्य सूफी प्रेमाख्यानों के नायक और नायिका जब कि प्रेम की पीर में मूर्च्छित ही होते दिखाये जाते हैं तब इस काव्य में नायक-नायिका का पारस्परिक प्रेम अनन्यता और तन्मयता के उस उच्च धरातल पर पहुँच गया है जहाँ एक के बिना दूसरे की स्थिति भी असम्भव हो जाती है। माधवानल और कामकंदला एक दूसरे की मृत्यु का समाचार सुनते ही प्राण-त्याग कर देते हैं। इस काव्य में प्रेम और विरह की उत्कटता का मार्मिक चित्रण हुआ है।

प्रेम का वर्णन करते हुए कवि कहता है—

नेह लाग जो बिछुर कोई। निस दिन रोम रोम दुख होई ॥
यह जिय जान नेह नहिं कीजै। बिछुर संताप अपनपो लीजै ॥
नेह जैसी खाँड़ की धारा। दोउ दिस पै न छुवन को पारा ॥
जान नेह पतंग, मिलत मन नहिं रह सक।
देखत हो मैं अंग, छूट विरह वियोग ते ॥

कामकंदला की विरहाकुलता का कवि ने सुन्दर चित्रण किया है—

छिन भीतर छिन बाहर आव। छिन माधो माधो गुहराव।
विरह संताप छिन सेज न सोव। अहि निस लव टेक कै रोय ॥

× ×

जो दिन होय तो निस रहै जो निस होय तो प्रात।
बासर रैन जु अधिक दुख विरह सतावै गात ॥

× × ×

पलक पाट ते रहैं निमारे। नगन भये मगन के तारे ॥
माधो विरह कंदला व्यापी। विरह की ताप सकल तन तापी ॥
हारे तन हार मन रहै। हिय पीर काहु नहिं कहई ॥
छिन चेत छिन चेत न आव। जो विष लहर देह मे धाव ॥

× × ×

माधवानल भी कम व्याकुल नहीं है—

विरह समुद्र अगम अति आहो। बूड़ मर पर पाव न थाहा ॥
दुख जल छल कोउ थाह न पाव। जो नर सप्त गगन चढ़ धाव ॥
विरह डसत नर जिव न कोई। जो रे जिव सो बावरो होई ॥
विरह चिनग जिह तन पर जरई। छिन छिन अधिक अगन विसतरई ॥
सोऊ अगन माधो तन लागी। बन बन फिर विरह बैरागी ॥
हिय दुख भर नैन जल विरह अगन तन होम ॥
अंतर जर पिंजर जर, स्वास प्रगट नहिं धोम ॥

× × ×

हियरे अंतर दाह, पीर न कोऊ बूझई ।
बिरहा अगिनि उमाहु, जिहि व्यापै सोई सहै ॥

इस काव्य में प्रेम की पीर माधवानल और कामकंदला दोनों ही पक्षों में परिव्याप्त है और उसका रूप निश्चय ही वासना से भिन्न उदात्त प्रेम की विशुद्धता लिए है।

इस काव्य में चौपाई की पाँच अर्द्धालियों के बाद एक दोहा या सोरठा या दोनों रखने का क्रम रखा गया है।

कवि—आलम के जीवन-वृत्त के विषय में अधिक कुछ ज्ञात नहीं हो सका है। शिवसिंह सरोज में इन्हें सनाढ्य ब्राह्मण और बाद में एक रंगरेजिन के प्रेम में पड़कर मुसलमान होने वाला कहा है। श्री सेंगर ने बादशाह औरंगजेब के शाहज़ादा मुअज्जम जो बहादुरशाह (१७०७-१२ ई०) के नाम से गद्दी पर बैठा की सेवा में इनके होने की बात भी कही है।[1] आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनसे भिन्न मत प्रकट किया है। उनके कथनानुसार—ये अकबर के समय के एक मुसलमान कवि थे जिन्होंने सन् ९९१ हिजरी अर्थात् संवत् १६३९-४० वि० में 'माधवानल-कामकंदला' नाम की प्रेम-कहानी दोहा चौपाइयों में लिखी।[2] वस्तुतः आलम अकबर के समय में ही हुए थे क्योंकि मसनवी पद्धति पर लिखे अपने उक्त प्रेमाख्यानक काव्य में शाहे-वक्त की प्रशंसा करते हुए आलम ने अकबर का उल्लेख किया है—

दिल्लिपति अकबर सुलताना। सप्त दीप में जाकी आना॥

एक अन्य प्रति में यह सोरठा भी मिलता है—

सदली कहै बखान सुजस प्रगट चौहू चक में।
विद्या परम निधान साही अकबर सगन गुरु॥

कवि ने अकबर के साथ उनके मानमंत्री टोडरमल का भी नाम लिया है—

आगे सोधी महाबल मंत्री। राजदाप टोडरमल खत्री॥

इससे यह भी अनुमान किया जा सकता है कि आलम ने अपने काव्य की रचना टोडरमल के आश्रय में रहकर की है।

अब इस सम्बन्ध में प्रायः विवाद नहीं रह गया है कि 'आलमकेलि' और 'माधवानल-कामकंदला' के रचयिता आलम दो अलग व्यक्ति थे। रंगरेजिन के प्रेम में पड़कर मुसलमान बनने वाली किंवदंती का 'माधवानल-कामकंदला' के रचयिता आलम से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो जन्मना मुसलमान थे। इन्होंने अपने गुरु का नाम सय्यद मुहम्मद (मुहम्मद) बताया है—

---

१ शिवसिंह सरोज श्री शिवसिंह सेंगर पृ० ८
२ हिंदी साहित्य का इतिहास पृ० १८२

गोस कुतुब कादरी कहिया । जगमनि सयद मुहदी (मुहमद) तहिया ॥

× × ×

सयद मुहमद पीर सौं जो मन लाव कोइ । तीन लोक की संपदा मनवांछित दस होइ ॥

'सयद मुहम्मद गौस सयद फतह मुहम्मद के पुत्र थे जो सयद अब्दुल क़ादिर सानी लाहौरी के पौत्र थे। ये लोग लाहौर के बहुत प्रतिष्ठित घराने के सूफी थे। सयद मुहम्मद अपने पिता की मृत्यु के बाद उनकी गद्दी पर बैठे। ये अपने पिता के समान प्रख्यात थे और बहुत-से लोग इनके शिष्य थे। १००४ हिजरी में इनका देहान्त हुआ और लाहौर में ही अपने पिता की कब्र के पास ये दफनाये गये। अकबर के एक प्रसिद्ध दरबारी नवाब मुहम्मद जमां खाँ ने इनकी कब्र पर एक बड़ा गुम्बद बनवा दिया जो अभी तक विद्यमान है।'[१]

कथा — माधवानल कामकन्दला की एक हस्तलिखित प्रति, जिसे लघुप्रति कहते हैं और जो नागरी प्रचारिणी सभा काशी के आर्य भाषा पुस्तकालय में सुरक्षित है, के आधार पर माधवानल कामकंदला का प्रेमाख्यान इस प्रकार है—

राजा गोपीचन्द पुहुपावती नगरी के राजा थे। वे बहुत धर्मात्मा थे। उनके नगर में शंकरदास पुरोहित का पुत्र माधवानल विद्या में बृहस्पति के समान और रूप में मकरध्वज के समान था। गान और वीणा वादन में निष्णात था। नगर की सारी नारियाँ उसके अप्रतिम सौन्दर्य के कारण उस पर आसक्त थीं। राजा गोपीचंद से नागरिकों ने शिकायत की। माधवानल को देश निकाला दे दिया गया।

माधवानल कामावती नगरी में आ गया जहाँ का राजा कामसेन था। उस नगरी में कामकन्दला नाम की एक अत्यन्त रूपवती और गुणवती कन्या थी। एक दिन जब राज सभा में उसका नृत्य और गायन हो रहा था तब माधवानल ने मृदंग वादक की कला में दोष निकालकर राजा से सम्मान प्राप्त किया। परन्तु माधवानल ने कामकंदला की नृत्य-कला पर मुग्ध होकर राजा से प्राप्त पुरस्कार को उस पर न्योछावर कर दिया। राजा ने रुष्ट होकर उसे अपने राज्य से बाहर चले जाने का आदेश दिया।

किन्तु कामकंदला ने, जो उसके प्रति प्रेमासक्त हो चुकी थी, उसे जाने न दिया और चोरी छिपे अपने भवन में लाकर रख लिया। रति रंग में दोनों की रात बीती। *प्रातःकाल होते ही माधवानल वहाँ से चल पड़ा। माधव से बिछुड़कर* कामकंदला के हृदय में विरह की आग सुलग उठी।

उधर माधवानल भी उसके वियोग में दुःखी रहने लगा। वह उज्जयिनी पहुँचा। महाकाल के मंदिर के मंडप में उसने अपनी विरह-वेदना सूचक एक दोहा

---

१ श्री उदयशंकर शास्त्री का लेख 'माधवानल कामकंदला का रचयिता आलम सूफी था ?' हिन्दी अनुशीलन धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक वर्ष १२ अंक १-२

निज दिया। जब राजा विक्रमादित्य स्वप्नदर्शन के लिए आये, तब उनकी दृष्टि उस दाह पर पड गयी।

विक्रमादित्य ने दोनों वियुक्त प्रेमियों को मिलाने का निश्चय कर कामावती नगरी पर आक्रमण कर दिया। परन्तु जब कामावती दस योजन दूर रह गयी तब उन्होंने दोनों प्रेमियों के प्रेम की परीक्षा लेनी चाही। वेश बदल कर वह पहले कामकदला के पास गये और उसे बताया कि उसके विरह में माधवानल मर गया है। यह सुनना था कि कामकदला के प्राण पखेरू उड गये। लौटकर जब उन्होंने माधवानल को कामकदला की मृत्यु का समाचार सुनाया तब सुनते ही वह भी मर गया। अब तो राजा विक्रम को बड़ा पछतावा हुआ। उन्होंने प्रायश्चित्त करने के लिए चिता में जल मरने का निश्चय किया। जैसे ही वे चितारोहण करने को हुए उनके मित्र बेताल ने उनको रोक लिया। पाताल जाकर वह अमृत ले आया और माधवानल के मुह में अमृत की कुछ बूँदें टपकाकर उसे जिला दिया। विक्रमादित्य ने वैद्य का वेश धारण कर उसी अमृत से कामकदला को जा जिलाया। दोनों प्रेमियों के सच्चे प्रेम से प्रभावित होकर कामावती नगरी के राजा कामसेन ने माधवानल को कामकदला सौंप दी। दोनों को लेकर विक्रमादित्य उज्जयिनी लौट आये।[1]

× × ×

'माधवानल-कामकदला' की एक बडी प्रति में जो स्व० श्री मायाशंकर याज्ञिक (लखनऊ) के पास थी माधव और कामकदला के पूर्वजन्म का वृत्तान्त भी कथा की भूमिका के रूप में जुड़ा मिलता है। उसमें माधवानल को शंकर का अवतार और कामकदला को इन्द्रलोक की अप्सरा जयन्ती का अवतार कहा गया है।

चित्रावली

कृति – चित्रावली की रचना उसमान ने बादशाह जहाँगीर के राजत्व काल १०२२ हिजरी अर्थात् सन १६१३ ई० में की थी।[2] पहले पहल नागरी प्रचारिणी सभा काशी को इस ग्रन्थ का पता महाराजा बनारस के पुस्तकालय में मिला। पाण्डुलिपि कैथी लिपि में स० १८०२ की लिखी हुई है। श्री जगन्मोहन वर्मा ने ग्रन्थ का सपादन किया और नागरी प्रचारिणी सभा ने सन १९१२ में उसका प्रकाशन। बाजार में इसकी प्रति अब अलभ्य है। पुस्तकालयों में भी सुलभ नहीं है।

कवि —उसमान गाजीपुर के निवासी थे। ये पाँच भाई थे। इनके पिता का

---

१ 'सिंहासन बत्तीसी' की इक्कीसवीं पुतली ने भी माधवानल की यह कथा कही है यद्यपि संस्कृत की सिंहासन द्वात्रिंशिका में ऐसी कोई कथा नहीं है। सिंहासन बत्तीसी के भी सब संस्करणों में यह कथा नहीं पायी जाती। —लेखक

२ सन सहस बाइस जब अहै। तब हम बचन चारि एक कहे॥ —चित्रावली छंद ३१

नाम शेख हुसेन था।[1] इन्होंने भी अपने दो गुरुओं का उल्लेख किया है। उनमें से एक थे नारनौल निवासी शाह निज़ाम जो चिश्तिया सम्प्रदाय के सूफी संत थे और दूसरे थे बाबा हाजी। हाजी बाबा चिन गाज़ीपुर के ही रहने वाले कोई संत थे।

कथा—नेपाल देश के राजा धरनीधर के कोई सन्तान न थी इसलिए वह दुःखी रहता था। पुत्र प्राप्ति के लिए उसने बहुत दान-पुण्य किया। उसकी परीक्षा लेने के लिए शिव-पार्वती तरुण तपस्वियों का वेश धारण करके आये और राजा से उसका सिर माँगा। धरनीधर अपना सिर काटने को उतारू हो गया। शिव ने प्रसन्न होकर उसे पुत्र पाने का वरदान दिया और कहा कि वह सगा ही अवतार होगा। यथा समय राजा धरनीधर की रानी के पुत्र हुआ। ज्योतिषियों ने उसकी जन्म-कुण्डली देखकर कहा कि राजकुमार छत्रपति राजा बनेगा परन्तु किसी स्त्री के प्रेम में पड़कर जोगी बनकर घर भी छोड़ देगा। राजकुमार का नाम सुजान रखा गया। सोलह वर्ष की आयु होते-होते वह सब विद्याओं और कलाओं में पारंगत हो गया।

एक दिन राजकुँवर शिकार खेलने गया। थककर वह एक पर्वत पर सो गया। वह स्थान देव की मढ़ी थी। उस रात देव रूपनगर की राजकुमारी चित्रावली की एकादश वर्षगाँठ का उत्सव देखने के लिए जाने वाले थे। उन्होंने राजकुँवर को भी अपने साथ ही ले जाने का निश्चय किया। उसको उन्होंने राजकुमारी की चित्रसारी में सुला दिया। राजकुँवर की नींद टूटी तो उसने वहाँ एक सुन्दरी का चित्र देखा। उसने अपना भी एक चित्र बनाकर उस सुन्दरी के चित्र की बगल में रख दिया। फिर सो गया। सवेरा होने से पहले ही देव उसे अपनी मढ़ी में उठा ले गये। कुँवर सुजान राजा से कहकर वहाँ एक महल बनवा लिया।

चित्रावली ने प्रातःकाल अपने चित्र के पास एक सुन्दर राजकुमार का चित्र देखा। वह उस पर मोहित हो गयी। एक कुटीचर के कहने पर चित्रावली की माता हीरा ने राजकुँवर का वह चित्र पानी में धुलवा दिया। चित्रावली ने कुटीचर का देश निकाला दे दिया। जिन लोगों ने धुलने से पूर्व राजकुमार का चित्र देखा था उनमें से एक परेवा नामक सेवक था। परेवा ने राजकुमार सुजान को ढूँढ निकाला और उसके मुँह में सिद्ध-गुटिका देकर उसे अपने साथ उड़ा ले चला। रूपनगर पहुँचकर उसने चित्रावली को सूचना दी।

चित्रावली ने अपने प्रेम के चिह्न स्वरूप एक दर्पण कुँवर के पास परेवा के हाथ भेजा। उसने शिवरात्रि के दिन साधु-सन्तों को अपने महल के नीचे भोजन कराया। जोगी के वेश में कुँवर भी उसमें सम्मिलित हुआ। चित्रावली झरोखे पर ना

---

१ गाज़ीपुर उत्तम अस्थाना। देव अस्थान आदि जग जाना॥
कवि बसमान बसे तहिं आऊँ। मत्र हुसन तन जस नाऊँ॥
पाँच भाइ पाँचो बुधि दिये। एक इक भाँति सो पाँचों जिये॥
—चित्रावली छन्द २४

खडी हुई। उसे देखते ही कुवर सुजान मूर्च्छित हो गया। ऐसा भोज रोज दिया जाता रहा और चित्रावली तथा कुवर एक दूसरे को देखते रहे।

जिस कुटीचर को चित्रावली ने देश निकाला दे दिया था, वह भी उस भोज मे सम्मिलित हुआ। उसने कुवर को पहचान लिया। उसने कुवर की आखो मे कोई ऐसी चीज आँज दी जिससे वह अधा हो गया। कुटीचर ने उसे सात समुदर पार लाकर एक अँधेरी खोह म डाल दिया।

एक वनमानुष की कृपा से कुवर सुजान की आखें ठीक हो गयीं। वह जब चित्रावली की खोज म भटक रहा था, तभी एक हाथी ने उसे सूड म लपेट लिया और उसे मुह म रखने ही वाला था कि एक राजपक्षी अपने विशाल पजे म हाथी समेत कुवर को दबोचकर सात समुन्दर पार लाकर समुद्र की रेत पर छोड गया। चेत होने पर कुवर को न हाथी दिखायी दिया न राजपक्षी। उसे सामने एक नगर दीखा। वह सागरगढ था।

सागरगढ के राजा सागर की पुत्री का नाम कौंलावती (कँवलावती या कमलावती) था। कौंलावती जोगी वेशधारी कुवर को देखकर मोहित हो गयी। उसने अपने हार की चोरी का लाछन लगाकर कुवर को बन्दीगृह मे डलवा दिया और चुपके से जाकर चित्रावली के ध्यान मे मग्न कुवर का रूप दर्शन कर आने लगी।

सोरठ (सौराष्ट्र) के राजा सोहिल ने सागरपति की कन्या कौंलावती से विवाह करने के लिए सागरगढ पर चढाई की। कुवर सुजान ने द्वन्द्व युद्ध मे सोहिल को मार डाला। सागर ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री कौंलावती का विवाह कुवर से कर दिया। परन्तु कुवर ने कहा कि जब तक वह चित्रावली को नही पा लेगा तब तक वह कौंलावती का भोग नही करेगा।

तभी गिरनार के मेल म चित्रावली के भेजे दूतो से उसकी भेंट हो गयी। चित्रावली ने परेवा को भेजा। आँखो म लुकाजन लगाकर और अदृश्य होकर कुवर सुजान परेवा के साथ रूपनगर म आ गया।

अपने आगमन की सूचना देने के लिए उसने परेवा को चित्रावली के पास भेजा परन्तु रानी हीरा ने एक दासी की चुगली पर उसे गिरफ्तार करा दिया। परेवा के न लौटने पर कुवर चित्रावली की रट लगाता नगर म घूमने लगा। राजा ने उस पर अपना मतवाला हाथी छूट दिया। कुवर ने हाथी को मार डाला। परेवा ने उसका वास्तविक परिचय सबको दिया। राजा ने प्रसन्न होकर सुजान से चित्रावली का विवाह कर दिया।

उधर कौंलावती कुवर के विरह म कठिनाई से दिन काट रही थी। उसने एक मित्र को दूत बनाकर रूपनगर भेजा। हस मित्र ने चतुराई से कुवर के हृदय म कौंलावती की स्मृति पुन जगा दी।

कुवर सुजान चित्रावली को विदा करके वहाँ से कौंलावती को लेकर समुद्र-

मार्ग से जगन्नाथपुरी आया। अगस्त्य मुनि के आदेश से समुद्र का जल कम हो जाने पर उसका जहाज किनारे आ लगा। वहा से वह नेपाल पहुँचा जहा उसके विरह मे माता पिता अन्धे हो गये थे। चित्रावली और कौलावती सभी बहनो की भांति प्रेम पूर्वक रहती हुई जीवन यापन करती रही।

इस तरह कवि उसमान ने इस कथा को सुखान्त बनाया है[1] जबकि अन्य कवियो ने अपने प्रेमाख्यानो को दुःखान्त।

ज्ञानदीप

कवि—'ज्ञानदीप' के रचयिता शेख नबी थे। ये पहले जौनपुर किन्तु अब सुल्तानपुर जिला (उत्तर प्रदेश) मे दोसपुर थाने के अन्तर्गत अलदमऊ नामक गाव के निवासी थे। ज्ञानदीप की रचना १०२६ हिजरी तदनुसार स० १६७६ वि०[2] (१६१९ ई०) मे हुई। उस समय दिल्ली के सिंहासन पर जहाँगीर विराजमान था।[3] कवि शेख नबी ने जहागीर की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। कवि ने वीर और शृंगार के माध्यम से योग का वर्णन किया है।

कृति—'ज्ञानदीप' की पाण्डुलिपि नागरी प्रचारिणी सभा, काशी मे सुरक्षित है। उसी के आधार पर श्री उदयशंकर शास्त्री ने इस ग्रन्थ का सम्पादन किया है। सुना है कि ग्रन्थ ना० प्र० सभा से मुद्रित हो चुका है किन्तु न जाने किस कारण से अभी तक प्रकाशित नही हुआ। ग्रन्थ दोहा चौपाई मे लिखित है। उसकी भाषा अवधी है। सात चौपाइयो के बाद एक दोहे का क्रम रखा गया है। कुल ४५७ दोहे है और ४५७×७=३१९९ चौपाइया।

ग्रन्थारम्भ मे ईश-वन्दना है। उसके अनन्तर पैगम्बर मुहम्मद साहब की प्रशंसा है। तत्पश्चात पैगम्बर के चार मित्रो अबूबक्र आदिल उमर मुतजा अली और आलिम जुल्फिकार का गुण वर्णन किया गया है। इसके बाद शाहे वक्त सलीम (जहाँगीर) की प्रशंसा की गयी है।

---

१ कवितन्ह भरत कथा के गाई। मोहि भरत हिय लागु डोहाई॥
जो जे प्रेम अमी रस पीया। मर न मारे अमर-जुग जीया॥
एक जियत एक मरत ससारा मरि मरि जियहि ताहि को मारा॥
ज्ञान ध्यान मंदिम सब जप तप सजम नेम।
मान सो उत्तम जगत-जन जो प्रतिपारै प्रेम॥
—उसमानकृत चित्रावली पृ २३७ छं० ६१७

२ एक हजार सन रहे छबीसा। राज सुनही मनहु बरीसा॥
समत सोरह से छिहत्तरा। उक्ति भरत कीन्ह मनसरा॥
अलदेमऊ दोसपुर थाना। जाउनपुर सरकार सुजाना॥
तहवा सेख नबी कवि कही। सम्प्रमर गुन निकल मही॥
—ज्ञानदीप छद १७

३ साहि सलीम छत्रपति छाना। दल के चार कवल दस दानी॥ —वही, छद १४

कथा—राजा शिरोमणि की राजधानी म नमिषारण्य (नीमसार) के मिस्रिप (मिसरिख) नामक स्थान म थी। राजा के कोई पुत्र न था। दान पुण्य करन स उस पुत्र प्राप्ति हुई। ज्योतिपियों न उसका नाम ज्ञानदीप रखा और बताया कि राज-काज सभालने स पूर्व यह योग-साधन करेगा।

बालक ज्ञानदीप जब एक दिन आखेट करने के लिए वन म गया हुआ था, तब उसकी भेंट सिद्धनाथ नामक एक योगी स हो गयी। उसन उस योगी स योग-दीक्षा ले ली और परकाया प्रवेश आदि योग विद्याएँ जान लीं। सिद्धनाथ के आज्ञानुसार वह भ्रमण करता हुआ विद्यानगर म पहुँचा जहाँ का राजा गधव सुखदेव था। उसके दरबार की गायिका सुरज्ञानी चतुररेखा का नृत्य देखकर ज्ञानदीप मूर्च्छित हो गया। सुरज्ञानी भी उस पर अपने को न्योछावर कर बैठी। लेकिन जब राजकुमारी देवजानी ने योगीवेशधारी कुँवर ज्ञानदीप को देखा, तो वह भी उसके प्रेम म दीवानी हो रही। सुरज्ञानी न उदारहृदयता का परिचय दिया और कहा कि कुँवर पर पहल देवजानी का अधिकार है बाद म मेरा। दोनों एक ही रोग की रोगिणी थीं अत उनम मेल हो गया।

सुरज्ञानी न शिवजी को प्रसन्न कर एक मन्त्र प्राप्त किया जिसका प्रयोग कर वह एक कागज के घोड़े को सजीव बना सकी। उस घोड़े पर बैठकर राजकुँवर देवजानी के पास गया। रातभर उसके पास रहन के बाद वह उसी घोड़े स अपनी कुटिया म लौट आया। यही क्रम रोज चलता रहा।

दूतों न राजा स शिकायत कर दी। एक रात राजा न तीर से कागज के जादुई घोड़े को घायल कर दिया। ज्ञानदीप धरती पर आ गिरा। उसे काठ की मञ्जूषा म बन्द कर राजा ने समुद्र म बहा दिया। उस मञ्जूषा को एक बड़ी मछली निगल गयी। मछली को भानपुर जहाँ का राजा रायभान था के लोगों न जाल म फँसा लिया। उसका पेट चीरने पर उसम स ज्ञानदीप निकला। राजा के चूँकि कोई पुत्र न था, इसलिए उसन ज्ञानदीप को ही अपना दत्तक पुत्र बना लिया।

उधर सुरज्ञानी और देवजानी कुँवर ज्ञानदीप के विरह म सन्तप्त रहन लगीं। मौका पाकर देवजानी शिव मण्डप के समीप प्रज्वलित अग्नि कुण्ड म जा कूदी। सुरज्ञानी न भी ऐसा ही किया। पार्वती जी न दयाकर अग्नि को शीतल कर दिया। उधर पता लगाते लगाते योगी सिद्धनाथ और ज्ञानदीप के पिता शिरोमणि राय आकाश मार्ग से उड़कर विद्यानगर म आ गये। वहाँ स्वयंवर म देवजानी न जान बूझकर अपना आँचल गिरा दिया। सुरज्ञानी न दौड़कर उसे सभाला। इस प्रकार उसन भी ज्ञानदीप के साथ भाँवरें ले लीं।

गुरु सिद्धनाथ ज्ञानदीप के पिता राय शिरोमणि को लेकर राजा रायभान के शिविर म गये। ज्ञानदीप अपने गुरु के चरणों म गिर पड़ा। सिद्धनाथ ने रायभान स कहा कि वह ज्ञानदीप को उसके असली पिता को सौंप दे। ज्ञानदीप स बिछुड़न की

आगरा में रायभान के प्राण पखेरू उड़ गये। मानदीप रायभान के शव को लेकर भानपुर गया। एक वर्ष तक वहीं रहकर उसने राजकाज सँभाला।

सिद्धनाथ से सिद्धगुटिका तापाञ्जन का कजरौटा और इच्छानुरूप भोजन देने वाली थाली प्राप्त कर तथा वनस्थी में उन्नमदाना करके मुग्धानी भानपुर गयी। मानदीप उसके साथ चल दिया। विद्यापुर से उसने रतन पिता गुरु तथा पत्नी रूपवाना को भी ले लिया। राय शिरोमणि ने सिमरिख पहुँचने के बाद मानदीप को राजा बना दिया। रूपवानी और मुग्धानी के साथ मानदीप के दिन सुखपूर्वक कटने लगे।

जान कवि और उनके द्वारा लिखित प्रेमाख्यान

कवि—जान कवि का वास्तविक नाम न्यामत खाँ था। जान इनका काव्यगत उपनाम था। ये राजस्थान के नागौर ज़िले के फ़तहपुर नगर के निवासी थे। ये वहाँ के नवाब अलिफ खाँ के दूसरे पुत्र थे। इसलिए ये गद्दी के अधिकारी नहीं बने। ये कयामखानी मुसलमान थे। इनके पूर्वज चौहान राजपूत थे। जान कवि के विषय में अधिक जीवन चर्चा नहीं प्राप्त होती। इसके लिए उनके काव्य के अन्तः साक्ष्यों पर ही निर्भर करना पड़ता है। ये आशु कवि थे और दो-तीन पहर में लेकर दस बारह दिन में ये अपनी कृतियाँ पूरी कर लेते थे। जान कवि हिन्दी अरबी फारसी और संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। इनकी भाषा में प्रवाह और सहजता है। इनकी भाषा पर ब्रजभाषा का विशेष प्रभाव है। इनको कुछ विद्वान सूफी कवि नहीं मानते[1] परन्तु इनके कुछ काव्यों में सूफी दर्शन तत्त्व का निरूपण हुआ है। इनकी संख्या भले ही कम हो परन्तु यदि इनमें भी सूफी तत्त्व मिलता हो तो उसी के आधार पर जान को सूफी कवि कहा जा सकता है। इनके काव्यों में मुख्यतः कथा कवलावती कथा कनकावती कथा बुद्धिसागर या कथा मधुकर मालती और कथा रतनावली को सूफी काव्य परम्परा में गिना जा सकता है। इनके अन्य काव्य मसनवी पद्धति पर लिखित होने पर भी मुख्यतः प्रेमाख्यान ही हैं। इनके कुछ ग्रन्थ मसनवी पद्धति पर नहीं लिखे गये हैं जैसे—कथा छबिसागर कथा निर्मल दे कथा कामरानी पातसाह आदि। जान कवि के बारह प्रेमाख्यान ही ऐसे मिले हैं जिनमें पौराणिक आख्यानों या पात्रों का किसी-न-किसी रूप में उपयोग किया गया है। वे प्रेमाख्यान निम्नलिखित हैं—

(१) कथा कवलावती ( ) कथा कनकावती
(२) कथा कलावती (४) कथा कौतूहली

१ जान कवि कदाचित् कवि पहले थे और सूफ़ी उसके बाद तक कहे जा सकते थे। इनकी जो प्रेमगाथाएँ सूफ़ी प्रेमाख्यानों के अन्तर्गत किसी प्रकार आ सकती हैं उनमें कुछ साधारण लक्षणों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। न इनके किसी कथा स्थल का कहीं कोई स्पष्ट चित्रण लक्षित होता है अथवा न कोई सूफ़ी उपदेश आता है।

—सूफ़ी काव्य-संग्रह सं० आचार्य परशुराम चतुर्वेदी प्रका० हि० सा० स० पृ० १४२

(५) कथा कामलता
(६) कथा पुहुप वरिषा
(७) कथा रतनमंजरी
(८) कथा रतनावती
(९) ग्रंथ लैले मजनू
(१०) कथा छीता
(११) कथा मोहिनी
(१२) कथा नलदमयन्ती
(१३) कथा सुभटराइ

जान कवि ७८ काव्य ग्रंथों के रचयिता हैं। इनके ये सभी ग्रंथ हस्तलिखित रूप में हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग में सुरक्षित हैं और शीघ्र ही वहाँ से प्रकाशित होने वाले हैं। इन ग्रंथों में से केवल २८ ग्रंथ जिनका उपयोग प्रस्तुत प्रबंध में किया गया है, प्रेमाख्यान हैं। हमने हिन्दुस्तानी एकेडेमी के सौजन्य से इन ग्रंथों का अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त किया था। इनके शेष ग्रंथ रस शास्त्र, वैद्यक, ज्योतिष आदि विविध विषयों पर लिखे मिलते हैं। जान कवि की रचना में विस्तार अधिक है गाम्भीर्य कम।

जान कवि ने अपने गुरु के विषय में कुछ काव्यों में उल्लेख किया है। (देखिये कथा कवलावती, कथा बुद्धिसागर, कथा पुहुप बरिषा, कथा नल दमयन्ती आदि का प्रारम्भिक अंश) जान कवि ने उनका नाम शेख माहम्मद लिखा है, वे सूफियों के चिश्तिया सम्प्रदाय के थे। जान कवि ने लम्बी आयु पाई। इनकी सर्वप्रथम रचना १०२३ हिजरी में लिखित है। 'कथा नल दमयन्ती' की समाप्ति कवि ने १०७२ हिजरी अर्थात् १७१८ वि० या १६६१ ई० में की थी। अपनी अंतिम रचना कवि ने ३ वर्ष बाद की थी। इससे लगता है कि कवि ७० वर्ष से भी अधिक जीवित रहा है। इन्होंने अपने काव्यों में शाहे-वक्त की जगह जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब तीनों के शासन का हवाला दिया है। जहाँ 'कथा कँवलावती' में उन्होंने जहाँगीर का शाहे-वक्त के रूप में उल्लेख किया है, वहाँ 'कथा नल दमयन्ती' में औरंगजेब का। इनका अंतिम प्रेमाख्यान 'कथा सुभटराइ' है। (इस सम्बन्ध में विशेष द्रष्टव्य हैं 'जायसी के परवर्ती सूफी कवि और काव्य' डा० सरला शुक्ल पृ० ३७४ से ३७६ और डा० रामकिशोर मौर्य का लेख 'जान कवि और उनकी रचनायें'—हिन्दुस्तानी भाग २४ अंक ४ अक्टूबर दिसम्बर १९६२ पृ० ७४)।

कथा कँवलावती

जान कवि द्वारा रचित यह प्रथम प्रेमाख्यानक काव्य है। इसकी रचना १०२३ हिजरी में हुई थी।[1] इसमें सूफी विचार धारा का प्रतिपादन हुआ है। यह मसनवी पद्धति पर लिखा गया है। दोहा चौपाई, सोरठा और सवैया छंदों का प्रयोग हुआ है। ६ चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम है। कुल ७०४ दोहे हैं। ग्रंथ का विस्तार

---

१ द्वादस दिन में जान कवि करी सुमिरि जगदीस।
तबहीं सन् यों कहत हैं, यक सहस तेईस॥ —कथा कवलावती

हस्तलिखित १६ पृष्ठों में है।

कथा—इन्द्रपुरी नगरी के राजा का नाम रूपराय था। उनके एक हजार रानियाँ थीं। पटरानी का नाम था रूपरेखा। उसके एक गुणवान सुन्दर पुत्र था—इन्द्रवदन (मणि)। वह चौदह विद्याओं में निपुण था। जब वह विवाह-योग्य हुआ तब राजा ने उसका विवाह कर देने की इच्छा प्रकट की। कुँवर ने कहा कि अपना मन चाही स्त्री मिलने पर ही मैं विवाह करूँगा।

राजा ने एक सहस्र से अधिक रूपवती नारियों के चित्र दूर-दूर से मँगवाये। परन्तु राजकुँवर को एक भी चित्र पसन्द न आया।

एक दिन एक तोता इन्द्रवदन के हाथ पर आ बैठा। उसने मदनपुरी के राजा मदनराय की सुन्दरी कन्या कँवलावती (कमलावती) की प्रशंसा की। राजकुँवर के हृदय में कँवलावती के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया। तोते की मध्यस्थता से ही इन्द्रवदन और कँवलावती का विवाह हुआ।

कुछ दिनों ऐसा हुआ कि कँवलावती के सौन्दर्य पर एक देव रीझ गया। उसने उसका अपहरण कर लिया और एक निर्जन नगर के एक ऊँचे धौराहर में उसे रख दिया। कँवलावती ने देव को अपनी देह स्पर्श नहीं करने दी।

इधर इन्द्रवदन कँवलावती को ढूँढने निकला। रास्ते में उसे एक गारुड़ी मिला। गारुड़ी ने उससे कहा कि यह गोरखमुनि की जटा में एक जड़ी छिपाकर रखी हुई है, सो माँग ले। इन्द्रवदन ने ऐसा ही किया। जड़ी पाते ही वह कँवलावती के पास पहुँच गया। कँवलावती ने प्रेम का दिखावा करके देव से उसके प्राणों का रहस्य जान लिया। देव के प्राण सागर के बीच स्थित कमल के फूल पर स्थित एक भौंरे में थे। इन्द्रवदन ने भौंरे को मसल डाला। उसके मरते ही देव भी मर गया। कँवलावती को लेकर इन्द्रवदन मदनपुरी लौट आया।

वीरसागर नामक एक राजा ने कँवलावती को छीनने की कुचेष्टा की। इन्द्रवदन ने उसे मार भगाया। परन्तु समुद्र पार करते समय उसका बोहित टूट गया। वह कँवलावती से बिछुड़ गया। कँवलावती बहती-बहती अपने श्वसुर के नगर में जा लगी। इन्द्रवदन भी गारुड़ी की सहायता से अपने पिता के नगर में आ पाया। बाद में उनका जीवन बहुत सुखमय बीता।

कथा कलावती

कृति—यह ग्रन्थ छोटा सा है। इसके रचयिता हैं जान कवि। इसका विस्तार हस्तलिखित १६ पृष्ठों में है। इसमें दोहा, चौपाई, सवैया तथा पवंगम छन्दों का प्रयोग है। कुल ३१ दोहे, २६ चौपाइयाँ, २ सवैये तथा १५ पवंगम छन्द हैं। कवि ने इसकी रचना दो पहर में पूरी कर डाली थी। इसकी रचना १०२५ हि० (१६१४ ई०) में हुई।

कथा—विलासपुर का राजा राय सिंघरथ निःसन्तान था। एक रात रानी

को स्वप्न में इन्द्र ने दर्शन देकर पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। इन्द्र की कृपा से उत्पन्न होने के कारण पुत्र का नाम पुरन्दर रखा गया।

पुरन्दर जब कुछ बड़ा हुआ तब आखेट खेलने के लिए वन में जाने लगा। वहां उसने एक पुरुष को एक वृक्ष से बँधा पाया। उसको उसने बंधन मुक्त कर दिया। इस उपकार के बदले उस व्यक्ति ने पुरन्दर को एक चिन्तामणि दी तथा रूप-परिवर्तन करना सिखाया।

वन से लौटने पर उसने भोगपुरी नगरी के राजा सुल्तान की पुत्री कलावती के सौन्दर्य की प्रशंसा सुनी। वह जोगी वेश धारण कर भोगपुरी जा पहुँचा। वहां का राजा उसके वीणा-वादन पर प्रसन्न हुआ। उसने अपनी कन्या उससे ब्याह दी।

कथा कनकावती

कृति—जान कवि की यह कृति हस्तलिखित २१ पृष्ठों में है। दोहा चौपाई और सोरठा छन्दों का प्रयोग किया है। पांच चौपाइयों के बाद एक दोहा का क्रम है। इसकी रचना बादशाह जहांगीर के शासन-काल में १६७५ वि० या १६१८ ई० में हुई थी। रचना में कवि को तीन दिन लगे थे।[1]

कथा—भरथनेर के राजा भरथ के कोई सन्तान न थी। वह दुःखी रहता था। भगवत्कृपा से उसके एक पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम ज्योतिषियों ने परमरूप रखा। कुंवर जब बड़ा हो गया तब एक रात उसने एक स्त्री का स्वप्न में देखा। एक चित्रकार से उसने उस स्त्री का काल्पनिक चित्र बनवाया। एक विप्र ने पहचानकर बताया कि वह सिंधुपुरी के राजा सिंधु की कन्या कनकावती है। विप्र ने कनकावती के पास जाकर उसके हृदय में कुंवर परमरूप के प्रति प्रेम उत्पन्न किया। राजा भरथ ने राजा सिंधु पर चढ़ाई कर दी परन्तु हार गया। लज्जावश कुंवर अपने घर नहीं गया, एक संन्यासी के साथ हो लिया। बाद में कनकावती ने उसी विप्र को भेजकर परमरूप का पता लगाया। संन्यासी ने मरते समय कुंवर को कच्छप मन्त्र सिखा दिया जिसके बल से अदृश्य होकर विप्र और कुंवर कनकावती के पास आये। विप्र ने कनकावती का विवाह कुंवर परमरूप से करा दिया। मन्त्र के प्रभाव से परमरूप कनकावती को अपने नगर में ले आया।

उधर सिंधुपुरी में कनकावती की ढूंढ-खोज मची। चरों से पता लगा कि कनकावती भरथनेर में है। राजा सिंधु के सरम्बन्धी राजा जगपति ने भरथनेर पर चढ़ाई की। भरथ हार गया। निराश होकर कुंवर और कनकावती नदी में कूद पड़े। वहन वहां परस्पर बिछुड़ गये। मल्लाहों ने कुंवर को बचाकर राजा जगराज को सौंप दिया जो निस्सन्तान था और कनकावती को राजा जगपति के पास पहुँचा दिया।

---

१ सोलह सौ पचहत्तरे जहांगीर के राज।
तीन दोस में जान कहि यह साज्यो सब साज॥ —कथा कनकावती

वह भी संतानहीन था। दोनों राजाओं ने अपनी संतानों का विवाह कर दिया। इस प्रकार बदली हुई परिस्थिति में कनकावती और परमरूप पुनः आपस में विवाहित हुए।

कथा कौतूहली

कृति—जान कवि रचित यह काव्य हस्तलिखित ३१ पृष्ठों में है। दोहा चौपाई सवैया भुजंगी कवित्त और छप्पय आदि कई छंदों का प्रयोग हुआ है। पाँच चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम है। कुल ७२ चौपाइयाँ ८१ दोहे ६० सवैये २ कवित्त और ६ सोरठे हैं। कुल २२८ छंद हैं।

काव्य के प्रारम्भ में जान कवि ने कौतूहली के पूर्व लिखे गये अपने प्रेमाख्यानों का रचना क्रम भी दे दिया है—

पहिले कथा-कथी कवलावति। पाछे कही पुरंदर रावति॥
भाखी बहुत बात कनकावति। अबहि सुनहु कौतूहलि गावति॥

कथा कौतूहली की रचना संवत १६७५ वि० में हुई—

सोलह सै पचहत्तर कथा-कथी यह 'जान'।
फूटे-टूटे जोरियहु गुरले राखहु मान॥

कथा—हुलासपुर के राजा चंद्रसेन को बहुत दिन पुत्र न होने पर बाद में पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम सरबगी रखा गया। एक दिन जब सरबगी आखेट खेलने गया हुआ था तब उसकी भेंट दो बनजारों से हुई। उन्होंने छबिनेर के राजा जगरूप की सुन्दरी राजकुमारी कौतूहल के विषय में बताया और उसके नख शिख सौंदर्य का वर्णन किया। सरबगी के हृदय में कौतूहल के प्रति प्रीति उत्पन्न हुई। वह छबिनेर गया। वहाँ वह राजा के माली के पास ठहरा और माली का पुत्र प्रसिद्ध हो गया। उसके बीन वादन की ख्याति चारों ओर फैल गयी। कौतूहल ने भी सुना। वह उस पर आसक्त हो गयी। तभी पश्चिम देश के एक राजा ने कौतूहल से विवाह करने के लिए छबिनेर पर चढ़ाई कर दी। सरबगी ने युद्ध करके उस राजा को मार डाला। सरबगी का वास्तविक परिचय ज्ञात होने पर राजा चन्द्रसेन ने अपनी कन्या कौतूहल का विवाह उससे कर दिया। सरबगी कौतूहल के साथ अपने देश लौट आया। उसके माता पिता बहुत प्रसन्न हुए।

कथा कामलता

कृति—जान कवि की यह छोटी सी कथा कृति हिन्दुस्तानी भाग १५ अंक ३ जुलाई सितम्बर १९४५ में प्रकाशित हो चुकी है। इसमें ३२ चौपाइयाँ तथा ३२ दोहे हैं। इसकी रचना संवत १६७८ वि० में हुई—

सोलह सै अठतरा, कथा कथी कवि जान।
भोर बिथुरहु भूलि जिन अनबन बाचहुँ बान॥

कथा—हमपुरी नगरी के राजा का नाम रसाल था। उसके मत्री का नाम बुधवन था। वह सचमुच विद्वान था। वह अच्छा चित्रकार भी था। राजा द्वारा स्वप्न म देखी गया एक सुन्दरी का चित्र उसन उसका रूप वणन सुनकर ही बना दिया। राजा उस चित्र लिखित नारी पर माहित हो गया। एक पथिक से पता चला कि वह चित्र सुन्दरपुरी की शासिका कामलता का है। वह पुरुष द्वेषिणी थी क्योंकि उसन एक अग्निकाड म मोर को अपना मोरनी को छोडकर भाग जाते देखा था, मोरनी आग म जल मरी थी। तब स ही उसन प्रण कर रखा था कि विवाह न करेगी। मत्री बुधवत राजा रसाल को लेकर सुन्दरपुरी पहुँचा। उसन कामलता की चित्रसारी का सजाने के लिए बहुत से चित्र बनाये। उनम स एक चित्र मे उसने दिखाया था कि नदी की बाढ से घिरे मृग शावको को मृगी तो छोड भागती है, पर मृग नही भागता और अत म प्रवाह मे बह जाता है। इस दृश्य को अपने झरोखे स एक व्यक्ति देख रहा है जो रसाल है। बुधवत न रसाल के विषय म कामलता को बताया कि जब स उसन इस घटना को देखा है तभी से वह नारियों स घृणा करन लगा है। कामलता इस बात से रसाल के प्रति आकृष्ट हुई। बुधवन्त के प्रयास से दोनो का विवाह हो गया।

कथा सतवती

कृति—जान कवि की यह कृति सतपरक प्रेमाख्यानो के अन्तगत आती है। इसम ५१ चौपाइया तथा ५१ दोहे हैं। इसका रचना-काल १६७८ वि० या १०२१ हिजरी है।[1]

कथा—एक धनी सौदागर—मसूर की पत्नी का नाम सतवती था। वह सत की पक्की थी। सुन्दर भी बहुत थी। जब मसूर व्यापार के सिलसिले म विदेश गया हुआ था तब उस नगर के एक दुश्चरित्र धनी व्यक्ति छविसागर ने कुट्टनिया को भेजकर सतवती को फुसलाना चाहा परन्तु वह उसके हत्थे न चढी। फिर वह मसूर का हूबहू रूप बनाकर उसके पास गया। सतवती भी धोखे म आ गयी, लेकिन उसने तीन दिन की मोहलत ले ली। उसे अपना शरीर स्पश नही करने दिया। इसी बीच असली मसूर लौट आया। दोनो सतवती पर अपना अधिकार जताने लगे। झगडा राजा के सामने पेश हुआ। राजा ने उनके वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित कुछ बातें पूछी और असली मसूर को सतवती दिला दी। नकली मसूर (छविसागर) का सिर कटवा कर उसन किले के फाटक पर टँगवा दिया। भगवान न सतवती के सत की रक्षा की।

कथा सीलवती

कृति—यह जान कवि का एक लघु प्रेमाख्यान है। इसका रचना काल स०

---

१ सोलह सै अठहत्तरें सन सहस इकतीस।
सतवती सत जान रचि बाध्यौ बिसवा बीस ॥' —कथा सतवती

१६८८ वि० है। ग्रन्थ में २४ चौपाइयाँ और २५ दोहे हैं। विस्तार हस्तलिखित ६ पृष्ठों में है।

कथा—एक धनवान जौहरी की सीलवती नामक रूपवती पत्नी थी। उसके विदेश चले जाने पर एक बाजदार की नजर उसकी पत्नी पर पड़ गयी। बाजदार ने एक सुनारिन और एक रँगरेजिन को अपनी दूती बनाकर सतवती का मन डिगाने के लिए भेजा। सीलवती ने अपने सत की सहायता से अपने शील की रक्षा की।

कथा पुहुप वरिषा

कृति—जान कवि ने इस कृति का प्रारम्भ श्रावण कृष्ण ५ संवत् १६८५ वि० को किया[1] और उसकी समाप्ति सी १०३७ हिजरी (१६८५ वि०) में की कर दी। ग्रन्थ के हस्तलिखित ५४ पृष्ठ हैं। कुल १७२ चौपाइयाँ और १७४ दोहे हैं। इस कृति का शीर्षक नायक या नायिका के नाम पर न होकर उसके मुख्य भाव की व्यंजना करनेवाला है।

कथा—इस काव्य का कथानक मंझन कृत मधुमालती से बहुत साम्य रखता है। कथा इस प्रकार है—सिरीनगर (श्रीनगर) का चौहान राजा भूपाल निस्सन्तान था। बहुत दान पुण्य करने पर उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम पुरुषोत्तम रखा गया। राजकुमार जब बड़ा हो गया तब एक दिन उसने एक रंग बिरंगी चिड़िया पकड़ी। चिड़िया ने बताया कि वह प्रेमपुरी के राजा जगपति की अप्सरा रानी रूपनिधि की पुत्री सुकन्या है। अपने रानी बनने की कथा उसने इस प्रकार वर्णन की—

रतनपुरी के राजकुँवर सुरपति की राजसभा में रूपवती नारियों की चर्चा के प्रसंग में एक वृद्ध ने मेरे (सुकन्या के) सौन्दर्य की प्रशंसा कर दी। राजकुँवर सुनते ही मूर्च्छित हो गया। वैद्यों को बुलाया गया। सबने यही कहा कि इसे प्रेम रोग हो गया है।

राजकुँवर अपने अभिन्न मित्र महानन्द को साथ लेकर मुझे (सुकन्या को) ढूँढ़ने के लिए निकला। सागर में तूफान से टकराकर उनकी नौका टूट गयी। सुरपति और महानन्द बिछुड़ गये। सुरपति एक जंगल में चला गया जहाँ एक महल में उसे एक सुन्दरी सोती हुई मिली। सुन्दरी ने अपना नाम निरमलदे बताया। वह चतुरपुर के राजा चतुर्भुज की कन्या थी। उसे एक देव ने बन्दी बना रखा था। वह मेरी (सुकन्या की) सखी थी। सुरपति ने निरमलदे को अपनी धर्म बहिन बना लिया। देव को मारकर उसका उद्धार किया। सुरपति निरमलदे को लेकर चतुरपुर आया। महानन्द भी घूमता फिरता वहाँ आ गया। निरमलदे ने अपनी माँ से कहकर

---

1 सम्मत सोरह से पच्चासी मन सापर ते इस निकासी।
प्रथम पचमी सावन मास कीन वरिषा पुहुप हुलास॥ —पुहुप वरिषा

मुझे (सुकशी को) और मरी माँ को भी बुलवा लिया। एक रात मुझे कुवर के साथ सोत देखकर मेरी माँ ने मुझे तो प्रेमपुरी म और कुवर को उसक नगर कचनपुरी म भेज दिया। मुझे मेरी माँ न अभिमंत्रित जल छिड़ककर पक्षी बना दिया। तब स ही मैं सुरपति को ढूढ रही हूँ।"

कुवर पुरुषोत्तम सुकशी को पिजडे म लेकर प्रेमपुरी की ओर चल पडा। सुकशी की मा न जल छिडककर उस पुन अप्सरा बना लिया। उधर सुरपति भी ढूढता खोजता चतुरपुर आ गया। निरमल दे से समाचार पाकर सुकेशी के माता पिता पुरुषोत्तम को साथ लेकर चतुरपुर ही आ गय। वही पुरुषोत्तम का विवाह निरमल द स सुरपति का विवाह सुकेशी से और महानन्द का विवाह परमल दे से हुआ। तीनो मित्र अपनी अपनी पत्नियो के साथ अपन-अपने नगर को विदा हुए। आजीवन उनम सम्पक बना रहा।

कथा रूपमजरी

कृति—इस काव्य की रचना जान कवि ने अगहन सवत १६८५ वि० म की। इसम ८८ दोहे तथा चौपाइया हैं। कवि ने तीन पहर म इसकी रचना कर दी। काव्य का विस्तार हस्तलिखित १२ पृष्ठो म है। प्रेम की अलौकिकता और गुरु की महिमा का यत्र-तत्र वणन है।

कथा —हस्तिनापुर नगरी के राजा हस्तिमल को बहुत दान-पुण्य के पश्चात एक पुत्र की प्राप्ति हुई। उसका नाम नार्नसिह रखा गया। उसका एक लँगोटिया यार था यार्यसिह। वह बहुत चतुर था। कुवर जब युवा हुआ तब उसन एक रात स्वप्न म एक सुन्दरी को देखा। अगली रात वह फिर स्वप्न म दिखाई दी। कुवर ने उसका नाम पता पूछा। सुदरी ने अपने कचन पर हाथ रखकर, कान पर हाथ रखकर थोडा टहलकर दपण म मुह निहारकर और हँसकर कुछ गूढ सकेत किये जिनका अथ यार्यसिह न क्रमश यह निकाला कि उसका नगर कचनपुर है घर हथियापौर पर है पिता का नाम वर्णसिह है माता का नाम हसगवनि (हसगामिनी) है और उसका अपना नाम रूपमजरी है।

दोनो मित्र रूपमजरी स मिलने के लिए चले। कचनपुर पहुँचकर कुवर ने राजा के बाग की मालिन को धन का लालच देकर फुसला लिया। उसके माध्यम से रूपमजरी के साथ उसक मिलन हुआ। बाग म कुछ तपस्वी आये उन्होंने नार्नसिह और रूपमजरी का विवाह करा दिया। नार्नसिह और यार्यसिह रूपमजरी को ले भागे। वर्णसिह को पता चला तो उसने पीछा किया। परन्तु एक तपस्वी ने उनका रूप परिवतन करके उन्हें छिपा लिया। वर्णसिह के वापस लौटन पर वे अपने असली रूप म आ गए। हँसी खुशी अपने देश लौट आये।

कथा रतनमजरी

कृति—जान कवि का यह प्रेमाख्यानक काव्य विस्तार की दृष्टि से उनके सभी

प्रेमाख्यानों में बड़ा है। हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग में संगृहीत पोथी के प्रारम्भिक ७ पन्ने गायब हैं। उनमें ८० दोहे थे। पोथी में कुल २६४ चौपाइयाँ तथा २६९ दोहे रहे होंगे। ५ चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम निर्वाह हुआ है। ग्रंथ की रचना १०४० हिजरी अर्थात् सन् १६३१ ई० में हुई।

कथा—काव्य का जितना अंश प्राप्त है, उसकी कथा यह है: चंदपुरी के राजा अजयचन्द के पुत्र मधुसूदन ने स्वप्न में एक सुन्दर स्त्री को देखा जिसने अपना नाम रूपमंजरी बताया। एक चित्रकार से उसने उस स्त्री का काल्पनिक चित्र बनवा लिया। उधर रूपमंजरी ने भी उसी समय स्वप्न में मधुसूदन को देखा था। उसने भी उसका चित्र एक चित्रकार से बनवा लिया था।

एक दिन एक राजपक्षी मधुसूदन को ले उड़ा और एक वन में डाल गया। उस वन में एकादशी के दिन रूपमंजरी आया करती थी और किसी पुरुष को देख पाने पर मृत्यु दण्ड देती थी। उस दिन एकादशी ही थी। रूपमंजरी ने मधुसूदन को देखा। पहले क्रुद्ध हुई परन्तु बाद में अपने पास रखे चित्र से उसकी पहचान करके प्रसन्न हुई। कुँवर ने भी अपने पास रखे चित्र से रूपमंजरी का मिलान किया। रूपमंजरी ने अपने माता पिता से कहा। उन्होंने दोनों का विवाह कर दिया।

एक देव रूपमंजरी को प्रेम करता था। उसने मधुसूदन को बहुत सताया। बार-बार उसे वह दूर छोड़ आता था। तभी मधुसूदन की भेंट एक सच्चे साधु से हो गयी। उसने उसे दो बाण—अग्निबाण और जलबाण—दिये। उनसे उसने देव को मार डाला। रूपमंजरी से उसका पुनर्मिलन हो गया।

एक रात स्वप्न में अपने माता पिता को खिन्न देखकर उसे घर की याद हो आयी। वह रूपमंजरी को साथ लेकर अपने नगर में वापस आ गया। माता पिता बहुत हर्षित हुए।

ग्रन्थ बुद्धिसागर या मधुकर-मालती

कवि: हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग में संगृहीत प्रति में ग्रन्थ का नाम 'ग्रन्थ बुधिसागर या कथा मधुकर मालती' लिखा है किन्तु कथा जान का एक अन्य ग्रन्थ 'बुद्धिसागर' मिल चुका है। यह पाठ संबंधी भ्रम ही अनुमान है। अतः यह ग्रन्थ कथा मधुकर मालती ही है, ऐसा है कि इसकी पुष्पिका के इस अंश से सूचित होता है— इति सु[न्द]र मालती की कथा मधुकर की। कवि जान की उक्ती। कातिक की दसमी फागुन कृष्णा ४ सवत १६९१ वि० को पूर्ण हुई।[1] ग्रन्थ का विस्तार हस्तलिखित २६ पृष्ठों में है। इसमें दोहा चौपाई तथा सवैया छन्दों का प्रयोग हुआ है।

---

१ सोरह से इक्यानवी हो फागुन बदि चार।
जान कवि कानो कथा करि के ग्यांन विचार॥
—बुद्धिसागर या कथा मधुकर मालती (प्रति में)

कथा — मधुकर अयोध्या नगर में एक सौदागर का पुत्र था और मालती उसी नगर के एक सौदागर की चेरी की पुत्री थी। दोनों एक ही चटसार में पढ़ते थे। तभी से उनमें परस्पर आकर्षण उत्पन्न हुआ। बाद में मधुकर मालती को उसके घर भी पढ़ाने जाने लगा। प्रेम वल्लरी अधिक लहलहा उठी। मधुकर के पिता को पता चला तो वह उसे अपने साथ विदेश लेता गया।

उन्हीं दिनों विलायत से एक बादशाह का वजीर दासियों की खरीदारी के लिए अवध में आया। मालती के सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर उसने एक सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ देकर उसे खरीद लिया। चलते चलते मालती चटसार के अपने गुरु से यह कहती गयी कि मधुकर आ जाय, तो उससे यह दीजियेगा कि मैं आजीवन उसकी ही रहूँगी।

उधर, मधुकर का पिता विदेश में मर गया। वह अयोध्या लौटा। गुरु ने उससे मालती का संदेश कह दिया। मधुकर उसी देश में गया, जहाँ मालती गयी थी। मालती का सौंदर्य उसके लिए विपत्तिकारी बना हुआ था। वजीर की पाप दृष्टि उस पर पड़ी परन्तु उसने मुँह नहीं लगाया। बादशाह तक को उसने दुत्कार दिया। शाहजादी उसे अपनी ससुराल ले गयी तो वहाँ उसका नौकर उसका आशिक हो गया। मधुकर हर जगह मालती के साथ जा रहा था। मालती को शाहजादे ने एक सौदागर के हाथ बेच दिया। सौदागर उसे नाव में रखकर ले चला। एक अन्य देश में वे पहुँचे। वहाँ एक धीवर मित्र की कृपा से मधुकर को एक मछली के पेट से दस रत्न प्राप्त हुए। उसने मालती के एवज में पाँच रत्न देकर उसे खरीद लिया। दोनों अपने देश लौटने लगे तो समुद्र में भँवर में पड़कर उनकी नौका टूट गयी। दोनों पुनः बिछुड़ गये। अंततः दोनों बगदाद पहुँचे। वहाँ खलीफा हारूँ रशीद ने उदारतापूर्वक दोनों प्रेमियों को परस्पर मिला दिया। दोनों को उन्होंने अयोध्या पहुँचाने का भी प्रबंध कर दिया। मालती मधुकर का प्रेम लोगों के लिए आदर्श बन गया।

कथा रतनावली

कृति—मान कवि ने इस ग्रंथ में १७५ दोहे हैं। ९० चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम रखा गया है। शाहवक्त की जगह शाहजहाँ की प्रशंसा की गयी है। ग्रंथ की रचना अगहन वदी ७ संवत् १६९१ वि० या १०४४ हिजरी को सम्पूर्ण हुई। काव्य सृजन में कुल नौ दिन लगे।[1]

---

१ सोरह से इक्यानुव बरष रतनावति बाधी मैं हरष।
अगहन बदि सात कहि जान कथा सपूरन करयो बखान॥
कथा पुरातन कीना नई नौ दिन में सपूरन भई।
सन सहस चार चालीस जान बखानी जिसवा बीस॥

कथा   जान कवि ने इस कथा को शामी मूल का बताया है। उन्होंने नामों का भारतीयकरण कर दिया है।

अमतपुरी में राजा जगतराइ संतानहीन थे। वृद्धावस्था में उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम महिमोहन रखा गया। उन्हीं दिनों राजा के प्रधानमंत्री जगजीवन की पत्नी ने भी एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम उत्तिम रखा गया। दोनों बच्चों का साथ साथ पालन पोषण होने लगा। राजकुंवर जब चौदह वर्ष का हो गया और चौदहों विद्याओं का पंडित तब राजा ने उसको तथा उत्तिम को सरोपा भेंट किया। मोहन को उन्होंने नबी सुलेमान की दी हुई एक अँगूठी भी दी। राजकुंवर के जामे पर एक सुन्दर लड़की का चित्र बना हुआ था। कुंवर उस पर रीझ गया और खटपाटी लेकर पड़ गया। उत्तिम को उसने अपने मन की व्यथा बतला दी। उत्तिम ने राजा को बतला दिया।

राजा ने बताया कि उसे यह जामा अप्सराओं ने दिया था और उन्होंने ही कहा था कि इस जामे पर जिस स्त्री की तस्वीर है वह फुलवारी नगरी के राजा सूरज की पटरानी पद्मावती की पुत्री रतनावती है। वह अत्यंत सुन्दर है। चूंकि वह सब अप्सराओं से बड़ी है इसलिए उसकी आकांक्षा करना व्यर्थ है।

मोहन और उत्तिम रतनावती की खोज करते करते चीन देश पहुँचे वहाँ से रूप देश की ओर चले। समुद्री यात्रा में उनकी नौका तूफान के थपेड़ों से फट गयी। काष्ठ फलक पर बैठकर वे अलग अलग दिशाओं में बह चले। चालीस दिन बाद मोहन किनारे लगा। वह नरभक्षियों के हाथ पड़ गया। नरभक्षी राजा की लड़की 'जगिन' उस पर रीझ गयी। परन्तु मोहन ने अपने को पौरुषहीन बतलाकर उससे पीछा छुड़ाया। एक दिन मौका पाकर मोहन वहाँ से भाग निकला। वह एक अन्य राज्य में पहुँचा जहाँ का राजा संयोग से उसी के नगर अमतपुर का निवासी था। राजा ने मोहन को एक नौका में बैठाकर स्वदेश रवाना कर दिया। परन्तु उसकी नौका एक ऐसे तटीय प्रदेश से जा लगी जहाँ चन्दन ही चन्दन के वृक्ष थे जिनकी रक्षा कुत्ते के आकार की चींटियाँ कर रही थीं। वहाँ एक विशालकाय पक्षी आकर बैठ गया। जब वह पंख फैलाता था तब कस्तूरी झड़ती थी और जब पंख समेटता था तब हीरे मोती आदि गिरते थे। कुंवर ने उस पक्षी के पैर पकड़ लिये। पक्षी उड़ चला और उसके साथ वह भी। कुंवर ने एक जगह उसके पैर छोड़ दिये। वह प्रदेश भी अप्सराओं का था। अप्सराएँ उसे अपनी रानी के पास लायीं। उसने रतनावती के प्रति उसके एकनिष्ठ प्रेम को देखकर उसे छोड़ दिया। वहाँ से चलकर वह एक निर्जन प्रदेश में पहुँचा जहाँ एक गगनचुम्बी प्रासाद मिला। प्रासाद में ४० कक्ष थे। सबके कपाट बंद थे। द्वार पर एक सिंह की मूर्त्ति तथा नंगी तलवार रखी थी। कुंवर ने तलवार का वार जैसे ही सिंह पर किया कपाट खुल गया। कक्ष के भीतर एक बड़े पलंग पर एक रूपवती नारी सो रही थी। उस नारी ने जागने पर बताया कि वह सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मिनी है। पहली बार पद्मिनी से ही कुंवर को रतनावती का अता पता

मिला। कुँवर ने उस देव की मृत्यु का रहस्य जान लिया, जिसने पद्मिनी को बंदी बना रखा था। चार सौ कोस गहरे सागर के तल में एक जड़ाऊ संदूक था उसमें एक श्वेत पक्षी था उसी में उस देव के प्राण बसते थे। अपने पिता द्वारा प्रदत्त सुलेमान की अँगूठी के बल से कुँवर महिमोहन ने संदूक को पानी के ऊपर खींच लिया और श्वेत पक्षी को पत्थर पर पटक कर मार दिया। उसका मरना था कि देव भी मर गया। महिमोहन और पद्मिनी सिंहल देश पहुँचे। वहीं मोहन का बाल साथी उत्तिम मिल गया। पद्मिनी ने पत्र लिखकर अप्सरा रतनावती को वहीं बुला लिया। अप्सराओं की रानी रूपरम्भा की अनुमति पाकर रतनावती के साथ मोहन ने विवाह कर लिया। उत्तिम और पद्मिनी भी एक दूसरे को प्रेम करने लगे थे। उन दोनों का भी विवाह हो गया। दोनों मित्र पत्नियों के साथ अमृतपुरी चले गये।

ग्रन्थ लैलै मजनूँ

कृति—जान कवि द्वारा रचित इस प्रेमाख्यानक काव्य में चौपाइयाँ, दोहे, सोरठे तथा सवैये आदि विविध छन्द हैं। ग्रन्थ में शाहेवक्त की जगह शाहजहाँ की प्रशंसा की गयी है।[1] इसका रचना-काल संवत १६६१ के माघ मास की मकर संक्रांति है। इसकी एक प्रति हिन्दुस्तानी एकेडमी में है और दूसरी अनूप संस्कृत लाइब्रेरी बीकानेर में। एकेडमी वाली प्रति जीर्ण-जर्जर हो चुकी है। उसमें बीच के आठ पन्ने गायब हैं। प्रारम्भ के १२ पन्ने फटे हुए हैं। बीकानेर वाली प्रति गुटकाकार ५७ पन्नों में है। एक पृष्ठ में २१ पंक्तियाँ हैं। कुल पद्य-संख्या ६५ है। उस पर शीर्षक दिया है—'लैला मजनूँ की बात' परन्तु एकेडमी वाली प्रति पर शीर्षक है—'ग्रन्थ लैल मजनूँ'। इसमें आध्यात्मिक प्रेम की व्यंजना नहीं है पर प्रेम के महत्त्व का गान किया गया है।

कथा—लैला मजनूँ का प्रेमाख्यान फारसी मसनवियों का लोकप्रिय कथानक है। जान कवि ने उसे इसी परम्परा में लिया है।

मजनूँ अरब देश के एक नगर में एक धनी आदमी का बेटा था और लैला अरब के ही नज्दगिर के एक धनी व्यापारी की बेटी थी। मजनूँ का रंग गोरा था जबकि लैला का रंग काला। दोनों एक ही गुरु की पाठशाला में पढ़ते थे। तभी से उनके हृदय में एक-दूसरे के लिए प्रीति उत्पन्न हो गयी। उनके प्रेम की चर्चा चारों ओर फैल गयी। लैला के पिता ने लैला को पाठशाला से हटा लिया। मजनूँ ने भी पढ़ना छोड़ दिया। वह लैला का नाम रटता गलियों में फिरने लगा। चपटे लत्ते की ओर से वह बेपरवाह हो गया। उसकी यह दशा देखकर उसके पिता ने लैला के पिता

---

1 साहिजहाँ जग-जग जीवो जिह हजरत सौं हेत।
और ईच्छा जीव की सोई करता देत॥

—ग्रन्थ लैल-मजनूँ दोहा २६

से प्रस्ताव किया कि लैला का विवाह मजनूँ से कर दिया जाय। लैला के पिता ने कहा कि इस पागल से मैं अपनी लड़की का कैसे ब्याह दूँ? मजनूँ सबके सामने लैला के कुत्ते के गले से लिपट गया।

मजनूँ जंगल में भाग गया। उसके मुख से आह भरते समय ज्वाला निकलती थी। लैला के द्वार पर एक शिला थी। मजनूँ रात को उसी पर आ लेटता था। एक दिन कुछ शरारती लोगों ने उस शिला पर आग जलाकर उसे तपा दिया। मजनूँ रात में उस पर लेटा तो उसकी पीठ जल गयी। किसी ने पूछा तो उसने कह दिया—

'मित दाज अरिहै मन मेरी —(छंद १६)

एक बार मजनूँ लैला के घर की ओर निकल गया। लैला के आँगन में मजनूँ के शरीर को कुल्हाड़ी से छीला गया तब उसमें से रक्त निकला। लैला ने कहा कि अभी तुम्हारा प्रेम पक्का नहीं हुआ। किन्तु कुछ दिनों बाद जब उस्तरे की हर चोट से लैला लैला की ध्वनि निकली तब लैला ने कहा कि अब तुम्हारा प्रेम पक्का हो गया।

लैला के पिता ने मजनूँ से छुटकारा पाने के लिए लैला का विवाह इब्नसलाम नामक एक अमीर से कर दिया। लैला उससे विवाह करने के विरुद्ध थी परन्तु उसकी एक न चली। उसने इब्नसलाम को अपने शरीर से हाथ नहीं लगाने दिया।

मजनूँ को जंगल में एक पथिक के द्वारा लैला और इब्नसलाम के विवाह की बात ज्ञात हुई। उसने लैला को एक चिट्ठी लिखी कि जिस वृक्ष को मैंने आँसुओं से सींचा था उसका फल दूसरा खा रहा है, ऐसा क्यों? लैला को जब मजनूँ की चिट्ठी मिली तब वह बहुत रोयी और मजनूँ को लिखकर भेजा—

हम तुम दोउ प्रलय करतार। मेरे तो नहीं भरतार।
तुम बिन जितौं पुरुष की जात। हैं मेरे सब भय्या तात।'

(छंद ४७ पन्ना ७०)

लैला की पाती पाकर मजनूँ की छाती ठंडी हुई। मजनूँ का पिता जब मिलने गया तो वह बोला कि अब मजनूँ कहाँ रहा मैं तो लैला बन गया हूँ— मजनूँ बहुत [illegible]। जंगल के हिंस्र पशु उसके मित्र बन गये थे।

उधर लैला का प्रेम प्राप्त न कर पाने के कारण इब्नसलाम भी दुःखी था। दुःख में घुल घुलकर उसका देहान्त हो गया। लैला विधवा होकर जब अपने पीहर लौट रही थी तब उसका ऊँट एक जंगल में से गुजरा। यह वही जंगल था जहाँ मजनूँ रहता था। लैला मजनूँ परस्पर मिले रात भर वे साथ रहे परन्तु मजनूँ ने लैला के शरीर का स्पर्श तक नहीं किया। शुद्ध प्रेम को वह वासना से कलंकित कैसे करता?

उनहीं लह्यो पसु को मम । जिन राख्यो अपनों सत धम ॥
येक घरी क सुख क काज । कौन लगाव पर्मीह लाज ॥

सबेरा होने पर जब लला अपने घर चली, तो उसके पर सीधे नही पडत थे मानो उसने मदिरा पी रखी हो ।

एक रात लला ने स्वप्न म देखा कि मजनू मर गया है । उसी समय से वह ज्वर ग्रस्त हो गयी । जब उसका अतिम समय आया तब उसने अपनी माँ म कहा कि मैं मजनू के विरह म मर रही हूँ उसी को मैंने प्यार किया । यदि मेरे मरने के बाद मजनू आवे और मेरी कब्र पर लोट, रोवे पीटे तो कोई उसे दूर न करे । यह कहकर वह मर गयी ।

लला के मरने की खबर मजनू तक एक अन्य विरही जद ने पहुँचायी । मजनू रोता-पीटता लला की कब्र पर गया । उसके साथी हिंस्र पशु भी गय । मजनू ने लला की कब्र पर ही प्राण त्याग दिय । हिंस्र पशु एक वर्ष तक उसकी लाश की रखवाली करते रह । मजनू की जब हड्डिया बिखर गयी तब लोगो ने उनको एकत्र कर लला की क़ब्र की बगल म ही गाड़ दिया । इस तरह मरने पर ही मजनू की इच्छा पूरी हो सकी ।

कथा कामरानी व पीतमदास

कवि—जान कवि ने इस ग्रन्थ की रचना केवल सवा दो पहर म ही कर ली थी । रचना तिथि है—पौष कृष्णा १० बुधवार सवत १६६१ वि० । ग्रन्थ का विस्तार हस्तलिखित २० पृष्ठो म है । चौपाई और दोहा छदो का प्रयोग किया गया है ।

कथा—मुलतान नगर के राजकुमार का नाम प्रीतमदास था । उसके चार लँगोटिया यार थे एक सौदागर पुत्र दूसरा सुरगिया (सुरग खोदने म प्रवीण) तीसरा बर्व्ई-पुत्र और चौथा ब्राह्मण पुत्र । पाचो मित्रो ने निश्चय कर रखा था कि एक जगह से ही विवाह करेंगे ।

पाँचो मित्र कामरूप देश की यात्रा पर निकले । वहाँ के राजा राम ने कामरानी नामक एक राजकन्या का अपहरण कर रखा था पर कामरानी उसका मुह नही लगाती थी । वह एक अलग महल म रहती थी । प्रीतम के चारो मित्रो ने कामरानी के हृदय म प्रीतम क प्रति प्रेम उत्पन्न करने का निश्चय किया । ब्राह्मण पुत्र ने एक सु दर माला भेजी बर्व्ई-पुत्र ने एक सु दर काष्ठ प्रतिमा भेजी । सुरगिया ने राना के महल तक एक सुरग खोद दी । सुरग का मुह महल के खम्भे तक निकाला दिया । बर्व्ई-पुत्र ने खम्भे म सफाई से एक द्वार काट दिया । उस सुरग क रास्ते कामरानी को महल म निकालकर पाँचो मित्र कामरानी के पिता के देश म पहुँचे । राना ने प्रीतमदास के साथ कामरानी का विवाह कर दिया और अपने कुल की अन्य चार लडकियो के साथ प्रीतम के चारो मित्रो का भी । पाँचो मित्र अपनी पत्नियो क साथ मुलतान लौट आय ।

कथा चन्द्रसेन-शीलनिधान

कृति—अलखनिरंजन की स्तुति और जहाँगीर साहब की प्रशंसा के बाद कथा का आरम्भ हुआ है। जान कवि ने इसकी रचना पौष कृष्णा २ बुधवार सं० १६६९ वि० में की। इसमें कुल १७ चौपाइयाँ तथा १६ दोहे हैं।

कथा—चन्देरी के राजा चन्द्रसेन की इच्छा थी कि उसकी पत्नी ऐसी हो जिसका चरित्र अच्छा हो। लाखागिरि के राजा की पुत्री शीलनिधान एक ऐसी ही नारी थी। पर इस राजा का उससे विवाह हो उसके पहले ही एक सौदागर राजा के हाथ चार सुन्दरी किन्तु तीन कुलटा स्त्रियों को बेच गया। शीलनिधान राजा की विवाहिता पत्नी थी परन्तु सुन्दर न होने के कारण वह चन्द्रसेन के मन न भायी। वह उसके साथ मुँह बात भी न करता था।

राजा के नगर के एक गुणी पण्डित ने अष्ट धातु की एक मूर्ति बनायी जिसमें यह विशेषता थी कि वह सच्ची बात सुनकर मौन रहती थी और झूठी बात सुनकर हँस पड़ती थी। राजा ने अपनी रानियों के शील की परीक्षा लेने के लिए उस मूर्ति को खरीद लिया।

राजा की नई तीनों स्त्रियाँ पर पुरुषों में अनुरक्त थीं अतः उनकी छलछद्मपूर्ण मीठी मीठी बातों को सुनकर मूर्ति हँस दी परन्तु शीलनिधान की बातों को सुनकर वह मौन हो रही। राजा ने परीक्षा की। तीनों स्त्रियाँ कुलटा प्रमाणित हुईं। अकेली शीलनिधान ही सच्चरित्र निकली। राजा ने तीनों स्त्रियों को मरवा डाला और शीलनिधान को प्यार करने लगा।

कथा छीता

कृति—जान कवि ने इस प्रेमाख्यानक काव्य की रचना कार्तिक शुक्ला ६ सं० १६९९ वि० को सम्पूर्ण की थी।[1] उस समय दिल्ली के सिंहासन पर शाहजहाँ विराजमान था।[2] कवि ने इसमें अपने गुरु का भी उल्लेख किया है। उनका नाम शेख मुहम्मद बताया है।[3] ग्रन्थ में ३७ दोहे हैं। १० चौपाइयों के बाद एक दोहे की योजना की गयी है। इस काव्य में अलाउद्दीन के चरित्र का जैसा उत्कर्ष प्राप्त हुआ है वैसा हिन्दी के किसी अन्य काव्य में नहीं।

---

१ सोरह सै जु निरानवे कथा कही यह जान।
कातिग सुदि छठ पूरन छीताराम बखान॥

२ साहिजहाँ सुलतान ससार अमर अजर रहियो करतार।
दुनिया जीन कि ये विधि भाऊ यह कुल असो भयो न काऊ॥

३ सेख महम्मद पीर हमारो जगतु पियारो जग उजियारो।
हासी मैं हुइ उनकी विश्राम ज्यारे किये सबै मन काम॥
जा कुतुब जिनके भये आजम कयो ये नाम।
तिनको सगति जान कहि क्यों न होइ अभिराम॥ दोहा २॥

कथा—दवगिरि जिसे दौलताबाद भी कहते हैं के राजा देव के यहाँ संतान न थी। बहुत दान-पुण्य करने के बाद रानी का गर्भ रहा। उसके एक पुत्री उत्पन्न हुई। उसका नाम 'छीता' रखा गया। जब वह बड़ी हुई तब उसके सौन्दर्य की सुगंध देश-देशान्तर में जा पहुँची। पश्चिम देश के राजा राम उसके सौंदर्य पर मोहित हो गये। वे छीता से विवाह करने के लिए दवगिरि आये। छीता ने उनको देखा तो वह भी उन पर मुग्ध हो गयी। लेकिन पंडितों ने बताया कि उनका शुभ विवाह लग्न तीन वर्ष बाद बनेगा। राजा राम उदास मन से अपने नगर लौट गये।

एक चित्रकार ने मोर के पीछे भागती किशोरी छीता का एक सुन्दर चित्र बनाया। वह चित्र उसने दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन को दिखाया। अलाउद्दीन ने छीता को पाने के लिए देवगिरि पर चढ़ाई कर दी। परन्तु उसकी गोलाबारी से दुर्ग का कुछ न बिगड़ा। राघवचेतन नामक एक दरबारी के सुझाव पर अलाउद्दीन दुर्ग के भीतर छद्मवेश में आया। फुलवारी में उसने छीता को देख लिया। उसने उसकी फुलवारी तक सुरंग खुदवाकर उसे पकड़ मँगाया। छीता को ले कर वह दिल्ली आ गया। परन्तु छीता रानी हो रही। उसने कहा कि मैं राजा राम की मँगेतर हूँ। राम अच्छी बीन बजाते हैं किसी दिन वे मुझे ढूँढते हुए दिल्ली भी आ जाएँगे।

ऐसा ही हुआ। राजा राम जोगी का वेश धारणकर दिल्ली आ पहुँचे। बीन बजाते समय वे राम सीता के वियोग के गीत गाते फिरते। अलाउद्दीन को भी पता चला। उसने राम को दरबार में बुलाया। जब राम बीन बजा रहे थे तब झरोखे में बैठी छीता के आँसू उन पर आ गिरे। सुल्तान ने यह देख लिया। सच्चे प्रेम ने उसके हृदय का कलुष धो दिया। उसने छीता को अपनी बेटी मान लिया और राम के साथ उसका विवाह कर दिया। राम और छीता के लिए उसने दिल्ली में ही एक महल बनवा दिया जहाँ वे सुखपूर्वक रहने लगे।

कथा मोहिनी

कवि—जान कवि ने इस प्रेमाख्यान काव्य की रचना मसनवी पद्धति पर की है। परमात्मा के मोहिनी रूप की प्रशंसा करते हुए कवि ने कहा है कि उसके इस रूप की चाह संसार के सभी प्राणियों को रहती है। काव्य में कुल १२२ दोहे हैं। इसकी रचना अगहन सुदी ४ सं० १६६४ वि० (सन् १६३७ ई०) को हुई केवल तीन पहर में। शाहेवक्त का उल्लेख इसमें नहीं किया गया है।

कथा—मोहिनी और मोहन की कहानी संवादों के माध्यम से कही गयी है। राजा जगमण्डल की पुत्री मोहिनी अत्यंत रूपवती थी। मोहिनी ने प्रण कर रखा था कि विवाहेच्छुक प्रत्येक व्यक्ति से वह दस प्रश्न करेगी। उत्तर न देनेवाले को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता था। कितने ही लोग अपने प्राण गवाँ चुके थे।

प्राची देश के एक राजा के पुत्र का नाम था मोहन। वह बहुत रूपवान और

बुद्धिमान था। वह माहिना के नगर म गया। उसन माहिनी के सभी प्रश्नों का समुचित उत्तर दिया। अन्त दिन उसन भी मोहिनी से एक प्रश्न पूछा परन्तु मोहिनी उसका उत्तर न दे पायी। इस आन के कारण उसन मोहिनी से विवाह कर लिया।

कथा खिजर खा साहिजाद व देवल दे

कृति—आन कवि कृत इस प्रमाख्यान का आरम्भ ससनवी पद्धति के अनुसार ईश्वर वन्दना मुहम्मद साहब उनके चार मित्रों और शाह वक्त की प्रशंसा म हुआ है। इस काव्य की रचना शाहजहा के शासन काल म हुई। ग्रन्थ की समाप्ति पौष सुदी २ सं० १६९४ वि० को हुई। इसम कुल ८५ चौपाइयां और ८५ दोहे हैं। ८ चौपाई के बाद एक दोहे का क्रम रखा गया है।

कथा—दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन का सबसे अंतिम आक्रमण एक सागर तटवर्ती राज्य के राजा करनसिंह पर हुआ। करनसिंह कायर निकला। वह राजधानी छोड़कर भाग गया। उसकी सारी रानियाँ अलाउद्दीन के हरम म दाखिल की गयीं। उन रानियों म जो पटरानी थी कवलादे रानी वह अलाउद्दीन की विशेष कृपा पात्र बन गयी। कवलादे की एक बेटी थी देवल दे जो बहुत सुन्दर था। वह अपने पिता करनसिंह के पास ही रह गयी थी। उसकी याद म कवला दे उदास रहती थी। अलाउद्दीन ने यह सोचाकर कि वह देवल दे से अपने सबसे लाड़ले बेटे खिज्र खाँ की शादी कर देगा देवल दे को लाने के लिए एक बड़ी सेना गुजरात की ओर भजी। करनसिंह इस बार भी स्वर्गगिरि भाग गया। बादशाही सेना देवल द को ल आया।

दिल्ली आकर देवल दे प्रसन्न रहने लगी। उस समय देवल की आयु ८ वर्ष और खिज्र की आयु १० वर्ष की थी। देवल और खिज्र म स्नेह बढ़ने लगा। जब वे युवावस्था म पहुँचे तो बचपन का स्नेह प्रेम म बदल गया। परन्तु बादशाह न बाद म अपना विचार बदल दिया और निश्चय किया कि अपनी बेगम की भतीजी से खिज्र खा की शादी कर दी जाय। उसकी बेगम को भी यह बात पसन्द आ गयी। बेगम न खिज्र खा से देवल दे को अलग रखने की दृष्टि से देवल को कुशक महल म भेजने की आज्ञा दी। खिज्र बहुत रोया। उसने देवल को अपने सिर के कुछ बाल काटकर दे दिये ताकि वे स्मृति चिह्न के रूप म उसके पास रहें। देवल दे न भी खिज्र की अँगुली म अपनी अंगूठी पहना दी। दासियों के प्रयत्न से खिज्र और देवल दे इसके बाद भी मिलते रहे।

अलाउद्दीन की बेगम ने अब अधिक विलम्ब न कर अपने भाई अलिफ खा की बेटी से खिज्र खा की शादी करा दी। खिज्र मा के सामने कुछ न बोल सका। यो खिज्र की यह बीबी खूबसूरत थी वह उसे कुछ कुछ प्यार भी करने लगा। देवल दे को जब यह पता चला तब उसने खिज्र को उलाहना देते हुए एक पत्र लिखा। पत्र को पढ़कर खिज्र का घाव फिर हरा हो गया। उसकी आखें दिनों दिन गिरने लगी।

पुत्र के गिरते स्वास्थ्य से चिंतित होकर बाग में स्वलक की उसमें ही महल में रहने का प्रबन्ध कर दिया। अब गिरधारी और दरन दे पुनः प्रसन्न हो गये। स्वल और बेगम की भतीजी दोनों बहनों की तरह प्रेम से रहने लगीं। गिरधर के प्यार की दो धाराएँ दोनों को सींचने लगी।

कथा कलंदर की

कृति—जान कवि के इस छोटे-से प्रेमाख्यानक काव्य का रचना काल संवत् १७०७ की शरद ऋतु है। ग्रन्थ का विस्तार हस्तलिखित ५ पृष्ठों में है। चौपाई और दोहा छन्द का व्यवहार किया गया है। १० चौपाई के बाद एक दोहे का क्रम रखा गया है।

कथा—कलंदर एक मसजिद (मसीत) में रहता था। वहाँ सेवा-टहल किया करता था। एक दिन उसने नखास बाजार में दासियों को बिकते देखा। एक दासी अत्यन्त सुन्दर थी। उसे राजा ने मुँह माँगा मूल्य देकर खरीद लिया। कलन्दर बेचारे की क्या बिसात थी जो उसे खरीद पाता। वह उदास रहने लगा। एक दिन उसने अपने एक फकीर दोस्त से कहा कि जब मैं मर जाऊँ तब तुम मेरा कलेजा चीर कर देखना उसमें एक जवाहर रखा हुआ मिलेगा। कलन्दर का कलेजा फट गया। उसमें एक जवाहर जगमगा रहा था। राजा ने उस जवाहर को खरीद लिया और उसे अपनी अँगूठी में जड़वा लिया।

एक रात जब वह कामासक्त हुआ उसने सुन्दरी दासी को बुलवाया। आलिंगन के पश्चात् उसने कुच पर वह हाथ रखने को ही था कि वह छिटक कर दूर जा खड़ी हुई। राजा रस भंग होने से रुष्ट हो गया। दासी ने बताया कि कुच पर पानी की बूँद गिर पड़ी इसी से वह चौंक उठा। राजा ने देखा सचमुच वहाँ पानी की एक बूँद पड़ी थी। राजा की दृष्टि अपनी अँगूठी पर गयी उसमें जवाहर का नग गायब था। वह जवाहर आँसू की बूँद बनकर ढलक गया था। दरबारियों ने राजा को कलन्दर के प्रेम के विषय में बताया। राजा उस प्रेमियों के बिछुड़ने का कारण बनने के लिए बहुत पछताया।

कथा छबिसागर

कृति—जान कवि ने इस ग्रन्थ का आरम्भ अलख अगोचर की वंदना और मुहम्मद साहब की स्तुति करके किया है। ग्रन्थ का विस्तार ८ हस्तलिखित पृष्ठों में है। ग्रन्थ में १५ चौपाइयाँ और १५ दोहे है। रचना-काल संवत १७०६ वि० (१६४९ ई०) है। शाह-वक्त की चर्चा नहीं है।

कथा—रामपुरी के राजा की रूपवती कन्या छबिसागर ने कुछ तन्त्र मन्त्र सिद्ध करके नगर से दूर एक ऊँची पहाड़ी पर एक ऐसा तिलस्मी गढ़ बनवाया था जिसके द्वार का पता नहीं चलता था। गढ़ के आँगन में कितनी ही छोटी बड़ी लौह मूर्तियाँ

था जिनके हाथ में नंगी तलवारें थी जो किसी भी प्रवेश करने वाले का सिर काट लेती थीं। छविसागर ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जो व्यक्ति उसके प्रश्नों का उत्तर दे देगा उसी से वह विवाह करेगी। उत्तर न देनेवाले का सिर काटकर गढ़ के कंगूरे पर टांग दिया जाता था। कितने ही साहसी युवक अपना सिर दे चुके थे। शर्तें ये था—(१) प्रत्याशी का नाम सुनाते ही, नाम से ही उसका गुण जाना जा सके। (२) प्रत्याशी गढ़ के आँगन में स्थित लौह मूर्तियों को एक बार में ही गिरा सके। (३) प्रत्याशी गढ़ का पौरद्वार खोल सके। (४) राजकुमारी के कुछ गूढ़ प्रश्नों का संकेत में ही उत्तर दे सके।

एक अन्य राजा था जत। उसके पुत्र का नाम था गुनआगर। एक दिन गुनआगर शिकार खेलने हेतु रामपुरी आ निकला। वहाँ उसे छविसागर की शर्तों का पता चला। वह अपने नगर में लौट गया। वहाँ एक तांत्रिक से उसने तन्त्र मन्त्र सीखे। लौटकर आया तो उसने छविसागर की शर्तों को पूरा करने की घोषणा की। उसके नाम से उसका गुण तो प्रकट था ही, उसने कुछ मन्त्र ऐसे पढ़े कि लौह मूर्तियाँ एक बार में ही गिर पड़ीं और गढ़ का गुप्त द्वार प्रकट हो गया। अब उसे राजकुमारी के गूढ़ सकेतात्मक प्रश्नों का उत्तर मात्र देना था। राजकुमारी छविसागर ने पहले उसके पास एक धनुष और दो बाण भेजे। गुनआगर ने उसके उत्तर में एक लाल भेज दी। फिर छविसागर ने कुछ डोर भेजे गुनआगर ने उनकी रस्सी बटकर लौटा दी। राजकुमारी ने एक रत्न भेजा कुंवर ने उत्तर में एक और रत्न मिलाकर भेज दिया। चौथी बार छविसागर ने शतरंज भेजी गुनआगर ने उत्तर में चौपड़ पासा भेज दिया। अन्त में छविसागर ने पान भेजा और कुंवर के सामने उसे ढरका दिया गया। उत्तर में कुंवर ने करतार बजाया। छविसागर ने अपने पिता से कहा कि मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गये अतः इस राजकुमार के साथ मेरा विवाह हो सकता है। राजा ने जब संकेतात्मक प्रश्नों का उत्तर जानना चाहा तब छविसागर ने बताया कि पहले प्रश्न के द्वारा मैंने कहा था कि मेरी भौंहे धनुष हैं और दोनों आँखें कटार व बाण। उत्तर में राजकुमार ने कहा कि उनसे आग तो मैं पहले ही अपना लाल डाल चुका हूँ। दूसरे प्रश्न से मेरा तात्पर्य था कि मैं गुणवती हूँ। उसका उत्तर राजकुमार ने रस्सी बँटकर दिया। तात्पर्य था कि मैं गुन-आगर हूँ। मेरे एक रत्न के बदले एक और रत्न लौटा देने का तात्पर्य यह था कि एक तुम्ही रत्न नहीं हो मैं भी तुम्हारी तरह ही दूसरा रत्न हूँ। मैंने शतरंज भेजा जिसका मतलब था कि तुम्हारे तो कई *रानियाँ होंगी कुंवर ने इसका उत्तर चौपड़-पासा भेजकर दिया जिसका अर्थ था—* हैं तो होने दो हम-तुम सबसे अलग चौपड़ पासा खेला करेंगे। अंतिम प्रश्न में मैंने तल गिरवाया जिसका तात्पर्य था कि पुरुषों की प्रीति अस्थिर होती है। कुंवर ने उसका उत्तर करतार बजाकर दिया और यह सूचित किया कि ऐसा नहीं होगा करतार मेरे तुम्हारे बीच साक्षी हैं।

राजा इन प्रश्नोत्तरों का रहस्य जानकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने छविसागर

का विवाह गुनआगर से कर दिया। गुनआगर छविसागर के साथ अपने नगर में लौट आया।

कथा नल-दमयन्ती

कृति—जान कवि ने इस प्रेमाख्यान की रचना १०७२ हिजरी अर्थात् १७१८ वि० (१६६१ ई०) में रविवार के दिन पूरी की।[1] तईस दिन कथा को पूरा करने में लगे। शाहेवक्त की जगह औरंगजेब की प्रशंसा की गयी है।[2] गुरु के स्थान पर हाँसी-निवासी शेख मुहम्मद का उल्लेख है।[3] ग्रन्थ की रचना मसनवी पद्धति के अनुसार अवश्य की गयी है, परन्तु सूफी सिद्धान्तों का कोई निरूपण नहीं है। यह शुद्ध प्रेमाख्यानों की कोटि में आता है। ग्रन्थ का विस्तार ६० पृष्ठों में है। दोहा, चौपाई और सवैया छन्दों का प्रयोग हुआ है। कुल १४६ चौपाइयाँ, १४६ दोहे और ५८ सवैये हैं। सात चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम रखा गया है।

कवि ने कथा का आरम्भ करते हुए कहा है कि मैंने नल-दमयन्ती की कथा का कई ग्रन्थों में पढ़ा और सबमें मुझे कुछ भिन्नता मिली। मैंने सब कथाओं से सार-संग्रह किया और अपनी 'नल-दमयन्ती' कथा लिख दी।[4]

कथा—देखिए 'जायसी के परवर्ती हिन्दी सूफी कवि और काव्य' (डॉ० सरला शुक्ल पृ० ४०० ४०१)। विशेष द्रष्टव्य 'प्रस्तुत प्रबन्ध का अध्याय ५।

कथा सुभटराइ

कृति—जान कवि द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्यों में इस काव्य को ही अन्तिम

---

१ सन हजार बहत्तरो दिन आदितवार।
करी जान तेईस दिन मैं जब पाई वार॥
—कथा नल दमयन्ती पृ० ६०, हस्तलेख

२ अबहि बखान करौं पतिसाहि। तासौं अमित दया इलाहि॥
चोरे कटक बहुत दल मारे। भईया हार गये सहारे॥
दारा सुजा दल बिचराये। पुनि मुराद ग्वारैर पठाये॥
ईनदार बर बड को अूझार। औरंगजेब साहि मुझार॥
—वही पृ० २ हस्तलेख

३ अब हौं करौं पीर परनाम। सेख महमद जाको नाम।
हाँसी में जिनको बिसाम। सबद मदू हनोफ इमाम॥ —वही छन्द २

४ नल-दमयन्ती कथा बखानौं। कहत जान जसी बिधि जानौं॥
बाँची मैं बहु ग्रन्थन माहि। येक भाँति प पाई नाहि॥
और और भाँति मैं सही। सगो सबी बात सो कही॥
सुरता करि यह मत बिचारि। कसो कथी दोष निवारि॥
सबहीं को मति चुन चुन लीयौ। चतुरन हेतु अरगजा कीयौ॥
बहुत मिलौनी मिलें सुबास। अति सुगध ह्वै लेत प्रकास॥
—वही छन्द ५, पृ० २, हस्तलेख

मानना उचित है, क्योंकि संवत १७२० वि० के बाद लिखा उनका कोई प्रेमाख्यान अभी तक नहीं मिला है। कथा सुभटराइ का आरम्भ मसनवी पद्धति के अनुसार हुआ है। कर्त्ता की स्तुति मुहम्मद साहब का स्मरण और शाहे-वक्त औरंगजेब की प्रशंसा[1]—यह क्रम रखा गया है। ग्रंथ का रचना काल १०७४ हिजरी या १७२० विक्रमी (१६६३ ई०) है। कार्तिक मास में यह काव्य सम्पूर्ण हुआ।[2] ग्रंथ का विस्तार १८ हस्तलिखित पृष्ठों में है। दस चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम है।

कथा—पूर्व दिशा में स्थित सूरनगर के राजा का नाम सूरजमल था। वह निस्संतान था। एक सिद्ध ने कृपा कर उसको एक सदाफल तथा कुछ अभिमंत्रित द्राक्षाएँ दे दीं। सिद्ध ने कहा कि जो रानी सदाफल खाएगी उसके एक पुत्र होगा और द्राक्षा खानेवाली रानियों से पुत्रियाँ उत्पन्न होंगी। पटरानी ने सदाफल खाया, उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम सुभटराइ रखा गया।

राजा के चार प्रधान थे। उनके यहाँ भी उसी दिन एक-एक पुत्र उत्पन्न हुए। सुभटराइ का लालन-पालन चारों प्रधान-पुत्रों के साथ ही हुआ। पाँचों घनिष्ठ मित्र बन गये। सबने प्रतिज्ञा की कि एक ही जगह से विवाह करेंगे।

पाँचों मित्र रत्ना विजय यात्रा पर पहले उदीची दिशा में गये, फिर प्रतीची दिशा में और फिर नैऋत्य दिशा में। प्रत्येक दिशा में राजकुमार ने वहाँ के एक नगर की राजकुमारी को विपत्ति से बचाया और उससे विवाह किया। वहीं उसके चारों मित्रों का भी विवाह हुआ। अपनी पत्नियों को वे सूरनगर में भेजते चले गये।

अन्त में वे दक्षिण दिशा में स्थित अवाची नगर में पहुँचे। वहाँ की राजकुमारी को पंचानन नामक एक राक्षस हर ले गया था। राजकुमार ने एक सिद्ध से (जिसके द्वारा प्रदत्त सदाफल से उसकी उत्पत्ति हुई थी) एक जड़ी तथा सुकाजन प्राप्त किया। जड़ी को बायें हाथ में बाँध लेने पर हजार कोस चलने पर भी थकान नहीं होती थी। सुकाजन को आँख लेने पर दूसरों से अदृष्ट बना जा सकता था। इन दोनों चीजों का उपयोग कर राजकुमार ने राजकुमारी का पता लगा लिया और राक्षस को मार कर उसका उद्धार किया। उसके साथ उसका विवाह हुआ। उसी नगर में चारों प्रधान-पुत्रों का भी। अपनी अन्य पत्नियों की याद आने पर वे सभी सूरनगर वापस आ गये।

---

१ औरंगसाहि महाबली है दसबल उदाम।
कोऊ नाहिन जीतिहैं इनसौं करि संग्राम॥ —कथा सुभटराइ, (प्रारम्भ में)

२ सन सहस चौहत्तरे कथा करी यह जांन।
सत्रह सै अरु बीस पुनि संवत हुतौ जहान॥
माह रबीउल अव्वल [illegible]

नल-दमन

कवि— नल दमन प्रेमाख्यान-काव्य के रचयिता सूरदास लखनवी हैं। पहले लोगों ने इनको भी अष्टछापी सूरदास ही मान रखा था परन्तु अब इस भ्रम का निवारण हो चुका है। 'नल-दमन' में कवि ने अपना जो परिचय दिया है[1] उसके अनुसार इनके पिता का नाम गोरधनदास (गोवर्द्धनदास) था। ये कबो गोत्रीय और माछिल जाति के थे। इनके पुरखे पंजाब प्रान्त के अन्तर्गत कलानौर (कनानौर) नामक स्थान से आकर लखनऊ में बस गये थे। सूरदास का जन्म लखनऊ में ही हुआ। इनकी बड़ी लालसा थी कि एक बार अपने पितृस्थान का दर्शन करते, किन्तु परिस्थितिवश इनका वहाँ जाना न हो सका।

ये अचिन्त पंथ के अनुयायी थे इसका उल्लेख इन्होंने किया है—

गुरु अचिन्त को पंथ जग, बहुजल तरनी नाव।
पहुँचनहार जो पार को, सो राखे तहँ पाव॥ (दोहा २२)

इनकी गुरु परम्परा इस प्रकार है—

अचिन्त प्रभु > रंगबिहारी > स्यामदयाल > सूरदास।

अचिन्त प्रभु एक सिद्ध महात्मा थे उनके शिष्य हुए रंगबिहारी उनके शिष्य थे स्यामदयाल और स्यामदयाल के शिष्य थे सूरदास।

कृति—कुछ समय पूर्व तक यह उत्कृष्ट काव्य अप्रकाशित था। परन्तु प्रसन्नता का विषय है कि डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल और श्री दौलतराम जुयाल द्वारा संपादित होकर यह ग्रन्थ आगरा विश्वविद्यालय के क० मुंशी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ से प्रकाशित हो चुका है। संपादकों ने 'नल-दमन' का संपादन दो प्रतियों के आधार पर किया है। उसमें से एक तो प्रिंस ऑव वेल्स म्यूजियम, बम्बई में सुरक्षित नल-दमन की फारसी लिपि में लिखित प्रति की देवनागरी में की गयी प्रतिलिपि है जिसकी एक टंकित प्रति काशी नागरी प्रचारिणी सभा में सुरक्षित है और दूसरी स्वर्गीय डॉ० मोतीचंद के पास थी। दूसरी प्रति मुनि कान्तिसागर जी द्वारा राजस्थान

---

१ सूरदास निज नाउं बताऊं। गोरधनदास पिताकर नाऊं॥
कबू गोत माछिल सासू। कलानूर पुरखन कर बासू॥
तात हमार तहाँ सों आवा। पूरब दिसा कोउ दिन छावा।
नगर लखनऊ बड़ा सो थानू। रुचिर ठौर बकुण्ठ समानू॥
मेरो जनम यहै ठाँ भयऊ। कलानूर कबहू नहिं गयऊ॥
यदपि हौं प्रबहूँ परदेसा। प नित प्रति सुमिरौं सो देसा॥
जैसे पथी बस सराइ। महू विदेस रहौं तिन्ह नाईं॥
आदि ठौर बिसरा मैं नाही। सोई सदा रहै मन माही॥
सुमिरन करौं नाम हर स्वासा। मकु जो बिधि पुरव सो आसा॥
बिन निज दया दयाल के देस न पहुंचा जाय।
जब लग सोई बाँह गहि, भेद न देइ पहुँचाय॥ (छंद २४)

में की गयी खोज में प्राप्त हस्तलिखित है। अब यह ग्रंथ डा० सू० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से प्रकाशित हो चुका है।

प्रकाशित ग्रन्थ में १६८ छन्द हैं जो तेरह प्रतियों में मिलते हैं, इनके अतिरिक्त भी दस-बारह छन्द ऐसे हैं जो कुछ प्रतियों में अलग-अलग मिलते हैं। सूफ़ियों ने पाँच चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम निभाया है और जायसी ने सात चौपाइयों के बाद एक दोहा रखा है परन्तु सूरदास लखनवी ने एक सूत्र या नियम से ६ चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम रखा है। किसी किसी खण्ड में ग्यारह चौपाइयों के बाद दोहा रखा गया है पर ऐसे खण्ड विरल हैं।

सूरदास लखनवी ने नल-दमन की रचना बादशाह शाहजहाँ के राज्यकाल (सं० १६८४-१७१५ वि०) की समाप्ति के एक वर्ष पूर्व संवत् १७१४ वि० (सन् १०६७ हिजरी अथवा १६५७ ई०) में आरम्भ की।[1]

महाभारत के उपाख्यान को पढ़कर सूरदास के मन में इस कृति को लिखने का विचार उत्पन्न हुआ।[2] उन्होंने महाभारत में दी गयी कथा को अपना आधार तो बनाया, परन्तु उसमें कुछ मौलिक उद्भावनाएँ भी कीं और सारी कथा में आध्यात्मिक तत्त्व को अनुस्यूत करने का सफल प्रयास किया। कृति के निर्माण ने इसे अध्यात्मपरक काव्य बना दिया है।

सूरदास के समय तक जितने भी सूफी काव्य रचे गये सभी की भाषा अवधी थी। अवधी में सूफी काव्य रचना की एक विशिष्ट परम्परा ही बन गयी थी। यही कारण था कि सूरदास ने भी अपना प्रेमाख्यानक काव्य अवधी में ही लिखा।

'नल-दमन' सूफी प्रेमाख्यानक काव्य है। इसमें सूफी काव्य-परम्परा का अनुसरण दो प्रकार से किया गया है। एक तो रचना शैली की दृष्टि से और दूसरा प्रेम साधना की दृष्टि से। पहले रचना शैली पर ही विचार करें—

(१) सूफी प्रेमाख्यानों की भाँति 'नल-दमन' की भाषा भी अवधी है। उन्हीं की भाँति इसकी रचना दोहे चौपाई छन्द में हुई है। कथा का वर्णन सर्गों या अध्यायों में विभक्त करके नहीं, वरन् प्रसंगानुसार उपशीर्षक देकर किया गया है।

(२) जिस प्रकार मुसलमान सूफी कवि कथारम्भ के पूर्व ईश्वर की स्तुति

---

१ एक सहस सतसठ सन आहा। संवत् सतरह सै चौदहा।
कै धरेउ सब कथा बखानी। कीन्ही प्रगट प्रेम निधि बानी॥
—नल-दमन २७।१२

२ एक दिवस मोरे मन आई। भारत पढ़ै लाग चित लाई।
तेहि के परब पढ़त जब पावा। नल की कथा औंच हिय लावा॥ —वही २८।१२
भारथ मैं जो कथा बखानी। आदि पर्व बानी महँ आनी॥
काट छाँट मैं कथहि बनाई। कथा पुरानमय कै दिखराई॥ —वही २७।७-८

शाहवक्त की प्रशंसा, गुरु (पीर) का वर्णन और आत्म-परिचय आदि देते हैं, उसी प्रकार सूरदास ने भी दिया है। 'नल दमन' के प्रारम्भ में इन्होंने वेदान्त के आधार पर परमात्मा की स्तुति की है—

सुमिरौं आदि अनादि जो कोई। आदि अंत पुनि एक सोई॥
जाहि न बरन न रूप न रेखा। अविगत गति अभेख बहु भेखा॥ (१।१ २)

निज समुझौ तो एकौ सोई। साहब सेवक भेद न कोई॥
जड़ चेतन अक्षर पुनि नाहीं। सब समाइ रहे ता माहीं॥
ज्यों जल माहिं बुदबुदा भएऊ। है जल नाव और होइ गएऊ॥ (८।१-३)

और न भलउ जो कुछ सो वह अलख निरंजन एक।
भांति भांति के भेख धरि, एक भयो अनेक॥ (दोहा ६)

सूफी काव्यों में पैगम्बर मुहम्मद साहब की वंदना होती है। 'पदमावत' में जायसी ने मुहम्मद साहब को परमात्मा द्वारा निर्मल ज्योति के रूप में उत्पन्न हुआ बताया है—

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा। नाउ मुहम्मद पूनिउँ करा॥
प्रथम जोति बिधि तेहि कै साजी। औ तेहि प्रीति सिस्टि उपराजी॥
('पदमावत' ११।१ २)

'नल-दमन' में कवि ने हिन्दू होने के कारण मुहम्मद साहब का तो नहीं, पर निर्मल ज्योति का वर्णन किया है—

प्रथम 'निरमल वह जोति उपाई। तिन्ह के प्रीति सब सिस्टि बनाई॥
रसन एक अस्तुति बहु भेखा। लिखा सो को नाहिन कछु लेखा॥
(१२।३ ४)

और इस प्रकार उस काव्य-रूढ़ि का भी निर्वाह किया है। मुहम्मद साहब के चारों मित्रों की प्रशंसा करने के बजाय इस कवि ने उसी निर्मल ज्योति को 'मीत' मान लिया है—

अब गुन कथन मीत के करौं। जिन्ह के प्रेम प्रताप निस्तरौं॥
जब ते प्रघट मोहिं निसितारे। उन एते भेत निस्तारे॥
(१२।१-२)

कवि ने शाहवक्त (शाहजहाँ) की भी प्रशंसा की है—

साहजहाँ सुलतान बखता। भानु समान राज एकछत्ता॥
दिल्ली उवा सुरज उजियारा। चहूँ ओर जस किरन पसारा॥
(१३।१ २)

गुरु (पीर) का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है—

> अब गुरु देव केर गुन गाऊं। रमबिहारी जिनकर नाऊं॥ (१८।१)
>
> × ᵞ ✓
>
> तिन्ह के मिले कायथ भटनागर। स्यामदयाल ज्ञानगुनसागर॥ (२३।१)
>
> ᵞ × ᵞ
>
> मोहिं तिन्हहिं यह पंथ लगावा। कृपा कीन्ह गुरु आप सिखावा॥ (२३।६)

और इसके बाद अपना परिचय (पद २४ में) दिया है जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। तात्पर्य यह कि सूरदास ने सूफी काव्य रचना विधान का पूर्णरूप से निभाया है।

सूरदास द्वारा 'नल दमन' में प्रेम-साधना का जो स्वरूप निरूपित हुआ है, वह सूफियों की प्रेम साधना से मिलता जुलता है।

सूफी प्रेम के माध्यम से परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं। वे समस्त संसार को परमात्मामय देखते हैं। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रिय और प्रिया (प्रिया= परमात्मा, प्रिय=आत्मा) के मध्य अभेद की प्रतीति प्रेम का सम्बल लेकर चलता है और लौकिक प्रेम (इश्क मजाजी) के वर्णन में अलौकिक प्रेम (इश्क हकीकी) प्रच्छन्न रूप से निबद्ध रहता है। नल दमन में भी कवि ने अपने वास्तविक अभिप्रेत अर्थ को प्रच्छन्न रखा है और उसको जानने का भार अधिकारी व्यक्तियों पर छोड़ दिया है—

> बहुत ठौर निज अरथ दुरावा। सब काहू पै जाइ न पावा॥
> बहुत लोग बोहित चढ़ि दधि पर आवै जाहिं।
> मुक्ता पावै मरजिया धंसि खोजै तल माहिं॥२७॥

मरजिया बन कर परमात्म प्रेम रूपी मुक्ता को पा लेने का सूफी प्रेम साधना में बहुत महत्त्व है। नल दमन में जिस प्रेम-पंथ पर कवि ने नल को चलाया है वह सूफी प्रेम-पंथ से कम त्यागपूर्ण नहीं है—

> सीस एक ओर के डार। तब इह ओर आइ पग धार॥
> पेम खेल महं साथ बाजी। सो खेल जो इह पर राजी॥
> यह देखो पुनि अचरज रीता। जो हार जानहु तिन जीता॥
> पेम समुद्र अपार अति, नाहिं ओर नहिं छोर।
> जो बूड़े सोई तिरे, यहै पेम दधि ओर॥१२७॥

सूफी प्रेम-नायक की भांति नल भी सांसारिक भोगों को तुच्छ समझता है—

> हौं अस राजन मन में लाऊं। जिहि सुख उरति मीत बिसराऊं॥
> जो जिउ मास मिले पिउ सोई। तौ यह राज कुसल पै होई॥
> नाहित पेम अगिन तन जारौं। झूठ राज जनम का हारौं॥ (१२८।७ ६)

और सूफी नायकों की तरह वह भी सामाजिक सम्बन्धों तथा लोक लाज की उपेक्षा करने को प्रस्तुत है—

डरों न हास कलंक सों, जो पेम रहै मन माँहि ॥
इहि थ्रासु परवाह जल, कित कलक ठहराँहि ॥१३२॥

सूफी प्रेम-साधना विरह की तीव्रता और व्यापकता को भी महत्त्व देती है। 'नल-दमन' में नायक और नायिका दोनों के पक्ष में विरह की तीव्रता और प्रचुरता है। इस काव्य के प्रेम-वर्णन में प्रेम की लौकिकता अलौकिकता की ओर जाती हुई दिखाई देती है और अलौकिकता के साथ साथ रहस्यमय सत्ता की ओर संकेत भी मिलता है—

मो सों बिनती यें वन भाव। होइ सो वहै जो पिउ को भाव ॥ (१२३।१)

अन्य सूफी प्रेमाख्यानों में प्रेयसी को परमात्मा का प्रतीक और प्रेमी को आत्मा का प्रतीक माना गया है। नल दमन काव्य में यह फारसी प्रतीक-पद्धति तो नहीं है परन्तु उसका परिवर्तित रूप है। नल और दमयंती इस काव्य में एक दूसरे के लिए परमात्म-रूप हैं। दोनों का एक दूसरे के विरह में समान रूप से व्याकुल दिखाया गया है। 'दमयंती के वर्णन में कवि ने परमात्मा को प्रेम (प्रेमामृत) के रूप में चित्रित किया है और नल के वर्णन में ज्ञान रूप में। यह उनके लिंग भेद के कारण है जो स्वाभाविक है। परमात्मतत्त्व दोनों में एक ही है। दोनों शुद्ध सात्त्विक वृत्ति के होने के कारण वह तत्त्व उनमें पूर्ण प्रकाश रूप में सामने आता है।[1]

सूफी काव्यों में नायिका को (जो परमात्मा स्वरूप होती है) अतिशय रूपवती चित्रित किया जाता है संसार का सारा रूप सौन्दर्य उसके रूप-सौन्दर्य की छाया अथवा अनुकृति मात्र होता है। 'नल-दमन' में चूँकि नायक और नायिका दोनों परमात्म स्वरूप हैं अतः दोनों के सौन्दर्य में अतिशयता है—दोनों का पार्थिव सौन्दर्य किसी अपार्थिव अतीन्द्रिय सौन्दर्य की व्यंजना करता है। उदाहरणस्वरूप नल के सौन्दर्य का यह वर्णन प्रस्तुत है—

अति रूपवंत उजियारा। मानो काम सौंह अवतारा ॥
जिन्ह मुख रूप कहै तिहि नीका। नल-मुख रूप रूप मुख फीका ॥
घर में दोउ रूप सरि तात। घट जनु घट लिखि दीन्ह बिधात ॥
सूर कांति बरनों मुख जोती। प सूरहु मुख जोति न थोती ॥
नर्नाहि जोति जरै रवि देख। सीतल होंहि हेम तब पेख ॥
सूरहु देखि सोभाइ न कोई। इह देख सो दरसन होई ॥
श्री गति नैनन की रवि ताक। सो गति छिन ताक मुख याकैं ॥

[1] नल-दमन सम्पा॰ डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त प्रकाशक और श्री दौलतराम जुयाल 'काव्य-कथा' ग्रंथ पृ॰ ४२

पुरुष नारि जाके चित परा। फिरि भरि जनम न चित सों टरा ॥
ब्रह्म रूप जग होय समाना। जिन्ह देखा सो देखि हिराना ॥
जे रजवारें श्रन वर, सुनि सो भा बराग।
अनल बरन नल बरन लग, बरन लगें होइ आग ॥२६॥

दमयन्ती का सौन्दर्य-वर्णन भी इसी जोड़ तोड़ का है—

पदुमिनि चाहि आइ एक परा। कर अगुरिहि अमृत रस भरा ॥
जो परवार सिरतक मुख घालहिं। जो उठि ठाढ़ होइ सत्त्वालहि ॥
जनु विधि अमा छाप कर डारा। कै न सक सरि दूसर नारी ॥
इक पद्मिनी औ अमृत भरा। धौं किहि जोग दई अवतरी ॥
महाराज मुख जोति निकाई। कहि न जाइ देखत बनि आई ॥
जन असोज पूर्यो ससि ऊवा। तासों ऊँच भांति कर हुवा ॥
यह अचरज कि यह पदुमिनी। महाराज अबलौं नहिं सुनी ॥
पहुँच कँवल तिहूँ पुर वासा। जग आ भौंर भव तिहि आसा ॥
सुनि सोभा सब जगत लोभाना। धौं काकर चढ़ निवाना ॥
जगत मरजिया पेम दधि मुक्ताहल सो तीय।
धौं को पाव ल तिर को बूड़ दे जीय ॥३४॥

दमयन्ती के सौन्दर्य का एक और उदाहरण लीजिए—

रूप देह धर जनु औतरा। रहै न अत रूप क करा ॥
ताकी छवि कहुँ कौन बखान। ओहि कहं जो दरस सो जान ॥
इहि सरूप बारी भई, रूप रूप तिहिं रूप।
रूप रूप कहु उपम यह वा मुख रूप अनूप ॥७६॥

सूफी प्रेमाख्यानों में परमात्म-तत्त्व की ओर आत्म-तत्त्व को आकृष्ट कराने के लिए गुरु की स्थिति भी आवश्यक मानी गयी है। इस दृष्टि से नल-दमन में भाटिन गुरु का ही काम करती है। कहा जा चुका है कि नल को परमात्मा के ज्ञान रूप का प्रतीक माना गया है और दमयन्ती को परमात्मा के अमृत रूप का। अग्नि और सूर्य को ज्ञान का एवं प्रेम और चन्द्र को अमृत का प्रतीक माना जाता है। नल और दमयन्ती के लिए इस काव्य में इन प्रतीकों का प्रचुर प्रयोग हुआ है।

उपर्युक्त विवेचन की आवश्यकता यहाँ इसलिए अनुभव हुई क्योंकि 'नल दमन' को अभी तक सूफियों से प्रभावित काव्य ही माना जाता रहा है। किन्तु हम इसे सूफी प्रेमाख्यान परम्परा का ही एक काव्य मानते हैं यद्यपि है यह एक हिन्दू विरचित। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन भी यहाँ अमान्य ठहरता है कि इस परंपरा (सूफी प्रेमाख्यान परम्परा) में केवल मुसलमान कवि ही हुए हैं।[1] सूरदास ने इस

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण पृ० १०

काव्य मे सूफी विचार धारा और भारतीय विचार धारा का समन्वय किया है। 'यदि यह कहें कि सूफी खोल मे भारतीय आत्मा भरी है, तो अनुचित नही होगा। यह काय बहुत कुछ तो जायसी ही कर चुके थे पर सूरदास ने रही-सही कमी को पूरा कर दिया।'[1]

'नल-दमन' की कथा के लिए द्रष्टव्य भारतीय प्रेमाख्यान काव्य —डॉ० हरिकान्त श्रीवास्तव पृ० ३९८-४०० और नल-दमन' सपा० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल तथा श्री दौलतराम जुयाल भूमिका भाग। कथा विवेचन के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध का अध्याय ५ देखिए।

हस-जवाहिर

कृति और कवि—कासिमशाह दरियाबादी ने हस-जवाहिर' प्रेमाख्यान की रचना ११४९ हिजरी तदनुसार सवत् १७९३ वि० (१७३६ ई०) म की थी।[2] उस समय दिल्ली के सिंहासन पर मुहम्मदशाह आसीन थे।[3] मुहम्मदशाह का राज्य-काल सन् १७१९ १७४८ ई० के मध्य पडता है। इस प्रकार उनके शासन काल म 'हस-जवाहिर' की रचना होन की सगति बठ जाती है। मिश्र-बन्धु विनोद (प० १०३५) म मिश्र-बन्धुओ न हस जवाहिर का रचना काल लगभग स० १९००' बताया है। स्पष्ट ही काव्य के प्रस्तुत अन्त साक्ष्य के अनुसार यह अनुमान गलत है।

हस जवाहिर' मसनवी पद्धति पर रचित पुरानी परिपाटी का निष्ठा स अनुसरण करता हुआ एक सूफी प्रेमाख्यानक काव्य है। इस काव्य की एक विशेषता जिसके कारण इसका स्थान सूफी प्रेमाख्याना म अन्यतम है, यह है कि बलख-बुखारा, रूमदेश और चीन को घटना-क्षेत्र चुनकर भी कवि न इस काव्य म वातावरण भारतीय ही रखा है। व्यक्ति और स्थान जरूर अभारतीय हैं परन्तु काव्य म भारतीय—सो भी पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक जीवन का ही प्रतिबिम्ब हम मिलता है।

हस-जवाहिर का अभी तक कोई सुसपादित सस्करण उपलब्ध नही है। हम राजा रामकुमार प्रेस बुक डिपो, लखनऊ से प्रकाशित सन १९५२ म पाँचवी बार मुद्रित सस्करण से ही काम चलाना पडा है। यह सस्करण पाठ की दृष्टि स पर्याप्त दोषपूर्ण है।

इस काव्य के रचयिता कासिमशाह ने अपना थोडा-सा जो परिचय दिया है, उसक आधार पर उनका निवास उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले (अब बाराबकी जिले)

---

१ 'नल-दमन सपा० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल और श्री दौलतराम जुयाल 'काव्य-कथा भाग, प० ५४

२ ग्यारह सै उचास जो आजा। तब यह कथा प्रेम कवि साजा।
—हस जवाहिर २।१।१

३ महम्मदशाह देहली सुल्तानू। कामी गुन वह कौन बखानू॥
छाजे पाट धीर सरताजा। नावहिं सीस जगत के राजा॥ —वही १।११।२

के दरियाबाद नामक स्थान में था। इनके पिता का नाम इमानुल्ला था और ये हीन या छोटी जाति के थे।[१] पीर मुहम्मद के पुत्र पीर अशरफ कासिमशाह के गुरु थे।[२] पीर अशरफ मलोन नगर के निवासी थे।[३]

कथा—बलख बुखारा के शाह बुरहान के एक हजार रानियों में से किसी के पुत्र न था। पुत्र के अभाव में शाह दुःखी रहता था। हजरत ख्वाजा खिज्रपीर के आशीर्वाद से उसकी एक बेगम को पुत्रोत्पत्ति हुई। ज्योतिषियों ने उसका भाग्य-फल बताया कि यह योगी-वेश धारण करेगा। पक्षी रूप में कोई आएगा और वही इसे योगी बनाकर ले जाएगा। कुछ समय बाद बुरहान का देहान्त हो गया। हंस अभी अल्प वयस्क था, अतः मरते समय शाह ने अपने एक सरदार दौलामीर को उसका संरक्षक एवं अभिभावक नियुक्त कर दिया। शाह के मरते ही देश में अव्यवस्था फैली। दौलामीर के मन में भी पाप जागा। उसने हंस और उसकी माता को नजरबन्द कर दिया और राज्य पर अधिकार कर लिया। परन्तु अपने एक विश्वासी और स्वामिभक्त सेवक मीरबहादुर की सहायता से वे दौलामीर की कैद से निकल भागे। ख्वाजा खिज्र के परामर्शानुसार वे रूमदेश के शाह मुहम्मद शाह के पास शरण लेने पहुँचे। शाह के कोई पुत्र न था अतः उसने हंस को अपना बेटा मान लिया और बड़े स्नेह से उसका लालन-पालन करने लगा।

एक रात हंस को स्वप्न में एक सुन्दरी दिखायी दी। वह उसके विरह में जलने लगा। वह सुन्दरी चीन देश के राजा आलमशाह की बेटी जवाहिर थी। आलमशाह की राजधानी ठाकुरगढ़ थी। एक दिन जब जवाहिर अपनी फुलवारी में क्रीड़ा कर रही थी तब आकाश से एक परी उतरी और चीर उतार कर सरोवर में स्नान करने लगी। जवाहिर ने दौड़कर उसका चीर उठा लिया। परी उसके वश में हो गयी। परी का नाम शाम था। उसने आजीवन सखी बनकर जवाहिर के पास रहने का वचन दिया।

---

१ है लखनऊ अवध मझियारा। दरियाबाद नगर उजियारा॥

—हंस-जवाहिर १६।१

× × ×

दरियाबाद माँझ मम ठाऊँ। इमानल्ला पिता कर नाऊँ॥
तहवाँ मोहिं जनम बिधि दीन्हा। कासिम नाव जाति कर हीना॥
तेइ बीच बिधि कीन्ह कमीना। ऊँच सभा बैठ चित दीना॥
ऊँचे संग ऊँच मन भावा। तब भा ऊँच ज्ञान बधि-पावा॥
ऊँचा पंथ प्रेम का होई। तहिया ऊँच भए सब कोई॥

—वही १८।१२

२ अशरफ पीर जगत उजियारा। तेहि कारन पावँ मनतारा।
भयो जो पीर जगत को दाया। तेहि पग परसे उपर भाया॥ —वही १३।१२

३ नगर मलोन ठाम महि केरा। बहु निसि जग मा है उजियेरा॥
जसे भान जगत बहु पानी। तस बर अशरफ दा जग माहीं॥ —वही १४।१२

जवाहिर के पिता ने कोऊ नगर के सुलतान भोलाशाह के पुत्र दिनौर के साथ उसका विवाह-सम्बन्ध करना निश्चय किया। परन्तु 'शब्द' परी ने पता लगाया कि दिनौर तो कुरूप और लम्पट है। जवाहिर के रूप-गुण के समान वर ढूँढ़ने के लिए 'शब्द' परी पक्षी रूप में उड़ चली।

सप्त द्वीपों में घूमती हुई वह रूमदेश पहुँची। वहाँ हंस को उसने सब प्रकार से जवाहिर के योग्य वर पाया। हंस ने 'शब्द' परी को अपना गुरु मान लिया। 'शब्द' उड़कर जवाहिर के पास गयी और हंस के प्रति उसके हृदय में प्रेम उत्पन्न किया।

'शब्द' को लौटने में विलम्ब होने लगा, तो हंस का मन निराश हो चला। एक दिन वह मन बहलाने के लिए अपने साथियों के साथ शिकार खेलने गया। उनसे बिछुड़कर और थककर वह एक शिला पर सो गया। तभी कुछ परियाँ आयीं और कौतुकवश उसे दूल्हे की पोशाक पहनाकर चीन देश ले चलीं। जवाहिर को ब्याहने के लिए दिनौर की बारात द्वाराचार को जा रही थी। परियों ने माया से आँधी चला दी। उस धुंध में उन्होंने दिनौर को तो लाकर वन में बैठा दिया और हंस को उसकी जगह हाथी पर बैठा दिया। 'शब्द' परी ने हंस को पहचान लिया और जवाहिर को यह सुसंवाद सुनाया। वर को सबने सराहा। विवाह सम्पन्न हुआ। दोनों ने अँगूठियों की अदलाबदल की। रात को वे पास-पास सो गये। तभी परियों ने हंस को उठाकर वन में शिला पर ला सुलाया और उसकी जगह दिनौर को जवाहिर की बगल में सुला आयीं।

प्रातःकाल उठने पर जवाहिर ने दिनौर को अपने पार्श्व में जो देखा तो आग-बबूला हो गयी। उसने उसे अपमानित करके निकाल दिया। दिनौर ने बदला लेने की ठान ली।

'शब्द' परी उड़कर हंस के पास पहुँच गयी और उससे जवाहिर की विरहाकुल दशा का वर्णन किया। हंस उसके मार्ग-दर्शन में जोगी-वेश धारण कर निकल पड़ा। मार्ग की अनेक कठिनाइयाँ सहते हुए वह चीन देश पहुँचा। आलमशाह ने उसकी अगवानी की। हंस-जवाहिर का पुनर्मिलन हुआ। एक वर्ष तक ससुराल में रहने के बाद हंस जवाहिर तथा 'शब्द' परी आदि को लेकर रूम देश के लिए चल पड़ा।

मार्ग में वे कोऊनगर के पास से गुजरे। दिनौर के कहने से जोगी वीरनाथ ने अपने कुछ चेलों को भेजकर जवाहिर को जहाज से उठवा मँगाया। दिनौर, वीरनाथ तथा उसके चेलों ने जवाहिर पर कुदृष्टि डालनी चाही, तो उस सती स्त्री की एक दृष्टि से वे सब पत्थर बन गये।

उधर हंस किंगरी बजाता कोऊनगर की गलियों में घूम रहा था और जवाहिर को ढूँढ़ रहा था। भोलाशाह की बेटी नूरमाह उस पर आसक्त हो गयी। 'शब्द' परी ने जवाहिर का पता लगा लिया। भोलाशाह ने अपनी बेटी नूरमाह का विवाह हंस से कर दिया। जवाहिर और नूरमाह को लेकर हंस रूम देश पहुँचा।

हस की माता ने एक दिन उससे कहा कि तुम्हें अपने पिता के राज्य को हस्तगत करने का प्रयत्न करना चाहिए। रूमदश के राजा ने हस के साथ एक बड़ी सेना भेज दी। हस बल्ख बुखारा पहुँचा। युद्ध में विश्वासघाती दौलामीर मारा गया। हस ने अपने पिता का राजपाट सभाला। कुछ समय तक सब कुछ शान्ति से बीता।

परन्तु दौलामीर की एक रखैल के बेटे कमरखान ने एक दिन हस को धोखे से छुरी भोक दी और अपने पिता की हत्या का बदला ले लिया। हस की मृत्यु के समाचार से सबत्र कुहराम मच गया। शब्द परी ने अपनी आखें निकाल डाली। जवाहिर और नूरमाह अपने पति के शव के साथ चिता पर सती हो गयी। मन्त्रियो ने जवाहिर के छोटे-से पुत्र को सिंहासन पर बैठा दिया। बड़े होकर हस के बेटे ने अपने पिता की कीर्ति को खूब बढाया।

इन्द्रावती

कवि— इन्द्रावती और अनुराग बाँसुरी के रचयिता कवि नूर मुहम्मद सबरहद (शाहगज जिला जौनपुर) के रहने वाले थे।[1] परन्तु जीवन के अन्तिम दिनो में भादो (फूलपुर जिला आजमगढ़) रहने लगे थे। यही उनकी ससुराल थी। नूर मुहम्मद फारसी में कामयाब उपनाम से कविता करते थे। उनकी मृत्यु १७८० ई० के आसपास हुई। ये कट्टर मुसलमान कुशल कवि और विद्वान थे।

कृति – कवि ने इन्द्रावती की रचना हिजरी सन ११५७ या स० १८०१ (१७४४ ई०) में की थी।[3] यह उनकी आरम्भिक रचना जान पड़ती है जैसा कवि ने स्वय स्वीकार किया है। इस काव्य को लिखते समय कवि अभी तरुण ही था।[4] उस समय दिल्ली में मुहम्मद शाह का शासन था।[5] ऐसा लगता है कि इन्द्रावती पूर्वार्द्ध और इन्द्रावती उत्तरार्द्ध के लिखने में कवि ने कुछ अन्तर दिया। पूर्वार्द्ध तो ११५७ हि० में लिखा ही गया पर उत्तरार्द्ध कुछ बाद में लिखा गया। कदाचित उत्तरार्द्ध का लिखते समय कवि वृद्धावस्था में पहुँच गया था।

---

१ कवि अस्थान कीन्ह जहि ठाऊ। सो बह ठाऊ सबरहद नाऊ।
—इन्द्रावती (मन्ति) पृ० २

२ अनुराग बाँसुरी सम्पादक आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय भूमिका भाग पृ० ६७

३ सन् इग्यारह सौ रहेउ सतावन अपराह।
कहे लगउ पोथी तब पाय तपी कर बाह॥
—इन्द्रावती (मन्ति) पृ० ४ दोहा १०

४ है कवि मन नई तरुनाई। छूट न अबहा कवि लरिकाई।
बिनवत कविजन कँह कर जोरी। है थोरी बुधि पु जिय मोरी॥
हौं मैं लरिकाई को चेला। कहौं न पोथी खसहु खेला॥
—वही पृ० ४ छद १

५ करौ महम्मद शाह बखानू। है सूरज दिल्ली सुलतानू।
सब काहू पर दाया करई। धरम सहित सुलतानी करई॥ —वही पृ० ४

अभी तक 'इन्द्रावती' का पूर्वार्द्ध ही प्रकाशित हो सका है। इसका संपादन बाबू श्यामसुन्दरदास जी ने किया है और प्रकाशन १६०६ ई० में नागरी प्रचारिणी सभा काशी ने। अब यह प्रति भी किसी किसी पुस्तकालय में ही उपलब्ध है। मुद्रित प्रति के अंत में कवि की यह उक्ति है—

भएउ संपूरन आधी कथा, मानहुँ क्षीर सिंधु मैं मथा।
तीन सहस चौपाइय भई। देखु आइ फुलवारिय नई॥
पुनि आगें जो सुख सों रहऊ। तीन सहस चौपाइय कहऊ॥
हौं अबहीं थोरे हिम केरा। बात बहुत हिमकर मैं हेरा॥
विद्या ज्ञान बहुत जेहि होई। अय छिपाने बूझ सोई॥

(पृष्ठ १७६)

इन्द्रावती का उत्तरार्द्ध आज तक प्रकाशित नहीं हो पाया, यह बड़े खेद की बात है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में उत्तरार्द्ध भाग की पाण्डुलिपि सुरक्षित है। उस पर पुस्तक का रचना काल सं० १७६० वि० लिखा हुआ है, (कवि द्वारा नहीं)। परन्तु पूर्वार्द्ध यदि १७४४ ई० का लिखा है तो उत्तरार्द्ध १७६० वि० या १७०३ ई० का लिखा कैसे हो सकता है? अवश्य यहाँ भूल हुई है। यदि यह विक्रमी के बजाय ईस्वी सन होता, तो विश्वसनीय हो सकता था, क्योंकि कवि ने १७६४ ई० (११७८ हिजरी) में 'अनुराग-बाँसुरी' की रचना की थी। संभव है उसके कुछ ही पूर्व 'इन्द्रावती' के उत्तरार्द्ध को उसने समाप्त किया हो। 'इन्द्रावती' की सफलता से उत्साहित होकर कवि ने दो अन्य काव्य 'नल दमन' और 'अनुराग बाँसुरी' लिखे[1] जिनमें से 'नल दमन' तो अभी तक अप्राप्त है और 'अनुराग बाँसुरी' प्रकाशित हो चुकी है।

इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) की जो पाण्डुलिपि सभा के पुस्तकालय में सुरक्षित है उसका लिपि-काल १६६० वि० है और लिपिकार हैं मिर्जापुर के श्री कादिरबख्श। 'इन्द्रावती' के इस खण्ड के अन्त में कवि ने इतना ही लिखा है—

भएउ संपूरन पोथी, पूजी मन की आस।
पढ़ें लोग मेधावी जब लगि महि आकास॥

'इन्द्रावती' की रचना करके नूर मुहम्मद को बड़ा आत्म-तोष प्राप्त हुआ था। एक सफल कृति की समाप्ति के बाद यह आनन्द स्वाभाविक था। 'अनुराग बाँसुरी' में वे लिखते हैं—

भाखत हौं प जोय सजाई। इन्द्रावति सम कहा न जाई॥
मन के बीच अरथ जो रहा। वहै अरथ बीच मे कहा॥

---

१ आगे हिंदी समुद्र तिराना। भाखा इन्द्रावति जो बाना।
फर कहा नलदमन कहानी। कौन मनाव दूसरि बानी॥

—अनुराग-बाँसुरी २।१४ पृ० ८५

रहेउ न मुकता हस्त मझारा। ले सब इन्द्रावति पर झारा॥
सिन्धु अपार अथ यह अहै। अब काहैं का दूसर कहे॥

× × ×

यह जो छत्तिस खंड[1] उठाएउ। कौन कौन नहिं चित्र बनाएउ॥
विद्या बहुत होइ जहि बूझ सोइ।
न तो कहा समुझ, तेहि सब होइ॥ छंद ४॥

'इन्द्रावती' में कवि ने पाँच चौपाइयों के बाद एक दोहा रखने के क्रम का निर्वाह किया है। इन्द्रावती में पात्रों और स्थानों के जो नाम रखे गये हैं वे आध्यात्मिक अर्थ-परक हैं।

कथा (पूर्वार्द्ध)—कालिंजर के राजा भूपति का एकमात्र संतान थी एक राजकुँवर जिसका नाम ज्ञानी (गयानी) था। राजकुँवर का विवाह सुंदर नाम की लड़की से कर दिया गया था। भूपतिराय की मृत्यु होने पर ज्ञानी राजा बना। वह योग्य शासक था। एक रात उसने स्वप्न में एक दर्पण देखा। दर्पण निर्मल था उसमें एक सुन्दरी नारी का प्रतिबिम्ब दिखायी दिया। दूसरी रात फिर वही सपना आया। अंतर इतना ही था कि पहले स्वप्न में उस नारी के मुख पर केश की लटें नहीं बिखरी थी और दूसरे स्वप्न में बिखरी हुई थी। राजकुँवर स्वप्न दर्शित उस नारी पर मोहित हो गया। राज काज से उसका मन उचट गया। राजा के मन्त्री बुद्धसेन ने जो मनपुर का रहने वाला था कई चित्रकारों से सुन्दरी स्त्रियों के चित्र बनवाये पर उनमें से एक भी स्त्री उस स्वप्न सुन्दरी के समान न थी। उन्हीं दिनों राजा की फुलवारी में एक तपस्वी का आगमन हुआ। राजा ने उनके चरणों पर गिरकर अपनी मनोव्यथा कही। तपस्वी ने राजा ज्ञानी को बताया कि तेरी स्वप्न सुन्दरी आगमपुर नगर के राजा जगपति की पुत्री रतनजोत इन्द्रावती है। इन्द्रावती के जन्म की कथा बताते हुए तपस्वी ने कहा—राजा जगपति के कोई संतान न थी इससे वे दुःखी रहते थे। उन्होंने शिवजी की आराधना की। शिव ने कहा कि तेरे भाग्य में पुत्र नहीं है। राजा ने कन्या ही माँगी। शिवजी के कहने से राजा ने रात को एक रत्न मंदिर में रख दिया पार्वती ने उसी रतनजोत के रूप में अवतार लिया—रत्न की जगह सबेरे एक कन्या मिली। पार्वती ने राजा को स्वप्न में

१ इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध भाग १) में ये १८ खंड हैं—जन्म स्वप्न जोगी [illegible] कुमारी [illegible] कहानी पाती दर्शन [illegible] [illegible] [illegible] मधुकर, मानिक विरह [illegible] [illegible] [illegible] और ब्याह खंड।
उत्तरार्द्ध (भाग २) के १८ खंड हैं—[illegible] सिंधु, बारहमासा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ब्याह (ब्याह) [illegible] [illegible] (स्वयंवर) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] खंड।
इस प्रकार दोनों भागों में कुल ३६ खंड (प्रकरण/अध्याय) हैं।

कन्या का नाम इन्द्रावती रखने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि समुन्द्र में एक मोती डाल दो, जो उस मोती को निकाल सकेगा, वही इस कन्या का वर होगा। राजा ने उसका नाम रतनजोत इन्द्रावती रखा और सागर में एक मोती भी डाल दिया। तपस्वी ने आगे बताया कि आगमपुर तक बिना अगुआ के नहीं पहुँचा जा सकता, क्योंकि उसके मार्ग में सात भयंकर वन पड़ते हैं और सात ही अथाह समुद्र। यह सुनकर राजा ज्ञानी ने तपस्वी के चरणों पर फिर माथा टेका और कहा कि मेरी पीड़ा हरिए। तपस्वी ने राजा का दृढ़ निश्चय जानकर उसे माया रहित कर दिया। माया रहित होने ही राजा ज्ञानी को आगमपुर की बाट दीखने लगी। राजा ने जोगी का वेश धारण कर लिया। उसके आठ मित्र भी साथ चले, मन्त्री बुद्धसेन भी।

कालिंजर से चलकर राजा ने पहला पड़ाव देहपुर में किया। उसके बाद रास्ते में सात तरह के सात वन पड़े। उनको पारकर वह दहन्तपुर में आया। बुद्धसेन के अतिरिक्त अन्य सब साथियों को उसने वहीं रह जाने दिया। एक कायापति नामक बनजारा भी आगमपुर जाना चाहता था। वह भी कुँवर ज्ञानी और बुद्धसेन के साथ नौका में चढ़ गया। समुद्र में ऊँची लहरें उठने लगीं, परन्तु केवट ने धैर्य से नौका को खेकर किनारे लगा दिया। समुद्र पार करके राजा ज्ञानी जीवपुर (जिउपुर) में रहने लगा। वहाँ के बाद राजा जीवन्तपुर में आया। यहाँ उसे मन्त्री बुद्धसेन को भी छोड़ना पड़ा। यहाँ से राजा अकेला ही हृदय में इन्द्रावती की प्रीति का सम्बल लेकर चला। चलते चलते वह आगमपुर के निकट आ गया। वहाँ आकर उसने रानी की मन फुलवारी में डेरा डाला।

इन्द्रावती के हृदय में भी काम का प्राबल्य होने लगा। न जाने कितने राजकुमार सागर से मोती निकालने आये, परन्तु वे डूब मरे, इसका भी दुःख उसे था। अपनी अन्तरंग सखी मर्मी की सलाह पर उसने महादेव जी और पार्वती जी से विनय की—

सबकर फूल चढ़ा पिय पागा। फूल हमार डार है लागा ॥[1]

रात को इन्द्रावती ने दो स्वप्न देखे जिनका अर्थ सखियों ने यह लगाया कि चार-पाँच दिन में ही उसे अपना प्रिय मिलेगा।

सुचेता मालिन से यह जानकर कि एक सुन्दर युवा योगी उसके प्रेम में पागल हुआ फुलवारी में रुका है इन्द्रावती अपनी सखियों के साथ फुलवारी में गयी। राजा ज्ञानी इन्द्रावती के सुन्दर मुख को देखते ही मूर्च्छित हो गया। इन्द्रावती की सखियों ने एक कागज पर यह लिखकर उसके पास रख दिया कि तुम्हारा योग अभी अधूरा है क्योंकि इन्द्रावती के देखते ही तुम मूर्च्छित हो गये। राजा ज्ञानी को जब होश हुआ तब वह बहुत पछताया। संयोग से उसका मित्र और मन्त्री बुद्धसेन उसे ढूँढ़ता हुआ

---

१ इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) छंद ३१

यहाँ आ गया। मित्र को पाकर राजा को ढाढ़स बंधा। राजा ने सुचेना मालिन के हाथ इन्द्रावती को प्रेम-पत्र भेजा। इन्द्रावती ने प्रति सन्देश भेजा और राजा से सागर से मोती निकालकर प्रण पूरा करने को कहा। राजा ज्ञानी स्नेह-वृक्ष के तले जा बैठा। राजा जगपति ने उसे मोती निकालने की आज्ञा दी। राजा ज्ञानी मोती निकालने चला, पर मार्ग में ही राजा दुर्जन ने उसे बन्दी बना लिया और उसकी रानी मोहिनी उस पर अपना माया-जाल फैलाने लगी। ज्ञानी ने एक तोते के द्वारा इन्द्रावती के पास अपने बन्दी हो जाने का समाचार भेजा। इन्द्रावती ने अपने पिता के एक मित्र कृपाराय की सहायता लेने का परामर्श दिया। बुद्धसेन कृपाराय के पास गया और उनको सहायता करने के लिए तैयार किया। कृपाराय ने दुर्जन पर चढ़ाई की और उसे युद्ध में मार डाला। कृपाराय ने ज्ञानी को सागर का वह स्थान भी दिखा दिया जहाँ मोती था। परन्तु इसी बीच जगपतिराय को उसके क्षत्रियत्व पर सन्देह हो गया और उन्होंने ज्ञानी को अपने कुल शील का प्रमाण देने तक मोती न निकालने का आदेश दिया। सौभाग्य से उसी समय गुरुनाथ गोसाईं आ गये, उन्होंने जगपति को ज्ञानी का वास्तविक परिचय दिया और मोती निकाल पाने का आशीर्वाद भी राजा ज्ञानी को दिया।

इन्द्रावती की सखियाँ उसके विरह-दुःख को कम करने के लिए उसे मधुकर मालती तथा मानिकचन्द्र-हीरा की प्रेम-कथाएँ सुनाती रहीं किन्तु उन कथाओं को सुनकर इन्द्रावती का विरह और बढ़ गया।

राजा ज्ञानी मोती निकालने चला तो कई प्राकृतिक बाधाएँ आयीं। भँवर में नौका तक डूब गयी। मोती की रक्षिका समुद्र की बेटी कमला ने इन्द्रावती का रूप धरकर उसके प्रेम की सच्चाई की परीक्षा ली। उसे प्रेम में दृढ़ पाकर उसने मोती पाने का आशीर्वाद दिया। राजा ज्ञानी ने मरजिया बनकर डुबकी लगाई और मोती निकाल लिया। आगमपुर में खुशी की लहर दौड़ गयी। जगपति ने इन्द्रावती का विवाह राजा ज्ञानी से कर दिया। दोनों के विरह का अंत हुआ।

('इन्द्रावती' के मुद्रित पूर्वार्द्ध की कथा यहाँ समाप्त होती है।)

कथा (उत्तरार्द्ध)—इधर तो राजा ज्ञानी इन्द्रावती के साथ भोग विलास में रत था उधर उसकी पहली रानी सुन्दर कालिञ्जर में विरह व्यथा में जल रही थी। राजा के जाने के समय वह गर्भवती थी। उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम पंडितों ने कारनराय रखा। विभिन्न ऋतुओं में रानी का विरह बढ़ता ही जाता था। सखियाँ तरह-तरह की कथाएँ कहकर उसका जी बहलाने की चेष्टा करतीं परन्तु उसका मन किसी प्रकार न बहलता। प्रेम कथाओं को सुनकर अपनी संयोगावस्था की स्मृति उसे हो आती और उसकी पीड़ा और बढ़ जाती। सखियों ने उसको हंसराज रूपमती की कहानी भी सुनायी जिसमें हंसराज और रूपमती के प्रेम का एक तोते और गणिका रम्भा के माध्यम से पनपने, दोनों का मिलन तथा विवाह होने, हंसराज को पहली

पत्नी चन्द्रवदन द्वारा सुखदेव मिश्र को दूत बनाकर हंसराज के पास अपना विरह-संदेश भेजना एवं हंसराज का सामंतों को लेकर आने का वृत्तान्त था। (इस प्रासंगिक कथा को इन्द्रावती उत्तरार्द्ध में अधिक विस्तार मिल गया है।) इस कथा को सुनकर रानी 'सुन्दर' को भी दूत द्वारा अपना विरह-संदेश राजा नानी तक भेजने का ध्यान आया। उसने पवन को अपना दूत बनाकर राजा के पास संदेश भेजा।

इधर एक और घटना घटी। कालिंजर की एक दुष्टा स्त्री 'लोभ' ने रानी सुंदर के पुत्र कीरतराय पर टोना कर दिया। रानी ने उस स्त्री को निकाल दिया। उसने जतपुर जाकर वहां के राजा कामसेन से 'सुंदर' के सौन्दर्य की प्रशंसा की। कामसेन ने मोहिनी नामक मालिन को कुट्टिनी बनाकर सुंदर के पास भेजा। मोहिनी ने अपने को आगमपुर की रहनेवाली बतलाकर सुंदर को भरमाना चाहा पर सुंदर उसके जाल में न फँसी। उसने मार पीटकर जोगिन वेशधारी उस कुट्टिनी को घर से निकलवा दिया। कुपित होकर कामसेन ने कालिंजर पर आक्रमण कर दिया। सुंदर ने बड़ी वीरता से सैन्य संग्रह कर कामसेन का सामना किया। युद्ध में कामसेन मारा गया।

उधर, पवन द्वारा 'सुंदर' का विरह संदेश पाकर राजा नानी को उसकी याद हो आयी। राजा जगपति से उसने विदा कर देने की हठ की। जगपति ने बहुत धन द्रव्य दास दासी देकर कन्या विदा कर दी। मझधार में समुद्र की कन्या कमला ने इन्द्रावती का रूप धरकर नानी के प्रेम की परीक्षा ली और उसमें उसे दृढ़ पाया। राजा नानी इन्द्रावती के साथ कालिंजर लौट आया। सुन्दर अपने पति को पुनः पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। राजा अपनी दोनों रानियों के साथ सुखपूर्वक रहने लगा। एक दिन राजा आखेट के लिए गया था। एक वृक्ष के नीचे विश्राम करते हुए उसने सुजान नामक तोते से नही के राजकुमार वल्लभ और राजकुमारी प्रेमा की प्रेम-कथा सुनी जिसे सुनकर उसे संसार से वैराग्य हो गया। कुछ समय बाद नानी की मृत्यु हो गई। उसके शव को लेकर उसकी दोनों रानियाँ सुंदर और इन्द्रावती चिता पर सती हो गयी।

अनुराग-बांसुरी

कृति—नूर मुहम्मद कृत अनुराग बांसुरी एक धर्म-कथा या उपमिति कथा है। इसकी कथा में आध्यात्मिक संकेत पिरोये गये हैं, अतः यह एक प्रकार की परोक्ति' या गर्भोक्ति है।[1] अनुराग बांसुरी की रचना नूर मुहम्मद ने सन्

---

[1] अनुराग-बाँसुरी सं० आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय भूमिका भाग पृ० ७६-७७

११७८ हिजरी अर्थात् सन् १७६४ ई० में की।[1] यह पहले कहा जा चुका है कि नूर मुहम्मद कट्टर मुसलमान थे। अपने काव्य के माध्यम से उन्होंने इस्लाम के दीन का प्रचार करना उद्देश्य बनाया था। उनकी इन पंक्तियों में यह स्पष्ट है—

> सुनत जो यह शब्द मनोहर, होत सचेत कृष्न मुरलीधर।
> यह महम्मदी जन की बोली जामों कंद नबात घोली॥
> बहुत देवता को चित हर बहु मूरति औंधी होइ पर।
> बहुत देवहरा ढाहि गिरावै संख बाद की रीति मिटावै॥[1]

और—

> जानत है वह सिरजनहारा जो किछु है मन मरम हमारा।
> हिंदू मग पर पाँव न राखउँ का जौं बहुत हिन्दी भाखउँ॥
> मन इसलाम मसत कै माँजउँ दीन जेंवरी करकस भाँजउँ॥[3]

कवि की शक्ति इस काव्य में नाम पर नहीं ... इस्लाम पर ... है। इसमें अनुराग-बाँसुरी को निस्संकोच धर्म-कथा कहा जा सकता है। इसमें मानव जीवन का अधिक स्थान नहीं मिल पाया है किन्तु जितना भी मिला है, उसकी छटा निराली है। पूरे काव्य में शृंगार—सो भी विप्रलम्भ शृंगार का निरूपण है। सभी पात्र वियोग की आग में जलते हैं और संयोग के लिए लालायित हैं।

अनुराग-बाँसुरी में तीन चौपाइयों अथवा छः अर्द्धालियों के बाद एक बरवै छन्द रखा गया है। इस प्रकार छन्द प्रयोग की दृष्टि से भी अनुराग-बाँसुरी का स्थान सूफी प्रेमाख्यानों में निराला है। इसमें संस्कृतनिष्ठ अवधी का प्रयोग किया गया है।

कथा—मनफुलवारी में सुशोभित एक नगर था—मूरतिपुर। उसका राजा था—जीव। जीव का पुत्र था अन्तःकरण। अन्तःकरण के साथ लगाटिया साथी थे जिनके नाम थे—बुद्धि, चित्त और अहंकार। जीव के भी दो मित्र थे—संकल्प और विकल्प। अन्तःकरण की सुन्दरी पत्नी का नाम था महामोहिनी। राजकुमार अन्तःकरण ने विद्यापुर से विद्याध्ययन करके लौटते हुए श्रवण नामक ब्राह्मण के गले में एक सर्पमाला देखी जो उसे अपने एक सहपाठी शील वाद से प्राप्त हुई थी। बात यह थी कि सर्पमाला मनहनगर के राजा दर्शनराय की पुत्री सर्वमंगला की थी। सर्वमंगला ने ज्ञातस्वाद की किसी रचना के गुंजार पर प्रसन्न

---

१ यह ग्यारह सै अट्ठत्तर। फेर सुनाएउ बचन मनोहर॥
 ता मन के अभिलाष बढ़ावा। जासौं फेर सुबचन सुनावा।
 करत विचित्त चित ले राग जुनाइ।
 सो अनुराग-बाँसुरी मधुर बजाइ॥ —अनुराग-बाँसुरी, ... २

२ वही, ... ७

३ वही, ... १

होकर उसे अपनी माला पुरस्कार स्वरूप दे डाली थी। श्रवण को वह माला अच्छी लगी, इसलिए नातस्वाद न उसका द दिया। श्रवण न नातस्वाद स जसा सुना था, 'सवमगला' के रूप और गुण की प्रशसा की। अत करण का मन डोल गया, वह 'सवमगला' की प्रेमाग्नि म जलन लगा। अपनी पत्नी महामोहिनी क प्रति वह उदासीन रहने लगा। जीव' को यह पता चला। 'अत करण का भेद लेन के लए उसन बुध नामक भेदिया को नियुक्त किया। सवक के रूप म अत करण क साथ रहकर 'बुध' न उसके हृदय का गोपन रहस्य जान लिया और 'जीव को बतला दिया। जीव ने पुत्र को विरत करना चाहा, क्योंकि 'सवमगला की प्राप्ति टेढी खीर थी। बुद्धि' न तो अत करण को साहस दिलाया, 'सकल्प ने उसक उत्साह को ललकारा पर विकल्प न चित्त को भ्रमित करना चाहा। किन्तु अत करण ने उस पर ध्यान नहीं दिया और सवमगला' की खोज म निकल पडा।

तभी नगर म सनेह गुरु नामक वरागी आ गय। अत करण न उनसे 'सवमगला का पूरा परिचय पा लिया और गुरु की शरण म चला गया। गुरु न अपना उपदेशी सुग्गा उसके साथ कर दिया। वाम माग को छोड दक्षिण माग ग्रहण करता हुआ अत करण उपदेशी सुग्गा के पथ निर्देशन म चलता रहा। अनेक कष्ट सहते सहते वह इन्द्रियपुर आया। वहा के राजा मायावी अघष्ट न उसे फँसाना चाहा और कामुकी मनभावनी नामक दारा को उस वशीभूत करन के लिए भेजा। पर राजकुमार 'अत करण पर उसके मोह जाल का कोई प्रभाव न पडा वह सनहनगर की ओर बढता ही गया। अतत वह सनेहनगर पहुँच ही गया। उपदेशी सुआ न उस ध्यान कन्दरा म ठहरा दिया। अत करण' वही रहकर सवमगला का ध्यान करन लगा।

उधर सवमगला ने एक के बाद एक दो स्वप्न दख। एक म उसने एक भौंर को अपने चारो ओर मडराते देखा और दूसर म एक योगी को अपनी पूजा करते तथा कृपा-कटाक्ष की याचना करत हुए दखा। सखियो ने इन सपनो का फल यह बताया कि कोई पुरुष उसकी याग साधना म लगा है। 'सवमगला' के हृदय म भी प्रेम की पीर जाग उठी। उपयुक्त अवसर देखकर उपदेशी सुआ सवमगला क पास पहुँचा। उसने अत करण का रूप गुण और उसक प्रति उसक प्रेम का वणन कर सुनाया। सवमगला ने अपनी सखी चित्रवर्धिनी के हाथ अपना चित्र अत करण के पास भेजा और उसका चित्र चित्रवर्धिनी के द्वारा खिचवा मँगाया। चित्र दशन स पुष्ट हुआ प्रेम पत्र व्यवहार के माध्यम से पल्लवित होने लगा। इसके बाद दोनो म प्रत्यक्ष दशन की कामना जागी। अत करण' सवमगला के महल की ओर चला। मधाग स सवमगला ने भी झरोखे स झाककर अपना दीदार दिया। उसका दशन करत ही अत करण मूर्छित हो गया। उपदशी सुआ स यह जानकर कि यही सच्चा प्रेमी है सवमगला' ने अपने प्रेम की प्रतीक—अपने गले की माला राजकुमार के गले पहना दी।

उधर सूरतिपुर में जब जीव को अपने पुत्र अंतःकरण का बहुत दिनों तक कोई समाचार न मिला तब उसने दर्शनराय को एक पत्र लिखकर सर्वमंगला' के प्रति अंतःकरण के प्रेम की सूचना दे दी और उस पर कृपा-दृष्टि रखने के लिए भी लिख दिया। सनेहगुरु भी इस बीच तीर्थयात्रा से लौटकर अपने नगर में लौट आये। उन्होंने भी दर्शनराय से अंतःकरण का कुल शील बखाना। उपदेशी सुआ ने तो पहले से ही भीतर-बाहर रंग जमा रखा था। उसने भी सब बातों की साखी भरी। दर्शनराय ने प्रसन्न होकर सर्वमंगला का विवाह अंतःकरण' से कर दिया। अंतःकरण सर्वमंगला को विदा कराकर अपने घर आ गया। उसे आया देख सारा सूरतिपुर नगर आनन्द और उल्लास से भर उठा।

यूसुफ-जुलेखा

कवि— यूसुफ़-जुलेखा शीर्षक सूफ़ी प्रेमाख्यान के रचयिता शेख निसार का जन्म सन १७२२ ई० में हुआ था। ये अवध और रुदौली के मध्य में स्थित गाँव शेखपुर[1] के रहने वाले थे। यह गाँव फैजाबाद-लखनऊ रोड पर फैजाबाद से १०वें मील दक्षिण में है। आजकल इसे गाँव को शेखपुर जाफर कहा जाता है और यह फैजाबाद जिले में पड़ता है। शेखपुर का मसनवी में रचयिता मौलाना जलालुद्दीन रूमी के वंशज शेख हबीबुल्लाह ने बादशाह अकबर के राजत्व-काल में बसाया था। उनके लड़के का नाम शेख मुहम्मद था। शेख मुहम्मद के लड़के शेख गुलाम मुहम्मद थे। यही शेख निसार के पिता थे।[2] शेख निसार का वास्तविक नाम गुलाम अशरफ था।

शेख निसार ने अपने को हिन्दी फारसी तुर्की संस्कृत और अरबी भाषाओं

---

१ अवध रुदौली के मध्य ठावा। सेखपुर अति सुन्दर गावा॥
—सेख निसार —देखिए सूफ़ी काव्य संग्रह पृ० १७६

२ सेखपुर अति गाँव सुहावा। सेख निसार जनम तहँ पावा॥
कारिज मोर सकल सरबराई। प्रगट सुनाइ कहूँ लिखि भाई॥
सेख हबीबल्लाह सोहाए। सेखपुर जिन्ह गाँव बसाए॥
पातसाह अकबर सुलताना। तेहि के राजकर बसत बखाना॥
अवध देस सूबा हुइ आए। दास बरस तहि रहे सोहाए॥
तेहि के सेख मुहम्मद बारा। स्वरत भू पर अवतारा॥
ता सुत गुलाम मुहम्मद नाऊँ। सो हम पिता सो ठाकुर गाऊँ॥

× × ×

बंस जलालुद्दीन के सेख हबीबल्लाह।
जे हक मसनवी जगत महँ रूम निसम मसनाह॥

— यूसुफ़-जुलेखा और भी देखिए 'जायसी के परवर्ती हिन्दी सूफ़ी कवि और काव्य' डॉ० सरला शुक्ल पृ० ५७

मे लिखे सात ग्रंथों का रचयिता कहा है।[1] अपने समय में कासिमशाह के हंस जवाहिर' और इशाअल्ला खाँ के ग्रंथों के प्रचलित होने का उल्लेख भी उन्होंने किया है परन्तु प्रेम रस की इन काल्पनिक कथाओं की जगह सच्ची कथा वर्णित करने की इच्छा से उन्होंने यूसुफ-जुलखा का प्रणयन किया।[2] उसकी रचना का एक कारण उन्होंने और भी लिखा है। उनकी वृद्धावस्था में उनके बाईस वर्षीय प्यारे पुत्र लतीफ का देहान्त हो गया। इस मर्मान्तक चोट को भुलाने के लिए, और यूसुफ के पिता से यूसुफ के विछुड़न की घटना में इसका कुछ साम्य देखकर, शेख निसार ने इस कथानक पर काव्य रचना की।

कृति—यूसुफ-जुलेखा की रचना कवि ने अपनी वृद्धावस्था में की। उस समय उनकी आयु सत्तावन वर्ष की थी। ग्रंथ का रचना काल हिजरी सन १२०५ (विक्रमी संवत् १८४७ या शक संवत १७१२ या ई० सन् १७९०) है। इसकी रचना उन्होंने सात दिन में पूरी कर ली थी।[3] ऐसा प्रसिद्ध है कि इस ग्रंथ की रचना निसार ने सं० १८४७ के पौष मास की पूर्णिमा को आरम्भ की थी।[4] ग्रंथ रचना के समय दिल्ली के सिंहासन पर शाहआलम और लखनऊ के नवाब की गद्दी पर आसफउद्दौला विराजमान थे।[5] यह उनकी अन्तिम कृति है इसके पूर्व विभिन्न भाषाओं में वे सात

---

१ सात गरंथ अनूप सुहाए। हिन्दी औ फारसी सोहाए॥
सत्तकिरत तुरकी मन भाए। सभ प्रेमरस भरे सोहाए॥
मेहर निगार के कहेउ कहानी। रस मनोज रस कवित बखानी॥
औ दीवान मसनवी भाखा। स्यादी नरस्त फारसी राखा॥
सतकिरन तुर्की औ ताजी। और पारसी मसराब जो साजी॥
—शेख निसार कृत मेहर निगार मसनवी

२ हंस-जवाहिर प्रेम कहानी। कहा मसनवी अविरत बानी।
इशा कहे जहाँ लह मदू। औ सब कथा जहाँ लह बदू॥
झूठ ज्ञान सम तिन मन भाया। अब यह साँच कथा चित लाया॥
—यूसुफ जुलेखा

३ हिजरी सन बारह सै पाँचा। बरनेउ पेमकथा यह साचा॥
अट्ठारह सै सैंतालीसा। संवत् विक्रम सेन नरेसा॥
सतरह सै बारह पुनि साका। सतरह सै नब्बे ईसा का॥
सत्तावन बरस बीते आऊ। तब उपजेउ यह कथा कै चाऊ॥
सात दिवस महं कीन्ह समापत। दुरमति नाम रहेउ मो सम्मत॥
—यूसुफ-जुलेखा

४ देखिए—सूफी काव्य-संग्रह पृ० १७८

५ आलमशाह हिन्द सुलताना। तेहि के राज यह कथा बखाना॥
दिल्ली राज करे ऊ नीता। उमरावन तह कीन्ह अनीता॥
× ⊠ ×
पुनि निस अघ सन्ध सब छावा। अवध देस कहं दरब बचावा॥
येहिमा खान आसफद्दौला। जासु सहाय रहे नित मौला॥ —यूसुफ-जुलेखा

ग्रन्थ लिखे हुए हैं—महुअनिगार (मसनवी प्रेमाख्यान काव्य), रंग मजाज (शृंगार रस का रीति ग्रन्थ), शाहाना अनवार जौहर (फारसी मसनवी), रागों (संगीत ग्रन्थ), नस्र (फारसी गद्य ग्रन्थ), तलाव (गद्य-ग्रन्थ)। नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से इनका लिखा एक दीवान तथा फारसी ग्रन्थ नस्रे नजीर भी प्रकाशित हुआ है। इसी से पता चलता है कि निगार साहब काव्यशास्त्र उर्दू फारसी आदि के अच्छे ज्ञाता थे।

यूसुफ जुलेखा की फारसी लिपि में लिखित एक हस्तलिखित प्रति हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग में सुरक्षित है। उसी के कुछ अंशों को नागरी लिपि में श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी के कवि और काव्य' भाग ३ (हिन्दी प्रेमगाथा काव्य संग्रह) में प्रकाशित किया है परन्तु उसमें पाठ सम्बन्धी बहुत अशुद्धियाँ हैं। यूसुफ जुलेखा के कुछ अंश स्वर्गीय डा० परशुराम चतुर्वेदी ने सूफी काव्य संग्रह में संकलित किया है। चतुर्वेदी जी ने उसके पाठ को सुधारने का प्रयास किया है। किन्तु अभी तक यह पूरा ग्रन्थ नागरी लिपि में प्रकाशित नहीं हो सका है। हिन्दुस्तानी एकेडमी की फारसी लिपि वाली प्रति भी अशुद्धियों का आगार है पर भाषा की बाधा के कारण उसका पूरा उपयोग नहीं हो पाता था। अब तो हिन्दी कवि और काव्य में सम्पादित यूसुफ जुलेखा के अंश ही फारसी लिपि में अंकित प्रति के मिलने तक इस काव्य से परिचित होने के एकमात्र साधन हैं। श्री गोपालनारायण सिंह को पता चला है कि फैजाबाद के अमानुल्लाखाँ के पास इस ग्रन्थ की एक प्रति है परन्तु वह भी फारसी लिपि में है।

निगार द्वारा यूसुफ जुलेखा की कथा का आधार है जामी की प्रसिद्ध फारसी मसनवी यूसुफ जुलेखा। निगार ने इसको यथासम्भव भारतीय वातावरण में ढालने की चेष्टा की है परन्तु इसमें वे अधिक सफल नहीं हो सके हैं। यूसुफ जुलेखा की कथा का मूल स्रोत कुरान है और इसके नाम, स्थान एवं पात्र सुपरिचित हैं। यह कथा पुरानी बाइबिल (ओल्ड टेस्टामेंट) में भी आयी है। कथा के लिए देखिए प्रस्तुत प्रबन्ध का अध्याय ५ तथा डा० प० कि० स० क० का० पृ० ५१०-५१२ तथा हिन्दी प्रेमगाथा काव्य संग्रह पृ० १४२।

सूफी प्रेमाख्यानों का वर्ण्य विषय

सूफी एक प्रेम साधक होता है। उसका लक्ष्य है—मानवीय प्रेम को ईश्वरीय प्रेम में परिणत कर देना। परमात्मा के अलौकिक सौन्दर्य से अभिभूत वह दिव्य आनन्द में छका रहता है। संसार के सभी पदार्थ उसी सौन्दर्य की अभिव्यक्ति करते हैं।[1] उसकी साधना के सात सोपान माने जाते हैं—अनुताप, आत्मसंयम, वैराग्य, दारिद्र्य, धैर्य, विश्वास और सन्तोष। इन सोपानों को पार कर लेने के पश्चात साधक साधना की

---

१ जोहि के रूप सब होत सरूपा। ओहि निरूप नहि काहु के रूपा॥ —ज्ञानदीप छंद २

चार अवस्थाओं को पाने के लिए चेष्टा करता है। वे अवस्थाएँ हैं—शरीअत (धर्म-कर्म), तरीकत (उपासना), हकीकत (ज्ञान) और मारीफत (सिद्धि)। सूफी साधना में प्रेम का बहुत महत्त्व है। प्रेम है आत्मा की परमात्मा से मिलने की उत्कट इच्छा। जब तक आत्मा परमात्मा से मिल नहीं पाती तब तक वह विरह की पीड़ा सहती है परन्तु उस पीड़ा में भी साधक को एक आनन्द की अनुभूति होती है।[1] प्रेम साधना सरल नहीं है, वह कोई हँसी ठट्ठा नहीं है वरन अगम पर्वत पर चढ़ने के समान कठिन है।[2] प्रेमी से मिलन की चेष्टा में यदि मृत्यु भी हो जाय तो वह भी वरण्य है। प्रेम की पीर सब दुःखों से भारी है उसमें तिल तिलकर अपने को गलाना पड़ता है।[3] मरजिआ बने बिना अपने दिव्य प्रियतम को प्राप्त करना असम्भव है।[4]

इसी प्रेम तत्त्व की अभिव्यंजना हिन्दी के सूफी कवियों ने लोक प्रचलित प्रेम-कथाओं के माध्यम से की। उनको उन्होंने अपने मत प्रचार का साधन बनाया। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने केवल भारतीय परम्परा में प्रचलित पौराणिक, ऐतिहासिक, अर्द्ध ऐतिहासिक तथा कल्पित आख्यानों को ही नहीं चुना वरन फारसी या शामी परम्परा में प्रचलित प्रेमाख्यानों को भी अपनाया। इन पूर्व प्रचलित प्रेम-कथाओं में उन्होंने अपनी विशिष्ट उद्देश्य सिद्धि के लिए आवश्यक परिवर्तन कर लिए। इसी कारण सूफी कवियों द्वारा प्रस्तुत प्रेमाख्यान शुद्ध प्रेमाख्यान न रहकर उपमिति कथा या कथा रूपक (ऐलीगरी) बन गये हैं।

इन कथा रूपकों का प्रधान उद्देश्य सांसारिक प्रेम (इश्क मजाजी) के द्वारा आध्यात्मिक या अलौकिक प्रेम (इश्क हकीकी) का निरूपण करना रहा है। नायक या नायिका में प्रेम की उत्पत्ति के लिए भारतीय परम्परा में पहले से ही प्रचलित स्वप्न, चित्र या प्रत्यक्ष-दर्शन अथवा गुण-श्रवण पद्धति का आश्रय लिया गया है। प्रेमारम्भ के उपरान्त नायक नायिका के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर व्याकुल विरही बन जाता है और उसकी प्राप्ति के लिए घर बार छोड़ जोगी का वेश धारणकर निकल पड़ता है। अनेकानेक कठिनाइयों एवं विघ्न बाधाओं को झेलता हुआ वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहता है और उसे प्राप्त कर पुनः अपने देश को लौट आता है। बाद में भी कुछ कठिनाइयाँ कुछ नायकों के जीवन में आती हैं उनके कारण कतिपय सूफी प्रेमाख्यान दुःखान्त हो गये हैं पर अधिकांश प्रेमाख्यान सुखान्त ही

१ प्रेमहिं मांह विरह औ रसा। मन के घर मधु अमृत बसा॥ —पद्मावत छं० १६६
२ कहेसि कुंवर यह पंथ दुहेला। प्रेम जनि जानु हँसी और खेला॥
अगम पहार विषम गढ़ घाटी। पंखि न जाइ चढ़ नहिं चाटी॥
—चित्रावली १५१।२
३ पेम दुक्ख सब दुख सउ भारी। तिल तिल सहस मरन देव लागी॥ —मधुमालती प० ४६
४ मर सो जान होइ तन सूना। —पदमावत २५४।३
और—
मन भंवरा मोहि करस बसेरी। होइ मरजियान मानहिं हेरी। —वही ४०१।७

है। नायक के इस प्रेमाभियान में कोई गुरु या पीर उसकी सहायता करता है अथवा नायिका की कोई सखी या परी प्रेम घटक का काम करती है। शैतान के द्वारा साधक को प्रेम-पथ से विचलित करने की चेष्टा की जाती है। मधुमालती में राक्षस, पदमावत में अलाउद्दीन तथा राघवचेतन ज्ञानदीप में कुटीचर आदि पात्र शैतान के प्रतीक हैं। नायक के मार्ग में आनेवाली विघ्न बाधाएँ वस्तुतः साधना मार्ग में आने वाली कठिनाइयाँ हैं और उनको दूर करने में सफलता पाकर अपनी प्रेयसी से उसका मिलन ईश्वर प्राप्ति का सूचक है। इस कथा रूपक का रहस्योद्घाटन कभी-कभी कवि अपने प्रेमाख्यान के अंत में कर देता है परन्तु कोई भी सूफी प्रेमाख्यान अपने आध्यात्मिक संकेत की कसौटी पर आद्यन्त खरा नहीं उतरता। न वह पूर्णतः अन्योक्ति बन पाता है न पूर्णतः समासोक्ति। इनके छिटपुट प्रयोग ही मिलते हैं।

इन प्रेमाख्यानों में खुदा के नूर (ईश्वरीय सौंदर्य) का प्रतिमान नारी सौंदर्य को मान लिया गया है और अधिकांश सूफी प्रेमाख्यानों में नायिका ही ईश्वरीय सौन्दर्य का प्रतीक है। एक यूसुफ जुलेखा अपवाद है जिसमें जुलेखा नहीं यूसुफ ईश्वरीय सौंदर्य का प्रतीक बना है। इन प्रेमाख्यानों के नायक भी सुंदर होते हैं और उनका सौन्दर्य नायिकाओं को आकृष्ट करने का कारण बनता है। यह लक्षित करता है कि ईश्वर भी साधक के आत्मिक सौन्दर्य के प्रति आकृष्ट हुए बिना नहीं रहता।

सूफी प्रेमाख्यानों के नायक नायिका सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों की मर्यादा का उल्लंघन करते पाये जाते हैं—कम से कम इनके प्रति उदासीनता तो उनमें निश्चय ही मिलती है। नायक में जब प्रेम की पीर जागृत हो जाती है तब वह माता पिता या निकट सम्बन्धियों के परामर्श की अवहेलना कर सबसे तृणवत् नाता तोड़कर चल देता है। उसकी पूर्व पत्नी का प्रेम और सौन्दर्य भी उसे बाँधकर नहीं रख पाता। रूपक की दृष्टि से देखा जाय तो यह सूचित करता है कि इश्क हक़ीक़ी के सामने इश्क मजाज़ी तुच्छ और उपगणीय है।

इन प्रेमाख्यानों की एक दूसरी प्रमुख विशेषता है विरह भाव की प्रधानता। सूफी प्रेमाख्यानों में चित्रित विरह का प्रभाव व्यापक होता है और उसमें तड़पन तथा उत्कटता विशेष होती है—सारी सृष्टि उससे प्रभावित दिखायी देती है।[1] विरह भाव की यह प्रधानता सूफी दर्शन की नियोजना के कारण मिल सकी है। सूफी कवियों का विरह वर्णन हिन्दू संस्कृति और भारतीय काव्य-पद्धति के अनुकूल नहीं है।

सूफी कवि कथा के लिए कथा नहीं कहते वरन आध्यात्मिक तत्व निरूपण के लिए कथा का मनचाहा उपयोग करते हैं फिर भी इनका वस्तु विधान सुगठित

1 जग महँ कठिन खरग कै धारा। तेहि तें अधिक बिरह कै झारा॥ —पद्मावत १५।१५
सिरिट मँह बिरहा कर दावा। पै बिन पेम पुनि का पावा॥ —मधुमालती प० ११

और सुव्यवस्थित है। हिंदू-जीवन के वर्णन की पूरी चेष्टा करते हुए भी इनसे कहीं-कहीं चूक हो गयी है। हिंदू देवी देवताओं तथा मूर्तिपूजा की इनमें कहीं-कहीं अवमानना मिलती है। अलौकिक प्रेम (इश्क हकीकी) के प्रतिपादन की ओर सूफी कवियों का विशेष ध्यान होने के कारण वे चरित्र चित्रण में स्वाभाविकता नहीं ला सके हैं, इसीलिए इनके पात्रों में मानवीय चरित्र की स्वाभाविकता नहीं। गुण-दोष एवं मानव-हृदय का सहज स्पन्दन कम मिलता है विशेषत नायकों तथा नायिकाओं में। वस्तु-वर्णन में नवीनता न होने से प्राय सभी सूफी प्रेमाख्यान एकरूप यांत्रिक और रूढ़ि-बद्ध से लगते हैं। यदि पात्रों और स्थानों के नाम हटा दिये जायें, तो अधिकांश सूफी प्रेमाख्यानों का घटना विकास एक-जैसा दिखायी देगा। रोमांचक और अतिमानवी तत्त्वों की योजना के कारण कहीं-कहीं ये काव्य मानव मन के लिए सहज संवेद्य नहीं हो पाते, परन्तु उनकी रोचकता में कोई कमी नहीं आ पाती। कुछ भी हो इन प्रेमाख्यानों का साहित्यिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है क्योंकि हिंदी साहित्य में जो इने गिने सफल चरित काव्य हैं उनकी परम्परा को पुष्ट करने में इन प्रेमाख्यानों का बहुत योग दान रहा है।

सूफी प्रेमाख्यानों की विशिष्ट शैली

हिंदी के सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में भारतीय और ईरानी काव्य शैलियों का सुन्दर समन्वय किया गया है। अधिकांश कथाओं के पात्र हिंदू हैं। कुछ सूफी कवियों ने अपने काव्य को दु:खान्त बनाया है और कुछ ने संस्कृत कथा-काव्यों एवं नाटकों के ढंग पर उनको सुखान्त ही रखा है। भारतीय काव्य शैली को अपनाते हुए भी कई बातों में इन प्रेमाख्यानों में फारसी शैली का अनुकरण किया गया है।

भारतीय प्रबन्ध काव्यों में कथा का विभाजन सर्गों तथा खण्डों में होता है किन्तु फारसी प्रबन्ध काव्यों में कथा प्रवाह के बीच आनेवाले विशिष्ट प्रसंगों के आधार पर शीर्षक दे दिये जाते हैं। इस वर्णनात्मक पद्धति को मसनवी शैली कहा जाता है। हिंदी के सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों में इसी शैली को अपनाया है। फारसी में बहुत-सी मसनवियाँ लिखी गयी हैं। प्राय ऐसी धारणा है कि मसनवी काव्य प्रेमाख्यान ही होते हैं परन्तु यह ठीक नहीं। मसनवियों का वृत्त ऐतिहासिक पौराणिक दार्शनिक रहस्यवादी या धार्मिक कुछ भी हो सकता है। मसनवी की दो अर्द्धालियाँ परस्पर तुकान्त होती हैं लम्बाई की कोई सीमा निर्धारित नहीं है और इसमें आदि से अन्त तक एक ही छंद रहता है। कवि को स्वतन्त्रता रहती है कि वह या तो सात छंदों की एक मसनवी लिखे या इसे सात हजार तक बढ़ा दे।[1] फारसी के प्रसिद्ध सूफी कवि जामी ने कहा है— मसनवियाँ काव्य में आख्यान, प्रेम प्रबंध वार-काव्य तथा कथापरक होती हैं। प्रेमाख्यान मात्र को फारसी में मसनवी रचना

---

१ फारसी साहित्य का इतिहास डॉ॰ अली असगर हिकमत १९५७ पृ॰ १५३

नही कहते। ममनवी का विषय प्रेम युद्ध दर्शन कुछ भी हो सकता है। उसमे एक छद दूसरे छद से जुडा होता है इसलिए आख्यान लिखने के लिए इस शैली मे कवि को सुविधा रहती है। फारसी मसनवियों मे दो अर्द्धालियो के तुकात होने के कारण हिन्दी के सूफी कवियो का ध्यान दोहा और चौपाई छन्दो की ओर गया। किन्तु किसी को यह भ्रम नही होना चाहिए कि सूफियो ने ही दोहा चौपाई मे प्रबन्ध काव्य लिखने की पद्धति चलायी अथवा कुछ अर्द्धालियो के बाद दोहा रखने की नयी प्रथा आरम्भ की। वस्तुत सरहपाद और कृष्णपाद आदि सहजयानी सिद्ध कवियो के ग्रन्थो मे ■ दो चार चार चौपाइयो के बाद दोहा लिखने की प्रथा मिलती है। अपभ्रंश काव्यो मे भी दस दस बारह बारह अर्द्धालियो के बाद घत्ता उल्लाला आदि छन्द देते हुए प्रबन्ध काव्य लिखने का नियम प्रचलित रहा है। सूफी कवियो की देन इतनी ही है कि उन्होने दोहा चौपाई के प्रयोग का एक निश्चित क्रम स्थिर कर लिया यद्यपि एकरूपता इसमे भी नही मिलता। कुतुबन ने पाच अर्द्धालियो के बाद एक दोहा रखा है तो जायसी ने सात अर्द्धालियो के बाद एक दोहा। मझन ने भी पाँच अर्द्धालियो के बाद एक दोहा रखने का क्रम निभाया है। उसमान और शेख नबी ने जायसी की भाँति सात अर्द्धालियो के बाद एक दोहा रखा है। चौपाई का प्रयोग इन कवियो ने एक अर्द्धाली के समान ही किया है आधे चरण को ही कहीं पूरी चौपाई मान लिया है। इनमे से जान कवि ने छन्दो का वैविध्य प्रदर्शित किया है। उन्होने बरवै कवित्त चौपाई चौपई सवैया पद्धरि आदि छन्दो का प्रयोग किया है। कवि शेख निसार ने बारहमासा वर्णन के अन्तर्गत कवित्त और सवैये प्रयुक्त किए हैं।

फारसी मसनवियो मे कुछ बातें रूढ हो गयी थी हिन्दी के सूफी कवियो ने भी उनको अंगीकार कर लिया। मसनवी का आरम्भ ईश्वर-वदना से होता है फिर उसमे पैगम्बर मुहम्मद साहब की स्तुति की जाती है तदनन्तर मुहम्मद साहब के चार मित्रो की जो प्रारम्भिक खलीफा भी थे प्रशसा मिलती है। इन चारो मित्रो या खलीफाओ के नाम है—अबूबक्र सद्दीक आलिम उमर उसमान और अली। इसके उपरान्त तत्कालीन नामक (शाहेवक्त) की प्रशसा की जाती है। इन सबके बाद कवि अपने गुरु या पीर का और स्वय अपना परिचय देता है। हिन्दी के सूफी कवियो ने अपने प्रेमाख्यानो मे मसनवी काव्यो की इस रूढि को बनाये रखा है। कथा का आरम्भ नायक-नायिका तथा प्रधान पात्रो के परिचय से होता है। प्राय नायक अपने माता पिता की इकलौती सतान होता है और उसका जन्म बहुत तपस्या दान पुण्य और किसी सिद्ध पीर के आशीर्वाद के फलस्वरूप हुआ होता है। इस नायक का अपने माता पिता को छोडकर प्रेम पथ का पथिक बन जाना कथा मे प्रेम की तीव्रता का रग चटकीला बना देता है। कई सूफी कवियो ने अपने प्रेमाख्यानो का दु खान्त बनाया है परन्तु कुछ ने सुखान्त भी। इन कवियो मे मझन उसमान और नूर मुहम्मद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। लगभग सभी सूफी प्रेमाख्यानो मे अवधी का प्रयोग हुआ है। जान कवि ने अपने प्रेमाख्यानो मे ब्रजभाषा का भी पुट दिया है।

इन कतिपय विषयगत और शैलीगत विशेषताओं के अतिरिक्त सूफी काव्यों में कुछ अन्य बातें भी दिखायी देती हैं। सूफी काव्यों के कवि अधिकांशतः मुसलमान होते हुए भी हिन्दू-संस्कृति और भारतीय जीवन का सजीव चित्रण करने की चेष्टा करते हैं। षट्ऋतु और बारहमासा वर्णन की प्राचीन परम्परा को इन कवियों ने भी अपनाया है और उनके माध्यम से भारत की प्रकृति तथा भारतीय गार्हस्थ्य जीवन के मार्मिक चित्र उपस्थित किए हैं। सूफी कवियों ने अधिकतर उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि सादृश्य मूलक अलंकारों का ही प्रयोग किया है और सौन्दर्य के उपमान भारतीय परम्परा से ग्रहण किये हैं। नूर मुहम्मद ने अवश्य आंख के लिए 'नरगिस' का उपमान पसन्द किया है, जो उनकी शामी परम्परा भक्ति का सूचक है। भारत में 'नरगिसी' आँखें कम ही आकर्षक मानी जाती हैं। यमक और श्लेष आदि शब्दालंकारों का इन कवियों ने प्रयोग प्रायः नहीं किया है। भारतीय सामाजिक जीवन में पाये जानेवाले उत्सवों, त्योहारों, रीति रिवाजों का चित्रण इन कवियों ने निष्ठापूर्वक किया है, यद्यपि इनमें कुछ भूलें हो गयी हैं। छठी, नामकरण, लग्न विचार, पाटी-पूजन, सगाई, विवाह और तत्सम्बन्धी लोकाचार, मृत्यु तथा नायिका व उपनायिका के सती होने का यथावसर वर्णन किया है। हंस-जवाहिर जैसे प्रेमाख्यान तक में, जिसमें नायक-नायिका और घटना-स्थल सभी अहिन्दू तथा अभारतीय हैं, रीति रिवाजों के वर्णन में सामान्य हिन्दू सामाजिक जीवन की विशेषताओं का समावेश किया गया है। मुसलमान होते हुए भी इन उदारचेता सूफी कवियों ने हिन्दू जन्मान्तरवाद या पुनर्जन्म सिद्धान्त के प्रति अपने नायक-नायिकाओं का विश्वास प्रदर्शित किया है।

3 | पुराण-साहित्य और पौराणिक आख्यान

पुराण-साहित्य भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना का आधार है और पौराणिक आख्यान भारतीय साहित्य के उपजीव्य हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों और सूफी कवियों द्वारा रचित अन्य प्रेमाख्यानों में पौराणिक आख्यानों के प्रयोग के स्वरूप पर विचार किया जायगा। इसलिए पुराण साहित्य तथा पौराणिक आख्यान की प्रकृति को जान लेना आवश्यक है।

पुराण-साहित्य : एक संक्षिप्त परिचय

पुराण की प्राचीनता—

पुराण शब्द का उल्लेख वैदिक साहित्य[1] में भी मिलता है। 'अथर्ववेद' में 'ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह'[2] मंत्र मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में भी अध्वर्यु लोगों द्वारा पुराणों का कीर्तन करना लिखा है।[3] 'बृहदारण्यक उपनिषद' में महर्षि याज्ञवल्क्य मैत्रेयी को समझाते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार गीले ईंधन से अग्नि से पृथक धुआँ निकलता है उसी प्रकार ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वाङ्गिरस (अथर्ववेद) इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषद, श्लोक, सूत्र, मन्त्र, विवरण और अर्थवाद आदि महद्भूत के निःश्वास रूप हैं।[4] संस्कृत के आदि वाङ्मय में पुराण शब्द के उल्लेख से यह पता चलता है कि पुराणों का अस्तित्व प्राचीन काल में ही है। यह मान और है कि वे जिस रूप में आज पाये जाते हैं उसी रूप में प्राचीन काल में न रहे होंगे।

---

१ वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्—ये चार प्रकार के साहित्य वैदिक साहित्य कहलाते हैं
२ अथर्ववेद ७१।७।२४
३ शतपथ ब्राह्मण १।४।३।१२
४ स यथार्द्रैधाग्नेरभ्याहितात्पृथग्धूमा विनिश्चरन्त्येवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद् यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं वि[illegible] ८८ श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानान्यस्यैवैतानि निश्वसितानि। —अध्याय २ ब्राह्मण ४ मंत्र १

महर्षि कृष्णद्वैपायन ने जिनको वेदों का वर्गीकरण करने के कारण वेदव्यास कहा गया जिस प्रकार वैदिक मंत्रों का संकलन करके वैदिक संहिताओं का निर्माण किया उसी प्रकार उन्होंने महाभारत युद्ध तक के आख्यानों, उपाख्यानों आदि का संकलन पुराण-संहिता में कर दिया।[1] उसके उपरान्त भी पुराणों में बाद की घटनाओं के वृत्तान्त आलंकारिक शैली में जोड़े जाते रहे यहाँ तक कि परवर्ती पुराण-लेखकों ने अपने समय का वृत्तान्त भी वेदव्यास के मुँह से इस प्रकार कहलाया मानो वे ही भविष्य की बात कह रहे हों। आगे चलकर तो एक भविष्यत् पुराण की ही रचना हो गयी जिसमें 'पुराण' (प्राचीन) और भविष्यत् दो परस्पर विरोधी शब्दों का योग दिखायी देता है। इससे यह सूचित होता है कि पुराण शब्द का वास्तविक अर्थ कालान्तर में भुला दिया गया और यह शब्द एक विशेष प्रकार के साहित्य के लिए रूढ़ हो गया। कुछ पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि कतिपय पुराणों में १६ वीं १७वीं शताब्दी तक अभिवृद्धि की प्रक्रिया चलती रही परन्तु जैसा कि श्री एम० ए० मैकडॉनेल का कथन है गुप्त काल तक आते आते पुराणों का पूर्ण विकास हो चुका था।[2]

पुराण का शाब्दिक अर्थ तो पुराना या प्राचीन है परन्तु प्राचीन वैदिक साहित्य में इस शब्द का प्रयोग सामान्यतया 'इतिहास' के सम्बन्ध में हुआ है यद्यपि ऊपर 'बृहदारण्यक उपनिषद' का जो उद्धरण दिया गया है उसमें पुराण और इतिहास का अलग अलग उल्लेख किया गया है। इससे यह समझा जा सकता है कि वैदिक काल में पुराण और इतिहास शब्द पर्याय न थे। ऐसा लगता है कि मूलतः पुराण शब्द का अर्थ 'प्राचीन आख्यान' मात्र रहा होगा और आख्यानों के स्वरूप को भी विशेष महत्त्व न दिया जाता रहा होगा।[3]

यहाँ यह स्वाभाविक जिज्ञासा उठ सकती है कि जिन आख्यानों को पुराण या प्राचीन नाम दिया गया तथा जिस शब्द को वैदिक साहित्य भी इसी अर्थ में उल्लिखित करते हैं, उसमें प्राचीनता का यह तत्त्व क्या था? हमारी समझ में प्राचीनता का यह तत्त्व लोकतत्त्व था जिससे वेदों और पुराणों ने समान रूप से प्रेरणा ली। वेद और पुराण दोनों का उत्स एक था—लोक (वेद विरोधी लोक नहीं वरन साधारण जन का प्रतीक 'लोक')। वेदों की लोक भूमि ही आगे चलकर पौराणिक स्वरूप ग्रहण कर सकी। पुराणों के समय तक वैदिककालीन लोक कितनी ही परिस्थितियों से जटिल होता चला गया था। फलतः लोकवार्त्ता लोक-तत्त्व अथवा

१ भारतीय वाङ्मय के अमर रत्न जयचन्द्र विद्यालंकार द्वितीय संस्करण पृ० १

२ द हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ द इण्डियन पीपुल द क्लासिकल एज जिल्द २ सम्पादक आर० सी० मजूमदार अध्याय १४ में संकलित एम० ए० मैकडॉनेल का लेख—द पुराणाज पृ० २९१

३ वही पृ० २९२

नाराभिव्यक्ति की नोर भूमि पर समग्र पुराण साहित्य निर्मित हुआ।[1] आज तक की समस्त साहित्यिक अभिव्यक्ति का एकमात्र आन्तरिक आधार यह पुराण-वार्ता ही जो वस्तुत नारवार्ता है।[2]

पुराणों के पंच लक्षण

शास्त्रीय दृष्टि से पुराणों म पाँच विषयों का जिन्हें पंचलक्षण[3] कहा गया है वर्णन होना चाहिए। ये पाँच लक्षण या विषय हैं—(१) सर्ग या सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन (२) प्रतिसर्ग या प्रलय के पश्चात सृष्टि की पुनर्रचना का वर्णन (३) वंश यानी देवताओं आदि की वंशपरम्परा (पीढ़ियाँ) का वर्णन (४) मन्वन्तर या आदि मनु से प्रारम्भ होने वाले १४ मनुओं के समय का वर्णन (५) वंशानुचरित या सूर्य और चन्द्रवंश म उत्पन्न राजवंशों का इतिहास। विष्णुपुराण म इन पंच लक्षणों का सबसे अच्छा निर्वाह हुआ है। नारद तथा अग्नि आदि कुछ पुराणों म इन लक्षणों का निर्वाह अच्छा नहीं हुआ है। पुराणों म केवल इन पाँच विषयों की ही नहीं, अन्य विषयों की भी चर्चा है और यही सूचित करता है कि इनके निर्माता और निर्माण काल भिन्न भिन्न थे तथा समय समय पर इनमें परिवर्द्धन होता रहा।

अठारह महापुराण

महापुराणों की संख्या १८ मानी गयी है। ब्रह्मपुराण के अतिरिक्त प्राय सभी पुराणों म अठारह पुराणों की नामावली दी हुई है। विष्णुपुराण के अनुसार १८ महापुराण और उनका क्रम इस प्रकार है (१) ब्रह्म पुराण (२) पद्म पुराण (३) विष्णु पुराण (४) शिव पुराण (५) भागवत पुराण (६) नारद पुराण (७) मार्कण्डेय पुराण (८) अग्नि पुराण (९) भविष्यत पुराण (१०) ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (११) लिङ्ग पुराण (१२) वाराह पुराण, (१३) स्कन्द पुराण (१४) वामन पुराण (१५) कूर्म पुराण (१६) मत्स्य पुराण (१७) गरुड पुराण (१८) ब्रह्माण्ड पुराण। इन पुराणों म प्राचीनतम ब्रह्मपुराण है।[4] किन्तु पाश्चात्य विद्वान विष्णु पुराण को सबसे प्राचीन मानते हैं।

---

१ मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्त्विक अध्ययन डा० सत्येन्द्र प्रथम संस्करण पृ० ६२

२ ३

३ सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशामन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥
—ब्रह्मवैवर्त पुराणम् अध्याय १३१ श्लोक ७ मत्स्य पुराणम् अध्याय ५३ श्लोक ६४
पाठान्तर —
सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशमन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव भवतो गदितं मया॥
—विष्णुपुराण षष्ठ अंश अध्याय ८ श्लोक २

४ ब्रह्म पुराण अंश अध्याय ६ श्लोक २ २४

मत्स्य पुराण में पुराणों के इसी क्रम को स्वीकार किया गया है और उसके अनुसार उपर्युक्त महापुराणों की श्लोक संख्या क्रमश: यह है : तेरह हजार, पचपन हजार, तेईस हजार, चौबीस हजार, अठारह हजार, पच्चीस हजार, तेईस हजार, सोलह हजार, चौदह हजार पाँच सौ, अठारह हजार, ग्यारह हजार, चौबीस हजार, इक्यासी हजार, दस हजार, अठारह हजार, चौदह हजार, अठारह हजार, बारह हजार दो सौ।

अष्टादश पुराण दर्पण में भिन्न भिन्न पुराणों के मत से १८ पुराणों का क्रम एवं श्लोक संख्या दी हुई है।[1] पृथ्वीराज रासो में भी सभी पुराणों की श्लोक संख्या दी है। मत्स्यपुराण में दी हुई पुराण श्लोक संख्या से 'पृथ्वीराज रासो' में दी गयी ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, अग्नि पुराण, वामन पुराण, कूर्म्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण और ब्रह्माण्ड पुराण की श्लोक-संख्या कुछ भिन्न है, शेष की श्लोक संख्या 'मत्स्यपुराण' के अनुसार ही है। पृथ्वीराज रासो में उपर्युक्त आठ पुराणों की श्लोक-संख्या क्रमश: दस हजार, तंतीस हजार चार सौ, पंद्रह हजार, ग्यारह हजार, सत्रह हजार, चौबीस हजार, उन्नीस हजार और बारह हजार बतायी गयी है।

शिव पुराण को वायु पुराण भी कहा जाता है, यद्यपि ये दोनों एक ही नहीं हैं। 'भागवत' के स्थान पर शाक्त सम्प्रदाय वाले देवी भागवत की गिनती महापुराणों में करते हैं।

अठारह उपपुराण

अठारह पुराणों के अतिरिक्त अठारह ही उपपुराण भी माने जाते हैं जिनके नाम ये हैं— भागवत (या देवी भागवत), माहेश्वर, ब्रह्माण्ड, आदित्य, पाराशर, सौर, नन्दिकेश्वर, साम्ब, 'कालिका, वारुण, 'औशनस, मानव, कापिल, दुर्वासस, शिवधर्म, बृहन्नारदीय, नारसिंह, और सनत्कुमार उपपुराण।

गरुड़ पुराण के अनुसार[2] उपपुराणों के नाम ये हैं— सनत्कुमार, नारसिंह, स्कान्द, शिवधर्म, आश्चर्य, नारदीय, 'कापिल, वामन, औशनस, ब्रह्माण्ड', वारुण, कालिका, माहेश्वर, साम्ब, सौर, 'पाराशर, मारीच और भार्गव' उपपुराण।

देवी भागवत में उपपुराणों में स्कान्द, वामन, ब्रह्माण्ड, मारीच' और भार्गव के स्थान में शिव, मानव, आदित्य, 'भागवत' और वाशिष्ठ का उल्लेख है।[3] उपपुराणों में विष्णुधर्मोत्तर, बृहद् धर्म उपपुराण और कल्कि पुराण का

१ अष्टादश पुराण दर्पण संवत् १९६९, पृ० २१

२ गरुड़ पुराण अध्याय २२३ श्लोक १७, २

३ देवी भागवत अध्याय ३ श्लोक १३-१६

भी उल्लेख मिलता है। उपपुराणों की अन्य तालिकाएँ भी प्राप्त होती हैं जिनका उल्लेख करना हम अनावश्यक समझते हैं। इन सूचियों के दर्शन से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि जितने भी उपपुराण हैं वे विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के मत मतान्तरों का समर्थन करने की दृष्टि से बाद में निर्मित हुए हैं।

पद्म पुराण में अठारह महापुराणों का सत्त्व रज और तम—तीन गुणों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है और उनको किसी न किसी देवता से सम्बन्धित बतलाया गया है। सात्त्विक पुराणों में विष्णु नारद भागवत गरुड़ पद्म और वाराह पुराणों की गणना की गयी है और इनको वैष्णव पुराण कहा गया है। ऐसा कथन है कि इनका भक्तिभाव से अध्ययन करनेवाले मुक्ति प्राप्त करते हैं। ब्रह्माण्ड ब्रह्मवैवर्त मार्कण्डेय भविष्यत् वामन और ब्रह्म पुराणों को रजोगुणी और ब्रह्मा से सम्बन्धित माना गया है तथा यह कहा गया है कि इनको पढ़नेवाले स्वर्ग का उपभोग करते हैं। मत्स्य कूर्म लिङ्ग 'शिव' या वायु स्कन्द और अग्नि पुराणों को तमोगुणी तथा शैव माना गया है। यह भी कहा गया है कि इनका अध्ययन करनेवाले नरक का रास्ता लेते हैं।[1]

जैन और बौद्ध पुराण

हिन्दू पुराणों की पद्धति और ढंग के आधार पर जैन और बौद्ध पुराणों की भी रचना हुई जिनकी संख्या क्रमशः २४ और ९ मानी जाती है।[1] जैनों के पुराणों में उनके २४ तीर्थंकरों की कथाएँ और माहात्म्य वर्णित हैं। ये पुराण हिन्दू पुराणों की

---

१ २४ जैन पुराण आदि पुराण अजितनाथ पुराण संभवनाथ पुराण अभिनन्दन पुराण सुमतिनाथ पुराण पद्मप्रभ पुराण सुपार्श्व पुराण चन्द्रप्रभ पुराण पुष्पदन्त पुराण शीतलनाथ पुराण श्रेयांस पुराण वासुपूज्य पुराण विमलनाथ पुराण अनन्तजित पुराण धर्मनाथ पुराण शान्तिनाथ पुराण कुन्थुनाथ पुराण अरनाथ पुराण मल्लिनाथ पुराण मुनि सुव्रत पुराण नेमिनाथ पुराण अरिष्ट नेमि पुराण पार्श्वनाथ पुराण सन्मति पुराण।

— हिन्दुत्व श्री रामदास गौड़ पृ ४१५ १६

आदिपुराण का ही उत्तरार्द्ध उत्तरपुराण के नाम से प्रसिद्ध है। जैन महापुराणों को त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण भी कहते हैं क्योंकि उनमें ६३ महात्माओं का चरित वर्णित है। २४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्ती ९ वासुदेव ९ प्रतिवासुदेव ९ बलदेव—इन ६३ महापुरुषों या शलाका पुरुषों के चरित्र का वर्णन इन पुराणों में है। ये पुराण दिगम्बर सम्प्रदाय वालों ने लिखे। श्वेताम्बर सम्प्रदाय वालों ने इनकी तुलना में 'चरित' या चरित्र काव्य-ग्रन्थों की अपभ्रंश में रचना की। उनमें अनेक महापुरुषों के स्थान पर एक ही महापुरुष का चरित्र वर्णित होता था।

उपर्युक्त महापुराणों में आदिपुराण पद्मप्रभ पुराण अरिष्टनेमि पुराण (जिसे हरिवंश पुराण भी कहते हैं) और उत्तर पुराण अधिक प्रसिद्ध हैं। इनमें भी आदिपुराण और उत्तर पुराण का अधिक महत्त्व माना जाता है।

२ बौद्धपुराण (१) प्रज्ञापारमिता (२) गण्डव्यूह (३) समाधिराज (४) लंकावतार (५) तथागत गुह्यक (६) सद्धर्म पुण्डरीक (७) बुद्ध या ललितविस्तर (८) सुवर्ण प्रभा (९) दशभूमीश्वर।

— हिन्दुत्व श्री रामदास गौड़ पृ ४४५

भांति पंचलक्षणों से युक्त न होकर महापुरुषों की पुरातन कथा के प्रतिपादक ग्रन्थ हैं।

या जैन लोग अपने पुराणों का अस्तित्व हिन्दू पुराणों से पहले मानते हैं परन्तु यह धारणा असंगत है क्योंकि बौद्ध और जैन पुराणों में शिव ब्रह्मा आदि के उल्लेख हुए हैं।[1] सातवीं शती में हिन्दू पुराणों का पूर्ण विकास हो चुका था और उनका खूब बोलबाला था। तभी दिगम्बर जैनों ने भी अपने पुराणों की रचना आरम्भ की।[2] जब हिन्दू पुराणों ने साम्प्रदायिक रूप प्राप्त कर लिया और ब्राह्मणों तथा श्रमणों की समान सम्पत्ति न रहे तब जैनों द्वारा अपने पुराणों की रचना सातवीं शताब्दी के उपरान्त की गयी जान पड़ती है।[3]

'रामायण' और 'महाभारत'

वाल्मीकि रामायण' और वेदव्यास रचित महाभारत की गणना पुराणों में नहीं होती। ये महाकाव्य हैं। इन दोनों के लिए क्रमशः 'परिकृति और पुराकल्प नाम व्यवहृत हुए हैं जो वस्तुतः इतिहास के दो भेद हैं। काव्य मीमांसा' में बताया गया है कि जो इतिहास एक नायक के विषय में हो उसे परिक्रिया और जिसमें एक से अधिक नायक हों उसे पुराकल्प कहते हैं।[4] महाभारत' पुराकल्प' इसलिए है कि उसमें युधिष्ठिर दुर्योधन अर्जुन भीष्म आदि कई पुरुष नायक हैं।

'रामायण और महाभारत को शास्त्रीय परिभाषा की दृष्टि से भले ही पुराणों के अन्तर्गत न रखा जा सके परन्तु चूंकि उनके बहुत से आख्यान पुराणों में गृहीत हो चुके हैं और क्रमशः विकसित हुए हैं इसलिए पौराणिक आख्यानों की दृष्टि से उनका एक विशिष्ट स्थान है।

कथा आख्यायिका आख्यान पौराणिक आख्यान

प्राचीन भारतीय साहित्य में कथा कहानी के अर्थ द्योतक बहुत से शब्द मिलते हैं। वे परस्पर पर्याय न होकर विविध कथा प्रकारों के परिचायक होते हैं। इनमें से कथा गाथा, आख्यायिका और आख्यान प्रमुख शब्द हैं।

कथा

कथा शब्द कथ (=कहना) धातु से व्युत्पन्न है। एक व्यक्ति जब किसी दूसरे व्यक्ति से कोई रोचक कुतूहलवर्द्धक सरस बात कहता होगा तब उसके

---

१ सूर और उनका साहित्य डॉ हरवंशलाल शर्मा संशोधित संस्करण पृ० १

२ पुराण इतिहास लेख श्री रायकृष्णदास वेंकटेश्वर समाचार बम्बई दीपावली विशेषांक २२ अक्तूबर १९५४

३ हिन्दी के पौराणिक नाटकों का अध्ययन डा० देवर्षि सनाढ्य (शोध प्रबन्ध—पाण्डलिपि) अध्याय १ पृ० २३

४ परिक्रिया पुराकल्प इतिहासगतिर्द्विधा।
स्यादेकनायका पूर्वा द्वितीया बहुनायका॥

—राजशेखर काव्य मीमांसा

कथन का कथा की सना मिलन लगी होगी। आचाय भामह न जिनका समय छठी शताब्दी माना जाता है अपने काव्यालकार म 'कथा' और आख्यायिका के लक्षण बताये है। कथा की उनकी परिभाषा यह है कि कवि का वह साभिप्राय कथन जिसका विषय कन्या हरण युद्ध और वियोग आदि होता है कथा कहलाता है।[1] उनके अनुसार कथा' का नायक अपना चरित्र स्वय अपने मुह म नही बताता।

सातवी शती उत्तराद्ध म विद्यमान आचाय दण्डी न अपने काव्यादश म कथा और आख्यायिका का उल्लेख गद्य-काव्य के भेद के रूप म किया है।[2] उनके मतानुसार केवल नायक द्वारा वर्णित गद्य का आख्यायिका कहते है पर कथा नायक या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा भी कथित हो सकता है। इस प्रकार कथा और आख्यायिका दोनो एक ही जाति की हैं पर दो भिन्न नामो म पुकारी गयी हैं। अन्य आख्यान जातियाँ (खण्ड कथा, परिकथा आदि) भी इन दोनो के अन्तगत ही आ जाती है।[3]

अग्नि पुराण म कहा गया है कि जहा मुख्य कथा को लाने के लिए अवान्तर कथा की सृष्टि की जाती है और जिसम परिच्छेद नहा होते अथवा कहा कही समस्त वण्य विषय प्रबन्ध म अनुस्यूत रहता है वह कथा नामक गद्य काव्य कहलाता है।[4]

उपयुक्त शास्त्रीय परिभाषाओ स यह ध्वनि निकलती है कि कथा का नायक वह या कोई और उसम कुछ वृत्तान्त और आधिकारिक कथा के साथ प्रासगिक कथा या कथाओ का होना आवश्यक है। कथा का कोई उद्देश्य भी होता है और उसम प्रेम तथा युद्ध का वणन भी मिलता है।

आचाय हजारीप्रसाद द्विवेदी शब्दो म—पुरान साहित्य म कथा शब्द का व्यवहार स्पष्ट रूप से दो अर्थों म हुआ है। एक तो साधारण कहानी के अथ म और दूसरा अलकृत काव्य रूप के अथ म। साधारण कहानी के अथ म तो पचतन्त्र की कथाए भी कथा हैं महाभारत और पुराणो के आख्यान भी कथा हैं और सुबन्धु की वासवदत्ता बाण की कादम्बरी गुणाढ्य की बृहत्कथा आदि भी कथा हैं। परन्तु विशिष्ट अथ म यह शब्द अलकृत गद्यकाव्य के लिए प्रयुक्त हुआ है। कब स इस अथ म चलने लगा यह कह सकना थोडा कठिन है।[5]

---

१ कवेरभिप्राय कृत कथनै कश्चिदङ्किता।
कन्याहरण सग्रामविप्रलम्भोदयान्विता॥ —काव्यालकार १।२७

२ अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथे।
तत्र दस्य प्रभेदो द्वौ तयोराख्यायिकाखिल॥ —काव्यादश १।२३

३ काव्यादश १।२८ (हिन्दी अनुवाद)

४ [illegible] भवेदत्र कथान्तरम्।
परिच्छेदो न यत्र स्यात् भवेल्लम्बकै क्वचित्॥१६॥
सा कथा नाम ॥१७॥

५ हिन्दी साहित्य का आदिकाल तृतीय स १९६१ ई० पृ० ४७

इससे स्पष्ट है कि 'कथा' शब्द का हमारे साहित्य में व्यापक प्रयोग हुआ है। यह शब्द लोक साहित्य में भी उतना ही प्रिय रहा है जितना नागर साहित्य में।

कथा के समानार्थी या उसके उपांग के रूप में या उससे किंचित भिन्नता रखनेवाले कुछ अन्य शब्द भी भारतीय साहित्य में प्रचलित हैं जैसे—परिकथा, दन्तकथा या निज धरीकथा, लोक कथा धर्म-कथा, उपमिति कथा अन्तकथा इत्यादि।

परिकथा उसे कहते हैं जिसमें एक कहानी के भीतर बहुत सी कहानियां हों। ये कहानियां आपस में सम्बन्ध भी रखती हैं और परस्पर किंचित आकांक्षा भी रखती हैं।

दन्तकथा चिरकाल से चली आती हुई किसी प्रसिद्ध कथा को कहते हैं। इसमें इतिहास और कल्पना का मिश्रण पाया जाता है। इन कथाओं की आधार भूमि इतिहास की ठोस घटनाएँ होती हैं परन्तु लोक कथाकार उस पर अपनी कल्पना का आवरण चढ़ा देते हैं जिससे उनके वास्तविक रूप को पहचानना कठिन हो जाता है।[2] दन्तकथा को ही 'लीजेण्ड' या 'निज धरी कथा' भी कहते हैं। निजधरी कथाएं महापुरुषों सन्तों देवताओं या राक्षसों के जीवन और कार्यों से सम्बन्धित होती हैं पर उनमें इतिहास का तत्त्व किसी-न-किसी मात्रा और रूप में अवश्य वर्तमान रहता है।[3]

लोक कथा वह है जो लोक में विभिन्न रूपों में प्रचलित रहती है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में लोक-कथाओं के सम्बन्ध में यह उल्लेख है—Popular stories fall into three main categories myths legends and stories which are told primarily to provide entertainments डा० सत्येन्द्र ने कदाचित इसी आधार पर लोक-कथा को तीन बड़े वर्गों में बाँटा है (१) धर्मगाथा (२) लोक गाथा (अवदान या बलड) तथा लोक कहानी[4] उनके मत में केवल देवी देवताओं के आने से कोई लोक कहानी धर्म गाथा नहीं हो सकती। धर्म गाथा के लिए यही आवश्यक नहीं कि उसमें देवी देवताओं का समावेश हो यह भी आवश्यक नहीं कि देवताओं में आस्था हो (यहाँ आस्था से अभिप्राय है कहानी में कही बात पर विश्वास करना)। किन्तु धर्म गाथा' के लिए आवश्यक है कि उक्त दोनों बातों के साथ उसका धार्मिक माहात्म्य भी हो। उसके कहने-सुनने में किसी धार्मिक लाभ की सम्भावना हो। किन्तु इन सबसे अधिक महत्त्व का तत्त्व यह है कि

---

१ कारिका प अम्बिकादत्त व्यास प ३१ ३२

२ हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (षोडश भाग) सपा और इस भाग के लेखक डॉ कृष्ण देव उपाध्याय पृ ११२

३ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास डॉ शम्भूनाथसिंह प्रथम संस्करण, पृ० २८

४ ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन डॉ० सत्येन्द्र द्वितीय संस्करण १९५७ पृ २१

'धम गाथा म देवी-देवता का समावेश परम्परित कथा अभिप्राय (मोटिफ) क रूप म नही होता। धमगाथा किसी न किसी देवी दवता क वृत्त स जुडी रहती है।[१]

'धम-गाथा का ही एक उपाग धम कथा है। 'धम-कथा उन कथाओ को कहत हैं जिनम परलोक साधन या मोक्ष की आकाक्षा मुख्य होती है।[२] प० चन्द्रबली पाण्डेय न नूर मुहम्मद की अनुराग बासुरी' को धम कथा माना है।[३] 'उपमिति कथा' भी धम-कथा की समानाथक है। जिस रूपक अयोक्ति अथवा अयापदेशिक कथा (एलीगरी) कहत हैं वही उपमिति कथा है।

'अन्तकथा का प्रयोग स्वत त्र रूप म नही होता। कवि किसी मत्व या नीति की अभियजना के लिए इसका प्रयोग करता है। इसकी कथावस्तु सम सामयिक नहीं होती वरन कोई प्राचीन प्रसिद्धि या प्राचीन कथा इसका वण्य विषय होती है। अन्त कथाएँ लोक प्रचलित होती हैं, अत इनका विस्तार म वणन न होकर सूच्यात्मक उल्लेख होता है।[४]

आख्यायिका

असल म 'कथा और आख्यायिका दोना का प्रयोग कहानी के अथ म होता रहा है परन्तु दोनो म वण्य वृत्त को लकर अन्तर भी किया जाता रहा है। कथा की वस्तु जबकि काल्पनिक या कल्पित होती थी तब आख्यायिका की वस्तु एतिहासिक इतिवृत्त पर आधारित। बाबू श्यामसुन्दरदास कथा और आख्यायिका को एक दूसरे का पर्याय समझत हुए आख्यायिका को एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को रखकर लिखा गया नाटकीय आख्यान मानत हैं।[५]

डा० सत्येन्द्र गल्प आख्यायिका तथा कहानी को साधारणत एक ही वस्तु मानत हुए कहत हैं — आख्यायिका शास्त्रीय शब्द है और आख्या से बना है। अधिक संस्कृत भाव के अनुयायी इस शब्द का प्रयोग करत रह है। वस्तुत गद्यकाव्य की कोटि की छोटी कथात्मक रचनाए आख्यायिका कही जाएगी।[६]

परन्तु डा० सुधीन्द्र क मतानुसार कथा' काल्पनिक अथात उत्पाद्य वस्तु की

---

१ मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्विक अध्ययन डॉ सत्येन्द्र प्रथम स प ६

२ मोक्षकाङ्क्षतानव चेनसाभिलर्वा त ये।
शुद्धा धमकथामेव सात्विकास्ते नरोत्तमा ॥
— उपमिति भवप्रपचा कथा सिद्धर्षि (स १ ३ वि) सपा ी पीटसन एव जकोबी प्रकाशक एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल।

३ अनुराग-बासुरी — भूमिका प २५

४ रामचरितमानस का अन्तकथाओ का आलोचनात्मक अध्ययन डा कालीकान्त पाण्डय का शोध प्रबन्ध आगरा विश्वविद्यालय पुस्तकालय में सुरक्षित टाइप्ड प २

५ साहित्यालोचन एकादश संस्करण स २ ११ प० १८७

६ समीक्षा के सिद्धान्त डॉ सत्येन्द्र प्र स प १३२

होती थी ('प्रबन्ध कल्पना कथा') और आख्यायिका' ऐतिहासिक अर्थात सहज उपलब्ध वस्तु की (आख्यायिकोपलब्धार्था)।[१]

आख्यान

आख्यान भी कथा और आख्यायिका' का सजातीय शब्द है। आख्या' शब्द का अर्थ है 'कहना। 'आख्या में ही आख्यान शब्द निर्मित हुआ जिसका अर्थ है किसी पूर्ववृत्त का कथन। 'विष्णु पुराण में इस शब्द का प्रयोग कथा प्रकार को सूचित करने के लिए हुआ है। उसमें कहा गया है कि पुराण के अर्थ विशारद व्यास जी ने आख्यान उपाख्यान, गाथा और कल्पशुद्धि सहित पुराण संहिता की रचना की।[२]

'आख्यान और 'आख्यानक' शब्दों को समानार्थी माना जा सकता है। श्री एम० आर० काले ने 'आख्यानक' के सम्बन्ध में लिखा है— आख्यानक is a single episode as distinguished from आख्यायिका which is a continued story'[3]

प्राचीन साहित्य में सर्वप्रथम ब्राह्मण ग्रन्थों में गद्य पद्यमय आख्यानों के उदाहरण मिलते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में शुन शेप तथा 'शतपथ ब्राह्मण' में पुरूरवा उर्वशी के आख्यान गद्य पद्य मिश्रित हैं। ऐसे आख्यानों का प्रारम्भ में गाथा या नाराशंसी कहा जाता था और बाद में इन्हीं को इतिहास, पुराण आख्यान नाम दिया गया।[४]

ऋग्वेद के लगभग १५ सूक्त ऐसे हैं जिनमें संवादात्मक आख्यान हैं। उनमें से यम यमी (१० १०), पुरूरवा-उर्वशी (१० ९५), अगस्त्य-लोपामुद्रा (१ १७९), इन्द्र अदिति वामदेव (४ १८) इन्द्र इन्द्राणी वृषाकपि (१० ८६), सरमा-पणीस (१० १०८) इन्द्र मरुत (१ १६५ १७०) आदि आख्यान प्रमुख हैं। डॉ० एस० के० डे ऋग्वेद के इन संवाद सूक्तों में आये आख्यानों को पौराणिक और निजन्धरी आख्यान मानते हैं।[5] यास्क ने निरुक्त में पुरूरवोर्वशी के वृत्त को संवाद और सरमा पणीस के वृत्त को आख्यान माना है[६] और ऋग्वेद के व्याख्याताओं को आख्यानविद

१ साहित्य सन्देश (कहानी अंक) भाग १४ अंक ७ ८ जनवरी फरवरी १९५३ में प्रकाशित डॉ० सत्येन्द्र का लेख।

२ आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभि कल्पशुद्धिभि ।
पुराणसंहिता चक्रे पुराणार्थ विशारद ॥

—विष्णु पुराण तृतीय अंश अ० ६ श्लो० १५

3 Kadambari (Purvabhag) Bana Notes by M R Kale Third revised ed Pub Gopal Narayan & Co Bombay pp 19

४ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास डा० शम्भूनाथ सिंह प्र स १९५६ पृ० ८

5 A History of Sanskrit Literature S N Das Gupta and S K De Calcutta 1947 pp 43

६ देवा मुनीन्द्रण प्रहिता पणिभिरसुर समद इति आख्यानम्। —यास्क कृत निरुक्त ११ २५

कहा है।[1] इससे यह स्पष्ट है कि वैदिक काल में गाथा, आख्यान, इतिहास, पुराण और गाथा नाराशंसी आदि का रूप मिला जुला था और सम्भवतः सभी समानार्थी शब्द थे।[2] प्राचीन साहित्य में आख्यानों की अधिकता पायी जाती है और उनकी परम्परा भी प्राचीन है। इन आख्यानों का वस्तु-तत्त्व पौराणिक, निजन्धरी, समसामयिक तथा कल्पित—इन चार प्रकार के पात्रों, घटनाओं और परिस्थितियों को लेकर गठित हुआ है।[3]

उक्त आख्यान शब्द का प्रयोग मुख्यतः वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, पुराणों एवं महाकाव्यों (रामायण तथा महाभारत) में आयी कथाओं के लिए ही किया जाता है। प्राचीन काल में भी आख्यान से तात्पर्य पौराणिक कथानकों से ग्रहण करता था जिनमें इतिहास और कल्पना का मिला जुला रूप पाया जाता था।[4]

उपाख्यान

आख्यान की परिभाषा जान लेने के बाद उपाख्यान की परिभाषा स्वतः स्पष्ट हो जाती है। कहीं-कहीं आख्यान और उपाख्यान के प्रयोग में विशद-व्याप्ति और लघु व्याप्ति का अन्तर नहीं किया गया है। महाभारत में शकुन्तला और नल आदि की जो कथाएँ मिलती हैं उनके लिए कहीं आख्यान का प्रयोग मिलता है और कहीं उपाख्यान का। फिर भी आख्यान में जो छोटा है और जो उसके अन्तर्गत साक्षी-कथा या अन्य रूप में आता है उसी को उपाख्यान की संज्ञा दी जा सकती है। एक वाक्य में आख्यान की अन्तर्कथाओं को ही उपाख्यान कहते हैं।[5] दूसरे शब्दों में रामायण और महाभारत के इतिवृत्त-वर्णन में जो ऐसे आख्यान दृष्टान्त रूप में प्रयुक्त होते हैं या उनके आख्यानों के अन्तर्गत पूरकों का काम करते हैं वे उपाख्यान कहलाते हैं।[6]

पौराणिक आख्यान

एक यूनानी विद्वान् फिगाना मकिनयोन ने ठीक ही कहा है कि ये पुराण गाथाएँ—चाहे हम उन्हें ग्रीक कहें अथवा आर्य या और कुछ—उस घास के समान हैं जो प्रत्येक भूमि पर उगती हैं। संसार का कोई देश और कोई प्राचीन संस्कृति ऐसी न होगी जिसकी अपनी पुराण गाथाएँ न हों।

---

१ यास्क कृत निरुक्त ४ २१ और ७-७
२ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास डा शम्भूनाथ सिंह पृ ६
३ वही पृ १
४ भारतीय प्रेमाख्यान काव्य डा हरिकान्त श्रीवास्तव पृ २
५ हिन्दुस्तानी भाग २ अंक ३ जुलाई सितम्बर १९५६ में प्रकाशित श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी का कथा के प्राचीन प्रकार शीर्षक लेख पृ ११
६ भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी प्रस्तावना पृ १

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि पुराण गाथाएँ या पौराणिक आख्यान हम कहेंगे किनको ? चूंकि पुराण का अर्थ प्राचीन है, इसलिए क्या सभी प्राचीन आख्यानों को पौराणिक आख्यान कहा जा सकता है ?

यद्यपि वैदिक साहित्य, रामायण और महाभारत में भी बहुत-से आख्यानों का उल्लेख और विकास हुआ है और पौराणिक आख्यानों का विकास क्रम जानने के लिए उनके मूल स्रोतों का संधान आवश्यक होगा, तथापि एक सीमित अर्थ में पौराणिक आख्यान उन्हीं आख्यानों को कहा जाएगा जो हिन्दू पुराणों तथा उपपुराणों से लिये गये हैं।

वैदिक साहित्य, रामायण तथा महाभारत और पुराणों में जो आख्यान ग्रहण किये गये, उनका मूल स्रोत वास्तव में लोकवार्त्ता है, जो सही अर्थों में 'पुराण' या प्राचीन कही जा सकती है। उसी को वेदों, रामायण, महाभारत तथा पुराणों ने अपने अपने दृष्टिकोण से ग्रहण किया। वेदों ने अपने काम के तत्त्व लोकवार्त्ता से लिये, महाभारत ने किसी अन्य प्रयोजन से उसका उपयोग किया। काव्यत्व के लिए उपयुक्त उसके अंशों को रामायण ने ले लिया। इसी प्रकार पुराणों ने लोकवार्त्ता में प्रचलित कथाओं को अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक मत या देवी देवता से सम्बद्ध करने के लिए उनके रूप में आवश्यक परिवर्तन कर लिया। जैन, बौद्ध तथा हिन्दू पुराणों में से कौन अधिक प्राचीन है और कौन कम, इस विवाद में न पड़कर भी यह निर्विकल्प रूप से कहा जा सकता है कि इन सबका स्रोत एक था, इनमें कथाओं के उपयोग का स्वरूप ही अलग-अलग रहा।

यह सम्भव है कि रामायण ने वैदिक साहित्य से, महाभारत ने वैदिक साहित्य और रामायण से तथा पुराणों ने वैदिक साहित्य, रामायण तथा महाभारत तीनों से कुछ ग्रहण किया हो, परन्तु जिस मूल स्रोत के मुखापेक्षी ये सभी रहे, जिस अक्षय भंडार के आगे ये सभी अपनी झोली फैलाते रहे, वह स्रोत या भंडार मुख्यतः लोक-वार्त्ता ही थी।

पौराणिक आख्यानों का अर्थ

रस्किन ने पौराणिक आख्यान या धर्मगाथा के विषय में लिखा है—"एक धर्मगाथा (माइथालाजी) अपनी सरलतम परिभाषा में एक कहानी है जिससे एक अर्थ सम्बद्ध है, ऐसा अर्थ जो प्रकट होनेवाले अर्थ से भिन्न हो। ऐसी कहानी में ऐसा कोई अभिप्रेत अर्थ है, यह उस कहानी की कुछ उन परिस्थितियों से साधारणतः विदित होता है जो असाधारण होती हैं, अथवा शब्द के साधारण अर्थ में अस्वाभाविक होती है।"[1]

रस्किन का यह कथन धर्म कथाओं के एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व की ओर संकेत

1 "क्वीन ऑफ द एयर", जान रस्किन पृ० २

करता है। धर्म गाथाओं में जो अर्थ प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त होता है उसके पीछे उसका एक और अर्थ प्रच्छन्न रहता है। पौराणिक आख्यान किसी आधिभौतिक या आध्यात्मिक रूपक को लिए होते हैं। जब तक उनके सही मर्म को न समझा जाय तब तक ऊपरी दृष्टि से पौराणिक आख्यान कपोलकल्पित अविश्वसनीय और व पर की उड़ान लग सकते हैं। पौराणिक आख्यानों में जो अलौकिकता[1] होती है जिसके कारण उनके पाठकों का साधारणीकरण कभी कभी नहीं हो पाता उसके मूल में कुछ तो है उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि और कुछ है उनका आध्यात्मिक (प्रतीकात्मक) स्वरूप।

पौराणिक आख्यान सोद्देश्य होते हैं। वे किन्हीं क्रियाओं या रीति रिवाजों की उपयोगिता समझाते अथवा प्राकृतिक शक्तियों देवी व्यक्तियों या अन्य शक्तियों का रहस्य समझाकर मनुष्य का सम्बन्ध उनसे स्थापित करते हैं। अतः लोक-कथाओं की भाँति उनके अर्थ में सरलता नहीं होती। साधारण लोक साहित्य में यद्यपि धर्मगाथा के समान समस्त रूप मिल सकता है पर उसमें उस विशिष्ट अर्थ की अन्तर्व्याप्ति नहीं मिलती जिससे उसका समस्त कथानक मूल बीज के रूप में किसी प्राकृतिक व्यापार का कोई अंग बन सके।[2]

सामान्यतः पौराणिक आख्यानों के अर्थ तीन प्रकार से किये जा सकते हैं (१) आधिभौतिक (२) आधिदैविक (३) आध्यात्मिक। आध्यात्मिक अर्थ वाच्यार्थ नहीं वरन लक्ष्यार्थ के समान होता है जिसमें लक्षणा एवं व्यंजना की प्रधानता होती है।

उक्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं स्वभावोक्ति, रूपकाश्रित और अतिशयोक्ति। विज्ञान-सम्मत बातें या ऐहिक ज्ञान की बातें स्वाभाविक पद्धति में कही जाती हैं। वैदिक संहिताएं रूपकाश्रित में कही गई हैं। पुराणों की वर्णन-पद्धति अतिशयोक्तिपूर्ण है। जब तक स्वभावोक्तिमय ज्योति सिद्धान्त या प्राकृतिक व्यापार तथा रूपकमय वैदिक साहित्य से अतिशयोक्तिपूर्ण पौराणिक आख्यानों को मिलाकर न देखा जाय तब तक उनका वास्तविक अर्थ स्पष्ट नहीं हो सकता।

परन्तु प्रस्तुत प्रबन्ध में पौराणिक आख्यानों के आधिभौतिक, अधिदैविक तथा आध्यात्मिक अर्थों को स्पष्ट करना हमारा उद्देश्य नहीं है। अपने आप में यह अध्ययन का एक स्वतन्त्र विषय हो सकता है।

इस प्रबन्ध में तो हम अपने को हिन्दी के सूफी कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यानों में पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों के विविध रूप से किये गये प्रयोगों का समसन तक ही सीमित रखेंगे।

---

१ अलौकिकता का अर्थ है अयोग्यता दानवीय असम्भव विचित्र कल्पनाओं का समावेश निरिक्षण तथा ज्ञान के समक्ष दैवी कारनामे। ऐसी घटनाओं अथवा वर्णनों के समावेश से एक अलौकिक और मिथ्या वातावरण पैदा हो जाता है। इससे मानवीय भावनाओं की प्रयणीयता कम हो जाती है। यहां साधारणीकरण में बाधा होती है।

—समीक्षा के सिद्धांत डॉ सत्येन्द्र पाण्डेय पृ० ११६

२ व्रजलोक साहित्य का अध्ययन डा सत्येन्द्र सिंह पृ० ७

४ हिन्दी सूफी कवियों के प्रेमाख्यान और पौराणिक आख्यान

हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानों अथवा सूफी कवियों द्वारा रचित हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यों में पौराणिक आख्यानों का विविध रूप में प्रयोग हुआ है। कुछ प्रेमाख्यान तो ऐसे हैं जिनके कथानक पूर्ण रूप से किसी पौराणिक आख्यान या उपाख्यान पर आधारित हैं। इनके अतिरिक्त भी पौराणिक आख्यानों के प्रयोग का एक विस्तृत क्षेत्र इन प्रेमाख्यानों में मिलता है। भारतीय पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों का आलंकारिक, दार्ष्टान्तिक, प्रतीकात्मक और केवल उल्लेख के रूप में जो प्रयोग इन प्रेमाख्यानों में हुए हैं उनका क्षेत्र बहुत विस्तृत है। कुछ सूफी प्रेमाख्यानों में शामी परम्परा के पौराणिक आख्यानों का भी प्रतीकात्मक, आलंकारिक, दार्ष्टान्तिक एवं उल्लेखात्मक प्रयोग हुआ है। कुछ निजंधरी पात्रों जैसे राजा विक्रम, भोज, भर्तृहरि तथा गोपीचन्द आदि से सम्बन्धित कथाएँ भी इन प्रेमाख्यानों में अलंकार, दृष्टान्त, प्रतीक एवं उल्लेख के रूप में प्रयुक्त हुई हैं। हिन्दी कथा साहित्य के ये निजंधरी पात्र भी एक प्रकार का पौराणिक स्वरूप ही प्राप्त कर चुके हैं। सूफी काव्यों पर नाथ पंथ की विचारधारा का प्रभाव होने के कारण मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जालंधरनाथ आदि नाथ सम्प्रदाय के आचार्यों की लोक प्रचलित कथाओं तथा उनके नामों का भी इन प्रेमाख्यानों में अनेक रूपों में प्रयोग किया गया है।

सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानक काव्यों में पौराणिक आख्यानों का जो विविध रूपों में उपयोग किया है उसकी विस्तृत चर्चा हम आगामी अध्यायों में करेंगे। यहाँ तो उसकी स्थूल चर्चा मात्र की जाएगी। पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों का उपयोग उन्होंने कुछ तो तत्कालीन प्रचलित काव्य रूढ़ि एवं परम्परा के अनुरोध से किया और कुछ अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए। सूफी कवियों द्वारा पौराणिक आख्यानों का उपयोग यह भी सूचित करता है कि वे देश की हिन्दू परम्पराओं और सांस्कृतिक प्राण धाराओं से कितने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे।

पौराणिक आख्यानों के उपयोग की दृष्टि से प्रेमाख्यानों का वर्गीकरण

पौराणिक आख्यानों के उपयोग की दृष्टि से प्रस्तुत प्रबन्ध की अध्ययन-परिधि

म आनवाग मफी प्रेमाख्याना अथवा हिन्दी सूफी कविया द्वारा लिखित प्रेमाख्याना को निम्नलिखित वर्गों म सगणिवद्ध किया जा सकता है —

(१) पूण आख्यानक काव्य।
(२) पौराणिक आख्याना या पात्रा का प्रतीकात्मक प्रयोग करनेवाले काव्य।
(३) पौराणिक आख्याना या पात्रा का आलकारिक प्रयोग करनेवाले काव्य।
(४) पौराणिक आख्याना या पात्रा का दार्ष्टान्तिक प्रयोग करनेवाले काव्य।
(५) पौराणिक नामा पात्रा या स्थाना का उल्लेख-मात्र करनेवाले काव्य।
(६) पौराणिक आख्याना के माध्यम से सूफी दर्शन तत्त्व का निरूपण करने वाले काव्य।
(७) पौराणिक-आख्यान की कथानक रूढ़िया का प्रयोग करनेवाले काव्य।

इस शोधिका के अन्तगत हमने हिन्दी सूफी कवियो के जिन ५ प्रेमाख्यानो का अध्ययन किया है उनको इन वर्गों म इस प्रकार बाटा जा सकता है —

१ पूण आख्यानक काव्य

पूण आख्यानक काव्य से हमारा तात्पय उन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो से है जिनका कथानक किसी पौराणिक आख्यान या उपाख्यान पर पूणत आधारित है। सूफी प्रेमाख्याना म इस काव्यो की संख्या अधिक नहीं है। केवल दो ही काव्य इस दृष्टि से पूर्ण आख्यानक हैं जिनम एक भारतीय पौराणिक आख्यान (नल दमयन्ती आख्यान) का उपयोग किया गया है —

(१) मरदास लखनवी कृत नल-दमन (१६५७ ई०)
(२) जान कवि कृत कथा नल-दमयन्ती (१६६१ ई०)।

सामी परम्परा के एक पौराणिक आख्यान को लेकर लिखा गया केवल एक काव्य ही मिलता है—

शेख निसार कृत यूसुफ जुलखा (१७९० ई०)।

२ पौराणिक आख्यानो या पात्रा का प्रतीकात्मक प्रयोग करनेवाले काव्य

( ) चन्दायन (२) मृगावती (३) पद्मावत (४) चित्ररेखा (५) मधुमालती (मनन) (६) माधवानल-कामकन्दला (आलम) (७) चित्रावली (८) ज्ञानदीप (९) कथा कवलावती (१०) कथा कनकावती (११) कथा रतनावती (१२) कथा पुष्पवरिषा ( ) नल-दमन (१४) हंस जवाहिर (१५) इन्द्रावती (१६) अनुराग बासुरी।

३ पौराणिक आख्याना या पात्रा का आलकारिक प्रयोग करनेवाले काव्य

(१) चन्दायन (२) मृगावती ( ) पद्मावत (४) चित्ररेखा (५) मधुमालती, (६) माधवानल कामकन्दला (७) चित्रावली (८) ज्ञानदीप (९) कथा कँवलावती

(१०) कथा कनकावती, (११) कथा कौतूहली, (१२) कथा कामलता, (१३) कथा पहुपवरिषा, (१४) कथा रतनमजरी, (१५) कथा छीता (१६) कथा मोहिनी, (१७) कथा नल दमयन्ती, (१८) कथा सुभटराइ (१९) नल दमन (२०) हस जवाहिर, (२१) इन्द्रावती (२२) अनुराग-बाँसुरी (२३) यूसुफ-जुलेखा।

४ पौराणिक आख्यानों या पात्रों का दार्ष्टान्तिक प्रयोग करनेवाले काव्य

(१) चदायन (२) मृगावती (३) पदमावत (४) चित्ररेखा (५) मधुमालती (६) माधवानल-कामकदला (७) चित्रावली (८) ज्ञानदीप (९) कथा रतनावती, (१०) नल दमन (११) हस जवाहिर (१२) इन्द्रावती (१३) अनुराग बासुरी (१४) यूसुफ जुलेखा।

५ पौराणिक पात्रों या स्थानों का उल्लेख मात्र करनेवाले काव्य

इस वर्ग मे वे काव्य सम्मिलित हैं जिनमे पौराणिक नामों पात्रों या स्थानों का अन्य प्रकार से उपयोग करने के साथ साथ किसी सदर्भ मे केवल उल्लेख मात्र किया गया है। ऐसे काव्य है—

(१) चदायन (२) मृगावती (३) पद्मावत (४) चित्ररेखा (५) मधुमालती (६) चित्रावली (७) ज्ञानदीप (८) कथा रतनमजरी (९) ग्रन्थ लैल मजनू (१०) कथा रतनावती (११) नल दमन (१२) कथा नल दमयन्ती (१३) हस जवाहिर (१४) इन्द्रावती (१५) अनुराग बासुरी (१६) यूसुफ जुलेखा।

ग्रन्थ लैल मजनू मे केवल कुछ पौराणिक पात्रों का ही उल्लेख हुआ है आख्यानों का नहीं।

६ पौराणिक आख्यानों के माध्यम से सूफी दर्शन-तत्त्व का निरूपण करनेवाले काव्य

(१) चदायन (२) मृगावती, (३) पदमावत (४) मधुमालती (५) माधवानल कामकदला (६) चित्रावली (७) ज्ञानदीप (८) कथा रतनावती (९) कथा छीता (१०) नल दमन (११) कथा नल दमयन्ती (१२) हस जवाहिर (१३) इन्द्रावती (१४) अनुराग बासुरी।

७ पौराणिक स्रोत की कथानक रूढियों (मोटिफ्स) का प्रयोग करनेवाले काव्य

पौराणिक स्रोत की कथानक रूढियों का प्रयोग करनेवाले काव्यों की सख्या पौराणिक आख्यानों का किसी न किसी रूप मे प्रयोग करनेवाले काव्यों की अपेक्षा अधिक है। विशेषत जान कवि रचित प्रेमाख्यानों[१] के सदर्भ मे यह उल्लेखनीय है

१ जान कवि के जिन प्रेमाख्यानक काव्यों मे पौराणिक आख्यानों या पात्रों का किसी न किसी रूप मे प्रयोग किया गया है उनकी सख्या केवल १२ है जबकि इस कवि ने २८ प्रेमाख्यानक काव्य

कि इनके जिन प्रेमाख्यानों में पौराणिक आख्यानों का उपयोग नहीं किया गया है उनमें भी पौराणिक स्रोतों की कथानक रूढ़ियों का प्रयोग मिलता है। नीचे उन प्रेमाख्यानक काव्यों की तालिका दी जा रही है जिनमें अन्य भारतीय लोककथा रूढ़ियों के साथ-साथ भारतीय पौराणिक कथा रूढ़ियों का व्यवहार किया गया है –

(१) चन्दायन (२) मृगावती (३) पद्मावत (४) चित्ररेखा (५) मधुमालती (६) माधवानल कामकन्दला, (७) चित्रावली (८) ज्ञानदीप (९) कथा कँवलावती (१०) कथा कलावती (११) कथा कनकावती (१२) कथा कौतूहली (१३) कथा कामलता (१४) कथा सतवती (१५) कथा सीलवती (१६) कथा रूपमंजरी (१७) कथा पुहुपबरिखा (१८) कथा रतनमंजरी (१९) कथा बुधिसागर या मधुकर मालती (२०) कथा रतनावली (२१) ग्रंथ लैल मजनूं (२२) कथा कामरानी पीतमदास (२३) चन्द्रबदन सौतनिधान की कथा (२४) कथा छीता (२५) कथा चित्ररेखा-स्वलदे (२६) कथा मोहिनी (२७) कथा कलंदर (२८) कथा छबिसागर, (२९) कथा नल दमयन्ती (३०) कथा सुभटराइ (३१) नल-दमन (३२) हंस जवाहिर (३३) इन्द्रावती (३४) अनुराग-बाँसुरी (३५) यूसुफ-जुलेखा।

लिखे हैं। हमने इस प्रबन्ध में उनके केवल १२ प्रेमाख्यानों को ही उपयोगी पाया है। उनके जिन प्रेमाख्यानों को हमने अपने लिए उपयोगी नहीं समझा। वे हैं—(१) कथा बलकिया बिरहा (२) मरद सर पातसाहि की कथा (३) कथा कुलवंता (४) कथा तमीम अनारी (५) कथा निरमल (६) खोजीनामा। ये सभी प्रेमाख्यान ग्रन्थ साधारण कोटि के और अपेक्षाकृत लघुकाय हैं। पौराणिक आख्यानों एवं पात्रों का उपयोग करनेवाले उनके काव्य हैं —(१) कथा कवलावती (२) कथा कनकावती (३) कथा कौतूहली (४) कथा कामलता (५) कथा पुहुपबरिखा (६) कथा रतनमंजरी (७) कथा रतनावली (८) ग्रन्थ लैल-मजनूं (९) कथा छीता (१०) कथा मोहिनी (११) कथा नल-दमयंती (१२) कथा सुभटराइ।

५ | हिन्दी सूफी कवियों के पूर्ण-आख्यानक काव्य

'पूर्ण आख्यानक' काव्य से तात्पर्य ऐसे काव्य से है जिसका पूरा कथानक किसी पौराणिक आख्यान पर आधारित हो। मूल पौराणिक आख्यान और पुराण साहित्य में उसके होनेवाले क्रमिक विकास से कुछ भिन्नता या कवि की मौलिक उद्भावना उस काव्य में भले ही मिले किन्तु सामान्य रूप से उसके कथानक का ढाँचा पौराणिक आख्यान का आधार न छोड़े।

प्रस्तुत प्रबन्ध में हमने जिन पतीस प्रेमाख्यानक काव्यों को अपने अध्ययन का विषय बनाया है उनमें से केवल तीन काव्य पूर्णाख्यानक हैं। वे हैं—सूरदास लखनवी कृत 'नल दमन', जान कवि कृत 'कथा नल-दमयन्ती' तथा शेख निसार कृत 'यूसुफ जुलेखा'। इनमें से प्रथम दो तो भारतीय पौराणिक पूर्ण आख्यानक काव्यों की श्रेणी में आते हैं और तीसरा यानी 'यूसुफ जुलेखा' शामी पौराणिक पूर्ण आख्यानक काव्यों की श्रेणी में। इस अध्याय में हमारा उद्देश्य इन सभी काव्यों के कथानकों की आधारिक पौराणिक कथाओं को बताते हुए उनसे उनकी भिन्नता का निर्देश करना है। कवि की मौलिक उद्भावना को भी यथास्थान स्पष्ट किया जायगा।

रासो ग्रन्थों से हिंदी में जो आख्यानक काव्यों एवं प्रेमाख्यानों की परंपरा आरम्भ हुई उसमें १६५७ ई० से पूर्व लिखित कोई ऐसा प्रेमाख्यान नहीं मिलता जो नल दमयंती के आख्यान पर आधारित हो। सूरदास लखनवी द्वारा सन् १६५७ ई० में रचित 'नल-दमन' ही नलाख्यान-परम्परा का प्रथम हिंदी काव्य जान पड़ता है। इस काव्य से केवल चार वर्ष बाद यानी १६६१ ई० में जान कवि ने 'कथा नल दमयंती' शीर्षक प्रेमाख्यान लिखा जो इस परम्परा में हिंदी का दूसरा काव्य है।

'नल-दमन' और 'कथा नल-दमयंती' के आख्यान का मूल स्रोत

इन दोनों काव्यों में नल-दमयंती की प्रसिद्ध प्रेम कथा को आधार बनाया गया है। 'नल-दमन' में कवि सूरदास लखनवी ने अपने काव्य के कथा-स्रोत का स्पष्ट उल्लेख कर दिया है।

एक दिवस मोरे मन आई। भारत पढ़े लाय चित लाई॥
तहि के परब पढ़त जब आवा। नल की कथा सोंच हिय लावा॥[1]

कथा 'नल-दमयती' में कवि जान ने कथा स्रोत का स्पष्ट उल्लेख न करते हुए विविध ग्रन्थों या पण्डितों से उनकी उच्छ्वा वाता को सुनकर अपने ग्रन्थ की कथा संगठन करने की बात कही है।[2] परन्तु नल-दमन की भाँति कथा नल दमयती का भी मुख्य स्रोत महाभारत ही है यह आगे के विवेचन से स्पष्ट हो जाएगा।

'महाभारत' में वर्णित नलाख्यान

महाभारत से पूर्व किसी भारतीय साहित्य में नल दमयती का आख्यान नहीं मिलता। पहली बार महाभारत के वन पर्व के २८ अध्यायों (अध्याय ५२-७९) में नलोपाख्यान शीर्षक से नल दमयन्ती के प्रेमाख्यान का विशद वर्णन हुआ है।

कथा—जब धर्मराज युधिष्ठिर दुर्योधन से द्यूत क्रीड़ा में पराजित होकर वनवास का कष्टमय जीवन बिता रहे थे और एक दिन ग्लानिपूर्ण मनोदशा में चिंता मग्न बैठे थे तभी वहाँ से वृहदश्व ऋषि आ गये। युधिष्ठिर की ग्लानि को कम करने के लिए उन्होंने उनसे नल का आख्यान सुनाया। उन्होंने बताया कि नल ने भी द्यूत-कर्म के कारण वन में कष्टमय जीवन बिताया था। इस प्रकार महाभारत में नलाख्यान दृष्टान्त कथा के रूप में आया है। इस आख्यान को निम्नलिखित चरणों में विभक्त किया जा सकता है—

(१) निषध देश का राजा वीरसेन का पुत्र नल अश्व चालन विद्या में निपुण था। वह द्यूत क्रीड़ा का भी प्रेमी था। उसके भाई का नाम पुष्कर था।

(२) विदर्भ देश (आधुनिक बरार) के राजा का नाम भीम था। उनकी रानी पत्नी कुण्डिनपुर की थी। भीम निःसन्तान होने के कारण चिन्तित और खिन्न रहते थे। दमन नामक एक ऋषि उनके राजभवन में पधारे। राजा के सत्कार से प्रसन्न होकर ऋषि ने भीम तथा उनकी रानी को एक कन्या और तीन पुत्र होने का वरदान दिया। कन्या का नाम दमयन्ती और पुत्रों का नाम क्रमशः दम दान्त और दमन रखा गया।

---

१ नल-दमन सम्पादक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल और श्री दौलतराम जयाल प्रकाशक क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ आगरा छन्द २५ चौ० १ २

२ नल-दमयन्ती कथा बखानों। कवि जान जसी विधि जानों॥
कथा में बहु ग्रन्थन माहिं। यक भाति प पाइ नाहिं॥
और और भाति मैं लही। ताको मनो दन्त मो कही॥
सन्ता करि यह मनें बिचारि। कथा कोनी ताहि निवारि॥
त्वहा को मति चलि-चलि सोंघो। चतुरनि हतु बरनजा कोंघो॥
बन्त बिन्तेती मिलें सवाम। अति सगढ है तेन प्रकाम॥

—कथा नल-दमयन्ती (हस्तलेख) छन्द ५ प० २८

(३) नल और दमयंती दोनों अत्यंत रूपवान थे। एक दूसरे को प्रत्यक्षत देखे बिना ही, रूप गुण श्रवण मात्र से दोनों में परस्पर प्रीति उत्पन्न हो गयी।

(४) एक दिन नल दमयंती के विरह में दुःखी होकर अपने उद्यान में बैठे थे। उनकी दृष्टि स्वर्णिम पंखों वाले कुछ हंसों पर पड़ी। उन्होंने उनमें से एक हंस को किसी प्रकार पकड़ लिया। हंस ने नल से कहा कि आप मुझे मारें मत मैं आपका प्रिय साधन करूंगा। दमयंती के पास जाकर आपकी ऐसी प्रशंसा करूंगा कि वह आपको छोड़ किसी अन्य पुरुष को नहीं चाहेगी। नल ने हंस को मुक्त कर दिया।

(५) सभी हंस उड़ते हुए विदर्भ देश की ओर गये। कुण्डिनपुर में पहुँच कर वह सुन्दर हंस दमयंती के पास गया और उससे उसने नल के रूप सौंदर्य की खूब अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा की और उसके हृदय में नल के प्रति अनुराग उत्पन्न करने में सफल हुआ। दमयंती ने अपना प्रेम सन्देश हंस के माध्यम से नल के पास भेजा।

(६) दमयंती जब नल के विरह में दिन दिन मुरझाने लगी। उसकी सखियों ने उसका रोग पहचान लिया। उन्होंने राजा भीम को सूचित किया। भीम ने अपनी बेटी को विवाह योग्य जान उसके लिए स्वयंवर का आयोजन किया। देश देश के राजा दमयंती को पाने के लोभ में उस स्वयंवर में आने लगे। नारद और पर्वत ऋषि के द्वारा स्वर्लोक में इस स्वयंवर का समाचार पहुँचा। इन्द्र सहित अग्नि यम और वरुण लोकपालों ने स्वयंवर में भाग लेने का निश्चय किया और मर्त्य लोक की ओर चल पड़े। मार्ग में उनकी भेंट राजा नल से हुई जो स्वयं दमयंती के स्वयंवर में एक प्रत्याशी के रूप में जा रहे थे। चारों देवताओं ने नल से कहा कि तुम हमारे दूत बनकर दमयंती के पास जाओ और उससे कहो कि वह हममें से किसी एक को अपना पति चुन ले। नल पहले तो इस दौत्य कर्म के लिए हिचके पर इन्द्र के आदेश से उन्हें जाना ही पड़ा। इन्द्र की कृपा से वे अदृश्य रूप में दमयंती के अति सुरक्षित प्रासाद में प्रवेश पा सके। दमयंती उनके सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो गयी। उसके पूछने पर नल ने अपना परिचय दिया और देवताओं का संदेश कहा। दमयंती ने नल के साथ ही विवाह करने का संकल्प प्रकट किया किंतु नल के ऊपर देवताओं का कोप न हो इसलिए कहा कि मैं देवताओं की उपस्थिति में आपका वरण करूँगी। नल ने दमयंती का निश्चय देवताओं को बतला दिया।

(७) स्वयंवर का दिन आया। इन्द्र वरुण यम तथा अग्नि—ये चारों देवता पहले से ही नल का रूप धारणकर नल के पास जा बैठे थे। दमयंती ने जब पाँच नलों को बैठे देखा तब वह इस दुविधा में पड़ गयी कि इनमें वास्तविक नल को कैसे पहचाने? देवताओं को पहचानने के जो लक्षण उसे ज्ञात थे उनमें से कोई भी उनमें न था। अंततः उसने देवताओं से ही प्रार्थना की कि वे अपना रूप स्वयं प्रकट कर दें ताकि वह नल को पहचान सके। देवताओं ने दमयंती में वह शक्ति उत्पन्न कर दी जिससे उसे देव सूचक लक्षणों का निश्चय हो सके। दमयंती ने देखा उनमें से जो

(२३) इस घटना के दसवें दिन बाहुक नामधारी नल इक्ष्वाकुवंशी राजा ऋतुपर्ण के नगर अयोध्या में पहुँचे। बाहुक ने बताया कि मैं सब कलाएँ जानता हूँ पाक शास्त्र में निपुण हूँ और अश्व चालन विद्या में तो मुझ जैसा पारंगत इस पृथ्वी पर दूसरा कोई है ही नहीं। राजा ऋतुपर्ण ने बाहुक को अश्व शाला का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया और वार्ष्णेय तथा जीवल दो सारथियों को उनके अंतर्गत रख दिया। वार्ष्णेय कभी नल का सारथि रह चुका था परन्तु परिवर्तित रूप में वह नल को न पहचान सका। इस प्रकार दमयंती का स्मरण करते हुए नल अज्ञातवास करने लगे।

(२४) उधर विदर्भ नरेश भीम को अपने जामाता और पुत्री पर पड़ी विपदा का कुसंवाद मिल चुका था। और वह उन्हें ढूँढने को व्याकुल था। उसने कई ब्राह्मणों को प्रभूत पुरस्कार (एक सहस्र गौएँ अग्रहार—कर मुक्त भूमि—तथा एक समृद्ध गाँव आदि) का लोभ देकर नल और दमयंती की खोज करने के लिए यत्र तत्र भेज दिया।

(२५) सुदेव नामक ब्राह्मण संयोग से चेदि नगर में जा पहुँचा। उसने वहाँ दमयंती को देखा। दमयंती ने भी उसे देखकर पहचान लिया। दमयंती ब्राह्मण से सबका कुशल-क्षेम पूछती हुई रोने लगी। समाचार पाकर राजमाता और सुनन्दा भी वहाँ आ गया। सुदेव ने दमयंती का वास्तविक परिचय उन्हें दिया। राजमाता तो दमयंती की मौसी ही निकली। उन्होंने बताया कि दशार्ण देश के राजा सुदामा की दो पुत्रियाँ थीं जिनमें से एक का (राजमाता स्वयं का) विवाह चेदिराज वीरबाहु से हुआ और दूसरी का विवाह विदर्भ नरेश भीम से।

(२६) दमयंती सुदेव के साथ सम्मानपूर्वक कुण्डिनपुर आ गयी। माता पिता, पुत्र-पुत्री से मिलकर वह प्रसन्न हुई। किन्तु नल की खोज कराये बिना उसे कहाँ चैन? अपनी माता से उसने सकोच छोड़कर कह दिया कि यदि मुझे जीवित देखना चाहती हो तो मेरे पति का पता लगवाओ।

(२७) राजा भीम ने नल का पता लगाने के लिए जगह जगह ब्राह्मण भेजे। दमयंती ने सब खोजी ब्राह्मणों को बुलाकर कहा कि तुम जहाँ कहीं जाओ उच्च स्वर में यह कहना कि एक निष्ठुर पति ने जिसने अग्नि को साक्षी लेकर जीवन-पर्यन्त पत्नी को साथ रखने की प्रतिज्ञा की थी घोर वन में उसे अकेली छोड़ दिया और जाते-जाते वह उसकी आधी साड़ी भी फाड़कर लेता गया। उस निर्मम को अपनी पत्नी को इस असहायावस्था में छोड़ते तनिक भी दया न आयी।

(२८) दीर्घकाल के अनन्तर पर्णाद नामक ब्राह्मण अयोध्या पहुँचा। उसने राजा ऋतुपर्ण की राज सभा में जाकर उच्च स्वर से दमयंती का उक्त संदेश कह सुनाया। किसी ने उसका प्रत्युत्तर नहीं दिया पर बाहुक ने उसे एकान्त में ले जाकर कहा कि जिस पति ने ऐसा किया होगा विवशतावश ही किया होगा उसमें अपनी

पत्नी को कष्ट देना न जाने कैसा होगा। पर गाने वाली कहीं जानेवाली स्त्री का यह कैसा व्यवहार कि वह अपने पति की निन्दा कर रही है! पति द्वारा त्यागी जाने पर भी उत्तम कुल की पतिव्रता पत्नी उसकी निन्दा नहीं करती। पर्णाद ने बाहुक को जैसा देखा और उससे जैसा सुना दमयंती से जा कहा। दमयंती को संदेह हो गया कि कदाचित बाहुक ही नल हों जिसने छद्मवेश धारण कर रखा हो।

(२९) दमयंती ने अपनी माता की सम्मति से परामर्श लेकर सुदेव ब्राह्मण को अयोध्या भेजा और उससे कह दिया कि जब तुम ऋतुपर्ण से मिलना तो कहना कि नल का कुछ पता न मिलने से दमयंती ने दूसरा पति चुनने का निश्चय किया है और वह स्वयंवर कल ही प्रातःकाल है। कल सूर्योदय के बाद दमयंती किसी और की हो जाएगी।

(३०) सुदेव ने अयोध्या पहुँचकर राजा ऋतुपर्ण से ऐसा ही कहा। ऋतुपर्ण को बाहुक की अश्व विद्या का ध्यान आ गया। यह सोचकर कि आज-आज में सौ योजन की दूरी रथ द्वारा पार कराने की क्षमता बाहुक में ही है उन्होंने बाहुक को बुलाया। बाहुक रूपधारी नल को पत्नी दमयंती के द्वितीय स्वयंवर की बात सुनकर क्षोभ हुआ पर यह सोचकर कि स्वयं वहाँ चलकर देखना उचित होगा उन्होंने ऋतुपर्ण को शीघ्र से शीघ्र कुण्डिनपुर पहुँचाने का आश्वासन दे दिया। अच्छी नस्ल के चार दुबले सिन्धी घोड़े नल ने रथ में जोते। ऋतुपर्ण ने वार्ष्णेय को भी साथ ले लिया। पवन गति से रथ कुण्डिनपुर की दिशा में दौड़ चला। तब जाकर ऋतुपर्ण का उत्तरीय गिर पड़ा। ऋतुपर्ण ने रथ रोककर उसको मँगाने की इच्छा व्यक्त की। बाहुक ने कहा इतनी देर में तो वह स्थान चार कोस पीछे छूट गया। ऋतुपर्ण ने बाहुक से कहा कि तुम अश्व चालन विद्या में पटु हो तो मैं गणित विद्या में निपुण। प्रमाणस्वरूप ऋतुपर्ण ने मार्ग के एक बहेड़ा वृक्ष के सारे पत्तों की गिनती क्षण भर में कर दी। बाहुक ने रथ रोककर गणना की सत्यता देखनी चाही। उन्होंने वृक्ष के वृन्त को काटकर गिरा लिया। गिनने पर उतने ही पत्ते निकले जितने ऋतुपर्ण ने बताये थे। बाहुक ने उनकी गणित विद्या का लोहा माना। प्रसन्न होकर ऋतुपर्ण ने बाहुक को द्यूत विद्या सिखा दी और कहा कि मैं तुमसे अश्वविद्या फिर सीख लूँगा। जैसे ही नल ने द्यूत विद्या सीखी उनके शरीर से कलि भय के मारे काँपता हुआ निकलकर सामने खड़ा हो गया और अपने अपराधों के लिए क्षमा माँगने लगा। नल ने उसे क्षमा कर दिया। कलि बहेड़े के वृक्ष में समा गया। इस घटना को ऋतुपर्ण या वार्ष्णेय ने न जाना। सूर्यास्त से पूर्व ही ऋतुपर्ण का रथ कुण्डिनपुर में प्रविष्ट हो गया। रथ की घोर गर्जना सुनकर दमयंती भी अटारी पर चढ़कर देखने लगी।

(३१) ऋतुपर्ण को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि नगर में स्वयंवर की कोई ठाट नहीं है सर्वत्र उदासी छायी है। उससे भी अधिक आश्चर्य हुआ राजा भीम को

स्वयंवर के लिए इतनी त्वरा से ऋतुपर्ण के आने पर। अस्तु, ऋतुपर्ण का बड़ा सत्कार हुआ।

(३२) इस बीच दमयंती ने अपनी सखी केशिनी को बाहुक की प्रत्येक गति विधि पर दृष्टि रखने और सूचना देते रहने का आदेश देकर अश्वशाला में भेज दिया। इस बात के लिए उसने खासतौर से सहेज दिया कि बाहुक को आग या पानी न दिया जाय। केशिनी ने देखा कि ऋतुपर्ण के लिए रसोई बनाने की जो सामग्री बाहुक के पास आयी उसे लेकर उन्होंने खाली घड़ों को दृष्टि मात्र से लबालब भर लिया, एक मुट्ठी तिनके लेकर सूर्य की ओर दिखाकर उनमें अग्नि प्रज्वलित कर ली और बात-की-बात में भोजन तैयार कर दिया। केशिनी ने यह भी देखा कि छोटे द्वार भी बाहुक के प्रवेश करते समय स्वयमेव बड़े हो जाते हैं और बाहुक द्वारा मसले जाने पर भी फूल अधिकाधिक विकसित और सुवासित होते जाते हैं। उसने दमयंती को ये सब बातें जा बतायीं। दमयंती ने बाहुक के बनाये भोजन में से कुछ ग्रास मँगाकर चखा तो उसमें वही सरस स्वाद मिला जो नल के बनाये भोजन में मिलता था। केशिनी के हाथ दमयंती ने अपने पुत्र तथा पुत्री को भी बाहुक के पास भेज दिया। बाहुक उन्हें आलिंगन में भरकर रो पड़े। केशिनी को उन्होंने अपने रोने का कारण यह बताया कि उनके भी दो बच्चे थे जो अब इतने ही बड़े हुए होंगे इन्हें देखकर उनकी याद हो आयी। दमयंती ने यह सुना तो उसका रहा सहा संदेह भी जाता रहा और उसने अपनी माता से कहा कि बाहुक नामधारी व्यक्ति जो राजा ऋतुपर्ण का सारथि है अन्य कोई नहीं, नल ही हैं।

(३३) परन्तु उनके रूप रंग के परिवर्तन का क्या कारण हो सकता है, इस सम्बन्ध में आश्वस्त होने के लिए उसने माता का परामर्श लेकर बाहुक को अपने महल में बुला भेजा। दमयंती को सामने पाकर नल फूट फूटकर रो पड़े। नल की आँखों की पुतलियाँ काली थीं और नेत्र के किनारे कुछ-कुछ लाल थे। दमयंती और नल ने परस्पर उपालम्भ दिये।

(३४) दमयंती ने अपने पातिव्रत्य के साक्ष्य के रूप में वायु सूर्य और चन्द्र देवता का आह्वान किया। अंतरिक्ष से वायु ने कहा कि 'तीन वर्षों से दमयंती तुम्हारे शोक में रही है और हमने उसकी शील रक्षा की है। दमयंती जानती थी कि अयोध्या से कुण्डिनपुर की सौ योजन दूरी तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई एक दिन में पार नहीं कर सकता इसीलिए दमयंती ने अगले दिन ही स्वयंवर होने की बात कहलायी थी। देवतागण हर्षित होकर दुंदुभियाँ बजाने लगे और पुष्प वर्षा करने लगे। नल के मन के सब सन्देह दूर हो गये।

(३५) नल ने तत्काल नागराज कर्कोटक का स्मरण किया और उसके द्वारा प्रदत्त दोनों दिव्य वस्त्र ओढ़ लिये। ओढ़ते ही, उन्होंने अपना पूर्व स्वरूप प्राप्त कर लिया। दमयंती को उन्होंने छाती से लगा लिया। दमयंती के माता पिता तथा

ऋतुपर्ण को भी यह शुभ संयोग मिला। नल प्रसन्न हुए। नगर में उत्सव मनाया जाने लगा। ऋतुपर्ण ने नल से मर्यादा-भंग के लिए उनसे क्षमा माँगी। नल ने ऋतुपर्ण को अश्व विद्या (शालिहोत्र विद्या) प्रदान की। ऋतुपर्ण ने नल को पुनः द्यूत विद्या का रहस्य समझाया।

(३६) एक मास कुण्डिनपुर में रहकर नल (दमयन्ती को वहीं छोड़कर) कुछ सेना के साथ निषध देश को चले। नल ने पुष्कर से जूआ खेलने का प्रस्ताव किया। जूआ न खेलने की दशा में नल ने पुष्कर को युद्ध की चुनौती दी। दाँव पर नल ने अपनी संपत्ति दमयन्ती – सब कुछ को लगा दिया और पुष्कर ने अपना राज्य। इस बार पहले ही प्रयास में नल ने जुए में पुष्कर को हरा दिया। पुष्कर ने नल के प्रति जैसा दुर्व्यवहार किया था उसका स्मरण कर उसका मुँह सूख गया। किन्तु नल ने पुष्कर को क्षमा कर दिया और उसको राज्य का एक अंश निर्वाह के लिए दे दिया।

(३७) नल दमयन्ती को विदर्भ से लिवा लाये। अपने पुत्र-पुत्री तथा पत्नी सहित वे वर्षों तक सुखपूर्वक रहे और न्यायपूर्वक शासन करते रहे।

'महाभारत' के परवर्ती नलाख्यानाधारित संस्कृत काव्य

महाभारत के अनन्तर संस्कृत में कई काव्यों ने नलाख्यान को अपना आधार बनाया। उनमें से प्रमुख हैं — नलोदय काव्यम्[1] नल चम्पू या दमयन्ती कथा[2]। कथा-सरित्सागर[3] और नैषधीय चरितम्[4] में भी नल कथा मिलती है।

---

१ नलोदय काव्यम् के रचयिता महाकवि कालिदास माने जाते हैं। (दे० स्टोरी आफ नल — सम्पा० मोनियर विलियम्स प्रस्तावना पृ० ६ और नलोदय काव्यम् प्रका० वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई पृ० १)।
इस काव्य के चार उच्छ्वासों एवं २१६२ श्लोकों में नल दमयन्ती की कथा वर्णित है। ए० बी० कीथ कालिदास का समय ४०० ई० के आसपास मानते हैं किन्तु कुछ विद्वान् इनका काल पाँचवीं शती ई० पू० तक ले जाते हैं। (दे० ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर — ए० बी० कीथ और संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास — वाचस्पति गैरोला)।

२ नल चम्पू या दमयन्ती कथा रचयिता त्रिविक्रम भट्ट (१० वीं शती ई० पूर्वार्द्ध)। इस काव्य [illegible] है। इसमें नल-दमयन्ती की कथा का पूर्वार्द्ध ही वर्णित है उत्तरार्द्ध नहीं। प्रकाशक — निर्णय सागर प्रेस बम्बई सं० १९३१।

३ कथा-सरित्सागर रचयिता कश्मीर के कवि सोमदेव प्रथम खण्ड प्रका० — बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना भूमिका डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल पृ० ५ अलङ्कारवती शीर्षक नवम लम्बक छठी तरंग। कथा-सरित्सागर की रचना १०६३ १०८१ ई० के मध्य हुई। प्रथम शती ई० में गुणाढ्य ने पैशाची में बड्डकहा (बृहत्कथा) लिखी। उसका सार कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने बृहत्कथा मंजरी में दिया। कथा सरित्सागर में भी बृहत्कथा का वस्तु ग्रहण किया गया है। क्षेमेन्द्र के ग्रन्थ के २ वर्ष बाद यह रचा गया। इससे यह सूचित होता है कि कथा सरित्सागर में प्राप्त हुआ नलाख्यान कभी बृहत्कथा में आ चुका होगा।

४ नैषधीय चरितम् श्रीहर्ष (१२वीं शती ई० उत्तरार्द्ध)। टीकाकार — पं० शिवदत्त शर्मा प्रका० — निर्णय सागर प्रेस बम्बई १९३३ ई० सप्तम संस्करण। इस काव्य के २२ सर्गों के २८३ श्लोकों में आलंकारिक शैली में उन्मुक्त कल्पना विलास के साथ नल दमयन्ती प्रेमाख्यान वर्णित है।

महाभारत के बाद और नल-दमन की रचना के पहले नल की कथा में जो विकास हुआ उसको जान लेना आवश्यक है।

'नलोदय काव्यम्' में 'महाभारत' के 'नलोपाख्यान' से भिन्नता

(१) इसमें दमन ऋषि और राजा भीम के पुत्रों का कोई उल्लेख नहीं है।

(२) रूप गुण श्रवण जनित प्रेम नल और दमयन्ती दोनों ही पक्ष में है।

(३) इन्द्र अग्नि वरुण यम के अतिरिक्त वायु भी दमयन्ती के स्वयंवर में उपस्थित होते हैं।

(४) दूतत्व करने के निमित्त नल को देवताओं से कोई वरदान नहीं प्राप्त होता।

(५) स्वयंवर से वापसी में इन्द्रादि लोकपालों की भेंट केवल कलि से होती है द्वापर से नहीं।

(६) नल ने द्यूत पर धाती फेंकी सुधांत होकर नहीं वरन् दमयंती के अनुरोध पर।

(७) दमयंती जब सार्थ के साथ चेदि जा रही थी तब मार्ग में जंगली हाथियों द्वारा साथ को रौंदे जाने की घटना नहीं घटती।

'नलोदय काव्यम्' की शेष घटनाएं 'महाभारत' के 'नलोपाख्यान' के ही अनुसार हैं।

'नल चम्पू' ('दमयंती-कथा') में 'नलोपाख्यान' से कथान्तर

(१) विदर्भ नरेश भीम की रानी को रात में स्वप्न दिखायी देता है कि शिवजी उसे पारिजात मंजरी दे रहे हैं। शिवजी स्वप्न में ही उसे दमन ऋषि के आने की पूर्व सूचना दे देते हैं।

(२) रूप-गुण श्रवण जनित प्रेम दोनों ही पक्षों में है।

(३) नल हंस को नहीं छोड़ते तब आकाशवाणी होती है कि यह दमयंती को प्राप्त कराने में तुम्हारे लिए सहायक होगा और तुम्हारे तथा दमयंती के मध्य दूतत्व करेगा।

(४) नल-दमयंती पहले से एक दूसरे से परिचित नहीं हैं। आकाशवाणी से दमयंती नाम सुनकर नल उसके विषय में जानना चाहते हैं।

(५) दमयंती के स्वयंवर में जाते समय नल की भेंट इन्द्र, वरुण, यम तथा कुबेर से होती है। (महाभारत में कुबेर की जगह अग्नि से मिलने का उल्लेख है)। इन्द्रादि लोकपालों से स्वयं नल यह कहते हैं कि मैं आपका क्या प्रिय करूँ।

(६) इन्द्रादि के भेजने पर नल अदृष्ट रूप में दमयंती के अंतःपुर में जाते हैं। वहाँ दमयंती एक सखी के मा यम से नल से बातें करती है। शील की दृष्टि से यह उदभावना उत्तम है। नल अंतःपुर से लौटते नहीं। स्वयंवर का क्या हुआ कुछ पता

स्त्रियाँ या पर्दानशीन नहीं होती हैं तब कथा में एक नाटकीयता आ जाती है और वह विस्मय-जनक की तरह दमयन्ती के रूप की प्रशंसा करके उसे पद्मिनी स्त्रियों में भी बढ़कर बताता है। दमयन्ती के नख शिख और रूप का वर्णन करके नल के हृदय में काम दीप्त करता है। महाभारत के हंस का यह औचित्य नल-दमन में भी नाटकीय ढंग से कथा में नहीं आती। कोई हंस मानव वाणी में ज्ञान और कुतूहल करे यह विस्मय भी नहीं सकता, इसीलिए कदाचित् कवि ने आश्चर्य की कल्पना की है।

नल-दमन में दमयन्ती के हृदय में नल के प्रति प्रीति स्वप्न द्वारा उत्पन्न हो जाती है। दमयन्ती के हृदय में स्वप्न प्रसंग की कल्पना प्रेम की नैसर्गिकता में कवि के विश्वास की परिचायक है और सूफी-दर्शन की ओर उसकी रुझान को सूचित करती है।

(२) महाभारत की दमयन्ती तो केवल अत्यन्त रूपवती है किन्तु 'नल दमन' की दमयन्ती पद्मिनी है—जहाँ पद्मिनी स्त्रियाँ से भी श्रेष्ठ है।

(३) दमयन्ती के जन्म का वृत्तान्त बताते हुए जायसी कहते हैं कि दमन ऋषि ने चार फल रानी को खाने के लिए दिये जिनसे उसके एक पुत्री और तीन पुत्र हुए। (महाभारत में फलों का उल्लेख नहीं हुआ है। महाभारत के अनुसार दमन ऋषि राजा भीम के घर पर आते हैं जब कि नल दमन में राजा भीम उनके दर्शनार्थ नगर से बाहर उनकी कुटिया पर जाते हैं।)

(४) महाभारत में दमयन्ती के स्वयंवर में इन्द्र, वरुण, अग्नि और यम उपस्थित होते हैं। नल दमन में अग्नि का स्थान कुबेर को मिल गया है।

(५) महाभारत में जहाँ नल को दमयन्ती के समक्ष अपना परिचय स्वयं देना पड़ता है वहाँ नल-दमन में दमयन्ती नल को देखते ही पहचान लेती है। इससे प्रेम का महत्त्व सूचित होता है।

(६) महाभारत में देवतागण देवसूचक लक्षणों को स्वयं बतला देते हैं ताकि दमयन्ती वास्तविक नल को पहचान कर सके। किन्तु नल-दमन में दमयन्ती अकिंचन प्रभु की शरण जाती है और भगवान की कृपा से आकाशवाणी होती है जिसके द्वारा देवसूचक लक्षण बताये जाते हैं और दमयन्ती को दुविधा से उबारा जाता है।

(७) महाभारत में इन्द्रादि लोकपाल प्रसन्न होकर नल को आठ वरदान देते हैं। नल-दमन में तीन देवता ही चार वर देते हैं। कुबेर कोई वर नहीं देते। इन्द्र ने नल को शान्तिहोत्र विद्या सिखायी (महाभारत में नल को प्रारम्भ से ही इस विद्या का ज्ञाता बताया गया है।) यम ने शतायु होने और अग्नि ने वशवर्ती होने का वर दिया (महाभारत में यम ने नल की बनायी रसोई में उत्तमोत्तम स्वाद होने और उनकी धर्म में निष्ठा होने का वर दिया है)। वरुण ने इच्छा करते ही जल प्रकट होने का वरदान दिया। (महाभारत के वरुण इसके अतिरिक्त भी एक वरदान देते हैं—पुष्पमालाओं के कभी न मुरझाने और सदा उत्तम गंध-युक्त रहने का।) नल-दमन

के नल में प्रारम्भ में किसी चमत्कारिक शक्ति का उल्लेख नहीं है। कवि ने अंत में नल की पहचान के लिए दमयन्ती द्वारा केशिनी के हाथ एक फूल भिजवाया है)। यम ने नल का शतायु होने का वर्णन दिया। यही कारण है कि दमयन्ती के मर जाने पर नल मरना चाहकर भी इसलिए नहीं मर पाता, क्योंकि उसकी आयु के सौ वर्ष पूरे होने में अभी पाँच वर्ष कम थे।

(८) नल दमन' में स्वयंवर से लौटते समय इन्द्रादि देवताओं को केवल कलि मिलता है महाभारत की भाँति कलि और द्वापर दोनों नहीं मिलते। जिस पक्षी पर नल अपनी धोती फेंकता है वह 'नल दमन' में कलि ही होता है। वह नल की धोती ले उड़ता है। महाभारत में जूए के पासे पक्षियों का रूप धरकर आते हैं और नल को नग्न बना जाते हैं।

(९) नल दमन' में ऐसा प्रसंग आता है कि तीन दिन के भूखे प्यासे नल को एक नदी के तट पर मरी हुई दो मछलियाँ मिल गयीं। उन्हें पकाने के लिए दमयन्ती को देकर नल स्नान करने चले गये। दमयन्ती ने मछलियों को जैसे ही साफ करना चाहा उसकी अँगुलियों का अमृत पीकर वे मृत मछलियाँ जीवित हो गयीं और जल में जा कूदीं।

दमयन्ती की अँगुलियों में अमृत होने की बात कवि की मौलिक उद्भावना नहीं मानी जा सकती क्योंकि नल दमन' के चार वर्ष बाद ही लिखित जान कवि की 'कथा नल-दमयन्ती' में भी अंगुलियों के अमृत से मृत मछलियों के जीवित हो जाने का प्रसंग आया है। जान कवि ने सूरदास की अनुकृति की होगी ऐसा नहीं लगता। निश्चय ही इन दोनों कवियों ने लोक कथाओं से अँगुलियों में अमृत होने की कथा रूढ़ि को ग्रहण किया होगा।

निस्सन्देह दमयन्ती की अँगुलियों के अमृत से मछलियों के जीवित हो जाने की घटना का समावेश करके कवि ने चमत्कारिक तत्त्व की योजना कर दी है परन्तु उसकी यह कल्पना अव्याप्ति दोष से ग्रस्त है। क्या यह असंगत और हास्यास्पद नहीं लगता कि अँगुलियों में अमृत रखनेवाली दमयन्ती स्वयं अमर नहीं बन सकी? जंगली हाथियों से पैरों से रौंदे हुए बनजारों को जिलाने के लिए उसने अपने इस अमृत का उपयोग क्यों नहीं किया? वे तो उसके सहायक थे।

(१०) 'नल-दमन' में दमयन्ती बनजारों के नायक के प्रस्थान करने पर उनके साथ चन्देरी (महाभारत' में यह नाम 'चेदि' है) चल देती है पर महाभारत में वह स्वतः बनजारों के साथ लग लेती है।

(११) नल-दमन में दमयन्ती नल की परीक्षा लेने के लिए अपने एक चर के हाथ रसोई की सामग्री, एक खाली घड़ा और एक फूल भिजवाती है। महाभारत में दमयन्ती अपनी सखी केशिनी को नल के पास भेजती है, परन्तु रसोई का सामान देकर नहीं, वरन नल की गति विधि पर दृष्टि रखने के लिए। महाभारत में

राम के प्रयत्न करने पर छोटे-छोटे पत्थरों के भी ऊँचे हो जाने की बात है जो 'नल दमन' में नहीं मिलती।

(१०) 'नल दमन' में नल को पूर्व-स्वरूप प्रदान करने के लिए अपने पिता यमन के अनुसार कर्कोटक नाग स्वयं उपस्थित होता है और अपना विष चूसकर उसे दो नए वस्त्र पहनाता है किन्तु 'महाभारत' में कर्कोटक के आने का उल्लेख नहीं है वरन कंचुकी पहनकर ही नल अपना पूर्व रूप प्राप्त कर लेते हैं।

(११) सूरदास ने कथा का अन्त 'महाभारत' के समान न कर उसमें कुछ मौलिकता ला दी है। 'नल दमन' में नल जब ६५ वर्ष के हो गये तब दमयन्ती की मृत्यु हो गयी। नल मरना चाहकर भी न मर पाये क्योंकि यम ने उनको मृत्यु होने का वरदान दे रखा था। पर नल का मन राज-काज से उचट गया। राज्य भार अपने पुत्र इन्द्रसेन को सौंप कर वे संन्यासी बनकर घर से निकल गये और एक दिन समाधिस्थ दशा में उनका देहावसान हो गया। ऐसा करुणापूर्ण अन्त 'नलोपाख्यान' पर आधारित किसी पूर्ण आख्यानक काव्य का नहीं हुआ है। इस काव्य के आदि और अन्त में कवि ने जो मौलिक उद्भावनाएँ की हैं उनमें लौकिक प्रेम को अलौकिक प्रेम की रहस्यमयता में अभिव्यक्त कर दिया है।

कथा 'नल-दमयन्ती' और 'नलोपाख्यान' में कथान्तर

जान कवि कृत कथा 'नल दमयन्ती' में कथा का आरम्भिक अंश 'नल-दमन' की भाँति कल्पित न होकर 'महाभारत' के अनुसार है। कथा के अन्य अंश भी 'महाभारत' के 'नलोपाख्यान' का ही अनुसरण करते हैं फिर भी दोनों में कुछ अन्तर है:

(१) कथा 'नल दमयन्ती' में दमन ऋषि स्वयं राजा भीम के महल में उपस्थित नहीं होते वरन राजधानी के समीप एक नदी तट पर उनका आगमन सुनकर निःसन्तान राजा-रानी उनके दर्शनों को जाते हैं। दमन ऋषि राजा को एक पका आम और कुछ दाने देते हैं और कहते हैं कि ये चीजें रानी को अभी खिला दो। इनके प्रभाव से वह एक पुत्री और एक पुत्र की माता बनेगी ('महाभारत' में रानी से एक पुत्री और तीन पुत्र उत्पन्न होते हैं)। ऋषि ने कन्या का नाम 'दमयन्ती' और पुत्र का नाम 'दाम' रखने का भी सुझाव दिया। दमयन्ती के पैदा हो जाने के बाद राजा भीम एक बार फिर ऋषि का दर्शन करने जाते हैं। ऋषि इस बार दमयन्ती का भविष्य-कथन भी करते हैं कि इस कन्या के भाग्य में दुःख लिखा है। इसका पति इसे छोड़ देगा, यह वन वन भटकती फिरेगी पर इसका शील कोई भंग नहीं कर सकेगा। तीन वर्ष बाद पुनः इसका मिलाप अपने पति से हो जाएगा। राजा भीम इस भविष्यवाणी की बात अन्त तक किसी को नहीं कहते—अपनी रानी तक से नहीं। भविष्यवाणी वाली यह उद्भावना अन्य किसी काव्य में नहीं है। कवि की यह मौलिक सूझ है।

( ) दमयन्ती और नल दोनों एक-दूसरे को स्वप्न में देखते हैं। स्वप्न दर्शन से इनके पूर्वानुराग का आरम्भ होता है। दमयन्ती तो स्वयं चित्रकर्त्री थी इसलिए उसने स्वप्न दर्शित पुरुष का चित्र बना लिया और बाद में उसमें चित्र दर्शन में प्रेम का आरम्भ हुआ। नल खुद चित्रकार न थे इसलिए उन्होंने देश विदेश की राज कुमारियों के चित्र मँगवाये उन चित्रों में दमयन्ती का चित्र स्वप्नदर्शिता नारी से मिल गया। नल प्रण कर बैठे कि विवाह करूँगा तो इसी नारी से। स्वप्न दर्शन और चित्र की बात भी हम नलाख्यान पर आधारित किसी अन्य पूर्णाख्यानक काव्य में नहीं मिलती। यह भी कवि जान का इस कथा के विकास में अपना योग है यद्यपि स्वप्न दर्शन और चित्र दर्शन की कथा रूढ़ि लोक कथाओं में पहले से ही मौजूद रही होगी।

(३) कथा नल दमयन्ती में राजा नल का इन्द्रादि देवताओं का दूत बनकर, अदृश्य रूप से दमयन्ती के महल में जानेवाला प्रसंग छोड़ दिया गया है। जब दमयन्ती वरमाला लेकर नल के पास पहुँची और उनके सौन्दर्य को देखकर चमत्कृत होने से उसके पैर डगमगाने लगे तब देवताओं (इन्द्र, वरुण यम तथा अग्नि) को सन्देह हुआ कि दमयन्ती नल को ही वरण करेगी। उस समय उसको छलने के लिए उन चारों ने भी नल का रूप बना लिया और नल के पास जा खड़े हुए। इस काव्य में भी नल दमन की भाँति दमयन्ती को दुविधा से उबारने के लिए आकाशवाणी होती है जिसमें देवताओं की पहचान के लक्षण बताये जाते हैं।

(४) कथा नल दमयन्ती में इन्द्रादि देवता नल को कोई वर नहीं देते।

(५) दमयन्ती के स्वयंवर से लौटते समय इन्द्रादि देवताओं की भेंट कलि अथवा द्वापर से होने का उल्लेख इस काव्य में नहीं है।

(६) महाभारत में नल और पुष्कर की दुर्बुद्धि का कारण बताया गया है कलि का उनमें प्रवेश। किन्तु कथा नल दमयन्ती में ऐसे किसी दैवी तत्त्व की योजना नहीं की गयी है। इसमें नल के दुर्दिन के लिए उसके अहंकार और अभिमान को उत्तरदायी बताया गया है। पुष्कर ने भी नल की दुर्बुद्धि का ही लाभ उठाया। द्यूत-क्रीड़ा में नल की हार इसलिए हुई क्योंकि यह भाग्य का फेर था। इस काव्य में भाग्य को पद पद पर दोषी ठहराया गया है। भाग्य पर दोष मढ़ने का विचार लोक विश्वास पर आधारित है।

(७) कथा नल दमयन्ती में नल पक्षियों के झुण्ड पर नहीं वरन एक पक्षी पर अपना उत्तरीय फेंकते हैं। उसे लेकर उड़ जाने पर वे निपट नंगे भी नहीं हो जाते। महाभारत में वे पक्षी द्यूत के पासे होते हैं नल दमन में पक्षी स्वयं कलि होता है, किन्तु इस काव्य में पक्षी केवल पक्षी ही होता है कोई दैवी छलना नहीं।

(८) इस काव्य में यह कहा है कि मृत मछलियाँ जब पका ली गयी तब वे जीवित होकर पानी में कूद पड़ीं। किन्तु इसका कारण दमयन्ती की अँगुलियों में

का होना नहीं बताया गया जमा कि नल-दमन म। 'महाभारत म ता मदलियों का प्रसग ही नहीं आया है।

(९) कथा नल दमयन्ती म वन म भटकती दमयन्ती को एक अजगर द्वारा नाम लिए जाने का उल्लेख है किन्तु आग कुछ परिवर्तन कर दिया गया है। महाभारत म अजगर पूरी तरह दमयन्ती को निगल नहीं चुका होता है कि तभी व्याध आ जाता है परन्तु कथा नल दमयन्ती म नाग दमयन्ती को पूरा निगल चुका होता है तब एक बटोही आता है। विरहन मा दमयन्ती के नाग के पट म पहुँच जान स वहाँ आग भी जल उठी। बटोही न नाग के पट म आग सी दहकती नारी का जो देखा तो सोचा कि इसको निकालकर स्वयं अपना विवाह कर लूगा। बस उसन नाग का पट फाड़कर दमयन्ती को निकाल लिया। लकिन तभी वह नाग का मारन लगा नाग न उसी को लील लिया।

(१०) कथा नल दमयन्ती म दमयन्ती की भेंट एक सरिता तट पर एक महात्मा स होती है जो उसकी विपद कथा सुनकर उस आश्वासन दत है कि तरा पति तुझे शीघ्र मिलेगा।

(११) कथा नल दमयन्ती म साथ या बनजारा न दमयन्ती की भेंट होन, उनके साथ साथ चदि या चदेरी नगर की ओर जान और माग में जगली हाथियों द्वारा उनके रौंदे जान का कोई उल्लेख नहीं है। यहाँ एक नयी ही कल्पना कवि न की है। जिस सरिता-तट पर दमयन्ती की भेंट महात्मा स होती है, उस सरिता का दमयन्ती अपन पातिव्रत के प्रभाव स बिना नौका के ही, पार कर जाती है। उस पार जान पर वह देखती है कि राजा सुबाहु की सना का पड़ाव पड़ा है। राजमाता और सुबाहु की भगिनी राजकुमारी सुनन्दा भी साथ हैं। राजमाता दमयन्ती पर कृपाकर वहीं स उसे अपन साथ चदरी ल आती हैं और उस स्नेहपूर्वक अपन पास रखती है। इस प्रसग का इस रूप में उल्लेख न तो महाभारत में है न अन्य किसी नलाख्यानाधारित काव्य में।

(१२) नल दावाग्नि स जिस नाग को बचात हैं उसका नाम कथा नल दमयती म कर्कोटक नहीं दिया गया है। दसवें डग पर जब नाग नल को डस लेता है और उनका रग काला पड जाता है तथा हाथ पाँव छोटे हो जात हैं तब नाग उनको अपनी केंचुल तथा देवताओं के दो वस्त्र देता है। वह कहता है— जब तू अपना पूर्व रूप चाहे मेरी केंचुल को जला देना मैं प्रकट हो जाऊँगा और इन देव वस्त्रों को पहनते ही तू पूर्ववत सुन्दर हो जाएगा।

केंचुल जलान स कर्कोटक के प्रकट होन की बात कथा नल दमयती म ही मिलती है।

(१३) चूँकि कथा नल दमयती म इन्द्रादि देवताओं स वरदान प्राप्त करन का कोई उल्लेख नहीं है इसलिए यहाँ हम बाहुक नामधारी कुरूप और बौने नल का

ऋतुपर्ण के समक्ष अपना परिचय इन शब्दों में देते हुए सुनते हैं— मैं सूर्य की तरह शीघ्र अश्व चालन कर सकता हूँ, मुझे घोड़ों की अच्छी परख है, मैं आग-पानी की सहायता लिये बिना स्वादिष्ट भोजन बना सकता हूँ और मुझे जूआ खेलना भी आता है।' इस प्रकार 'कथा नल-दमयंती' में नल के ये गुण देवी कृपा से प्राप्त न होकर स्वार्जित जान पड़ते हैं।

(१४) महाभारत में नल की परीक्षा लेनेवाली केशिनी दमयंती की सखी होती है, 'कथा नल दमयंती' में उसका नाम सुकेशी हो गया है और वह सखी से दासी बन गयी है।

(१५) अयोध्या से विदर्भ जाते समय ऋतुपर्ण के उत्तरीय के उड़ जाने की घटना तो 'कथा नल दमयंती' में उल्लेख है परन्तु ऋतुपर्ण द्वारा बहेड़ा के वृक्ष के पत्ता तथा फलों को गिनने का उल्लेख नहीं है। न यही कि ऋतुपर्ण ने मार्ग में नल को द्यूत विद्या सिखायी। यह काम उन्होंने विदर्भ में नल के रहस्य का उद्घाटन हो जाने के बाद किया है। नल द्वारा बदले में ऋतुपर्ण को शालिहोत्र विद्या सिखाने का कोई उल्लेख 'कथा नल दमयंती' में नहीं मिलता।

(१६) इस काव्य में, नल के सामने दमयंती के सतीत्वपन की साक्षी आकाशवाणी के द्वारा दिलायी गयी है। महाभारत में वायु अंतरिक्ष से यह साक्ष्य देता है।

(१७) अंत में 'नल-दमन' की भाँति ही 'कथा नल दमयंती' में भी कुछ मौलिक उद्भावना मिलती है। यहाँ पुष्कर के साथ नल जब दुबारा जूआ खेलते हैं तब शर्त यह ठहरती है कि नल हारें तो संन्यासी बन जायें और पुष्कर हारे तो पूरा राज्य नल को मिल जाय। महाभारत में नल ने इस बार सारी सम्पत्ति और दमयंती तक को दाँव पर लगा दिया है। जीत जाने पर नल महाभारत की भाँति ही पुष्कर के साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं करते।

(१८) 'कथा नल दमयंती' में नल अपने पुत्र इन्द्रसेन के वयस्क हो जाने पर उसे राजकाज सौंप देते हैं और स्वयं दमयंती को लेकर वन चले जाते हैं। वृद्धावस्था में नल की मृत्यु हो जाने पर दमयंती उनके शव की चिता पर रखकर सती हो जाती है। दमयंती के सती हो जाने का यह प्रसंग केवल 'कथा नल दमयंती' में पाया जाता है, अन्य किसी नलाख्यानाधारित काव्य में नहीं।

'यूसुफ-जुलेखा' काव्य की परम्परा

सूफी कवि शेख निसार कृत 'यूसुफ जुलेखा' एक अभारतीय कथा पर आधारित हिन्दी का एक अन्य पूर्ण-आख्यानक काव्य है। इस आख्यान का मूल स्रोत

'ओल्ड टस्टामट '[1] (पुरानी बाइबिल) म वर्णित एक कथा है जो बाद म 'कुरान '[2] म भी गृहीत हुई। कुरान की इस कथा क आधार पर फारसी के प्रसिद्ध कवि जामी न १४८३ ई० म यूसुफ-जुलखा मसनवी लिखी[3] थी।

शेख निसार न १२०५ हि० (स० १८४७ या १७९० ई०) म जामी की मसनवी और कुरान की कथा क आधार पर यूसुफ जुलखा लिखी।[4] उनके पूर्व उर्दू म बीजापुर दरबार क कवि हाशिमी द्वारा एक मसनवी इसी नाम म लिखी जा चुकी थी।[5] बँगला म अठारवी शता म गरीबुल्ला न भी इस कथानक क आधार पर काव्य रचना की थी। यह कृति शेख निसार की कृति स केवल दो वर्ष बाद ही लिखी गयी।[6] शख निसार की यूसुफ जुलखा क अतिरिक्त एक अन्य सूफी कवि शख नसार न निसार क लगभग सवा सौ वर्ष बाद, सन १९१७ ई० म युसुफ जुलखा क प्रमाख्यान क आधार पर प्रेम दर्पण लिखा। यहाँ इस कथा का विकास देखने के लिए मुख्यत निम्न चार ग्रन्थों का उपयोग किया जाएगा—

(१) ओल्ड टेस्टामेन्ट (बाइबिल का ईसा-पूर्व अश)।
(२) कुरान शरीफ (सूर-यूसुफ और 'यमा उवरिस अध्याय)—अरबी।
(३) यूसुफ जुलखा (जामी)—फारसी।
(४) यूसुफ जुलखा (शखनिसार)—हिन्दी (अवधी)।

---

१ ओल्ड टस्टामट ईसाइयो की धमपुस्तक बाइबिल का वह अश है जिसमे काइस्ट (ईसामसीह) स पहले के सतों (मोजज या मसा आदि) द्वारा दिये उपदेश सकलित हैं। दि होली बाइबिल (ओल्ड एण्ड न्यू टस्टामट) प्रकाशक—कालिंस क्लीयर टाइप प्रेस लन्दन—ग्लासगो—न्यूयार्क १९५२

२ तर्जुमा कुरान शरीफ अनु० श्री अहमद बशीर प्रकाशक—श्री प्रभाकर साहित्यालोक रानी कटरा लखनऊ १९५६

३ मध्ययुगीन प्रेमाख्यान डा० श्याममनोहर पाण्डेय पृ० ३३

४ शख निसार न यह प्रेम अपनी अस्सी म लिखा जबकि उनकी आयु ५७ वर्ष की हो गयी थी।

सत्तावन बरस की आऊ। तब उपजेउ यह कथा क चाऊ॥
सात दिवस मह कीन्ह समापत। दुरमति नाम रहा सो सवत॥
हिजरी सन बारह स पाचा। बरनेउ प्रेम कथा यह साँचा॥
अट्ठारह स सतासीमा। सवत विक्रम सेन नरेसा॥
सतरह स बारह पुनि साका। सतरह स नब्बे ईसा का॥

कवि निसार को अपने २२ वर्षीय इकलौते बेटे लतीफ की मत्यु स बहुत सदमा पहुँचा। वे बारबार याकूब (यूसुफ क पिता) को याद किया करते थे क्योंकि उसको भी पुत्र शोक सहन करना पड़ा था।

५ हाशिमी की मृत्यु १६९७ ई० म हुई उसके पूर्व यह काव्य लिखा गया होगा। दे० वही पृ० ■ और भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा पृ० ११५

६ भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा पृ० १०३

'ओल्ड टेम्टामेंट' मे इस कथा का रूप

ओल्ट टेस्टामेंट' मे मूसा (मोजेज) की पहली पुस्तक (फस्ट बुक ऑव् मोजज) जिसे साधारणतया जेनसिस कहा जाता है के अध्याय ३६ मे ५० तक जोजेफ की कहानी आयी है। कहानी इस प्रकार है—

अब्राहम और उनकी पत्नी सग से इसाक या इसहाक (Isaac) का जन्म हुआ। इसाक का विवाह रेबका ■ चालीस वप की आयु मे हुआ। जब एसाउ (Esau) और जेकब नामक दो जुड्वा बच्चे रेबका से उत्पन्न हुए तब इसाक की उम्र ६० वप की थी। रेबका जेकब को अधिक स्नेह करती थी और इसाक एसाउ का। जब दोना बच्चे बडे हो गये तब रेबका न एक दिन छलपूवक अपन प्रिय पुत्र जेकब को अपन पति से आशीवाद दिला लिया, एसाउ अपने पिता के आशीर्वाद से वचित रह गया। इस कारण स वह जेकब स घणा करने लगा।

बाद मे जेकब का विवाह अपन मामा लबन की दो बटियो लीह और रैचेल स हुआ। लीह कुरूप थी और रचल मुन्दर। जेकब तो केवल रचेल स ही विवाह करना चाहता था परन्तु उसका मामा बडा काँइया था। उसन यह आश्वासन देकर कि यदि तुम मरे यहा सात वप तक रहकर सेवा करो तो तुम्हे रचेल से ब्याह दूगा जेकब क अपन पास रखा। लेकिन सात वप बाद धोखे से उसका विवाह अपनी बडी बटी लीह से कर दिया। रचेल को प्राप्त करन के लिए जेकब को सात वप तक और अपन मामा की सेवा म रहना पडा। मामा न दोना लडकियो क साथ एक एक दासी भी दे दी थी। लीह की दासी का नाम जिलपा था और रचेल की दासी का नाम था बीहा। जेकब को लीह स ६ पुत्र (रूबन, सिमियान लेवी जूडा इसाकर जेबुलुन) हुए और एक पुत्री (दीना) हुई। विवाह क कई वर्ष बाद तक रचेल क कोइ सतान न हुइ। लीह के ६ पुत्र हो जान के बाद जेकब को रचल स केवल दो पुत्र हुए जोजेफ और बेंजामिन। लीह की दासी जिलपा स भी उसे दो पुत्र (गड और अशर) हुए और रैचेल की दासी बीहा स भी दो पुत्र (डन और नफताली)। इस प्रकार जेकब के बारह पुत्र थे और एक पुत्री थी। इन सारी सतानो म जेकब अपनी प्यारी पत्नी रचल के दोना पुत्रो को विशेषत जोजेफ को बहुत चाहता था। जोजेफ अपन सभी भाइयो म अधिक सुदर था। वह जेकब की वृद्धावस्था की सतान था। बेंजामिन जेकब को दो कारणो से प्यारा था—एक तो वह रैचेल का पुत्र था दूसरे उसको जन्म देकर रचेल का देहान्त हो गया था। मातृ-विहीन बालक पर पिता का अधिक स्नेह होना स्वाभाविक ही था।

[उपयुक्त कथाश जेनसिस (फस्ट बुक आव मोजेज) के अध्याय ३६ तक पूरा हो जाता है। अध्याय ३७ स जोजफ स सम्बधित कथा प्रारम्भ होती है जो अध्याय ५० तक चलती है।]

जोजफ १७ वप का हो चुका था। वह भेड चराने जाया करता था। जेकब ने जोजेफ के लिए एक लम्बा कुत्ता (चोगा) बनवाया जिसम बाँहें थीं। जोजफ के

सौतेले भाई एक तो यों ही उससे जलते थे क्योंकि वह पिता को अधिक प्यारा था, लेकिन कुर्ता बनवाने वाली बात से तो वे और चिढ़ गये।

जोजफ ने एक स्वप्न देखा खेत में वह अपने भाइयों के साथ अनाज की अँटिया बाँध रहा था। उसकी अँटिया उठकर सीधी खड़ी हो गयी और उसके भाइयों की अँटियाएं उसके चारों ओर एकत्र हो गयी और उसकी अँटिया को उन्होंने झुककर आदाब सा बजाया। जब जोजफ ने इस स्वप्न के विषय में अपने भाइयों को बताया तब वे चिढ़कर बोले कि क्या तुम हम पर शासन करने का स्वप्न देख रहे हो? उनकी घृणा उसके प्रति और बढ़ गयी।

जोजफ ने कुछ दिनों बाद दूसरा स्वप्न देखा सूर्य चन्द्रमा और ग्यारह तारे उसको प्रणाम (सिजदा) कर रहे हैं।

जोजफ ने इस स्वप्न की चर्चा अपने पिता से की। पिता ने भी उसे झिड़का — 'क्या मैं तुम्हारी माँ और तुम्हारे भाई तुम्हारे आगे जमीन पर माथा टेकें? जोजफ के भाई अधिक ईर्ष्यालु हो उठे। परन्तु जोजफ के पिता को यह बात याद रही।

जोजफ के भाई भी भेड़ चराने जाया करते थे। एक दिन वे पहले जा चुके थे। उनके पिता ने पीछे से जोजफ को भी उनके पास भेजा। भाई डोथन तक पहुँच चुके थे। जोजफ को आता देखकर उन्होंने मिसकुट किया कि आज इसे जान से मार डालें। लेकिन सबसे बड़े भाई रूबेन ने सुझाव दिया कि इसको मारने के बजाय यह ज्यादा अच्छा होगा कि हम जंगल में एक गड्ढे में गिरा दें। रूबेन की मंशा थी कि भाइयों के चले जाने पर वह जोजफ को गड्ढे में से निकाल लेगा और पिता के पास पहुँचा देगा।

जोजफ जब पास आया तब उसके सौतेले भाइयों ने उसका लम्बा कुर्ता उतार कर उसे नंगा कर दिया और उसे एक गहरे गड्ढे में ढकेल दिया। गड्ढे में पानी नहीं था। ऐसा करके वे खाना खाने बैठे। तभी वहाँ से मिस्र की ओर जाता हुआ एक काफिला गुजरा।

जूडा ने सुझाया कि जोजफ को मारने के बजाय इस काफिले के मालिक के हाथ बेच देना अधिक लाभप्रद होगा। सबको यह सुझाव पसन्द आ गया। उन्होंने जोजफ को गड्ढे में से निकाला और काफिले के मालिक के हाथ उसे चाँदी के २० शकल (यहूदियों का प्राचीन सिक्का) के बदले बेच दिया। काफिले वाले जोजफ को मिस्र ले गये।

बड़ा भाई रूबेन जो कहीं चला गया था, जब लौटकर आया तब उसने जोजफ को गड्ढे में नहीं पाया। वह अपने कपड़े चीरने लगा और बोला कि हम अब्बाजान को क्या जवाब देंगे? इस पर अन्य भाइयों ने एक बकरी मारी और उसके खून में जोजफ का कुर्ता रंग लिया। उसे वे अपने पिता के पास लाये। बोले हमें यह मिला है। देखिए यह आपके पुत्र का वस्त्र है या किसी और का? जकब ने कुर्ता पहचान

लिया और समझ लिया कि दरिंदों ने जोजेफ को फाड खाया। कई दिनों तक उसने अपने लाडले बेटे का शोक मनाया।

काफिले के मालिक ने जोजेफ को मिस्र ले जाकर फराओ (बादशाह की उपाधि) के एक राज्याधिकारी पोटिफर के हाथ उसे बेच दिया।[1]

[जेनेसिस ३८ में जूडा के विवाह और उसके बच्चों आदि की कहानी कही गयी है। जोजेफ का कोई उल्लेख इस अध्याय में नहीं आता।]

जिस पोटिफर ने जोजेफ को खरीदा था, वह मिस्र के बादशाह (फराओ) के रक्षक दल का सेनापति था। जोजेफ के आने के बाद से सेनापति के घर में सुख समृद्धि बढ़ने लगी। उसका आगमन शुभ मानकर पोटिफर ने उसको जनानखाने की सारी व्यवस्था का प्रभारी बना दिया। घर से वह केवल खाने पीने का नाता रखता। शेष सारा उत्तरदायित्व जोजेफ को सौंपकर वह निश्चिन्त हो गया।

जोजेफ की खूबसूरती ने गजब ढाया। उसके मालिक की बीवी ने उस पर अपनी निगाह डाली। उसने जोजेफ से कहा कि मेरे साथ सोओ किन्तु जोजेफ ने इन्कार कर दिया। उसने कहा—मेरे मालिक ने मुझ पर ही सारा घर छोड रखा है मैं उनके साथ विश्वासघात नहीं कर सकता।

पोटिफर की बीवी उसे रोज रोज परेशान करने लगी। एक दिन जब घर में कोई दूसरा पुरुष न था उसने जोजेफ का कपडा पकड लिया और उससे कहा—'सोओ मेरे साथ' लेकिन जोजेफ ने अपना वस्त्र उसी के हाथ में छोड दिया और भागकर घर से बाहर निकल आया। उस औरत ने चिल्लाकर घर के लोगों को इकट्ठा कर लिया और कहा कि देखो मेरे पति ने कैसा हिब्रू गुलाम मुझे लाकर दिया है जो मेरा अपमान करने की नीयत रखता है। आज उसने कुचेष्टा की। मैं चिल्ला पडी इसलिए वह भाग गया। उसका यह कपडा मेरे पास रह गया है।

पति के आने पर उसने कहा—देखो तुम्हारे नौकर ने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है! पोटिफर का क्रोध भडक उठा उसने जोजेफ को कैदखाने में डाल दिया। लेकिन खुदा ने कैद में भी जोजेफ पर मेहरबानी की। जेलर का प्रेम और विश्वास उसे प्राप्त हो गया। जेलर ने उसको कैदियों का मेट बना दिया।[2]

इस घटना के कुछ समय बाद बादशाह (फराओ) के मुख्य रसोइए और मुख्य परिचारक (चीफ बटलर) ने अपने व्यवहार से बादशाह को अप्रसन्न कर दिया। दोनों को उसी कैदखाने में भेज दिया गया जिसमें जोजेफ पहले से ही कैद था।

एक रात दोनों कैदियों ने अलग-अलग तरह के स्वप्न देखे। उनकी समझ में उन स्वप्नों का कुछ अर्थ न आया। जोजेफ से उन्होंने जब चर्चा की तब उसने उनका स्वप्न पूछा।

---

१ जेनेसिस ३७
२ वही ६

मुख्य परिचारक ने बताया—'मैंने देखा कि अंगूर की एक लता है। उसमें तीन टहनियाँ हैं। ज्योंही उसमें कलियाँ फूटती हैं फूल निकल आते हैं और फिर अंगूर के गुच्छे पक जाते हैं। फराओ का प्याला मेरे हाथ में है। मैं उसमें अंगूरों को निचोड़ता हूँ और फराओ के हाथ में थमा देता हूँ।

जोजेफ ने इस स्वप्न का यह अर्थ बताया— तीन टहनियाँ तीन दिन की सूचक हैं तीन दिनों के भीतर फराओ तुम्हारा सिर उठाएँगे और तुम्हें तुम्हारे पहले वाले ओहदे पर बहाल कर देंगे। तुम पहले की ही तरह फराओ के हाथ में शराब का प्याला दे सकोगे। लेकिन जब तुम्हारे अच्छे दिन लौट आएँ तो मुझे भूल मत जाना। बादशाह से मेरा जिक्र करना। मैं निर्दोष हूँ। मुझे व्यर्थ ही कैद में डाला गया है।'

मुख्य रसोइये ने भी अपना स्वप्न बताया—मेरे सिर पर रोटियों की तीन टोकरियाँ थीं। सबसे ऊपर वाली टोकरी में फराओ के लिए नाना प्रकार के व्यंजन रखे थे। परन्तु मैंने देखा कि मेरे सिर पर रखी उस टोकरी में चिड़ियाँ चुग रही थीं। जोजेफ ने स्वप्न का यह फल बताया—'तीन टोकरियाँ तीन दिन हैं। तीन दिनों के भीतर फराओ तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा देंगे। पेड़ पर तुम्हारी लाश लटका दी जाएगी और पक्षी तुम्हारा माँस नोच नोच कर खाएँगे।

तीसरे दिन फराओ का जन्म दिन था। उसने नौकरों को दावत दी। इस खुशी में उसने मुख्य परिचारक को रिहा कर दिया। परिचारक पुनः उस मदिरा का प्याला पकड़ा सका। किन्तु वह जोजेफ को भुला बैठा। उधर मुख्य रसोइये को फाँसी पर लटका दिया गया।[1]

इसके दो वर्ष बाद खुद फराओ ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न यह था वह नील नदी के तट पर खड़ा है। किनारे पर सात मोटी ताजी गाएँ चरती चली आ रही हैं। ऊपर आकर वे घास चरने लगीं। उनके पीछे-पीछे सात दुबली पतली मरियल सी गाएँ नदी के किनारे से आयीं और उन्होंने मोटी-ताजी गायों को खा डाला। लेकिन उनको खाकर भी वे वैसी ही मरियल बनी रहीं। इससे बाद बादशाह की नींद टूट गया। थोड़ी देर बाद उसकी आँखें फिर लग गयीं। उसने दुबारा यह स्वप्न देखा कि अनाज की सात बालियाँ हैं—सब भरे पूरे दाने वाली। सातों बालियाँ एक ही डंठल पर लगी हैं। उनके बाद सात दूसरी बालियाँ उग आयीं। उनके दाने पिचके और निकम्मे थे। पुरवा हवा में ये बालें छितरा गयीं। फिर इन्होंने पहलवाली सातों पुष्ट बालियों को निगल लिया। यहाँ बादशाह की नींद टूट गयी। इन स्वप्नों के कारण बादशाह का चित्त उद्विग्न हो उठा। उसने मिस्र के सभी ज्योतिषियों और चतुर सयानों को बुलाया परन्तु कोई भी उन स्वप्नों का अर्थ न बतला सका।

तभी मुख्य परिचारक को जोजेफ की याद आ गयी। उसने बादशाह से उसका जिक्र किया। बादशाह के आदेश पर जोजेफ बन्दीगृह से मुक्त कर दिया गया। उसे

---

1 जनसिस ४

नहला धुलाकर, अच्छे कपडे पहनाकर बादशाह के सामने पेश किया गया। जोजेफ ने कहा कि मैं किस योग्य हूँ कि आपके स्वप्नो का अर्थ बता सकू, परन्तु मेरे भीतर जो खुदा है, वही इनका अर्थ बताएगा। आपके दोनो स्वप्न तत्वत एक हैं। इनके द्वारा ईश्वर ने आगामी घटनाओ की सूचना दी है। सात मोटी ताजी गाए सात वर्ष हैं और सात पुष्ट बालें भी सात वर्ष ही हैं। जो सात मरियल-सी गाए बाद म आयी, वे भी सात वर्ष की ही सूचक हैं। इस स्वप्न का अर्थ यह है कि सात वर्ष तक मिस्र म खूब अच्छी फसल होगी। लेकिन अगले सात वर्षों मे भयकर अकाल पडेगा। फसल बिल्कुल न उगेगी। आप किसी ईमानदार और चतुर आदमी को मिस्र का प्रशासक बना दें अच्छी फसल के सात वर्षों म किसानो से उनकी उपज का पाचवा भाग वसूल कराए और उस अन्न का जमा रखवाए। अकाल के दिनो म यही अन्न काम आएगा।

बादशाह को जोजेफ स बढकर ईमानदार और चतुर आदमी दूसरा नही दिखायी दिया इसलिए उसने उसको ही मिस्र का प्रशासक नियुक्त कर दिया। बादशाह ने उसकी अँगुली म अपनी राजमुद्रिका पहना दी और औन के पादरी पोटिफर की बेटी असेनथ से उसका विवाह कर दिया। उस समय उसकी आयु तीस वर्ष थी।

जोजेफ ने मिस्र भर का दौरा किया। अच्छी फसल के सात वर्षों म जितना अनिश्चित अन्न पैदा हुआ उसकी वसूली कराके उसने शहरी गोदामो म भरवा दिया। अकाल के सात वर्ष शुरू होने से पहले जोजेफ के दो पुत्र हुए जिनके नाम थे—मानसेह और एफरम। अकाल केवल मिस्र म ही नही पडा था दुनिया भर म पडा था।[1]

जब जैकब न सुना कि मिस्र म अनाज जमा है तब उसने अपने बेटो से कहा कि हाथ पर हाथ धरकर मत बैठो मिस्र जाकर अनाज खरीद लाओ। उसके बेटे कनान से मिस्र चल पडे।

अनाज की बिक्री का सर्वाधिकार जोजेफ के पास था। उसने अनाज की तलाश म आये अपने सौतेले भाइयो को पहचान लिया परन्तु वे जोजेफ को न पहचान पाये। जोजेफ ने उन पर विदेशी गुप्तचर होने का आरोप लगाया तब उन्होने सफाई म कहा कि हम बारह भाई हैं जिनमे से एक तो इस दुनिया म ही नही है और दूसरा हमारे पिता के पास है। जोजेफ ने कहा कि तुमम स एक यही रह और शेष भाई जाकर अपने छोटे भाई को लिवा लायें, यदि तुम उसे न लाये तो मैं समझूगा कि तुम झूठ बोलते हो। जोजेफ न उन्हें तीन दिन के लिए कैदखाने म डाल दिया।

तीसरे दिन उन्ह कैद से रिहा करके उनमे स एक भाई को बधक रखकर और शेष भाइयो को अनाज देकर जोजेफ ने उन्ह कनान जाने दिया। अपने आदमियो से उसने कह दिया कि इनकी बोरियो म इनके द्वारा चुकायी कीमत की रकम भी रख दो और इनको राह-खर्च भी दे दो। जोजेफ ने जिस भाई को रोक लिया था, उसका नाम सिमिअन था।

---

१ जेनेसिस ४१

कनान देश वापस आने पर जकूब के पुत्रों ने जब अपनी अपनी बोरियाँ खोलीं और अपने द्वारा चुकायी रकम को भी उनमें रखा पाया तब बड़े विस्मित हुए। उन्होंने अपने पिता से कहा कि बेंजामिन को हमारे साथ जाने दीजिए, अन्यथा सिमिअन का छुटकारा न हो सकेगा और हम झूठे समझे जाएँगे। जकूब ने कहा—तुम लोग पहले ही एक बेटे से मुझे जुदा कर चुके हो अब बेंजामिन को भी ले जाने को कह रहे हो। इसके लौटने का क्या भरोसा? मैं इसे नहीं जाने दूँगा। इस पर रूबेन ने कहा कि मैं इसका जामिन बनता हूँ। यदि मैं न लौटा लाऊँ इसे तो आप मेरे दोनों बच्चों को मार डालिएगा।[1]

कनान देश में अकाल का रूप अधिक भयंकर हो उठा। जकूब के पुत्र जितना अनाज मिस्र से लाये थे वह करीब करीब खत्म हो चला। जकूब ने उन्हें पुनः मिस्र जाने के लिए कहा। परन्तु यहूदा ने कहा कि अगर हम बेंजामिन के बिना जाएँगे तो उस राज्याधिकारी के कथन के अनुसार उसका दीदार भी हम नहीं मिल पाएगा।

जकूब ने मन मारकर बेंजामिन को भेजना स्वीकार किया। परन्तु उसने अपने बेटों से कहा कि यहाँ से तुम उस राज्याधिकारी के लिए कुछ सौगात जैसे कि कुछ फल, मेवे तथा शहद आदि जरूर ले जाओ। अगर तुम लोग बेंजामिन को वापस न लाये तो मेरे प्राण न बचेंगे। जकूब ने यह भी हिदायत कर दी कि पिछली बार बोरियों में जो रकम मिली थी उसे लौटाने के लिए साथ लेते जाओ।

जकूब के पुत्र दुबारा अनाज खरीदने के लिए मिस्र पहुँचे। जोसफ ने जब बेंजामिन को उनके साथ देखा तब उसने अपने नौकरों को आदेश दिया कि आज दोपहर को इन सबका खाना मेरे साथ होगा।

खाने के समय जकूब के सारे पुत्र जोसफ के निवास स्थान पर उपस्थित हुए। भाइयों ने सौगात की वस्तुएँ जोसफ को भेंट की और जमीन पर झुककर सिजदा किया। इनमें से कोई जोसफ को न पहचान पाया। सब भाई अलग अलग खाने बैठे। जोसफ ने अपने दस्तरख्वान से कुछ खाना अपने भाइयों के पास भेजा परन्तु बेंजामिन को औरों से पाँच गुना ज्यादा भेजा।[2]

जोसफ ने अपने परिचारक को आदेश दिया कि ये जितना अनाज ले जा सकें दे दो। इनके द्वारा चुकाया मूल्य भी बोरियों के मुँह में चुपचाप रख दो और सबसे छोटे भाई की बोरी में मेरा चाँदी का कटोरा भी रख देना। जब सब भाई गधों पर बोरियाँ लादकर चल पड़े और नगर से कुछ दूर पहुँच गये तब जोसफ के आदेश पर उसके नौकर पीछे से दौड़े और उनको रोक लिया। कहा—तुम लोग कैसे ही कृतघ्न हो, जिसने तुम्हारे साथ उपकार किया उसी का चाँदी का कटोरा तुम चुरा लाये। भाइयों ने बहुत सफाई दी लेकिन नौकरों ने एक न सुनी। परन्तु

---

१ जेनेसिस ४२

२ वही ४३

सबसे बड़े भाई रूबेन की बोरी की तलाशी ली गयी उसमें कुछ न मिला सिवाय अनाज की कीमत वाली रकम के। एक-एक कर सबकी तलाशी हुई। बेंजामिन की बारी में चाँदी का कटोरा मिल गया। सारे भाइयों को जोजेफ के सामने पेश किया गया। वह अभी तक अपने निवास-स्थान पर ही था। जोजेफ ने कहा कि तुम्हारी सजा यही है कि जिसकी बोरी में कटोरा मिला, वह मेरा गुलाम होकर रहेगा। बाकी भाई अपने पिता के पास जा सकते हैं। रूबेन और जूडा ने कहा कि हम तो बड़ी मुश्किल से बेंजामिन को ला पाये थे यदि यह नहीं लौटा, तो शोक के मारे हमारे पिता के सिर के सारे बाल सफेद हो जाएँगे और शायद उनके प्राणों पर बन आये।[1]

अब जोजेफ से न रहा गया। उसने सभी बाहरी आदमियों को वहाँ से हट जाने का हुक्म दिया। जब सब भाई ही रह गये तब वह जोर-जोर से रो पड़ा और बोला कि मैं जोजेफ हूँ। मैं वही हूँ जिसे तुम लोगों ने काफिले वालों के हाथ बेच दिया था। तुमने जो किया उसमें खुदा की मरजी थी अगर मैं पहले से यहाँ न आ गया होता तो तुम्हारे और इतने सारे लोगों के प्राण इस भयंकर अकाल में कैसे बचते? अभी तो अकाल के दो साल ही बीते हैं पाँच साल बाकी हैं। तुम लोग जाओ और अब्बाजान को तथा अपने सारे बाल-बच्चों पशुओं आदि को भी यहीं लेते आओ।

बादशाह को भी जब पता चला कि जोजेफ के भाई आये हैं तब उसने कहला भेजा कि वे कनान छोड़कर मिस्र आ जायें, मैं उन्हें जर-जमीन सब दूँगा। जोजेफ ने अपने भाइयों के साथ गाड़ियों में लदवा कर अनाज भेज दिया और विदा के समय उनको सरोपा भी भेंट किया। बेंजामिन के लिए उसने राजसी वस्त्र और चाँदी के ३०० शिकल (यहूदियों की प्राचीन मुद्रा) भी दिये। अपने पिता को लाने के लिए उसने एक गाड़ी अलग से भेजी और उनके लिए भेंट में मिस्र की नायाब चीजों से लदे दस गदहे दस गदहियाँ अनाज रोटियाँ तथा राह खर्च आदि चीजें भी भेज दीं।

कनान लौटकर जकब के पुत्रों ने जब उससे कहा कि जोजेफ अभी जीवित है और मिस्र का शासक है तब वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा कि मेरे लिए इतना ही काफी है कि मेरा जोजेफ अभी जिन्दा है और मैं मरने से पहले उसे देख सकूँगा।[2]

मिस्र जाने से पहले जकब बीर शेबा गया जहाँ उसकी प्यारी पत्नी रचेल और उसके पिता इसाक की कब्रें थीं। वहाँ उसने ईश्वर से प्रार्थना की। ईश्वर ने उससे कहा कि तुम निडर होकर मिस्र जाओ वहाँ मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मैं तुम्हारी संतान को एक बड़ा राष्ट्र बना दूँगा।

जकब अपने पुत्र-पौत्रादि और सारे सरो-सामान के साथ मिस्र के लिए रवाना हुआ। जब वे गोशेन पहुँचे, तब जकब ने जोजेफ को सूचना देने के लिए जूडा को

१ जेनेसिस ४४
२ वही ४५

आगे भेज दिया। जोजफ ने आकर उसकी अगवानी की। पिता के गले लगकर वह खूब रोया। जोजफ ने अपने भाइयों से कहा कि जब बादशाह आपसे पूछें कि तुम लोगों का पेशा क्या है तब कहना कि गड़ेरिये का काम ही हमारा पुश्तैनी पेशा है। मिस्र वाले गड़ेरियों को घृणा की नजर से देखते हैं। इसलिए बादशाह आपको गोशेन प्रदेश में रहने देगा। गोशेन बड़ा उपजाऊ इलाका है।[1]

जोजफ ने बादशाह के पास जाकर अपने भाइयों और पिता के आने का समाचार सुनाया। अपने साथ वह अपने चार भाइयों को भी लेता गया था। बादशाह के पूछने पर भाइयों ने बताया कि उनका पेशा पशु चराना है। बादशाह ने उन्हें गोशेन में बसने की आज्ञा दी। जेकब भी बादशाह से मिला। उस समय उसकी आयु १३० वर्ष की थी। उसने बादशाह को आशीर्वाद दिया।

इसके बाद जेकब १७ वर्ष तक मिस्र में रहा। उसकी आयु १४७ वर्ष की हो गयी थी। उसके मरने के दिन निकट आ गये थे। उसने जोजफ को बुलाकर कहा कि तुम मेरी जांघ के नीचे हाथ रखकर प्रतिज्ञा करो कि मेरे मरने के बाद तुम मुझे मिस्र में न दफनाओगे और जहाँ तुम्हारी माँ तथा तुम्हारे दादा दफनाये गये हैं वहीं मुझे भी मिट्टी दोगे। जोजफ ने प्रतिज्ञा की।

इस बीच मिस्र और कनान के लोगों का सारा रुपया-पैसा अनाज की खरीद में खर्च हो गया। उनके भूखों मरने की नौबत आ गयी। जोजफ ने उनके सारे पशु आदि लेकर उन्हें बदले में अनाज दे दिया। अगले वर्ष जनता ने कहा कि अब तो हमारे पास कुछ भी नहीं बचा है, हम कैसे अनाज खरीदें? जोजफ ने उनकी सारी जमीनें फराओ (बादशाह) के निमित्त खरीद ली और उनको फराओ का गुलाम बना लिया। फिर उसने उनको बीज दिये और खेती करने को कहा। यह तय रहा कि चूँकि सारी जमीन अब फराओ की है इसलिए वे भूमि कर के रूप में अपनी उपज का पंचमांश फराओ को प्रतिवर्ष दिया करेंगे।[2]

जेकब का जीवन प्रदीप बुझने को हुआ। उसने जोजफ के दोनों पुत्रों (एफरम और मानसेह) को आशीर्वाद देने के लिए अपने पास बुलाया। उसने बड़े लड़के के सिर पर अपना बायाँ हाथ रखकर और छोटे लड़के के सिर पर दायाँ हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। जोजफ ने ऐसा करने का कारण पूछा तब उसने कहा कि तुम्हारा बड़ा बेटा महान् बनेगा परन्तु तुम्हारा छोटा बेटा उससे अधिक महान होगा। जेकब ने जोजफ से कहा कि तुम भी एक दिन अपने पूर्वजों की जन्मभूमि में वापस जाओगे। वहाँ मैंने एक पहाड़ी ढाल की भूमि तुम्हारे नाम कर दी है। वह भूमि मैंने अपने बाहुबल से अर्जित की थी।[3]

---

१ जेनेसिस ४६

२ वही ४७

३ वही ४८

इसके बाद जैकब ने अपने सभी बेटों का भविष्य-कथन किया। जोजफ के विषय में उसने कहा कि वह फलदार शाखा है। लोगों ने उस पर ढेले फेंके, परन्तु वह अविचल रहा। ईश्वर उसकी मदद करेगा। यह कहकर उसने आखिरी साँस ले ली।[1]

जोजेफ अपने पिता की लाश पर गिरकर खूब रोया। जैकब की लाश पर मसालों का लेप लगाया गया। इस कार्य में ४० दिन लगे। मिस्र में ७० दिनों तक शोक मनाया जाता रहा। बादशाह की आज्ञा से जैकब की अंतिम यात्रा राजसी ठाठ-बाट से आरम्भ हुई। जैकब के सारे पुत्र तथा मिस्र के बहुत से सम्भ्रान्त व्यक्ति कनान देश गये और वहाँ एफरॉन के मैदान में उसे दफनाकर मिस्र लौट आये।

पिता के मरने के बाद जोजफ के भाइयों को डर हुआ कि कहीं वह उनसे उनके पिछले अपराधों का बदला न निकाले। उन्होंने जोजेफ को कहलाया कि पिता ने मरते समय कहा था कि वह अपने भाइयों को क्षमा कर दे। जोजेफ ने अपने भाइयों को क्षमा कर दिया। उसने कहा कि जब मैं मर जाऊँ तब मेरी अस्थियों को कनान ही ले जाना। ९० वर्ष की अवस्था में जोजेफ का देहान्त हो गया। तब तक उसके कई पोते पोती हो गये थे। मिस्र में उसकी लाश को मसालों में लपेट कर कफन में रखा गया।[2]

'कुरान' में यूसुफ-जुलेखा की कथा

कुरान के 'सूरे यूसुफ' अध्याय में जिसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं पृ० २३९-२५४ पर यूसुफ जुलेखा की कथा वर्णित है। प्रसंग यह है कि कुछ यहूदियों ने मक्के के बड़े लोगों से कहा कि मुहम्मद साहब से पूछो कि याकूब की संतान शामदेश से मिस्र क्योंकर आई? इस प्रश्न के उत्तर में कुरान की यह सूरत उतरी। कथा इस प्रकार है—

यूसुफ याकूब का बेटा था। उसके एक सगा भाई और दस सौतेले भाई थे। याकूब अपने सब पुत्रों में यूसुफ और उसके भाई को ही अधिक प्यार करते थे। एक दिन यूसुफ ने याकूब से कहा कि मैंने स्वप्न में ग्यारह सितारों और सूरज तथा चाँद को देखा है। ये सब के सब मुझे सिजदा कर रहे थे। याकूब ने कहा कि तू इस स्वप्न की बात अपने भाइयों से न कह बैठना नहीं तो वे तुझे किसी न किसी आफत में फँसा देंगे। तूने जैसा स्वप्न में देखा है, वैसा ही होगा। खुदा तुझे बुजुर्ग करेगा। तुझे स्वप्न की बातों का फल बैठाना सिखायेगा और जिस तरह खुदा ने अपनी नेयामत पहले तेरे दादा इसाक और इब्राहीम पर पूरी की थी उसी तरह तुझ पर भी करेगा।

---

१ जेनेसिस ४९

२ वही ५०

एक दिन यूसुफ के सौतेले भाइयों ने आपस में सलाह की कि हम लोग इतने भाई हैं, लेकिन हमारे वालिद यूसुफ और उसके भाई को हमसे ज्यादा प्यार करते हैं। यह उनकी गलती है, इसलिए हम या तो यूसुफ को मार डालें या किसी जगह फेंक आएं। एक भाई ने राय जाहिर की कि जान से मारने के बजाय यह ज्यादा ठीक रहेगा कि हम यूसुफ को किसी अंधे कुएँ में डाल दें। कोई राह चलता काफिला उसे निकाल लेगा और उसे अपने साथ लेता जायगा।

सब भाइयों ने जाकर अपने पिता याकूब से कहा कि आप यूसुफ के मामले में हमारा विश्वास क्यों नहीं करते? हम तो उसके हितैषी हैं। आज उसे हमारे साथ जंगल में भेज दीजिए। वहां उसे हम जंगली फल आदि खिला लाएंगे। उसकी सुरक्षा के हम उत्तरदायी होंगे। याकूब का मन भीतर से तो आशंकित हुआ पर उन्होंने अपने अन्य पुत्रों के आग्रह पर यूसुफ को उनके साथ भेज दिया।

यूसुफ के सौतेले भाई उसको एक अंधे कुएं में गिराकर थोड़ी रात गये रोते पीटते अपने पिता के पास आये और बोले कि हम तो कबड्डी खेलने लगे और यूसुफ को हमने असबाब के पास छोड़ दिया। इतने में एक भेड़िया आया और उसको खा गया। उन्होंने यूसुफ के कुर्ते पर झूठ मूठ में खून भी लगा लिया और प्रमाण में उसे पेश कर दिया। याकूब ने कहा कि मुझे विश्वास नहीं होता कि यूसुफ को भेड़िए ने खाया है। तुम लोगों ने अपना मुंह उजागर करने के लिए यह बात मन से गढ़ ली है। लेकिन याकूब ने खुदा पर भरोसा करके सब्र कर लिया। यूसुफ को अंध-कूप में एक खुदाई पैगाम मिला कि तुम एक दिन इनको (अपने भाइयों को) इनके इस बुरे व्यवहार से अवगत कराओगे और ये तुमको पहचान नहीं पाएंगे।

जिस अंध कूप में यूसुफ गिरा पड़ा था, उसके पास से एक काफिला गुजरा। काफिले वालों ने कुएं से पानी लाने के लिए अपने भिश्ती को भेजा। भिश्ती ने जब कुएँ में डोल डाला तब यूसुफ उस पर बैठकर बाहर आ गया। भिश्ती चिल्ला उठा कि अरे यह तो लड़का है! तभी यूसुफ के भाई खबर पाकर वहां आ गये। उन्होंने कहा कि यह तो हमारा भगोड़ा गुलाम है। उन्होंने चंद दिरहम के एवज में यूसुफ को काफिले वालों के हाथ गुलाम के रूप में बेच दिया।

काफिले वालों ने यूसुफ को मिस्र में जाकर वहां के बादशाह के हाथ बेच दिया। शाह ने अपनी बीवी जुलेखा से कहा कि इस लड़के को अच्छी तरह रखो। अच्छा निकला तो हम इसे अपना बेटा बना लेंगे। यूसुफ जब जवान हुआ तब उसकी खूबसूरती निखर आयी। एक रोज बादशाह की बीवी जुलेखा ने उसके साथ बदकारी का इरादा किया और कमरे के सारे दरवाजे बन्द कर लिये। लेकिन यूसुफ ने कहा कि तुम्हारा पति मेरा मालिक है उसने मुझे अच्छी तरह रखा है मैं उसकी अमानत में खयानत नहीं कर सकता। यह कहकर यूसुफ दरवाजे की ओर भागा। जुलेखा भी उसको पकड़ने के लिए पीछे भागी। उसने पीछे से यूसुफ का कुर्ता पकड़ने की कोशिश

को। कुर्ता फट गया और उसकी खूट जुलेखा के हाथ में आ रही। तभी दरवाजे के पास बादशाह आता हुआ मिल गया। जुलेखा ने उससे शिकायत की कि यूसुफ मेरे साथ बदकारी करने का इरादा कर रहा था, इसलिए उसको कड़ी से कड़ी सजा दी जाय। शाह के कुटुम्बियों में से एक ने कहा कि यूसुफ का कुर्ता देखा जाय अगर वह आगे से फटा हो तो औरत सच्ची है और यूसुफ झूठा, लेकिन अगर वह पीछे से फटा हो तो औरत झूठी है और यूसुफ सच्चा। बादशाह ने यूसुफ का कुर्ता देखा। वह पीछे से फटा था। बादशाह को यूसुफ की निर्दोषता का विश्वास हो गया। उसने जुलेखा को बहुत फटकारा और उससे कहा कि तुम यूसुफ से माफी मांगो।

मिस्र नगर की औरतों में यह चर्चा का विषय बन गया कि शाह अजीज[1] की बीबी अपने गुलाम से नाजायज मतलब हासिल करना चाहती है। इसके लिए वे जुलेखा की निन्दा करने लगीं। यूसुफ की सुन्दरता कितना गजब ढाती है और कोई भी स्त्री उसको देखकर तन मन की सुध कैसे बिसरा देती है यह प्रत्यक्षतः दिखाने के लिए एक दिन जुलेखा ने एक महफिल का आयोजन किया जिसमें सब औरतें बुलाई गई। जुलेखा ने हर औरत को फल तराशकर खाने के लिए एक एक छुरी दे दी। जब वे फल तराश रही थीं तभी जुलेखा ने यूसुफ से कहा कि बाहर आकर जरा अपनी शक्ल तो दिखाओ। जब औरतों ने यूसुफ को देखा तो देखती ही रह गयीं। उन्होंने छुरी से अपने हाथ काट लिये और कहने लगीं—अल्लाह कसम यह आदमी नहीं कोई फरिश्ता है। जुलेखा ने सब औरतों से कहा कि यही है वह यूसुफ जिसकी वजह से तुम लोगों ने मेरी मलामत की कि मैं इससे नाजायज मतलब हासिल करना चाहती हूँ। औरतें समझ गयी कि जुलेखा क्या कोई भी औरत ऐसे खूबसूरत मर्द पर अपने को न्योछावर कर सकती है।

जुलेखा की दिलजोई और यूसुफ को उसकी नजर से दूर रखने के लिए बादशाह ने यूसुफ को कुछ समय तक कैदखाने में रखना ही उचित समझा। यूसुफ के साथ दो अन्य व्यक्ति भी कैदखाने गये थे। एक रात उनमें से एक ने यह स्वप्न देखा कि वह शराब निचोड़ रहा है। दूसरे आदमी ने स्वप्न देखा कि वह अपने सिर पर रोटियाँ उठाये हुए है और पक्षी उसमें चोंच मार मारकर खा जाते हैं। दोनों आदमियों ने यूसुफ को भला इंसान समझकर उससे इस स्वप्न का फल पूछा। यूसुफ ने कहा कि जो खाना तुमको अब मिलनेवाला है वह तुम तक आ पाये उसके पहले पहले मैं तुमको इन स्वप्नों का फल बतला दूंगा। फल यह है—तुममें से एक तो अपने मालिक को शराब पिलाएगा और दूसरा फाँसी पर लटकाया जाएगा और पक्षी उसका सिर खाएंगे। पहले आदमी की कुछ दिनों बाद कैद से रिहाई हो गयी। जब वह बाहर जाने लगा, तब यूसुफ ने उससे कहा कि अपने मालिक (बादशाह) से मेरी भी चर्चा करना। लेकिन बाहर आकर वह आदमी यूसुफ को भुला बैठा। यूसुफ कई वर्षों तक कैदखाने में पड़ा रहा।

---

१ 'अजीज' पहले मिस्र के वजीर का खिताब था बाद को यह खिताब बादशाह का हो गया था।

एक दिन बादशाह ने अपने दरबारियों से कहा कि 'रात मैंने एक स्वप्न देखा है कि सात मोटी गायें हैं और सात दुबली गायें। दुबली गाएँ मोटी गायों को खा रही हैं। मैंने स्वप्न में सात हरी बालें देखी हैं और सात सूखी बालें। क्या तुममें से कोई इस स्वप्न का फल बतला सकता है?' दरबारियों ने कहा कि ये तो कुछ उल्टे खयाल हैं, इन खयालों की ताबीर (फल) हमको नहीं आती। वहीं वह व्यक्ति भी था जो यूसुफ के साथ कारागार में रह चुका था और जिसको यूसुफ ने स्वप्न फल बतलाया था, लेकिन जो रिहा होकर उसे भूल गया था। उसने बादशाह से कहा कि अगर मुझे कारागार तक जाने की अनुमति मिले तो मैं (यूसुफ से पूछकर) इसकी ताबीर आपको बतला सकता हूँ। उसको बादशाह ने अनुमति दे दी।

यूसुफ ने स्वप्न का यह फल बतलाया—तुम लोग सात वर्ष तक बराबर खेती करते रहोगे। फसल के पक जाने पर जब तुम उसे काटो तब अनाज को उसकी बालों में ही रहने देना (ताकि सड़ना गलना नहीं)। अच्छी फसल के सात साल बीतने पर सात साल तक भयंकर अकाल पड़ेगा। जो कुछ तुमने पिछले वर्षों में संचित कर रखा होगा उसे तुम खाते चले जाओगे परन्तु बीज के लिए रखा हुआ अनाज बच रहेगा। अकाल के सात वर्ष के बाद पर उसके अगले वर्ष खूब वर्षा होगी। फसल तो अच्छी होगी ही उस वर्ष अंगूर भी खूब फलेंगे। लोग शराब बनाने के लिए उनका रस निचोड़ेंगे।

उस आदमी ने कारागार से लौटकर बादशाह को उनके स्वप्न का फल जा बताया। बादशाह ने आज्ञा दिया कि यूसुफ को जेल से तुरन्त रिहा किया जाय। जब चोबदार रिहाई का आदेश लेकर गया तब यूसुफ ने कहा कि तुम अपने शाह से जाकर पूछो कि उन औरतों की बात आपको मालूम है या नहीं जिन्होंने चाकू से अपने हाथ काट लिये थे। (यूसुफ का आशय यह था कि बादशाह को अभी तक यह पता लगा या नहीं कि वे औरतें ही मेरे पीछे पड़ी थीं मैं उनके पीछे नहीं पड़ा था)। बादशाह ने उन औरतों को बुलाकर पूछा कि चाकू से तुम्हारे हाथ कैसे कट गये थे, क्या यूसुफ का उसमें कोई कसूर था? औरतों ने कहा कि हमने तो यूसुफ में किसी तरह की बुराई नहीं पायी। अजीज (बादशाह) की बीवी भी बोल उठी कि यूसुफ सच्चा आदमी है, खुद मैंने ही उससे अपना मतलब निकालना चाहा था।

चोबदार ने यूसुफ से यह हाल बताया। यूसुफ ने कहा कि मैंने अभी की दबी दबायी बात इसलिए उखाड़ी कि मिस्र के अजीज को मालूम हो जाय कि मैंने उसकी पीठ पीछे उसकी अमानत में खयानत नहीं की और यह भी मालूम रहे कि खयानत करने वालों की तदबीरों को खुदा चलने नहीं देता।

यूसुफ ने आगे कहा कि मैं यह नहीं कहता कि मैं पाक साफ हूँ क्योंकि इन्द्रियाँ तो बुराई के लिए उत्तेजित करती ही रहती हैं लेकिन मेरा परवरदिगार रहीम (दयालु) है। बादशाह ने यूसुफ को आदर भाव से बुलाकर कहा कि तुम मेरे विश्वास

पात्र हो, तुम जहाँ कहो, तुम्हें नियुक्त कर दूँ। यूसुफ ने निवेदन किया कि मुझको मुल्की खजाने पर नियुक्त कर दीजिए।

अकाल के दिनों में अनाज की कमी से परेशान होकर यूसुफ के सौतेले भाई भी शाम देश से मिस्र पहुँचे। यूसुफ ने तो उनको पहचान लिया, किन्तु उन्होंने उसको नहीं पहचाना। यूसुफ ने उनको थोड़ा सा अनाज कीमत लेकर दे दिया और कहा कि तुम अपने सौतेले भाई इब्नयामीन (यूसुफ का सहोदर भाई) को अगली बार साथ लाओगे तो तुम्हें ज्यादा अनाज मिलेगा। अगर उसको तुम साथ नहीं लाये तो समझ रखना तुम्हें अनाज नहीं मिलेगा। यूसुफ ने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि इन लोगों की पूँजी भी चुपके-से इनकी बोरियों में रख दो।

यूसुफ के सौतेले भाई अपने पिता के पास पहुँचे। उनसे कहा कि आप इब्नयामीन को इस बार हमारे साथ कर दीजिए ताकि उसकी वजह से हम जरूरत के मुताबिक अनाज मिल सके। याकूब ने कहा कि मैं तुम्हारा यकीन करके यूसुफ के मामले में ही पछता रहा हूँ, अब कैसे तुम पर यकीन करूँ? याकूब के लड़कों ने खुदा को हाजिर नाजिर रखकर कसम खायी कि अब वे विश्वासघात न करेंगे और इब्नयामीन की हिफाजत करेंगे। जब उन्होंने अपनी बोरियाँ खाली तब उन्हें अपनी पूँजी भी पा ली। इससे उनको लगा कि मिस्र का वह अधिकारी बहुत दयालु है।

यूसुफ के सौतेले भाई इब्नयामीन को साथ लेकर पुनः मिस्र पहुँचे। यूसुफ ने उन्हें जितना अनाज चाहिए था दे दिया परंतु उसके इशारे पर उसके नौकरों ने इब्नयामीन की बोरी में अनाज नापने का कटोरा छिपा दिया। जब सब भाई रवाना होने को हुए तो कटोरे की खोज हुई। नौकरों ने कहा कि कटोरे की चोरी इन्हीं लोगों ने की है। यूसुफ के सौतेले भाई बहुत बिगड़े। लेकिन जब तलाशी हुई तब इब्नयामीन की बोरी में से कटोरा बरामद हुआ। उस समय मिस्र में इब्राहीमी न्याय शास्त्र लागू था जिसके अनुसार चोर को मालवाले आदमी की एक साल तक गुलामी करनी पड़ती थी। असल में यूसुफ ने यह चाल इसलिए चली थी ताकि वह अपने सहोदर भाई को अपने पास रख सके। यूसुफ के भाइयों ने कहा कि इसने चोरी की है तो कोई आश्चर्य नहीं, इसका भाई (यूसुफ) भी चोरी कर चुका है।[1] उन्होंने बहुत कहा कि इब्नयामीन का बाप बूढ़ा है उसके बिछोह को वह नहीं सह पायेगा परन्तु यूसुफ ने इब्नयामीन को न जाने दिया। यूसुफ के सौतेले भाई लौट गये। उन्होंने घर पहुँचकर अपने पिता याकूब से सारी बात बता दी। याकूब को किसी तरह विश्वास न हुआ कि इब्नयामीन चोरी कर सकता है लेकिन खुदा पर भरोसा करके वे चुप हो रहे। यूसुफ के लिए रोते रोते उनकी दोनों आँखें सफेद हो गयी थीं

१ यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ पर यह झूठा लांछन लगाया था। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि यूसुफ अपने घर से छिपाकर गरीबों को अन्न का भोजन दे आते थे। भाइयों का संकेत कदाचित् इसी बात की ओर था।

और वे जो हो जो म घुटत रहते थ।

यूसुफ क सौतल भाई कुछ दिनो बाद फिर गल्ला खरीदने के लिए मिस्र पहुँचे। उ होने यूसुफ से कहा कि हमारे बच्चे भूख स बिलबिला रहे हैं, परन्तु हमारे पास पूजी कम है, हम थोडा सा अनाज द दीजिए। हो सके तो हम कुछ अनाज खरात म दिला दीजिए। अब यूसुफ से न रहा गया। उसने कहा कि तुम्हे याद है तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ कसा सलूक किया था। भाइयो को कुछ सदेह हुआ। उ होने पूछा— कही तुम यूसुफ तो नही हो? यूसुफ ने कहा -हाँ म यूसुफ ही हूँ। भाई बहुत पछताये। यूसुफ ने खुदा स उनके गुनाह माफ करन की प्राथना की।

यूसुफ को जब पता चला कि उसक पिता की आँखो की ज्योति जाती रही है, तब उसने अपने भाइयो को अपना कुर्ता दिया और उनसे कहा कि इस कुर्ते को पिता के मुह पर डाल देना, इससे उनकी आँखो की ज्योति लौट आएगी।

उधर तो मिस्र से वह काफिला चला जिसम यूसुफ के सौतेल भाई यूसुफ का कुर्ता लिय हुए आ रहे थ, इधर याकूब न अपने उन बेटो स जो इस बार मिस्र नही गय थे कहा कि मुझ यूसुफ जसी ग ध आ रही है।

यूसुफ के भाइयो ने मिस्र स लौटकर यूसुफ का कुर्ता अपन पिता के मुह पर डाल दिया। कुर्ते का डालना था कि याकूब की आँखो मे दृष्टि पुन आ गयी। भाइयो ने अपने पिता के सामन अपना अपराध स्वीकार किया और क्षमा मांगी।

अतिम बार जब यूसुफ क भाई मिस्र गये तब वे अपन पिता को भी अपने साथ लेते गय। यूसुफ न अपन माता पिता को अपन साथ सिंहासन पर बठाया। दस्तूर क मुताबिक यूसुफ के सब भाई उसकी ताजीम करन के लिए उसक आग सिजदे म गिर पड़, उसको साष्टाग दण्डवत की। यूसुफ ने अपने बचपन का स्वप्न याद करक अपन पिता स कहा कि वह स्वप्न आज सच हुआ है। (यूसुफ न ११ सितारो और चाँद सूरज को स्वप्न म सिजदा करत दखा था। सितारे थे ग्यारह भाई और चाँद सूरज थे माँ बाप)। यूसुफ ने खुदा स प्राथना की कि उसे नक इसानो जसी अच्छी मौत मिले।

'ओल्ड टेस्टामेंट' और 'कुरान' की कथा म अन्तर

कुरान के सूरे यूसुफ के १२वें रुकू और १११वी आयत म लिखा है— यह (कुरान) कोई बनायी हुई बात तो नही है बल्कि जो (आसमानी किताबें) इसस पहले का हैं उनकी तसदीक है और इसम उन लोगो के लिए जो ईमानदार हैं हर चीज का ब्योरेवार बयान नसीहत और रहम है।' इसस स्पष्ट है कि कुरान म 'ओल्ड टेस्टामेंट' (पुरानी बाइबिल) की कई कथायें पुनकथित हुई हैं। यूसुफ जुलखा की कथा उनम एक है।

दोनों धर्म-पुस्तकों में इस कथा सम्बन्धी अन्तर के स्थल ये हैं—

(१) जहाँ तक कथा के पात्रों के नाम का सम्बन्ध है 'ओल्ड टेस्टामेंट' में याकूब को 'जैकब' और यूसुफ को 'जोसेफ' कहा गया है। याकूब के पिता इसहाक और दादा इब्राहीम को 'ओल्ड टेस्टामेंट' में क्रमशः इसाक (Isaac) और अब्राहम (Abraham) नाम मिला है। परन्तु उच्चारण भेद के अतिरिक्त इन नामों में पर्याप्त समानता है। 'जुलेखा' नाम ओल्ड टेस्टामेंट में कहीं नहीं आता। पाटिफर (मिस्र के रक्षक दल के सेनापति) की जिस बीबी की नीयत जोजेफ पर खराब हो गयी थी, उसका कोई नाम ओल्ड टेस्टामेंट में नहीं दिया गया है। जिस लड़की से जोजेफ का विवाह हुआ और जिससे इसके बच्चे हुए उसका नाम 'ओल्ड टेस्टामेंट' में 'असेनथ' है 'जुलेखा' नहीं। यूसुफ के माँ-जाये भाई इब्नयामीन को पुरानी बाइबिल में 'बेंजामिन' कहा गया है।

(२) 'कुरान' में यूसुफ के केवल एक स्वप्न का ही उल्लेख है जिसमें सूरज चाँद और ग्यारह सितारे उसको सिजदा करते हैं। अनाज की आँटियों का उनकी आँटी के गिर्द झुक जाने के स्वप्न का उल्लेख नहीं है।

(३) 'ओल्ड टेस्टामेंट' में जैकब जोजेफ को अपने भाइयों के साथ भेड़ चराने के लिए खुद भेजता है, 'कुरान' में भाई पिता से कह-सुनकर उसे ले जाते हैं। ले जाने के पहले ही उन्होंने उसे मारने या अंधकूप में ढकेलने का निश्चय कर लिया था।

(४) अंध-कूप में गिरा दिये जाने पर यूसुफ को 'कुरान' के अनुसार, खुदाई पैगाम मिला। ओल्ड टेस्टामेंट में ऐसे किसी ईश्वरीय संदेश के मिलने या फरिश्ते के दर्शन देने का उल्लेख नहीं है। 'कुरान' में मिस्री के डोल पर बैठकर यूसुफ के बाहर निकलने की बात है, परन्तु ओल्ड टेस्टामेंट में जोजेफ के भाइयों ने ही उसे गड्ढे में से निकाला है।

(५) ओल्ड टेस्टामेंट में जोजेफ को बादशाह का एक सेनापति पाटिफर खरीदता है जबकि 'कुरान' में खुद बादशाह जिसकी बीबी का नाम जुलेखा था। एक में सेनापति की बीबी जोजेफ से बदकारी की कोशिश करती है और दूसरे में बादशाह की बेगम।

(६) 'ओल्ड टेस्टामेंट' में जोजफ (यूसुफ) के कुर्ते का पीछे का भाग फटकर जुलेखा के हाथ में आने का उल्लेख नहीं है। उसमें उसका एक वस्त्र सेनापति की पत्नी के हाथ में आ जाता है। 'कुरान' में बादशाह के घरवाले बेगम की सच्चाई की जो परीक्षा लेते हैं वह भी 'ओल्ड टेस्टामेंट' में नहीं है।

(७) 'ओल्ड टेस्टामेंट' में सेनापति की पत्नी अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए नगर की सम्भ्रान्त महिलाओं को दावत नहीं देती। यूसुफ के सौन्दर्य से आहत फल काटने के चाकू से हाथ काट लेनेवाली घटना का भी जिक्र नहीं है।

(८) 'कुरान' में बादशाह जुलेखा की निजाई करने के लिए यूसुफ को बन्दीगृह में डालता है जबकि 'ओल्ड टेस्टामेंट' में क्रुद्ध होकर। 'ओल्ड टेस्टामेंट' में जोजेफ अपनी निर्दोषता को सिद्ध करने का अधिक प्रयास करता नहीं दिखायी देता।

(९) 'ओल्ड टेस्टामेंट' में जोजेफ को पहले कैदखाने से रिहा किया जाता है तब वह बादशाह के सामने उपस्थित होकर स्वप्न फल बताता है। 'कुरान' में स्वप्न फल जानने के लिए चोबदार खुद कैदखाने में जाता है।

(१०) 'कुरान' में इब्नयमीन की बोरी में अनाज मापने का कटोरा छिपाया गया है जबकि 'ओल्ड टेस्टामेंट' में जोजेफ के बरतन इब्नयमीन की बोरी में चाँदी का कटोरा। भाइयों को यूसुफ द्वारा अपने घर में दावत देने वाली घटना 'ओल्ड टेस्टामेंट' में नहीं है।

(११) 'कुरान' में बताया गया है कि यूसुफ की याद में रोते रोते याकूब की आँखों की ज्योति चली गयी परन्तु 'ओल्ड टेस्टामेंट' में ऐसा नहीं है। यूसुफ के कुर्ते को मुँह पर डालते ही उनकी आँखों की रोशनी फिर लौट आयी इस घटना का उल्लेख 'ओल्ड टेस्टामेंट' में बिल्कुल नहीं है।

(१२) 'कुरान' में यूसुफ के भाइयों को मिस्र के गोशेन नामक उर्वर क्षेत्र में ला बसाने का और सारे परिवार को पशुओं सहित वहाँ ले जाने की कथा नहीं है।

(१३) 'कुरान' में याकूब की मौत, कनान देश में ही उनके दफनाये जाने की अभिलाषा, जोजेफ के पुत्रों का जैकब द्वारा आशीर्वादित होना और जोजेफ की मृत्यु आदि घटनाओं का उल्लेख नहीं हुआ है परन्तु 'ओल्ड टेस्टामेंट' में हुआ है।

(१४) सूरे यूसुफ में इस सारी कहानी के माध्यम से अनेक नैतिक उपदेश दिये गये हैं परन्तु 'बुक ऑफ जेनेसिस' में ऐसा प्रयत्न नहीं है। 'ओल्ड टेस्टामेंट' के जोजेफ की अपेक्षा 'कुरान' का यूसुफ अधिक खुदा-परस्त, नेक और धर्मात्मा दिखाया गया है। 'ओल्ड टेस्टामेंट' में उसका राजभक्त रूप ही अधिक निखारा गया है।

फारस और भारत के सूफी कवियों ने यूसुफ जुलेखा सम्बन्धी अपनी मसनवी काव्यों में 'कुरान' की कथा का ही मुख्यतः अनुसरण किया 'ओल्ड टेस्टामेंट' का आधार लेना या तो उन्होंने मजहबी दृष्टि से ठीक न समझा या उस तक उनकी पहुँच न हो पायी। यूसुफ जुलेखा के प्रेमाख्यान को वैषयिक प्रेम की भूमि से उठाकर आध्यात्मिक एवं अशरीरी प्रेम की कोटि तक पहुँचाने का प्रयास सूफियों ने ही किया।

आगे हम शेख निसार की 'यूसुफ जुलेखा' की कथा दे रहे हैं। यह कथा कुछ बातों में 'कुरान' और जामी की 'यूसुफ जुलेखा' से कुछ भिन्नता लिये है।

शेख निसार-कृत 'यूसुफ-जुलेखा' की कथा

ऊपर कहा जा चुका है कि सूफी कवि शेख निसार ने 'यूसुफ जुलेखा' प्रेमाख्यान

की रचना जामी के फारसी मसनवी काव्य 'यूसुफ जुलेखा' और 'कुरान' के आधार पर की थी मुख्यत उन्होंने जामी की मसनवी का अनुकरण किया था। हम नीचे शेख निसार कृत 'यूसुफ-जुलेखा' की कथा दे रहे हैं, तदनन्तर 'कुरान' और 'यूसुफ-जुलेखा' (जामी) के साथ उसकी भिन्नता पर विचार करेंगे।

कथा—नबी याकूब नूह के बसाये हुए किनआँ नगर में रहते थे। वह एक सिद्ध पुरुष थे। याकूब की सात बीवियाँ थी जिनसे उन्हें तेरह पुत्र हुए। उनकी राहेल नामक सुन्दरी स्त्री से यूसुफ और इब्न यामीन दो पुत्र पैदा हुए। यूसुफ अत्यन्त रूपवान और अलौकिक प्रतिभा-सम्पन्न था। इब्न यामीन के जन्म के समय यूसुफ की माता की मृत्यु हो गयी। याकूब के अन्य लड़के तो तरुण हो चुके थे ये दो लड़के ही छोटे थे अत याकूब इनको बहुत प्यार करते थे। यूसुफ के मधुर स्वभाव के कारण उनका सर्वाधिक प्रेम उसी पर था। एक क्षण को भी वे उसे अपने से अलग नहीं करते थे। यूसुफ के सौतेले भाइयों में उसके प्रति ईर्ष्या जाग उठी। वे उसे पिता से अलग करने का उपाय सोचने लगे।

एक रात यूसुफ ने एक स्वप्न देखा कि ग्यारह ग्रहों और रवि शशि ने आकर उसे शीश नवाया है। उसने अपने पिता से स्वप्न की चर्चा की। याकूब ने स्वप्न विचार कर कहा कि तुझे राज-योग है। इस बात को जानकर यूसुफ के ग्यारह सौतेले भाई और भी जल उठे। एक दिन वे यूसुफ को अपने साथ भेड़ चराने ले गये। जब तक पिता के दृष्टि-पथ में रहे तब तक उन्होंने यूसुफ पर बड़ा लाड़ चाव दिखाया, पर पिता के ओझल होते ही वे उसे मारने पीटने लगे। जगल से लौटते समय उन्होंने यूसुफ को एक सूखे कुएँ में धकेल दिया और उसके कुर्ते को बकरी के खून में रँग कर पिता को ला दिखाया और कह दिया कि यूसुफ को तो भेड़िया खा गया। पिता को बड़ा सदमा पहुँचा। वह यूसुफ का कुर्त्ता छाती से लगाकर रोते रोते अन्धा हो गया।

कुए में गिरे यूसुफ को जबरल (फरिश्ता) ने आकर ढाढ़स बँधाया उसे फल लाकर खिलाया और कहा कि एक दिन तुम राजा बनोगे और तुम्हारे ये भाई तुम्हारी सेवा करेंगे। यूसुफ को उस कुए में सात दिन रहते हो गये। सातवें दिन उस वन में बनजारे उतरे। एक बनजारा पानी के लिए उस कुएँ पर आया। यूसुफ ने उसका डोल पकड़ लिया और अपने को बाहर निकालने की प्रार्थना की। बनजारा डरकर भाग गया। बनजारों के नायक ने आकर यूसुफ को अंध कूप से बाहर निकाला। वह उसे लेकर चलने को हुआ तो यूसुफ के सौतेले भाई आ गये। उन्होंने यूसुफ को अपना दास बतला कर बनजारों के हाथ उसे बेच दिया। किनआँ नगर को दूर से प्रणाम कर यूसुफ बनजारों की टोली के साथ चल दिया। बनजारे उसे मिस्र देश की ओर ले चले।

× × ×

पश्चिम देश में एक नगर था जहाँ का सुल्तान तमूस शाह था। उसके एक पुत्री थी जुलेखा ऐसी सुन्दरी जैसे अप्सरा। उसके जोड़ का कोई वर ही नहीं मिल

पा रहा था। एक रात जुलेखा न स्वप्न म एक सुन्दर युवक को देखा और देखते ही उसके हृदय म उसके प्रति प्रेम अंकुरित हो गया। उसने उसको स्वप्न म कई बार देखा पर स्वप्न म वह इतना ही जान सकी कि मिस्र देश के वजीर के यहाँ उससे भेंट हो सकती है। युवक न अपना नाम नही बताया था। जुलेखा ने समझा कि यह युवक मिस्र का वजीर है। पिता ने अपनी पुत्री की विरह व्यथा की बात धाय के द्वारा जान ली। उसने मिस्र देश के बादशाह के वजीर के साथ जुलेखा का विवाह कर दिया। मिस्र पहुँचकर जब जुलेखा ने अपने शौहर को देखा तो जैसे वह आसमान से गिरी। वह तो स्वप्न म दिखायी देनेवाला पुरुष न था। जुलेखा ने बीमारी का बहाना बनाकर अपनी सतीत्व रक्षा करने का निश्चय कर लिया। मिस्र आने पर भी अपने प्रियतम के साथ न मिल पाने के भाग्य दोष से जुलेखा बहुत दुखी रहने लगी।

बनजारों की वह टोली जब यूसुफ को लेकर मिस्र पहुँची और यूसुफ को बेचने के लिए बाजार म खड़ा किया तब उसके रूप-सौन्दर्य का दर्शन के लिए लोगों के ठट जुड गये। प्रसिद्धि सुनकर जुलेखा भी अपनी धाय के साथ आयी। यूसुफ का दर्शन ही वह पहचान गयी कि यह तो उसी का स्वप्न-पुरुष है। वजीर से कहकर जुलेखा ने यूसुफ को खरीदवा लिया। वजीर ने यूसुफ को जुलेखा की सेवा म ही नियुक्त कर दिया। जुलेखा के प्रमिल मनोभाव यूसुफ पर धीरे धीरे स्पष्टतर होकर प्रकट होने लगे। जुलेखा के सौन्दर्य के प्रति वह भी आकृष्ट हुआ। एक दिन कामातुर होकर वह उसकी ओर बढ़ा भी परन्तु पिता की पवित्र मूर्ति का ध्यान आते ही वह उल्टे पाँव भागा। भागते समय जुलेखा ने उसका कुर्त्ता पीछे से पकड़ लिया। कुर्ते के पीछे की खूँट फटकर जुलेखा के हाथ म रह गयी यूसुफ उसके हाथ न आया। प्रेम-वंचिता जुलेखा ने यूसुफ पर कुचेष्टा करने का आरोप लगाया और वजीर से कहकर उसे बंदीगृह म डलवा दिया। बंदीगृह म उसके रहते हुए भी जुलेखा उसे अपने वश म करने के प्रयत्न म लगी रही किन्तु यूसुफ उदासीन ही रहा।

मिस्र म जुलेखा की दुश्चरित्रता की निन्दा होने लगी। जुलेखा न यह प्रमाणित करने के लिए कि कोई ऐसी नारी नही है जिस पर यूसुफ के सौन्दर्य का जादू न चले एक बार शहर की बहुत-सी स्त्रियों को आमन्त्रित किया और उन्हें एक एक तरबूज काटने को दिया। ठीक उसी समय जुलेखा न यूसुफ को उनके सामने से गुजारा। सब स्त्रियाँ ठगी-सी उसके रूप को देखती रह गयी और सबने तरबूज काटने के बजाय चाकू से अपने हाथ काट लिये। सब स्त्रियाँ लज्जित हुई।

यूसुफ को कारागार म रहते सात वर्ष हो गये। एक दिन कारागार की खिड़की से उसने किनआँ नगर के एक घुड़सवार को देखा। उसे आवाज देकर उसने अपने पिता का हाल-चाल पूछा और अपना समाचार पिता को कहलाया। यूसुफ ने बंदीगृह म रहते हुए कई लोगों को स्वप्न फल बताये जो सच निकले। एक रात मिस्र के बादशाह न एक बेढब सपना देखा। उसका अर्थ पूछने के लिए उसने यूसुफ को कारागृह से बुलाया। यूसुफ ने बताया कि स्वप्न का अर्थ यह है कि सात साल तक

वर्षा न होगी, अतः प्रजा के लिए अन्न-वस्त्र पहले से ही जुटा लेना आवश्यक है। उत्सुकतावश बादशाह ने वजीर से यूसुफ़ को कैद करने का कारण जानना चाहा। इसी सिलसिले में जुलेखा ने अपनी आत्म-कथा बादशाह को सुनायी। वजीर ने क्रोध वश जुलेखा का परित्याग कर दिया। जुलेखा यूसुफ को प्राप्त करने के लिए तप करने लगी।

बादशाह ने यूसुफ को वज़ीर बनाया और उसकी सलाह से राजकाज करने लगा। यूसुफ ने जैसा कहा था, सात वर्ष तक महादुर्भिक्ष पड़ा परन्तु चूंकि बादशाह ने पहले से ही अन्न संग्रह कर लिया था इसलिए मिस्र की प्रजा को कोई कष्ट नहीं हुआ। यूसुफ की जन्मभूमि किनआँ में भी अकाल पड़ा हुआ था। याकूब ने अन्न लाने के लिए और यूसुफ का पता लगाने के लिए अपने लड़कों को मिस्र भेजा। यूसुफ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, पर उन्होंने यूसुफ को नहीं पहचाना। उन्हें खूब अन्न-वस्त्र देकर यूसुफ ने विदा किया और कहा कि अगली बार आओ तो अपने भाई इब्न यामीन को भी लेते आना। उसे लाओगे तो और भी अधिक चीजें देंगे। दुबारा यूसुफ के सौतेले भाई इब्न को लेकर गये। यूसुफ अपने भाइयों के साथ खाने बैठा—दो दो भाई एक थाली में। यूसुफ अपने भाई इब्न के साथ खाने बैठा। बाद में कटोरे की चोरी लगाकर उसने इब्न को रोक लिया। यूसुफ के सौतेले भाई अब उसे पहचान गये और अपनी पिछली करनी पर दुःख प्रकट करने लगे। याकूब भी अपने पुत्र से भेंट करने के लिए मिस्र आये। यूसुफ के पिता की अंधी आँखों में दृष्टि लौट आई। मिस्र का बादशाह भी पिता पुत्र के पुनर्मिलन से बहुत प्रसन्न हुआ वह निःसंतान था ही, उसने यूसुफ को मिस्र के सिंहासन पर बैठा दिया।

× × ×

जुलेखा को प्रेम-योग की साधना करते चालीस वर्ष हो गए। वह वृद्धा हो गयी रोते रोते आँखों की ज्योति खो बैठी पीठ में कूबड़ निकल आया अंग वक्र हो गये। वह भीख माँगकर गुज़ारा करने लगी। जब तक उसके पास द्रव्य रहा तब तक वह यूसुफ का नाम सुनाने वाले को द्रव्य दान करती रही थी लेकिन जब वह बिल्कुल कंगाल हो गई तब लोग उसे पागल कहने लगे। एक दिन मिस्र के बादशाह यूसुफ की सवारी धूमधाम से निकली। जुलेखा ने एक स्त्री से यूसुफ की सवारी उसे भी दिखा देने का अनुरोध किया। जब यूसुफ की सवारी सामने आई तब उस स्त्री यूसुफ को पुकार कर कहा कि जुलेखा यहाँ बैठी है। जुलेखा का नाम सुनते ही यूसुफ ने सवारी रोक ली और जुलेखा की दशा पर तरस खाकर उसे महल में भिजवा दिया। रात को भेंट होने पर जुलेखा ने यूसुफ से कहा कि तुम नबी हो मुझे नेत्र-ज्योति प्रदान कर दो ताकि मैं तुम्हारा मुंह देखकर जी सकूं। तभी फरिश्ता जबरल आ गया। उसने जुलेखा को स्नान कराने को कहा। स्नान करते ही जुलेखा चौदह वर्ष की कुमारी हो गयी! जबरल के कहने से यूसुफ ने जुलेखा से विवाह कर लिया। पर अब जुलेखा को सांसारिक भोग विलास से विरक्ति हो गयी थी। यूसुफ में तो वासना

की आग भडक उठी और जुलेखा म शरीर-सुख की अनित्यता का ज्ञान जाग गया। बहुत काल तक उनका जीवन ऐसे ही चलता रहा। पहले याकूब मरा उसके दस वर्ष बाद यूसुफ की भी मृत्यु हो गयी। जुलेखा ने यूसुफ की कब्र पर अपने दोनो नेत्र निकालकर चढा दिये और वहीं उसके प्राण-पखेरू उड गए। 'पथा प्रान सो उड गयो रहे छार महँ छार।' लोगो ने उसे भी यूसुफ की कब्र की बगल म दफना दिया।

'कुरान' और जामी तथा निसार की कृतियो में कथान्तर

जामी की 'यूसुफ-जुलेखा' और निसार की 'यूसुफ जुलेखा' म कथानक लगभग एक-जसा है। केवल कुछ मामूली सा अन्तर है। अन्तर यह है—

(१) यूसुफ ने ग्यारह सितारो के सिजदा करने और चाँद सूरज देखने का जो स्वप्न अपने पिता को बयान किया उसका फल उसके पिता याकूब ने 'यूसुफ-जुलेखा' (निसार) के अनुसार यह बताया कि उसके भाग्य म राजा बनना लिखा है। जामी ने 'कुरान' की भाँति इतना ही कहलाया है कि तुम पर ईश्वर विशेष कृपालु है। तुम इस स्वप्न को अपने भाइयो पर प्रकट न करना।

(२) जामी कृत 'यूसुफ जुलेखा' म अध-कूप से पानी भरने के लिए सौदागर का एक गुलाम जाता है और उसके डोल पर बठकर यूसुफ बाहर आ जाता है। 'कुरान' म भी ऐसा ही है लकिन निसार-कृत 'यूसुफ-जुलेखा' म कुएँ के पास से बनजारे निकलते हैं। एक बनजारा पानी भरने जाता है यूसुफ उसका डोल पकड लेता है बनजारा डरकर भाग जाता है। नायक आकर यूसुफ को निकालता है। यूसुफ सात दिन तक कुएँ म रहता है। इस बीच फरिश्ता जबरल आकर उसे ढाढस बधाता है और उसके राजा बनने की भविष्यवाणी करता है। 'कुरान' और जामीकृत 'यूसुफ जुलेखा' म यह अश नही है।

(३) 'कुरान' म सौतेले भाइयों द्वारा बकरी मारकर उसके खून से यूसुफ का कुर्ता रग लाने का जिक्र नही है, जबकि इन दोनो काव्यो म है।

(४) 'कुरान' म जुलेखा के एक पश्चिमी देश के सुल्तान तमूसशाह की बेटी होने स्वप्न म एक सुन्दर युवक को कई बार देखने मिस्र के वजीर के यहाँ उससे मिलन होने की बात स्वप्न म जानने मिस्र के वजीर से उसके ब्याहे जाने और वजीर को स्वप्नदर्शित पुरुष के सदृश न पाकर जुलेखा के निराश होने और बीमारी का बहाना बनाकर अपने सतीत्व की रक्षा करने आदि बातो का कोई उल्लेख नही है जबकि जामी कृत 'यूसुफ जुलेखा' और निसार कृत 'यूसुफ जुलेखा' म ये कथा तत्त्व इसी रूप म मिलते हैं। 'कुरान' मे जुलेखा को मिस्र के वजीर की नहीं मिस्र के बादशाह की बीबी बताया गया है।

(५) 'कुरान' म इतना ही उल्लेख है कि मिस्र के बादशाह ने सौदागरो से यूसुफ को खरीद लिया। यूसुफ के बाजार म बिकने के लिए खडा होने उसके सौन्दर्य की प्रसिद्धि सुनकर लोगो का उसको देखने के लिए ठट लगा देने और जुलेखा का

भी उसे देखने आना तथा अपने पति (वजीर) को प्रेरणा देकर यूसुफ को खरीदवाने का उल्लेख जामी और निसार की कृतियों म तो है 'कुरान' म नही।

(६) 'कुरान में बताया है कि जुलेखा ही पहले यूसुफ पर आसक्त हुई और उसी ने उससे वासना-तृप्ति कराने की विफल कुचेष्टा की। परन्तु जामी और निसार की कृतियो म बताया है कि जुलेखा के सौन्दय को देखकर यूसुफ उस पर आसक्त हो गया, उससे काम-तृप्ति की चेष्टा पहले यूसुफ की ओर से हुई, परन्तु पिता की नसीहतों का ध्यान आ जान पर वह रुक गया। जुलेखा ने जिसकी वासना अब भडक चुकी थी उसको पकडने की चेष्टा की तो वह भागा। भागत समय उसके कुर्ते के पीछे की छूट जुलेखा के हाथो मे आ गयी और फट गयी। 'कुरान' मे बादशाह को जुलेखा ही अपराधी जान पडती है, इसलिए वह उससे यूसुफ से माफी माँगने को कहता है। इन दोनो मसनवियो मे वजीर को यूसुफ की निर्दोषता का विश्वास तो हो जाता है परन्तु जुलेखा क कहने से वह यूसुफ को कद म डाल देता है। जुलखा ने कैदखाने म जाकर भी यूसुफ को लुभाने की चेष्टा की, इसका काई उल्लेख कुरान' म नहीं है।

(७) बादशाह को स्वप्न आने की घटना तीनो ग्रन्थो मे एक सी है। स्वप्न फल बताने म केवल इतना अन्तर है कि दोना मसनवियो म यूसुफ बताता है कि सात वष अति वृष्टि होगी फिर सात वष अनावृष्टि होगी और घोर अकाल पडेगा।

(८) वजीर या बादशाह द्वारा जुलखा को त्यागन जुलेखा द्वारा यूसुफ को पाने के लिए ४० वर्षों तक प्रेम साधना करने यूसुफ का नाम लन वालो का धन लुटाने और अन्त म उसके निधन भिक्षुणी तथा अधी वृद्धा बन जान का उल्लेख कुरान म नही आता जबकि जामी और निसार की 'यूसुफ जुलखा' शीर्षक मसनवियां म आता है।

(९) आगे की कथा म अन्तर के स्थल इतने हैं—(क) दोनो मसनवियो म यूसुफ और उसके ग्यारह भाइयो के एक पगत म खाना खान (दो-दो भाइयो का एक थाली म खाने बठने यूसुफ और इन यामीन का एक ही थाली म खान) और इब्न के सामान म खाने का कटोरा छिपा देन का उल्लेख है जबकि कुरान म नही है। कुरान म बताया है कि इब्न की बोरी म अनाज नापन का कटोरा छिपा दिया गया। (ख) किनआँ नगर के घुडसवार का यूसुफ की कोठरी (कैदखाने की) से गुजरना यूसुफ द्वारा अपन पिता को सन्देश भेजना आदि का उल्लेख भी कुरान म नही है। (ग) यूसुफ के मिस्र के बादशाह बनन का जिक्र कुरान म नहीं है। यूसुफ की शोभा-यात्रा निकलन, अधी वृद्धा जुलेखा का उसे अपन पास बुलवान यूसुफ द्वारा तरस खाकर उस अपन महल म भिजवाने फरिश्ता जबरल की कृपा से जुलेखा क चौदह वष की लडकी बन जाने, यूसुफ की काम-वासना भडक उठने और जुलेखा म वराग्य वृत्ति आ जान इश्क मजाजी (सासारिक प्रेम) से इश्क हकीकी (ईश्वरीय प्रेम) की ओर उसके उन्मुख हो जान की भी काइ चर्चा कुरान म नही आती।

(घ) यूसुफ के मर जान पर जुलखा का उसकी कब्र पर अपनी आँखें निकालकर धर दना तथा स्वय भी मर जाना और लोगो द्वारा यूसुफ की कब्र की बगल म जुलखा को भी दफना दना—जहाँ जामी और निसार की मसनवियो म उल्लिखित है, वहाँ कुरान म नही।

जुलखा की कथा को जो विस्तार 'कुरान' के बाद इन दो मसनवियो म मिला है, उसका प्रयोजन और उद्देश्य है प्रेम की तीव्रता विरह की पीड़ा और समपण की अनन्यता का चित्रण करना। कुरान म जबकि यूसुफ की कथा एक नवनीमत इमान की कहानी बनी है वहाँ इन दोनो मसनवियो म जुलखा की प्रेम ज्योति पर अपन का बलिदान कर दन वाम प्रेमी की कथा बन गयी है। प्रेम की उच्चता और उदात्तता जुलखा म प्रतिमूत्त हो गयी है।

६ | सूफी प्रेमाख्यानो मे आगत पौराणिक आख्यान

हिन्दी मे सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो और सूफी कवियो द्वारा लिखित प्रेमाख्याना मे पौराणिक आख्यानो तथा प्रसगो का प्रचुर प्रयोग हुआ है। प्रयोग के स्वरूपो पर तो हम आग विचार करेंगे, परन्तु पौराणिक कथाएँ जिस रूप म इन काव्यो म आयी हैं उनका आकलन भी आवश्यक है। पौराणिक आख्याना का एक तो शास्त्रीय परिनिष्ठित रूप है जो वदिक साहित्य महाकाव्यो तथा विविध पुराणो म विकसित होता रहा है उनका दूसरा रूप है लौकिक जो लोकानुभूति और लोक विश्वास के द्वारा परिवर्तित एव रूपान्तरित होता रहा है। सूफी कविया न अधिकाशत आख्याना के लोकाधारित रूप का ही अपने साम्प्रदायिक उद्देश्य की पूर्ति तथा काव्य रूढि के पालन के लिए प्रयोग किया। यही कारण है कि सूफियों द्वारा प्रयुक्त पौराणिक आख्याना तथा पौराणिक कथा प्रसगो का रूप अपन शास्त्रीय रूप से काफी भिन्न हो गया है। सूफी कवियो का उद्देश्य कथा के लिए कथा कहना नही ह। व पौराणिक आख्यानो तथा पात्रो आदि का जब प्रयाग करत हैं, तब उनका प्रयोजन कुछ और ही होता है। कही तो वे सूफी-दशन-तत्त्व का निरूपण करने के लिए उनका प्रयाग करत हैं और कही अपनी उक्ति को प्रभावक और चमत्कारिक बनाने के लिए।

आगे हम हिन्दी के सूफी कवियो द्वारा विभिन्न प्रेमाख्याना मे प्रयुक्त पौराणिक आख्यानों की स्वरूप चर्चा करेंगे। इन आख्यानो के विकास क्रम को देखने का यहा प्रयास नही किया जाएगा। उसके लिए इस प्रबन्ध के उत्तरार्द्ध[1] का अवलोकन करना चाहिए।

पौराणिक प्रसगो का काव्या की जिन पक्तिया म उल्लेख हुआ है उन सबका यहाँ उदधृत करना आवश्यक नही लगा। चदायन मृगावती पदमावत', चित्ररेखा और मधुमालती के मुद्रित सस्करण अब सुलभ हैं अत उनको मूल

१ प्रस्तुत प्रबन्ध का उत्तरार्द्ध एक स्वतत्र ग्रथ के रूप में पौराणिक आख्यानों का विकासात्मक अध्ययन शीर्षक से १९७१ में प्रकाशित हो चुका है। प्रकाशक—कौशाक प्रकाशन ६१-एफ कमलानगर दिल्ली-७ मूल्य ३०)

पंक्तियों को उद्धृत करना अनावश्यक लगा। किंतु माधवानल-कामकंदला (आलम कृत) चित्रावली' नल-दमन इंद्रावती (पूर्वार्द्ध) अनुराग-बाँसुरी हंस-जवाहिर तथा यूसुफ जुलेखा के मुद्रित संस्करण अब कम सुलभ या दुर्लभ हैं। ज्ञानदीप 'इंद्रावती (उत्तरार्द्ध) और जान कवि के काव्य ग्रन्थ आदि तो अभी हस्तलिखित रूप में ही किन्हीं किन्हीं संग्रहालयों तथा व्यक्तियों के पास अवलोकनार्थ प्राप्य हैं सो भी सरलता से नहीं। अतः ऐसे ग्रन्थों की ऐसी पंक्तियों को जिनमें उक्त पौराणिक कथांशों का उल्लेख हुआ है हमने पाद टिप्पणी में ससंदर्भ दे दिया है।

अगस्त्य ऋषि द्वारा समुद्र-शोषण

अगस्त्य द्वारा समुद्र शोषण के आख्यान का उल्लेख पदमावत [1] चित्रावली [2] (दो स्थलों पर) और ज्ञानदीप [3] में हुआ है। पदमावत में एक स्थल पर ही इसका आलंकारिक प्रयोग किया गया है। जब राघव चेतन ने यक्षिणी सिद्धि के बल पर दूज का चन्द्रमा असमय में ही दिखला दिया तब रतनसेन की राजसभा के पंडितों ने उसके इस चमत्कारी कृत्य के लिए उसकी तुलना अगस्त्य मुनि से की, जिन्होंने समुद्र को सोख लिया था। चित्रावली में भी इस घटना का उल्लेख एक स्थल पर आलंकारिक रूप में हुआ है और इसे महती सामर्थ्य का द्योतक माना है किन्तु दूसरे स्थल पर अगस्त्य और समुद्र को कथा के पात्र के रूप में अवतरित किया गया है। जब नायक सुजान का बोहित समुद्र में डूबने लगा तब देवताओं ने अगस्त्य को समुद्र का पानी कम करने के लिए कहा। जैसे ही अगस्त्य की ध्वजा दिखलाई दी वैसे ही समुद्र की उत्ताल तरंगें शान्त हो गयी और जैसे ही अगस्त्य ने तीक्ष्ण दृष्टि से समुद्र को देखा वह सहम गया डर के मारे उसका कलेजा थर-थर काँपने लगा। उसे आशंका हुई कि कहीं अगस्त्य मुझे फिर न सोख लें। इससे ध्वनित होता है कि अगस्त्य ने पहली बार जब समुद्र का शोषण किया होगा तब उसे दण्ड देने के लिए ही। किन्तु इस आख्यान

---

१ पद्मावत ४४८।१

२ उतरि सम्हारि देहु तुम राजा। एको मरन न काहू छाजा।
यह अगस्त तें दरिया अपारा। अनरस किए परस किमि दारा॥
—चित्रावली छंद ३६२ चौ ६-७

× × ×

तब अगस्त सो कहिन हुकारी। मरन पावहिं तेहु उबारी।
कोपि अगस्त ध्वजा दरसाई। समुद लहरि तब गयउ बसाई॥
तनिक अगस्त दिस्टि किय तेजा। थरथर काँपेउ समुद करेजा।
एकहि लहरि मोइ अस लागा। बोहित निकसि तीर गा लागा॥
—चित्रावली पृ० २३२ छन्द ६ ६ चौ १४

३ विरल रूप राज जगमाहीं। राजा राम सो पाए दराहीं।
अग्या ले पाव जहाँ धावहिं। सोषहिं समद सुमेर नवावहिं॥
—ज्ञानदीप छंद १२

का जो स्वरूप पुराणो म मिलता है उसम समुद्र को दण्ड देने के लिए उसका सोखा जाना नही वर्णित है। दैत्यों को दण्ड देन के लिए ही, देवताओ के कहने पर अगस्त्य ने समुद्र को सोखा था। ऐसा जान पडता है कि टिटहरी के अण्डो को बहा ले जाने के कारण अगस्त्य द्वारा समुद्र को दडित करन का जो आख्यान लोक में प्रचलित है उसी पर कवि उसमान की दृष्टि इस प्रसग का उल्लेख करत समय रही होगी। 'ज्ञानदीप' म इस घटना का उल्लेख दृष्टात के रूप मे हुआ है। ज्ञानदीप मे हुए इस प्रयोग की विशेषता यह है कि इस कथा का प्रयोग इसम सदर्भ-कथा के रूप म न होकर काव्य के कथानक के अग के रूप म हुआ है। अगस्त्य और उदधि यहाँ कहानी के पात्र बन गये हैं। ऐसा प्रयोग सूफी काव्यो म अपने ढग का अकेला है।

अभिमन्यु का चक्रव्यूह मे जूझना

अभिमन्यु के चक्रव्यूह मे जूझने के प्रसग का 'पदमावत'[1] म आलकारिक प्रयोग किया गया है। गुरु होते हुए भी द्रोणाचार्य ने जब अभिमन्यु को चक्रव्यूह म उलझाकर मरवा डालने का विचार कर लिया तब भला उसे कौन बचा सकता था? कथा का यही भाव पदमावत मे ग्रहण किया गया है।

अर्जुन द्वारा मत्स्य-वेध कर द्रौपदी स्वयवर की शर्त पूरी करना

मृगावती, पदमावत नल-दमन इद्रावती' और अनुराग-बाँसुरी म इस कथा प्रसग का उल्लेख हुआ है। मृगावती[2] म तो इसका प्रयोग केवल उल्लेख के रूप म हुआ है। राजकुवर के रहने के लिए मानसरोदक के तट पर जो महल बनवाया गया उसम अर्जुन द्वारा मत्स्य-वेध का दृश्य भी अकित किया गया। अर्जुन ने मत्स्य वेध करने के उपरान्त कौरवो को हराकर द्रौपदी को जीता ऐसा उल्लेख यहाँ मिलता है। द्रौपदी-स्वयवर म कौरवों से अर्जुन का जो युद्ध हुआ, उसी की ओर इसम सकेत है। पदमावत म इस प्रसग का आठ बार[3] आलकारिक दार्ष्टान्तिक और प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है। पदमावती की भौंहो की वक्रता की तुलना उस धनुष स की गयी है जिसस अर्जुन न मत्स्य-वेध किया। इस घटना का उपयोग किसी शर्त का पूरा करके नायक द्वारा नायिका स साधिकार विवाह करन के अर्थ म भी किया गया है। पराक्रम और पुरुषार्थ के कृत्य क रूप म भी यह प्रसग उल्लिखित है। लक्ष्य के प्रति एकाग्रता की भावना भी इसस ध्वनित की गयी है। पदमावत म मत्स्य की परछाइ को देखकर अर्जुन द्वारा उसका वेध करने का उल्लेख है। यह लोक प्रचलित कथा रूप है। पौराणिक प्रथा म तल या अन्य किसी तरल पदार्थ म मत्स्य का प्रतिबिम्ब देखकर उस बेधन का उल्लेख नही आता। कवि ने इस कथा को

---

१ पदमावत २६४।१

२ मृगावती १७।३

३ पदमावत १०२।५ १६७।६ ७ १६८।६ २२४।दो २३।१८ ३१६।४ ४७।५ ४६१।१ ४ ५६१।७

पुराण ग्रन्थों से नहीं, लोक से ही लिया है। मन-दमन में राहु-वेध की तुलना विवाहोपरान्त नायिका के कौमार्य भंग करने से भी की गयी है।[1] इन्द्रावती में इसका उल्लेख अर्जुन के पराक्रम के रूप में हुआ है।[2] अनुराग-बाँसुरी में सर्वमंगला के कटाक्ष के बेधकत्व की तुलना अर्जुन के बाण की सार्थकता से हुई है।[3]

अर्जुन का विश्व-भ्रमण

ज्ञानदीप[4] में योगी सिद्धनाथ राजा गायमान से बताता है कि उसके शिष्य अर्जुन (पार्थ) ने सारे संसार को नाप डाला। इसमें अर्जुन के विश्व-भ्रमण का उल्लेख मात्र है।

अर्जुन का अजिगर (अजगर) की पकड़ में आना

मृगावती में अजिगर की पकड़ में आने की घटना को अर्जुन के साथ सम्बद्ध किया गया है, किन्तु वस्तुतः यह घटना भीमसेन से सम्बन्धित होना चाहिए। अर्जुन के किसी नाग की पकड़ में आने का उल्लेख पौराणिक साहित्य में नहीं मिलता। भीमसेन के साथ घटित घटना इस प्रकार है—

अपने अज्ञातवास के बारहवें वर्ष में पाण्डव सरस्वती तटवर्ती द्वैतवन प्रान्त में घूम रहे थे। एक दिन जब भीम वन में अकेले भ्रमण कर रहे थे तब उन्होंने एक विशालकाय अजगर को देखा। उसका शरीर पर्वत के समान विशाल था। उसने भीम की मोटी भुजाओं को जकड़ लिया। यद्यपि भीमसेन में दस हजार गजराजों का बल था तथापि वे उस महाकाय अजगर की पकड़ से न छूट सके।[5] तब भीम ने

---

१ अरजन बान राहु जस मारा। परसी सीता जस बखारा ॥

—मन-दमन पृ० ११४ छन्द २१७ के बाद। नागरी प्रचारिणी सभा काशी प्रति में जो तीन छंद अधिक हैं उनमें से प्रथम छन्द की सातवीं पंक्ति।

२ सोरहिं कर इन काहुक हाथा। सँदुर बेहु न मारेहु माथा।
मन के अनुहारी कहीं राहु सो बेधै जाइ। सोई पन पति पाइहि द्रौपद ब्याही जाइ ॥

—इन्द्रावती (प्रथम) पूर्वार्द्ध काव्य खंड १०१२ दोहा १८

मन न छाड़हु होइहु काया। अरजन सम होई कोइ राजा ॥
जैसे अरजुन बेधउ राहू। भएउ द्रौपदी संग बियाहू ॥
तस कै मोती धाइ निसारे। तोहि सम परमद बिन सवारे ॥

—वही काव्य खंड छन्द १६ की १३

३ अरजन सुमिरि कटाछै तेरे। बधा देख बिध तुन करे।
(बिध तुन = राहु = रोहु मछली)

—अनुराग बाँसुरी पृ० १६६ छन्द ७०।२

४ तब सिधनाथ कहा सुन राजा हौं सिधनाथ सिरोमनि राजा।
सो सिधनाथ जो गोरख चीता सो सिधनाथ पारथ जग जीता ॥
मोरे देखत लंका टूटी मोरे देखत गोपिन लूटी।
मोरे देखत बलि कहँ बाँधा मोरे देखत पारथ जग साँधा ॥ —ज्ञानदीप छन्द २१२

५ महाभारत वन पर्व अध्याय १७८

उसका परिचय पूछा और अपना परिचय उसे दिया। अजगर ने बताया कि मैं राजा नहुष हूँ और अगस्त्य ऋषि के शाप से अजगर हो गया हूँ। उसने कहा कि बिना मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये तुम मेरी पकड़ से नहीं छूट पाओगे। तभी भीम को खोजते हुए युधिष्ठिर वहाँ आ पहुँचे। भीमसेन को उस अजगर ने अपनी कठोर जकड़ में बदम-सा कर रखा था। युधिष्ठिर ने अजगर के प्रश्नों के उत्तर दिये। फलतः वह (नहुष) शापमुक्त होकर स्वर्ग चला गया।[1]

'मृगावती'[2] में अर्जुन के अहिवन की चपेट में आकर रोने बिलखने का उल्लेख आलंकारिक रूप में आया है। राजकुंवर जब जोगी बन जाता है तब उसका पिता विलाप करता है। अर्जुन के रोने बिलखने का इस घटना का उपमान बनाया गया है। लगता है कवि ने भ्रमवश ही भीमसेन के साथ घटित घटना को अर्जुन के साथ सम्बद्ध कर लिया है। सूफी कवियों के इस तरह के तथ्यात्मक अज्ञान के उदाहरण और भी मिले हैं।

अर्जुन द्वारा कौरव-दल का संहार

अर्जुन द्वारा कौरव सेना के संहार की घटना का उल्लेख 'चंदायन'[3] और 'चित्रावली'[4] में आलंकारिक रूप में हुआ है। अर्जुन की वीरता की प्रशंसा ही इसके द्वारा अभिप्रेत है। चित्रावली में कामदेव को पार्थ माना है और सुख को कौरव-सेना।

इन्द्र का परनारी को छलना (अहल्या के साथ व्यभिचार)—गौतम ऋषि द्वारा शाप—इन्द्र का सहस्रभग होना

इन्द्र के सहस्राक्ष होने का उल्लेख तो पदमावत[5] में भी आया है परन्तु उसमें किसी कथा रूप का संकेत नहीं मिलता। युद्ध-क्षेत्र में गोरा कहता है कि मैं इन्द्र की तरह सहस्राक्ष होकर अपने शत्रुओं को देखूँगा। माधवानल-कामकन्दला[6] में इन्द्र के छलियापन की ओर इंगित किया गया है। विक्रमादित्य जब कामकंदला की सखियों से पूछते हैं कि वह किस के विरह में दुःखी है तब सखियाँ माधवानल के आने और उससे कामकंदला के प्रेम हो जाने का वृत्तान्त कहती हैं। उनको संदेह

---

१ महाभारत वन पर्व अध्याय १७६-१८१

२ मृगावती ६६।३

३ चन्दायन (प० मा० गुप्त) १२१।५

४ बिरह अनेक कटक दल साजा हम उर पौर आइ भा राजा।
मदन परथ ह्वै धनुष सँभारा सुख कौरो दल मारि निमारा॥
—चित्रावली प० १६६ छं० ४१५ चौ० २-३

५ पदमावत ६२६।४

६ मोहन रूप विप्र कोउ आवा। नैन साथ तिन मन बौरावा।
कैधौं आन इन्द्र छल कयौ। कैधौं दरस मदन को भयौ॥
—माधवानल-कामकन्दला हस्तलेख ना० प्र० स० प्रति पत्र ३२

है कि माधवानल भी इन्द्र जैसा ही कोई छली था जिसने अहल्या की भाँति काम कन्दला को आ छला। इन्द्र अहल्या-जार का स्पष्ट शब्दों म उल्लेख आता है ज्ञानदीप[1] म। पर नारी से प्रीति करने वाला सदा अपयश का भागी होता है इस नीति कथन के दृष्टांत के रूप म इस आख्यान का उल्लेख हुआ है। गौतम की पत्नी कितनी पतिव्रता थी परन्तु इन्द्र ने कपट रूप धारण कर उसके साथ जार-कर्म किया। उसस उसको कितनी कीमत नहीं सहनी पड़ी। उसके शरीर म सहस्र योनियाँ उत्पन्न हो गयीं। परस्त्रीगमन पाप के दण्डस्वरूप इन्द्र का सहस्रभग होना लोक-व्यवहार और सामाजिक मर्यादा के लिए एक दृष्टान्त ही बन गया। नल दमन[2] म भी इन्द्र के सहस्रभगधारी रूप का उल्लेख उस अवसर पर हुआ है जब इन्द्रादि देवता दमयन्ती स्वयंवर म नल का रूप धारण कर उस के समीप आ बैठे हैं।

इन्द्र का अपने त्रिशूल (वज्र) से सुमेरु आदि पर्वतो के पंख काटना—सुमेरु का आकाश तक ऊँचा उठना (स्वर्ण गिरि होकर)

पदमावत[3] म इन्द्र के वज्र को त्रिशूल कहा गया है। इन्द्र ने अपने वज्र से ही पर्वतो के पंख काटे थे। पंख कट जाने से सुमेरु विकलांग हो गया, पर इससे क्या? विकलांगता किसी की उन्नति म बाधक नही हो सकती यदि उसम स्वयं उन्नत होने की अदम्य इच्छा और लगन हो। सुमेरु पर्वत पंख कट जाने के बाद भी आकाश की ओर ऊँचा उठता हुआ अपनी महीयता का उद्घोष स्वर्णगिरि होकर करता रहा और इस सत्य का प्रकाशन करता रहा कि अन्तर्मूल्य ही व्यक्ति को महान बनाते हैं। शारीरिक या सामाजिक विकलांगता एक ओर मनुष्य को जहाँ कठिनाइयो एवं उपेक्षा म तप जाने के कारण खरा सोना बना देती है वहाँ उसको महानता की ओर अग्रसर होने के लिए उत्प्रेरित करती है। पक्षच्छिन्न सुमेरु पर्वत इसका दृष्टांत है।

उषा अनिरुद्ध-प्रेमाख्यान (उषा अनिरुद्ध के प्रेम पथ मे बाणासुर का बाधक बनना—दोनो प्रेमियो के सामने बाणासुर का हार मानना—अनिरुद्ध को उषा की प्राप्ति)

मृगावती पदमावत ज्ञानदीप और इन्द्रावती म उषा अनिरुद्ध प्रेमा

---

१ गौतम की बनिता पतिबरता प्रात टरन कोई पति करता।
कसी साँसति भइ कौन पाँ ी। सहसजोनि उपजो तन माही॥
—ज्ञानदीप छंद ४५४

२ नल कै निकट आन भये ठाढ़ नख मिलिया झलक नख पाद।
भय धारि क भगस बनावहि चहै न भगल काछ तिहि पावहि॥
भगल किए वह हाथ न आव सो निज मरम हियैं कोउ पाव॥
(भगल = इन्द्र के जैसा सहस्रभग युक्त रूप)
—नल दमन छंद १६६ चौ ६८

३ पद्मावत २१।६

ख्यान का आलंकारिक और प्रतीकात्मक प्रयोग हुआ है। मृगावती[1] में उषा प्रेमिका के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुई है। आख्यान का संकेत नहीं है। 'पदमावत' में निर्दिष्ट है कि उषा-अनिरुद्ध का प्रेम मिलन होकर रहा, किसी विघ्न बाधा के रोके न रुका क्योंकि दो प्रेमियों का संयोग देव के द्वारा पूर्व निर्धारित होता है। भाग्यांक को कौन मिटा सका है?[2] प्रेमी प्रेमिका को प्राप्त करने के लिए सचेष्ट रहता है वह अपने प्राणों को संकट में डालकर भी उसे प्राप्त करने की चेष्टा करता है। अनिरुद्ध ने उषा को प्राप्त करने के लिए बाणासुर से घोर युद्ध किया था।[3] यदि अनिरुद्ध के गले में जयमाला पड़नी भाग्य लिखित थी तो बाणासुर बेचारा क्या करता? उसने चेष्टा तो पूरी की कि अनिरुद्ध को उषा न मिल सके पर अन्ततः उसे प्रेमियों के दृढ़ संकल्प के सम्मुख हारना ही पड़ा। उषा और अनिरुद्ध परस्पर सदा सदा के लिए मिले देवताओं को हर्ष हुआ और दैत्यों को सिर दर्द।[4] 'ज्ञानदीप'[5] और इन्द्रावती[6] में अनिरुद्ध तथा उषा का दो प्रेमियों के रूप में, जो परस्पर मिलन के लिए उत्कंठित हैं उल्लेख हुआ है।

कच का शुक्राचार्य के पास संजीवनी विद्या सीखने जाना—कच-देवयानी-प्रेम

आलोच्यकाल के समस्त सूफी प्रेमाख्यानों में केवल शेख नबी के 'ज्ञानदीप'[7]

---

१ मृगावती १५ । दोहा
२ पदमावत १६८।७
३ वही २११।७
४ वही २७४।१ ४
५ तीनि पहर एह रनि महं करिय जो केला होइ।
तब निचिंत बैठउ एक हि मानहु रति रतिपति को मोइ॥
उषा नीब जनु अनरुध मोसा राए दुपद जस कुंता कीला।
राधा मन जब दामावती सुभर कत और सुभर कती॥
कामकंदला पाइय माधौ जेव राधा मदलालहि साधौ।
सुरज्ञानी बिहंसी तस देवी जोबन सुफल आपनी सेवा॥ —ज्ञानदीप छंद ११४
६ रानी कहा भूख मोहि नाही जावें कहाँ कल यह बन माहीं।
हौं अनरुध चाहत हौं ऊषा नहिं दरसन का हौं मैं भूखा॥
हौं बरती तेहि पंथ को इन्द्रावति जेहि नाउ।
फल अहार तेहि दरस को चाहौं तेहि दिसि जाउ॥
इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) मुद्रित प्रति पृ० २७ छंद ११ चौ २ और दोहा
७ प्रसम बौन मनसिज के छूटे रति सुखराम राम दुख छूटे।
बिरह सब तजि साज पराना जियत सोहाग रहं मदाना॥
कामदेव जूझ रन माहा सुरपुर बिता आसु जियाही।
कच गुप थापि रही देवजानी कहुं संकोच पिता का मानी॥
× × ×
नबी सुरति संग्राम मधि हने काम जिमि जाथि।
मन कच सोपत सुक डिप मन सो जोवन साथि॥ —ज्ञानदीप छंद २७९

[illegible] और पुत्र भाव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया गया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विवाह है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कवि ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि [illegible] [illegible] नहीं हुआ था [illegible] [illegible] [illegible] वह विषम प्रश्न था तभी तो [illegible] उसकी खोयी हुई [illegible] [illegible]।

कर्ण का कौरवों द्वारा पालित होना

ज्ञानदीप में कर्ण का पाण्डु-पुत्र होकर कौरवों द्वारा पालित होना कहा है। कवि ने लोक-व्यवहार के इस तथ्य को प्रतिपादित करने के लिए कर्ण के जीवन के इस पक्ष का उल्लेख किया है कि लड़का हो या लड़की उसके नाम के साथ उसके जन्मदाता पिता का ही नाम जुड़ा रहता है उसको पालन करने वाले पिता का नहीं। दूसरा व्यक्ति किसी के पुत्र या पुत्री को पालकर भी उसका वास्तविक अधिकारी नहीं बन जाता। कर्ण को पाला-पोसा कौरवों ने, परन्तु लोक में तो वह पाण्डुपुत्र ही प्रसिद्ध रहा।[1]

---

१ इसी प्रसंग में वहाँ सीता और कृष्ण का भी उल्लेख हुआ है। सीता को जनक ने पाला परन्तु वे पृथ्वी-सुता के नाम से ही प्रसिद्ध हुईं जनक-सुता के नाम से नहीं। कृष्ण को पालित पोषित किया नन्द गोप ने पर पुत्र वो वे वसुदेव के ही कहे गये हैं

> [illegible] सुनि [illegible] [illegible] जिमि पालक को [illegible]।
> [illegible] न नाम सुत बोलहु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥
> [illegible] [illegible] पाला पुहुमी सुता सिहु जनक [illegible]।
> नन्द महर वसुदेव-सुत लीन्हा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लीन्हा॥
>
> —ज्ञानदीप छंद २६७

कर्ण का कवच इन्द्र द्वारा छलपूर्वक माँगा जाना

'पद्मावत'[1] में इस आख्यान का जो रूप ग्रहण किया गया है वह यह कि इंद्र ने छलपूर्वक कर्ण का कवच उससे माँग लिया, इसमें अर्जुन को तो सुख पहुँचा और कर्ण को दुःख। नागमती हीरामन को इन्द्र की तरह छलिया बताती है। इंद्र ने कपटपूर्वक कर्ण से कवच माँग लिया या हरण कर लिया और हीरामन उसके प्रियतम को ही उससे छीन ले गया। जैसे इन्द्र के कार्य ने अर्जुन को सुखी किया और कर्ण को दुःखी, वैसे ही हीरामन के कार्य से पद्मावती की साध पूरी हो गयी, पर नागमती की तो दुनिया ही उजड़ गयी। कर्ण के दानी रूप पर इसमें बल नहीं दिया गया है।

कर्ण की दानशीलता

कर्ण की दानशीलता का उल्लेख 'मृगावती'[2], पदमावत[3], चित्ररेखा'[4], 'मधुमालती'[5] चित्रावली[6] ज्ञानदीप[7] और माधवानल-कामकंदला'[8] तथा 'कथा कँवलावती[9] में हुआ है। कर्ण का नाम बलि हातिम, शेरशाह आदि के साथ लिया गया है। दान की महिमा बताते हुए कहा गया है कि वह दान देने के कारण ही इह लोक और परलोक को तर सका। कहीं-कहीं नायक या शाहेवक्त को कर्ण से अधिक दानशील बताया गया है।[10] अधिकतर कर्ण को दानशीलता के लिए उपमान ही रखा गया है।

कर्ण का पराक्रमी होना

कर्ण के पराक्रम का आलंकारिक वर्णन मृगावती[11] और 'पदमावत'[12] में

१ पदमावत १४१ चौ १ ७
२ मृगावती छन्द ४ चौ॰ ४
३ पदमावत १७।२ १४५।७ १८७।६-७
४ चित्ररेखा प॰ १०८ चौ ३
५ मधुमालती, छंद १२ १३
६ दान निसान बहु बड बाजा करन कुबेर बनु अति लाजा।

—चित्रावली प॰ १७ छंद ४०, चौ॰ ३

७ दान करै लागा एह राजा दिन दिन मानहुँ इन्द्र होइ गाजा।
जैसे राजनेति बुधिरानी बिक्रम भोज करन की कानी॥ —ज्ञानदीप छंद १६५
देहु चाहि अधिक एहि चाहो नाइ बाप अस एकइ पौढ़ी। —ज्ञानदीप छंद ४१६

८ धनि कुरग जिनि राम मुनि रीझि न राखा प्रान।
धन करन बलि बिक्रमा दियो न ऐसो दान॥
धारा भोज सच्छ जिनि दीनो करन बन बलि बिक्रम कीनो।
वे सब भए मीच के मारे रीझि प्रान नहिं दिए पियारे॥

—माधवानल-कामकन्दला पृ॰ १६५ प॰ ८

९ दर्बे को वह करन कहावै ग्यान भोज को पटतर पावै।

—कथा कँवलावती पत्र ३ छंद ■

१० चित्ररेखा १०८।३ पद्मावत १७।२ मृगावती ४।४ चित्रावली ४०।३ ४
११ मृगावती ३३।३
१२ पदमावत ६११ चौ॰ १ और २

एक एक बार आया है। मृगावती में कर्ण के बाण की तीक्ष्णता को नायिका के कटाक्ष-बाण की तीक्ष्णता से और पद्मावत में बादल और गोरा की वीरता को परशुराम तथा कर्ण की वीरता से उपमित किया गया है।

कार्तिकेय का शरजात होना

नूरमुहम्मद-कृत 'अनुराग-बाँसुरी'[1] में प्रेमपात्र रूप में 'सरजादू' शब्द का उल्लेख हुआ है। कहा है कि जिस प्रकार सरजादू (शरजात) वन में तड़पता रहा था उसी प्रकार प्रेमी भी प्रेमिका के विरह में तड़पता रहता है। आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय ने 'सरजादू' शब्द के दो अर्थ ग्रहण किए हैं—(१) शरजात—शरवन में उत्पन्न स्वामी कार्तिकेय और (२) सरजात—सरोवर में उत्पन्न मछली। मछली के साथ उन्होंने 'वन' का अर्थ 'जल' किया है।[2] किन्तु शरजात से कार्तिकेय का अर्थ ग्रहण करना ही समीचीन जान पड़ता है क्योंकि स्पष्ट कहा है—'तरफराइ जिमि बन सरजादू।' यहाँ कोई संकेत नहीं दिया गया कि शरनामी आश्रम धाम के वन में शिशु (कार्तिकेय) को छटपटाती स्थिति में किसने छोड़ा—कृत्तिकाओं ने, गंगा ने या ऋषि-पत्नियों ने?

कृष्ण (वसुदेव-सुत) का नन्द द्वारा पालित होना

शेख नबी कृत 'ज्ञानदीप'[3] में एक स्थल पर ही इस प्रसंग का उल्लेख हुआ है। राजा रायभान योगी सिद्धनाथ से कहता है कि ज्ञानदीप को मैंने पाला-पोसा और योग्य बनाया है तो इसमें क्या, पुत्र तो वह रायशिरोमणि का ही कहलाएगा। कृष्ण को नन्द महर ने पाला, परन्तु वे नन्द-सुत न कहलाकर वसुदेव-सुत ही तो कहलाए। किसी का नाँव-ठाँव कोई छीन थोड़े ही सकता है? कृष्ण के नन्द द्वारा पालित होने की घटना लोक-व्यवहार का एक दृष्टान्त बनकर उपस्थित हुई है। सूफी कवियों की लोक-दृष्टि का यह एक प्रमाण है।

कृष्ण द्वारा बाल्यावस्था में ही कई चमत्कारपूर्ण और वीरतापूर्ण लीलाएँ करना तथा ब्रजवासियों पर आये संकट को टालना

उपर्युक्त चमत्कारी एवं वीरतापूर्ण कृत्यों में से केवल कालियनाग मर्दन, मुष्टिक वध, बकासुर और कंस-वध का ही उल्लेख स्पष्टतः सूफी प्रेमाख्यानों में हुआ है। शेष कृत्यों का नामोल्लेख न होकर 'पद्मावत' में बाल्यावस्था में ही कृष्ण की

---

१ एहि कातार नाँघि को पार । केहिर बिष बहुतन कह मार ।
तरफराइ जिमि बन सरजादू । तिमि प्रेमी को है मरजादू ॥
—अनुराग-बाँसुरी २६।४-५

२ वही, पृ० १३, पाद टिप्पणी

३ ज्ञानदीप छं० २६७

वीरता का संकेत प्रतीकात्मक रूप से[1] और ब्रजवासियों पर आये संकटों को टालने का उल्लेख अलंकारिक रूप में हुआ है।[2]

कृष्ण का कालियनाग को नाथना—उसके फनों पर नृत्य करना—कालिय का मुंह में कमल लिये कृष्ण के साथ आना

केवल पदमावत और 'कथा कनकावती' में ही कालियनाग मर्दन प्रसंग का आलंकारिक उल्लेख मिला है। अन्य किसी सूफी प्रेमाख्यान में इस प्रसंग की चर्चा नहीं आती। पदमावत में पदमावती की वेणी को कालियनाग से उपमित किया गया है और कहा गया है कि कृष्ण ने कालियनाग को नाथा था और कृपा कर उसे जीवित छोड़ दिया था।[3] वहीं यह भी वर्णन है कि कालियनाग जब कृष्ण के पीछे पीछे आया तब उसने अपने मुख में कमल ले रखा था।[4] (इसे शुभ शकुन भी कहा गया है।[5]) कालियनाग के फनों को नाथने की क्रिया को एक संत्रासकारी भयानक घटना के रूप में भी देखा गया।[6] कथा कनकावती में कालिय और शेष को एक ही मानकर उसके नाथे जाने की घटना को पराक्रमपूर्ण एवं साहसिक कृत्य कहा गया है।[7]

कृष्ण को अक्रूर द्वारा मथुरा ले जाना—कृष्ण का गोपियों को विरहावस्था में छोड़कर मथुरा जा बसना—गोकुल का उजाड़ हो जाना

पदमावत, नल दमन, कथा कनकावती और इन्द्रावती में इस प्रसंग की चर्चा आलंकारिक रूप में की गयी है। पदमावत में अक्रूर को प्रेमिका से प्रेमी को छीन ले जाने वाले बाधक तत्त्व के रूप में चित्रित किया गया है। नागमती ने हीरामन तोता को अक्रूर से उपमित किया है।[8] इसी काव्य में अन्यत्र कृष्ण को रूप लोभी तथा छलिया सिद्ध किया गया है और कहा गया है कि कृष्ण ने जिनके यौवन का उपभोग किया उन गोपियों के प्रेम बंधन को तोड़कर वह निष्ठुरतापूर्वक मथुरा चले गये।[9] पदमावत में ही कृष्ण द्वारा गोपियों को छोड़कर चले जाने का कारण यह

१ पद्मावत ६१४ दोहा ५३।२
२ वही ६१४।६
३ वही ११५।५ २६५।३
४ वही ११५।६
५ वही टिप्पणी पृ ११२
६ वही ५७३।५
७ हौं जगपति जगत सब जान तू सकहा जो आन न मानें॥
+ + +
काज होइ मधपुर ज्यों मोर्चे सेस भये नाथ नू छोरू॥
—कथा कनकावती पत्र ७ छंद [illegible]
८ पदमावत ३४१।७
९ वही ५९३ दोहा ४६।१

बताया गया है कि कृष्ण गोपियों से प्यार न पा सके, उनसे अनन्त में असमर्थ रहे इसलिए उन्हें छोड़कर चले गये।[1] इस प्रकार उनके मथुरा चले जाने का प्रसंग पद्मावत के अन्त में चित्रित हुई है। नल-दमन में गोपियों का कृष्ण की स्मृति में अधीर दिखाया गया है।[2] कथा कनकावती में कृष्ण के मथुरा जाने का उल्लेख मात्र है।[3] इन्द्रावती में कृष्ण के मथुरा गमन को गोपियों के प्रति उनकी 'निर्ममता और निष्ठुरता' का सूचक माना गया है और उनके चले जाने पर गोकुल का उजाड़[4] या सूना[5] हो जाना बताया गया है।

कृष्ण द्वारा बकासुर का वध

सूफी प्रेमाख्यानों में भी केवल पद्मावत में ही, सो भी एक स्थल पर कृष्ण द्वारा अपने धनुष से बकासुर को मारने का उल्लेख आलंकारिक रूप में हुआ है।[6] महाभारत में उपमन्यु-पुत्र बक से भिन्न किसी बकासुर का उल्लेख अब न हुआ है[7] किन्तु यहाँ ऐसा लगता है कि बक का ... उसकी स्वसा और द्विविद नामक दानव के योग से उत्पन्न होने[8] के कारण असुर की संज्ञा दी गया है।

कृष्ण द्वारा कंस का वध (कंस का नाना तपस्वियों के शाप से वश न मरने से पूर्व उत्पन्न होना)

पद्मावत[9] चित्रावली[10] नल-दमन[11] और हंस-जवा

१ पद्मावत १२३।१२
२ ज्यों अमरा मन तरनि नहिं गोपी भई मलीन।
ज्यों दुख सुख सब त्यागि लगि सीध भए बनवास॥ —नल दमन ११६।दोहा
३ कथा कनकावती पत्र ७ छंद २१ (पूर्वोल्लिखित)
४ है कन्हाइ जोबन ऊपधि पारी माव हमार। जेकर काह कहाँ है थोड़ लगावइ लार॥
+ + +
माइ बसाएउ मधुबन गिरि नन्दकुमार। हम छम सुर रात दिन गोकुल भएउ उजार॥
—इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) मन्दिर पारायण छंद ४ दोहा और छंद ५ दोहा
५ जस भा अवध राम बिन सूना, तस भा सून मयद दुख दूना।
गोकुल सून किसन बिनु जैसे अमरपुर सूना [illegible] तसें॥
—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्तलिखित प १६१
६ पदमावत १०२।४
७ महाभारत सभा पर्व १८।२१ के बाद दाक्षिणात्य पाठ प० ८२५
८ हरिवंश पुराण विष्णुपर्व २८।३८ १०२
९ पद्मावत २६३।१ ४८६।६ ५७६।६
१० बीजापुर नगरहेर एक बनी पाया रूपनगर जस सुनी।
धन लगि घर तजि भा परदेसी गावें कथा देखावें भेसी॥
+ + +
गाव पुनि किसना औतारा मधुपुर जेस बकासुर मारा।
भारत माइ कौरव उपचारा जिमि पांडव कौरव कुल मारा॥ —चित्रावली ४७।१६
११ राम हरा रावन जिहि कृष्ण हरा जिहि कंस।
ते ध धानन [illegible] ज मना वही धनर कर मस॥ —नल दमन ६ ३ दोहा

हिर[1] मे कृष्ण द्वारा कंस के वध का दृष्टान्त और आलंकारिक रूप मे उल्लेख हुआ है। कंस वध प्रसंग का विस्तार से वर्णन नही है। इस घटना का उल्लेख कृष्ण के पराक्रम अत्याचारी के अंतत विनष्ट होने और एक सत्रासकारी घटना के रूप मे किया गया है। हुस जवाहिर म कंस के विनाश का कारण तपस्वियो का शाप बताया गया है। चित्रावली म कंस को कंमासुर कहा गया है और मथुरा म कृष्ण द्वारा मारे जाने का उल्लेख है। नल दमन मे धनुष द्वारा कंस का वध करने का उल्लेख है। केश पकड कर खीचे जाने या कृष्ण के गिर पडने से कंस के मर जाने का उल्लेख किसी भी काव्य म नही हुआ है।

कृष्ण (नन्दलाल) से राधा का मिलना

सूफी प्रमाख्यानो म केवल ज्ञानदीप[2] म ही वियोग के उपरान्त प्रेमिका के साथ प्रेमी के मिलन के रूप म कृष्ण और राधा के मिलन का उल्लेख आलंकारिक रूप म हुआ है। कृष्ण के वियोग म राधा के दुःख सहन का उल्लेख तो 'पदमावत[3] म भी हुआ है किन्तु विरह के बाद मिलन का उल्लेख तो ज्ञानदीप में ही।

कृष्ण पर सोलह सौ गोपियो का अनुरक्त होना

मृगावती[4] में सोलह सौ गोपियों का उल्लेख हुआ है और ज्ञानदीप म सोलह सौ गोपियो के कृष्ण म अनुरक्त होने[5] और कृष्ण द्वारा उन गोपियो के लूटे जाने की चर्चा दृष्टान्त रूप म आयी है।[6]

कृष्ण को गोपियो से मिलाना—उद्धव द्वारा

जान कृत कथा कँवलावती[7] म उद्धव का उल्लेख प्रतीकात्मक रूप से कृष्ण और गोपियो को मिलानेवाले के रूप म किया गया है। किसी भी पुराण म कृष्ण और गोपियो का प्रत्यक्ष मिलन उद्धव के प्रयास से नही बताया गया है। यदि सदेश

---

१ तपसी दे डर मानिक राजा कर सेवा जनि बूडत काजा।
तपसी शाप अगत करि जाई भयो शाप तिनहीं बिलमाई॥
× × ×
तपसी शाप लंक मह छारा कंस बिनास तपसि कर मारा।
—हुसजवाहिर प० १२९ छन्द ४२१।को० १ २ ६

२ ज्ञानदीप छन्द १६४

३ पदमावत ४२८।१

४ मृगावती २६।४ ५

५ सोरह सहस रही सब गोपी प्रगट काह्न जो एक सोपी।
एक पिया की भइ सो दासी मिटी कालिमा भ सुपवासी। —ज्ञानदीप छन्द १०३

६ ज्ञानदीप छन्द २६२

७ जाइ कह्यो राजा सौं सुधो काह्न मिलायो गोपिन ऊधो।
—कथा कँवलावती पत्र १० छन्द ७१ (हस्त०)

को मिलन की संज्ञा दी जाय तो बात दूसरी है। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में राधा और गोपियाँ कृष्ण से स्वप्न में मिलती हैं।[1]

कृष्ण द्वारा कुब्जा का कूबड़ ठीक कर दिया जाना

केवल 'नल दमन'[2] में इस प्रसंग का उल्लेख आलंकारिक रूप में हुआ है। पौराणिक कथा से इसमें एक अन्तर यह लक्षित होता है कि यहाँ कृष्ण लात मारकर कुब्जा का कूबड़ ठीक करते बताये गये हैं। पुराणों में उन्होंने हाथ की दो अंगुलियों से उसके चिबुक को उचकाकर और उसके परों को अपने पर से दबाकर उसे सीधा कर दिया है। लात मारकर कूबड़ ठीक करने का कथा रूप सूरदास तथा नवी ने निश्चय ही लोक ख्यात से ग्रहण किया होगा।

कृष्ण द्वारा सांदीपनि गुरु के खोये (मृत) पुत्र को खोज निकालना (यमपुर से वापस ले आना)

पवन ज्ञानदीप में दो स्थलों[3] पर इस कथा का अलंकारिक प्रयोग हुआ है। सांदीपनि गुरु अपने इकलौते पुत्र के खो जाने या समुद्र में डूब जाने के कारण निपूत हो गये थे। कृष्ण ने उनके उस पुत्र को खोज लाकर पिता-पुत्र का सुखद मिलन करा दिया। कृष्ण का महत्त्व इससे सूचित हुआ है। गुरु भक्ति पर यहाँ बल नहीं है बल्कि पुत्र विहीन पिता को पुत्र देने या पुत्र से बिछुड़े पिता को उससे मिला देने वाले पुण्य पर बल दिया गया है।

कृष्ण द्वारा सुदामा का दारिद्र्य दूर किया जाना सुदामा का द्वारकापुरी से लौटकर अपनी मँडया को न पहचानना

चित्रावली और ज्ञानदीप—दो सूफी प्रेमाख्यानों में ही यह कथा प्रसंग

---

१ ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म-खण्ड अ० ६१।६८

२ जदपि कहि सो दुखावन बाता। भै मोहि भइ कुबजा कै लाता।
(यद्यपि इन्द्र ने जो बात कही वह मेरे लिए दुःखद थी परन्तु तुमसे (दमयंती से) भेंट हो जाने का निमित्त बनने के कारण वह बात मेरे (नल के) लिए कल्याणप्रद हुई जिस प्रकार कुब्जा के लिए कृष्ण की लात हुई थी।) —नलदमन १९२।४

३ राए सिरोमनि मुनि अकुलाना। बहुत भाँति कीन्हेउ सनमाना।

× × ×

हौं सेवक तुम ठाकुर मोरा। प्रान जात घट तुम्हहिं बहोरा।
सदीपनि सुत जसिय घोआ। आहु दइउ तस दी ह बिछोआ॥
तुम होइ त्रिस्न की ह उदघाटा। तुम गढ़ब जिमि हौं सम घाटा॥

—ज्ञानदीप छन्द २६६

दिहेउ पूत हम रहेउ निपूता। एहि देव करि बहु केहि बूता।
कोहि जग करण की कीन्ह सदीपा। की तुम आज दियहु एहि दीपा॥ —वही छन्द ४१६

एव एक बार आया है। 'चित्रावली'[1] म उस स्थिति का उल्लेख है जब सुदामा द्वारका से लौटकर अमरावती तुल्य निर्मित अपने आश्रम म अपनी मँडया (झोपडी) का न पहचानकर न हँस पाते हैं, न रो पाते हैं। 'ज्ञानदीप'[2] म सुदामा के दारिद्रय को दूर करने की घटना भगवान द्वारा अपन भक्तो पर अनुग्रह करने का दृष्टान्त बनकर आयी है।

कृष्ण से गोडिया (बहेलिया) का प्रतिशोध लेना

इस कथा प्रसग का उल्लेख केवल 'चित्रावली' मे एक स्थल[3] पर आलकारिक रूप म आया है। गोडिया (बहेलिया) जसे तुच्छ-तन व्यक्ति द्वारा कृष्ण जसे महा प्रतापी राजा से अपना प्रतिशोध लने का उल्लेख इस अभिप्राय को व्यक्त करने के लिए हुआ है कि दाँव पाकर बरी को नही छोडना चाहिए चाहे वह कितना ही बलवान क्यो न हो।

गधर्वो का सुन्दरी कन्याओ पर मुग्ध होना

पदमावत म पद्मिनी स्त्रियो के शरीर म निकलन वाले भीने परिमल की सुगध से गधर्वो के गणो के मोहित हो जाने का उल्लेख आया है।[4] आजकल भी लोक विश्वास है कि अधिक रूपवती स्त्रिया को जिन्न आविष्ट कर लेते हैं। तीव्र सुगध म उनका आकर्षित होना भी प्रसिद्ध है। कुछ इसी प्रकार का लोक विश्वास प्राचीन काल म गधर्वो के विषय म भी प्रचलित था। इस सम्बन्ध मे डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की एक टिप्पणी को यहा उद्धृत किया जा रहा है— प्राचीन मान्यता के अनुसार गधव स्त्री कामुक होते हैं और सहवास के लिए उत्सुक होकर सुन्दरी कुमारी कन्याओ पर आ जाते[5]। ऐसी कन्याए गधर्व गृहीता कही जाती थी। सोम, गधव और अग्नि कुमारी कन्या के य क्रमश तीन पति कह गए है (तुरीयस्त मनुष्यज) यह उक्ति दिव्य गधर्वो के विषय म चरिताथ है। देव गधर्वो के अतिरिक्त दूसरे मानुषी गधव होत ह जो नत्य गीत के अनुरागी एव स्त्री कामी होत हैं। यहाँ जायसी न स्त्रियां

१ मढी सवारि देख जौ भावा मढी न पावा बहु दिसि धावा।
धावत फिर न पाव वासा विधि यह पुन्मी क कविलासा॥
भूलि सुदामा ज्यों फिर न हसी धाव न रोइ।
भक्त फिर चहू दिसि गई मन्या खोइ॥
—चित्रावली छन्द १ ६।६ ७ और दोहा १०६

२ धनि साहब जहि दास दुख होत हिए मह पीर।
देवा भरत सुदामही हरत द्रौपदी चीर॥ —ज्ञानदीप छन्द ७७

३ कर्न सो गोडिया तुच्छ तन वहाँ विसम अस राउ।
बरी जो बस क मिल लेइ सो आपन दाउ॥
—चित्रावली प ११२ छन्द २६३।दोहा

४ पद्मावत ५६।दोहा ४

के प्रति गधवों के अनुराग की किंवदन्ती या लोकमान्यता के आधार पर कल्पना की है कि कुमारी कन्याओं के सुरभित यौवन में माना गंधर्व उनकी ओर आकृष्ट हो गए थे।[1]

गरुड़ का अपने पंखों से अमृत झाड़ना

प्रसिद्ध है कि गरुड़ जी अपने पंखों पर स्वर्ग से अमृत का घट रख कर लाये थे। अमृत की कुछ बूँदें उनके पंखों में लग गयी थी और उनके पंख हिलाने से अमृत झड़ता था।[2]

पदमावत में गरुड़ के पंखों से अमृत झड़ने का उल्लेख हुआ है।[3] गरुड़ के स्वर्ग से अमृत लाने की घटना पौराणिक है किन्तु उनके पंखों से अमृत झड़ने की बात लोकमानस की कल्पना की उपज जान पड़ती है। लोगों का यह विश्वास करने लगना स्वाभाविक ही था कि जब गरुड़ अपने पंखों पर अमृत का घड़ा रखकर लाये होंगे इन्द्र से उनका संघर्ष हुआ होगा तब अमृत की कुछ बूँदें उनके पंखों पर अवश्य छलक कर गिर गयी होंगी। वही बूँदें गरुड़ के पंख चालन के साथ झड़ती रहती हैं।

चन्द्रमा का राहु का ऋणी होना

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने पद्मावत संजीवनी टीका में लिखा है—पुराणों के अनुसार चन्द्रमा राहु का ऋणी है अतः राहु अपना ऋण माँगने के लिए उसे पकड़ लेता है और लोग उस समय दान देकर राहु का ऋण चुकाते हैं।[4] परन्तु हमें किसी भी पुराण में चन्द्रमा के राहु का ऋणी होने का उल्लेख नहीं मिला। पुराणों में राहु और चन्द्रमा की पारस्परिक शत्रुता और प्रतिशोध भावना का ही उल्लेख मिलता है।

'पदमावत' में[5] शशि और राहु में ऋणबधी (ऋणी और ऋणदाता के) सम्बन्ध का उल्लेख हुआ है। रतनसेन अपने को पद्मावती के साथ ऐसे ही सम्बन्ध में बँधा पाता है।

चन्द्रमा और राहु की शत्रुता—चन्द्रमा और सूर्य का राहु द्वारा ग्रसा जाना

सूफी प्रेमाख्यानों में चन्द्रमा और सूर्य के साथ राहु की शत्रुता का तो उल्लेख हुआ है परन्तु उस शत्रुता के कारण की ओर किसी भी प्रेमाख्यान में संकेत नहीं किया गया है।

---

१ पदमावत संजीवनी टीका टिप्पणी पृ० ६६ ७

२ वही संजीवनी टीका डॉ वासुदेवशरण अग्रवाल कृत द्वि स पृ० २७

३ पद्मावत २३४।दोहा २३

४ वही संजीवनी टीका डॉ वासुदेवशरण अग्रवाल द्वितीय स० टिप्पणी पृ १०८

५ वही ६६।६ ७

राहु द्वारा चन्द्रमा के ग्रस्त होने का वणन निम्नलिखित आठ रूपो म हुआ है

(१) चन्द्रमा मुख की उत्फुल्लता का और राहु उसकी खिन्नता या उदासी का उपमान है।

(२) चन्द्रमा नायिका के मुख का उपमान है और राहु नायिका की काली केश राशि का।

(३) चन्द्रग्रहण का तात्पय चन्द्रमा के गव को राहु द्वारा चूर चूर कर देना है। पूर्णिमा की रात जब चाँद को अपनी पूर्णता का गव होता है उसी रात उस पर ग्रहण लगता है और फिर वह छीजन लगता है।

(४) पूर्णिमा का चाँद यौवन का और राहु विरह का प्रतिरूप है।

(५) चन्द्रमा का राहु ग्रस्त होना उसके जीवन की ऐसी घटना है जिसने उसकी सारी प्रसन्नता छीन ली हो।

(६) चन्द्रमा शीतलता लाभ, सुख और मगल का तथा राहु दाह, अनिष्ट दुख और अमगल का प्रतीक।

(७) चन्द्रमा और राहु सौन्दय के उपमान हैं—चन्द्रमा मुख का और राहु मग-मद का।

(८) चन्द्रमा और राहु की परस्पर शत्रुता।

पहले प्रकार का वर्णन चदायन[1] 'पद्मावत[2] 'ज्ञानदीप[3] मे आया है। दूसरे[4] तीसरे[5] और चौथे[6] प्रकार के वर्णन 'पदमावत' म मिल जाते है। पाँचवें और छठे प्रकार के वणन पदमावत[7] 'चित्ररेखा'[8] 'चित्रावली[9] तथा 'ज्ञानदीप'[10] तीनो मे मिलत हैं। सातवें प्रकार का प्रयोग मधुमालती'[11] मे प्राप्त होता है और आठवें

१ चन्दायन (भूपाल प्रति) २५।१ (प० ला न) ४३१।१ ४३३।दोहा

२ पद्मावत १ १।३ ४

३ ज्ञानदीप छद १०१

४ पदमावत ६१।३ ११५।६

५ वही ८४।४

६ वही १७२ दोहा १८।५ २५७।१ २ ४२४।६

७ वही २८१।, ३४८।३ ३८६।६ ७

८ चित्ररेखा प ८८ चौ० ३ प ६७ चौ ३ प० १ ३।चौ १

९ रानी कहा बगि चलि जाहू लग न पाउ मधकहि राहू। —चित्रावली छद ५०७ चौ० १

१ रहहु भवन अपने होइ भारी भामिनि भागि ओ कंत पियारी।
अथवा सूर कवल कुम्हिलाने चन्द्र बदनु मुख राहु समाने ॥ —ज्ञानदीप प० १४ छद ३७
जाना अत जोग से काज काज न भाइहि राजा राज।
साद विमति करौं धंध दाहु ससिमद देउँ लेउ दुख राहु ॥ —वही छद ३३५

११ मधुमालती ८१।३

प्रकार के प्रयोग 'पदमावत'[1] तथा 'ज्ञानदीप'[2] में उपलब्ध होते हैं।

चन्द्रमा के साथ-साथ सूर्य पर भी राहु का ग्रहण लगने का उल्लेख 'पदमावत'[3] 'चित्ररेखा'[4] और 'अनुराग बाँसुरी'[5] और 'नल-दमन'[6] में आया है।

राहु और केतु दोनों का उल्लेख 'चंदायन'[7] 'पदमावत'[8] 'नल-दमन'[9] और 'यूसुफ जुलेखा'[10] में आता है।

चन्द्रमा का कलंकी होना (भाग्य के फेर से)

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में केवल 'पदमावत'[11] और 'चित्ररेखा'[12] में ही चन्द्रमा के कलंकी होने का उल्लेख मिलता है। इनमें चन्द्रमा का कलंक रहते प्रकाशमान होने, कलंक के कारण चन्द्रमा के लोक निंदित होने और उसके कलंक के अमिट होने का भाव व्यक्त हुआ है। चन्द्रमा को कलंक लगा क्यों इसका संकेत नहीं मिलता।

चन्द्रमा से रोहिणी का विवाह

जान कवि कृत 'कथा मोहिनी'[13] में ही यह प्रसंग उल्लिखित है किन्तु उसमें

---

१ पद्मावत २३३।१ ३०४।५
२ जग महं कठिन कलतिया डाहू अमिय चंद महं असे राहू। —ज्ञानदीप छंद १ १
छवउ राग मोहिउ कल माया पिय बिन बोल बोलावउँ काया।
चवहि राहु प्रचानक लावहुँ बिन बरिसे जल नगी बहावहुँ॥ —वही छंद १ ५
३ पद्मावत २४७।३ २५३।३ ३५।१ २ ३२।४ ५ ५३२। दो० ४३।७ ५७१। दो ४।२
६२५। दो ५।५
४ चित्ररेखा पृ ८६। दो ५
५ अनुरागबाँसुरी १।४
६ नल-दमन २४५।७ ८ २६८।८ २१३। दो ३२३।१ ३५८।३
७ चंदायन (प ला० म०) ३३।५ ६७। दोहा ३३४।१ २ सोरठा (मा प्र ग) ४।१५
८ पद्मावत ३६३।५ ७।१ २ ६ ८। दो ५१।३
९ तू निरखर मैं राहु हूं निस महँ धरयो दुराय।
काल केतु रथ टरि गए बहुरि उब मुख भाय॥
—नल दमन २६। दोहा
१० औ तामह गूंथ गज मोती राहु केत मह नखत के जोती।
—यूसुफ-जुलेखा (हि प्रे० का का० संग्रह) पृ ५५६ पंक्ति ४
अब माथे गंध गज मोती राहु केत मानों चंद के जोता।
—वही पृ० ३६८ पंक्ति १
माँग सोहावन सुख भरे भाग अधिक तह दी ह।
राहु केत दुओ दम तहाँ रब कि किरन ग्रस की ह। —वही पृ ३६८ पंक्ति १ ११
११ पदमावत २१।१ २ १०१।३ ३३२।७
१२ चित्ररेखा ८६।५
१३ ब्याह दई रति मैन कौं किधौं रोहिनी चंद।
—कथा मोहिनी (हस्तलिखित) पत्र ४, चौ० ११५

भी चद्रमा व रोहिणी के विवाह का ही उल्लेख है, उम पर चद्रमा की विशेष अनुरक्ति तथा दक्ष के शाप का कोई सकेत नही किया गया है।

जलमेदव (जनमेद)—जनमेजय ?—का वर्जित काय करके पछताना

'मगावती'[1] में राजकुवर मगावती के मना कर जान पर भी कठघरे में बन्द राक्षस को मुक्त कर देता है और वह राक्षस उसे आकाश मे ले उडता है। उस समय राजकुवर की पश्चात्तापपूर्ण मन स्थिति की तुलना जनमेजय की मन स्थिति स की गयी है क्योंकि जनमेजय ने भी ऋत्विजों के समझाने पर कान न देकर उनके द्वारा वर्जित काय किया और ऐसा ही मनस्ताप भोगा था।

जलमेदव (जनमेजय ?) द्वारा नागयज्ञ मे सर्पों का विनाश करना—परीक्षित की मृत्यु का बदला लेना

सूफी प्रेमाख्यानो म अकेले मगावती[2] म एक स्थल पर जनमेजय द्वारा अपने पिता परीक्षित का प्रतिशोध लेन क लिए सप यज्ञ का आयोजन करन और उसकी आग म सर्पों को भस्म करन का आलकारिक प्रयोग हुआ है।

जलमधर (जनमेजय ?) को भगवान् द्वारा कुएँ से उबारा जाना

इस कथा का कोई पौराणिक आधार नही है। कदाचित जनमेजय क सम्बन्ध म प्रचलित कोई लोक-कथा इसका आधार रही है। आलधराख्यान म भी ऐसा प्रसग हमारी दृष्टि म नहा आया।

सूफी प्रेमाख्याना में म केवल मगावती म तीन-दुखियो को उबारन के भगवान के माहात्म्य वणन क प्रसग म इसका आलकारिक उल्लेख किया गया है।

दुर्योधन का पाण्डवो से छल करना

सूफी प्रमाख्यानक काव्य हस जवाहिर[3] म पाण्डवो के साथ दुर्योधन के छल करन का सकेत मात्र किया गया है और इसका आलकारिक प्रयोग हुआ है।

द्रौपदी का भाण्डार अखूट होना

पद्मावत[4] म द्रौपदी के भाडार के अखूट होने का उल्लेख सिहलगढ की नीर-क्षीर नामक दो नदियो क सदा भरे रहने के प्रसग म केवल एक स्थल पर हुआ है।

---

१ मगावती २ ०।२
२ वही २४७।२४
३ वही २३६।२४
४ जस छल दुरजन कर किया तस भये सुल्तान।
गौनचार का पूछियो जान चहत है शान। —हस-जवाहिर पृ० १०३ दोहा २८२
५ पदमावत ४३।१

द्रौपदी का दुःशासन द्वारा सताया जाना—चीर-हरण का प्रयास—द्रौपदी का कृष्ण को गुहारना—कृष्ण द्वारा द्रौपदी का चीर बढ़ाया जाना

ज्ञानदीप[1] और नल-दमन[2] में दुःशासन द्वारा द्रौपदी को सताने, द्रौपदी का चीरहरण करने, द्रौपदी की गुहार सुनकर कृष्ण का सहायता के लिए उपस्थित होने का क्रमशः शास्त्रीय और आलंकारिक प्रयोग हुआ है। ज्ञानदीप में दुःशासन का उल्लेख नहीं आता पर नल-दमन में आता है। भगवान की अपने भक्तों पर कृपा के उदाहरण के रूप में इस घटना को दोनों काव्यों में प्रस्तुत किया गया है।

नल-दमयती की कथा (नल-दमयती का हंस द्वारा मिलाया जाना—नल-दमयती का विछोह—नल का दमयती के विरह में संतप्त होना—नल पर विपत्ति पड़ना—नल-दमयती का पुनर्मिलन)

नल-दमयंती प्रेमाख्यान के आधार पर हिन्दी के दो सूफी कवियों सूरदास लखनवी और जान कवि क्रमशः नल-दमन और कथा नल दमयंती काव्य की रचना कर चुके हैं किन्तु हिन्दी के अन्य सूफी प्रेमाख्यानों में भी नल-दमयंती आख्यान के विविध प्रसंगों के प्रतीकात्मक, आलंकारिक और दार्शनिक प्रयोग हुए हैं। यहाँ उन्हीं पर समग्र रूप से दृष्टिपात किया जाएगा।

इस आख्यान के विविध प्रयोगों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—(१) नल-दमयंती का हंस द्वारा मिलाना (प्रथम मिलन) (२) नल-दमयंती का परस्पर वियोग (३) नल पर विपत्ति पड़ना और (४) नल-दमयंती का पुनर्मिलन। प्रथम वर्ग के प्रयोग, जिनका वास्तविक तात्पर्य हंस द्वारा दूतत्व करके नल का संदेश नल के पास पहुँचाने से है, मृगावती[3] पद्मावत[4] माधवानल कामकंदला[5] और

---

१ छनि साहेब जेहि दास दुख देख हिए महँ पीर।
दिया बसन दुस्सासनहि हरत द्रौपदी चीर। —ज्ञानदीप छं० ७७

२ देखी सांसु कहे हम नंगी बन सहाई करा दारुन।
विरह दुसासन के बस माई भजन करु हरि होइ सहाई॥ —नल-दमन १६१।२

३ मृगावती १५६।दोहा

४ पद्मावत २५५।७

५ माधोनल सो कहा बुझाई सो मैं अपनी पीर सुनाई।
विनवत हौं सब कथा रसाई विरह तपन सो लेहु छुड़ाई॥
सो उपकार करो मन माहीं दमवनी जिमि नलहिं मिलाई। (पत्र ३६)
× × ×
माधानल जु कंदला मिलो मिले मन दुहु मन बुंदलो।
मिले दल नर नारी सब पावा मिले ज्यों आजा आदि मिलावा॥
राजा नल रानी दमवंती राम चंद सो सिया सामंती।
माधव मिलो कामकंदला आनंद बड़ो सबतन भला॥ (पत्र ४५)
—माधवानल-कामकंदला (हि० प्र० मा० का सं०) पृ० २३१ १०८
तथा वहाँ हस्तलेख (ना० प्र० सभा की छोटी प्रति) पत्र ३६ और पत्र ४५

'चित्ररेखा'[1] में मिलते हैं। द्वितीय वर्ग के प्रयोग 'पदमावत',[2] 'मधुमालती'[3] 'माधवानल कामकन्दला'[4] और 'हंस जवाहिर'[5] में प्राप्त हुए हैं। तृतीय वर्ग का एक स्थल पर प्रयोग 'मृगावती'[6] में मिला है। चतुर्थ वर्ग के प्रयोग 'मृगावती'[7] 'माधवानल-कामकन्दला'[8] में हुए हैं। कथा विकास की दृष्टि से इनमें कोई नवीन बात नहीं मिली। नल दमयन्ती के आख्यान का उपयुक्त काव्यों में विछोह के बाद नायक-नायिका के अवश्यम्भावी पुनर्मिलन के रूप में ग्रहण किया गया है।

नागों का पाताल-लोक में वास

नागों के पाताल लोक में निवास करने का उल्लेख 'मधुमालती'[9] में आलंकारिक रूप में आया है।

नारद-मोह की कथा (नारद का त्रिया के फेर में पड़कर यश खोना)

'हंस जवाहिर'[10] में नारद का त्रिया के कहने में पड़कर यश खोने का दृष्टान्त-रूप में प्रयोग हुआ है। शब्द परी कामाख्या देवी का रूप धारण कर राजा महीपति से कहती है कि हंस का दोष नहीं है सारा दोष तुम्हारी लड़की का है। उसने त्रिया-चरित्र किया है। त्रिया के फेर में पड़कर कैसे बड़े-बड़े लोग भी अपयश के भागी होते

---

१ रूपा गीव जस अनुरुध मीला राए दुवत जस कुन्ता कीला।
राजा नल जैव दामावती समर कत घोर सुभर कती॥
—चित्ररेखा पृ० ५९ छंद १६४ और—

दुलहिनि सिर पर मोहै मौरी लोग ठग बन पाइ ठगौरी।
मना हंस दमयंती सीमा राजा नल की देत असीमा॥ —वही पृ० ६२ छंद २५७

२ पद्मावत २००।६ ७ ४१७।७

३ मधुमालती २१५

४ माधवानल-कामकंदला (हि० प्र० गा० का० संग्रह) मंदिर प० २०० प० २५ पृ० २०८ प० १६ राजा नल पथिवी मौ मयऊ निहि विछोह दमयनी भयऊ। पृ० २१४ प० १

५ दोयों राम रहत नल रोई तोहि अस गुरु मिला नहिं कोई।
—हंस-जवाहिर पृ० २१२ छंद ५८३ चौ० ५

६ मृगावती १३२।४५

७ वही १७१।२ २४३।२ दिल्ली वाला हस्तलिखित प्रति में जिसकी प्रतिलिपि श्री उदयशंकर शास्त्री के सौजन्य से हमें अवलोकनार्थ प्राप्त हुई उसके २०५वें छन्द की ये पंक्तियाँ भी देखिए

मिरगावत सुनि चित रहसाई काँमा जाम माधवानल थाई।
बिहमा नाउ सनन मिरगावत नल जान भैं। दामावत॥

८ माधवानल कामकन्दला मंदिर (हि० प्र० गा० का० सं०) पृ० २२४ प० २५ २६

९ मधुमालती १ १।दोहा

१० तिरिया मते कौन नहिं भयो केहि घर कान नार मन भयो।
माउ पिता जो जगत कर छोड़ दीन्ह कैलास।
लीने तिरिया के मते नारद मिटा भवास॥
—हंस-जवाहिर पृ० १५६ छंद ४३९ चौ० ७ और दोहा

है। इसका एक उदाहरण नारद जी हैं। श्रीमती (कहीं-कहीं दमयंती नाम की स्त्री) के प्रेम में पड़कर नारद का पर्वत ऋषि के साथ स्पर्धा करने और विष्णु से हरिमुख (मर्कटमुख) होने का वरदान पाने और हास्यास्पद बनने की कथा पुराणों में¹ आयी है जो 'नारद मोह' कथा के नाम से प्रसिद्ध है। हंस जवाहिर में इस कथा का आरोप हो सकता है।

प्रह्लाद का आग में जलाया जाना पर उसका न जलना—
नरसिंहावतार लेकर विष्णु द्वारा हिरण्यकश्यपु का वध—
हिरण्यकश्यपु का लालच के कारण पकड़ा जाना

ज्ञानदीप² में प्रह्लाद को अग्नि में जलाने और उसमें से स्वयं बच निकलने का उल्लेख आया है। यह बचना ईश्वर कृपा से नहीं वरन इसलिए कि जिसकी आयु होती है उसे कोई कितनी भी चेष्टा करे नहीं मार सकता। ज्ञानदीप³ में हिरण्यकश्यपु वध को एक प्रभावपूर्ण घटना के रूप में चित्रित किया गया है। चित्रावली⁴ में लालच के वशीभूत होकर हिरण्यकश्यपु का बन्दी होना कहा है। यह स्पष्ट नहीं है कि हिरण्यकश्यपु ने कौन-सा लालच किया जिसके कारण उसे बन्दी होना पड़ा। पुराणों में ऐसा कोई प्रसंग उपलब्ध नहीं होता।

परशुराम द्वारा सहस्रबाहु (सहस्रार्जुन) तथा
अन्य क्षत्रियों का सर्वनाश करना

पद्मावत⁵ में सहस्रबाहु का परशु (परशुराम के परशु) से मारा जाना उल्लिखित है। परशुराम ने सहस्रबाहु को क्यों मारा इसका कोई संकेत नहीं है।

पाण्डवों का कबिरा दानव द्वारा हरा जाना—भीम द्वारा बचाया जाना

कबीर या कबिरा दानव द्वारा पाण्डवों के हरने की कथा हमें न तो

---

१ शिवपुराण रुद्रसंहिता सृष्टि खंड अ० २-४, देवी भागवत पुराण ६।२६-२७, भविष्यपुराण उत्तरार्द्ध अ० ३, ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखंड ८-२१, लिंग पुराण उत्तरार्द्ध

२ प्रह्लाद राम निराम न कोई। पावक सहित मुआ नहिं सोई।
जरा न हि नहि अगिनि सो जारा। राखइ जाहि ताहि को मारा॥
—ज्ञानदीप छन्द २५

३ छाँड़ि ध्यान धनकर तुव मन धाइ धरो धीरज दस मन।
रावन होइ राम होइ नासो कोप जबहिं कौतुक विधि साधी।
होइ नरसिंह हनो हरिनाकस हनीवत जस तिन हनो रिपि रावस।
—वही छन्द १२४

४ लालच बाँधा सब संसारा। लालच सो सदु होइ पसारा।
लालच हुता कर बल हारा लालच सों हरनाकुस हारा॥
—चित्रावली पृ० १३२ छन्द ४२।६-७

५ पद्मावत ५।२१४

महाभारत में मिली, न किसी पुराण में। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में केवल 'मृगावती' में इस कथा का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। उसमें एक स्थल[1] पर पाण्डवों के कबीर दानव द्वारा हरे जाने और भीम द्वारा उन्हें उसके चंगुल से छुड़ाये जाने का उल्लेख है और दूसरे स्थल[2] पर केवल युधिष्ठिर के हरे जाने का। वहाँ भीम के उद्धारकर्ता होने का उल्लेख नहीं है। विपत्ति में भाई कितना सहायक होता है इसका उदाहरण देने के लिए इस कथा का उल्लेख हुआ है।

पाण्डवों का बंदी-गृह (लाक्षागृह) में डाला जाना—भीम द्वारा उनके प्राण बचाना

पाण्डवों के बंदीगृह में पड़ने अर्थात् लाक्षागृह में उनके नजरबन्द रखे जाने की घटना सांकेतिक रूप में 'पदमावत'[3] में उल्लिखित है। परन्तु उसी काव्य में अन्यत्र[4] लाक्षागृह में आग लगने और उसमें से भीम द्वारा साहसपूर्वक अपने भाइयों को बचा लेने का स्पष्ट उल्लेख है। यहाँ यह घटना एक साहसिक कृत्य का उदाहरण बनकर आयी है।

पाण्डवों की कौरवों पर विजय—एक सिद्ध योगी की सहायता से

हंस जवाहिर[5] में तपस्वियों की महिमा का बखान करते हुए कहा गया है कि पाण्डव महाभारत युद्ध में एक सिद्ध योगी की सहायता से ही विजयी हो सके। सिद्ध योगी से तात्पर्य योगिराज श्रीकृष्ण से जान पड़ता है।

पाण्डवों द्वारा अपना कर्म-फल भोगना

भाग्य में जैसा लिखा होता है उसको भोगना पड़ता है इस लोक विश्वास को उदाहृत करने के लिए 'माधवानल कामकंदला'[6] (आलम) में पाण्डवों द्वारा अपने कर्म-फल का भोग करने का उल्लेख आया है।

बलि का तीन पग पृथ्वी देने को वचनबद्ध हो जाना—अपना सर्वस्व दान कर देना—विष्णु द्वारा बलि का छला जाना—बंदी बनाकर पाताल में रहने को भेजा जाना

मृगावती, पद्मावत, 'चित्रावली और ज्ञानदीप में बलि वामन की कथा

---

१ मृगावती १३६।१२ (दिल्लीवाली हस्तलिखित प्रति में यह छंद १७१।१ है)

२ वही २३६।४ ५

३ पदमावत ५७६।७

४ वही ६११।दोहा ५१।५

५ सिद्ध सहाय पाण्डवन जीता सिद्ध श्राप परली हुइ माता।

—हंस-जवाहिर पृ० १५७ छंद ४ १ चौ० ५

६ कर्म हेत हरिचंद जल भरा, कर्म हेत बलि सर्वसु हरा।
कर्म हेत पांडव फल खाये कर्म हेत रघुपति बन आये ॥

—माधवानल-कामकंदला (हिन्दी प्रेमगाथा काव्य-संग्रह) पृ० १६६ पंक्ति १३ १४

आयी है परन्तु इस पौराणिक कथा के सब प्रमुख तन्तु उनमें नहीं उभर पाये हैं। 'मृगावती' में बलि को वामन द्वारा बाँधकर (नागपाश बद्ध करके) पाताल में भेजे जाने का और वहाँ से उसके बस भी न निकल पाने का आलंकारिक प्रयोग हुआ है।[1] बलि को बंदी बनाकर पाताल भेज जाने का उल्लेख आलंकारिक रूप में ही 'पदमावत' में भी हुआ है परन्तु उसमें एक स्थान पर तो वामन का उल्लेख आया है और अन्य तीन स्थानों पर[2] नहीं आया है। 'पदमावत' में अन्यत्र विष्णु[3] की जगह कृष्ण का उल्लेख करके उनके द्वारा बलि को छले जाने का उल्लेख हुआ है।[4] 'चित्रावली' में भगवान द्वारा बलि को पाताल में रहने के लिए भेजने की बात तो लिखी है ही[5] साथ ही शाहेवक्त जहाँगीर की दानशीलता की प्रशंसा करते हुए प्रकारान्तर से बलि की दानशीलता की ओर भी संकेत कर लिया गया है। जहाँगीर को इतना अधिक दानी बताया है कि यदि आज बलि भी होता तो वह उसके सामने दान माँगने के लिए पहुँच जाता।[6] बलि की दानशीलता को उपमान के रूप में अन्य कई स्थलों पर प्रयोग किया गया है।[7] 'ज्ञानदीप'[8] में बलि के बाँधे जाने का ही उल्लेख है।[8]

बलि द्वारा समुद्र मथन करना

सूफी प्रेमाख्यानक काव्य 'मृगावती' में केवल एक स्थल पर[9] बलि द्वारा सागर

---

१ मृगावती २४७।१२

२ पदमावत ३४१।४

३ वही २६५।८ ५७६।दोहा ४७ ६१४।दोहा ५२

४ वही ५४ ।दोहा ४६

५ जहाँ जहाँ पवन सब देसा बाजि चरन कीन्हँ यहि सेसा।
हेठ जाइ बलि बासुकि चाँपा ऊपर हरि सुरपति पुनि कोपा॥ —चित्रावली १४।४५
तुम्हीं पताल की ह बलि बासू तवनि और सब तार दासू। —वही १०।५७

६ एकहिं कर एक कहु देई दूसरि कर न कोऊ लेई।
जिरवी बली होत जो आजू माँगत देखि दान कर साजू॥ —वही २ ।१४

७ मृगावती ४।४ पदमावत १७।२ मधुमालती १३। ४ और—
छनि कुरंग जिनि राग सुनि रीझिन राख प्रान।
कन करन बलि बिक्रमा दियो न एसो दान॥
धारा भोज लच्छ जिनि दीनो करन कन बलि बिक्रम कीनो।
—माधवानल-कामकंदला (हि प्र सा० का० स) पृ १६५ प० ६८
कम हेत हरिचन्द जल भरा कम हेत बलि सबसु हरा।
—वही पृ० १६६ प० १३१४

तथा—
दान निसान चहू चक बाजा करन कुबेर कन बलि लाजा।
—चित्रावली ४ ।३ (नपाल के राजा धरणीधर की प्रशंसा में)
तपह नहा धर्म सगीता सत हरिचन्द दान बलि जीता। —वही ४२।१

८ ज्ञानदीप छन्द २६२

९ मृगावती ३७६।५

मथन करन का दाष्टान्तिक प्रयाग मिलता है। बलि दत्यराज था समुद्र मथन क्रिया में देवो के साथ दत्यो ने भी भाग लिया था इसलिए बलि द्वारा समुद्र मथन किय जान की बात कही गयी है। प्रजा की उपलब्धियो का श्रेय राजा को सनिकों की सूरता और सफलता का श्रेय सेनापति को तो मिलता ही है।

भगीरथ द्वारा गगा को पृथ्वी पर लाकर अपने पितरो को तारना

भगीरथ द्वारा गगा-आनयन के प्रसग को सूफी काव्यो म भगीरथ की पितकुल सवा क रूप म स्मरण किया गया है। पुत्र का होना पितकुल के उद्धार क लिए बहुत आव यक है और पिता की सारी अभिल षाओ की पूर्ति पुत्र द्वारा ही होती है, इस बात का उदाहृत करन के लिए 'चदायन'[1] 'चित्ररखा'[2] तथा नल दमन[3] म इस कथा का आलकारिक एव दार्ष्टा तिक प्रयोग किया गया है।

वालि द्वारा परस्त्री-हरण और उसके कुपरिणाम

केवल ज्ञानदीप म इस कथा प्रसग का दष्टा त रूप म उल्लेख हुआ है। पर स्त्री हरण का कुपरिणाम रावण और बालि दोनो को भोगना पडा।[4]

भीम द्वारा कीचक वध

मगावती तथा ज्ञानदीप म इस घटना का सकेत दिया गया है। मगावती[5] म मानसरोदक तट पर निर्मित राजकुवर के महल की भित्तिया पर उरेहे गय चित्रो म एक कीचक वध का भी चित्र होन का उल्लेख है। ज्ञानदीप[6] म इस युक्तिपूवक काय करन का उदाहरण बताया गया है। सुरज्ञानी कुवर ज्ञानदीप से कहती है कि जिस तरह भीम ने युक्तिपूवक कीचक को मारा उसी तरह तुम भी युक्तिपूवक मेरे, कागज के घोडे को पकडो।

भीम का कुम्भकण की खोपडी मे डूबना

कुम्भकण की खोपडी म भीम के डूबन की घटना का कोई उल्लेख 'महाभारत

---

१ चदायन (प मा० गुप्त) २४५।१

२ चित्ररेखा प ६४ चौ० २

३ भागीरथ गगा ल आवा किन किन काज पूत नहिं आवा।
पुरुखहि सौं पूजहि सब स्वारथ पुत न होई तो जनम अकारथ॥
—नल-दमन ९०।१० ११—

४ परदारा पर जइ चित लावा असी जगति कुगति तेन पावा।
राम धरनि जो रावन हरी एही जगति बिपति ओहि परी॥
बारि (= बालि) जो नारि पराई लीन्हा कहु बिधन कइसो गति कीना॥
—ज्ञानदीप छद ४४४

५ मगावती २७।१

६ छोडि ध्यान मन कर दुख सुने धाइ धरो धीरज दस गने।
रावन होइ राम होइ बाजो भीम जगति कीचक बिधि साधो॥ —ज्ञानदीप छद १२४

राक्षसों की दिशा दक्षिण में होना

दक्षिण दिशा को राक्षसों से संयुक्त करने का एक उदाहरण मधुमालती[1] में मिलता है।

राम-कथा के विविध प्रसंग

किसी भी सूफी प्रेमाख्यानक काव्य में राम-कथा सश्लिष्ट रूप में नहीं मिलती। अलग अलग काव्यों में राम-कथा के अलग-अलग अंश बिखरे मिलते हैं। सब सौलियों को यदि एकत्र कर लिया जाय तो उनसे राम-कथा का एक ढाँचा बनाया जा सकता है। चंदायन, 'मृगावती, पदमावत चित्ररेखा' मधुमालती माधवानल कामकंदला, चित्रावली ज्ञानदीप कथा-कवलावती कथा रतनमंजरी कथा छीता कथा कनकावती नल-दमन 'हंस जवाहिर इन्द्रावती अनुराग बाँसुरी और यूसुफ जुलेखा में राम कथा के विविध अंशों का प्रतीक अलंकार दृष्टांत अथवा उपमा– किसी न किसी रूप में प्रयोग हुआ है। इस सम्बन्ध में पहले चर्चा हो चुकी है। चित्ररेखा कथा कवलावती कथा रतनमंजरी कथा छीता कथा कनकावती नल-दमन तथा यूसुफ जुलेखा को छोड़कर अन्य काव्यों में राम-कथा के विविध पात्रों का भी किसी न किसी रूप में उल्लेख किया गया है।

राम कथा के जिन अंशों का सूफी काव्यों में प्रयोग है उन पर घटना क्रम की दृष्टि से नीचे चर्चा की जा रही है—

सीता (पृथ्वी-सुता) का जनक द्वारा पालित होना

शेख नबी ने ज्ञानदीप[2] में सीता के पृथ्वी सुता होने का उल्लेख किया है किन्तु उनको अयोनिजा बताने के लिए नहीं वरन् लोक व्यवहार के इस सत्य की ओर संकेत करने के लिए कि पालित पुत्र या पुत्री को लोग पालक माता पिता के नाम से नहीं, अपितु जनक माता पिता के नाम से ही अभिहित करते हैं। सीता को पाला जनक ने परन्तु वे जनक सुता न कहलाकर पृथ्वी सुता' ही कहलायीं। 'ज्ञानदीप में रायभान ने कुंवर ज्ञानदीप को पाला-पोसा किन्तु योगी सिद्धनाथ ने जब उसे उसके असली पिता राय शिरोमणि को दिलाना चाहा तब रायभान ने सीता का दृष्टांत दिया।

सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव धनुष को तोड़ना

जायसी ने पदमावत[3] में इस प्रसंग का आलंकारिक रूप में उल्लेख किया

---

१ मधुमालती २६२।१

२ करत पहसुत कदरी पाला पहुमी सुता जिहा जनक भपाला।
नन्द महर बसुदेव सुत लीन्हा चाकर नाँव ठाँउ केइ लीन्हा॥ —ज्ञानदीप छन्द २१७

३ पदमावत १ २।१४

है। जिस शिव धनुष को राम ने सीता-स्वयवर के समय तोड़ा वह धनुष पदमावती की भौहो के समान ही वक्र था। शिव धनुष की असाधारणता के साथ पद्मावती की असाधारण भौंहें तुलनीय हो गयी हैं।

राम और सीता का आदश दाम्पत्य प्रेम, राम मे सीता की अनुरक्ति और सीता का सतीत्व

'मगावती,'[1] 'चित्रावली'[2] और 'इन्द्रावती'[3] म सीता का उल्लेख सती स्त्री और पति म अनुराग रखनेवाली आदश पत्नी के रूप मे किया गया है तथा राम का उल्लख आदश पति के रूप म, यहाँ तक कि राम और सीता परस्पर अनुराग रखने वाले दम्पति के उपमान और प्रतीक तक बन गय हैं। 'पदमावत'[4] म भी एसा ही प्रयाग है।

राम का राज्याभिषेक

'मगावती'[5] मे दशरथ द्वारा राम का राज्याभिषेक करने की घटना का उल्लेख आलकारिक रूप म हुआ है। राजा दशरथ यद्यपि राम का राज्याभिषेक नहीं कर पाय तथापि यह घटना ज्येष्ठ पुत्र के वयस्क हो जान पर उसको सारा उत्तरदायित्व सौंप कर पिता का अपन को बरी कर लेन का उपमान तो बन ही गइ। मृगावती म राजकुवर कचनपुर से मगावती को लेकर चलन समय अपने ज्येष्ठ पुत्र रायभान का राज्य सौंप आता है। इस प्रसग की तुलना दशरथ द्वारा राम का राज्याभिषेक करन की घटना स हुई है।

राम के बिना अयोध्या सूनी (राम वन-गमन)

राम जब अयोध्या को छोडकर वन चल दिय, तब अयोध्या उनके बिना सूनी हो गई। इस दशा का आलकारिक प्रयोग इन्द्रावती[6] म हुआ है। सुखदव मिश्र हसराज स कहता है कि जब स तुम जगतपुर को छोड आए हो, तब से वह वसे ही सूना हो गया है जस राम के चले जान पर अयोध्या सूनी हो गई थी।

---

१ मगावती १७७।२

२ जो तुम होव विदेसी राजा इहवा मोर कौन अब काजा।
पाछें महादुख पुनि कीता जहवा राम तहाँ पुनि सीता॥ —चित्रावली ४६१।६७

३ कालिजर मों धन सुदरी पिय वियोग की पावक जही।
प्रीतम राम लाग वह सीता दुख्ल पीत भई जम पीता॥
—इन्द्रावती (उत्तराद्ध) हस्तलिखित प० २७१

४ पद्मावत १३१।४

५ मृगावती ३०६।४५

६ जस भा अवध राम बिन सूना तस भा सून भयउ दुख दूना।
गोकुल सून किस्न बिनु जसें जगतपूर सूना है तसें।
—इन्द्रावती (उत्तराद्ध) हस्तलिखित प० १६३

दशरथ का पुत्र वियोग में प्राण देना

राजा दशरथ ने राम के वन चले जाने पर तत्क्षण अपने प्राण त्याग दिए थे। यह घटना पुत्र के प्रति पिता के मोह या प्रेम की उत्कटता का उदाहरण बन गई। मृगावती[1] में इस प्रसंग का आलंकारिक उपयोग हुआ है। राजकुंवर के जोगी बन जाने पर उसका पिता भी राजा दशरथ की तरह ही पुत्र वियोग में प्राण त्याग करने का उद्यत है।

राम का सीता के हठ के कारण उनको वन में ले जाना—सीता का वन में प्रियतम के साथ रहकर घर का-सा सुख मानना—राम का अपने कर्म-फल के कारण वन जाना

सीता राम के साथ हठपूर्वक वन गयी परन्तु उनका हठ उनके लिए हितकर सिद्ध न हुआ। वे वन में न गई होतीं तो रावण द्वारा उनका हरण क्योंकर होता और क्यों होता राम रावण का भीषण युद्ध, क्या राम को दर दर की ठोकरें खानी पड़तीं, क्या उन्हें बन्दर भालुओं से मित्रता करनी पड़ती और क्या सीता को लांछित होकर पति से परित्यक्त होना पड़ता? लोक मानस को रामावतार के दैवी उद्देश्य से कोई प्रयोजन नहीं। सीता वन न गई होतीं तो रावण ने उनका हरण न किया होता रावण से राम की शत्रुता न हुई होती और राम ने रावण को मारकर उसके अन्याय-अत्याचार से देवता-ब्राह्मणों को मुक्त न किया होता—इसी महत्कार्य के लिए तो देवताओं के अनुरोध पर विष्णु ने दशरथ का पुत्र बनकर मनुष्य जन्म लेना स्वीकार किया था। यह इस घटना का पौराणिक पक्ष है किंतु लोक-मानस अवतारी पुरुषों के चरित्र में भी अपने लिए साधारणीकरण की सामग्री ढूंढता है। उसकी दृष्टि में *राम भगवान ही नहीं साधारण पति भी हैं और सीता जगज्जननी लक्ष्मी अथवा* योगमाया या शक्ति रूपा ही न होकर एक सामान्य पत्नी भी हैं जिन्हें कुलवधू की तरह सास ससुर की सेवा करते हुए परिजनों के मध्य रहना चाहिए था। नारी का हठ तो प्रसिद्ध ही है पर सर्वत्र यह अनिष्टकर भी होता है। सीता का वन जाने का हठ इसी का एक उदाहरण है। पर लोकमानस में इस घटना का दूसरा पक्ष भी है कि पत्नी के लिए वहीं स्वर्ग है जहाँ उसका पति है। राम का होने तो जा रहा था राज्याभिषेक और हो गया वनवास! इसे लोकमानस कर्म फल न माने तो क्या माने? दैव-दुर्विपाक के कारण ऐसे उलट फेर भी तो जीवन में दिखाई देते हैं!

इन भावनाओं की अभिव्यक्ति राम-कथा के इन प्रसंगों का उपयोग करते हुए जायसी ने पदमावत[2] आलम ने माधवानल कामकंदला[3] उसमान ने

१ मृगावती ६६।१२
२ पदमावत १३२।१२
३ कर्म हेत हरिचंद जल भरा कर्म हेत बलि बंधन हरा।
कर्म हेत पांडव फल खाये कर्म हेत रघुपति वन धाये॥
—माधवानल-कामकंदला (हिं० प्रे० मा० का० सं०) पृ० १६६ पंक्ति १३ १४

चित्रावली''[1] और नूरमुहम्मद ने इन्द्रावती'[2] में की है। पदमावत म नागमती जब रतनसेन के साथ सिहल-यात्रा पर चलने के लिए आग्रह करती है तब रतनसन यह कहकर उसका मुह बन्द कर देता है कि राम ने सीता के हठ करने पर उसको साथ लिया तो उन्हें क्या सुख मिला ? रावण द्वारा सीता हरी गई और अनेक झमेलो म उन्हें पडना पडा। चित्रावली म भी कुवर सुजान कौलावती को साथ चलने के लिए मना करता है क्योंकि राम और सीता का इसी कारण जन्म भर का विछोह हो गया। इन्द्रावती' म ऐसी ही बात हसराज अपनी पत्नी चन्द्रवदन से कहता है, जब वह उसके साथ चलने का हठ करती है। हसराज उसे समझाता है कि दूर देश म स्त्री को साथ लेकर जाना ठीक नही। राम न जानकी को अपने साथ लिया था तो देखा उन्हें रावण न किस प्रकार छला। माधवानल कामकदला' म जब माधवानल को काममेन अपन राज्य से निकाल देता है तब माधव इसमे अपने भाग्य का ही फेर देखता है। राम को भी तो कर्मफलाधीन ही राज-सुख छोडकर वन जाना पडा था।

वन मे सीता द्वारा जोगी-वेशधारी रावण को भिक्षा देना

पदमावत[3] मे सीता द्वारा रावण को भीख देने की घटना का उल्लेख दृष्टान्त रूप म आता है। जब सुहागरात म पदमावती रतनसेन के जोगी वेश और भिखारीपन पर कटाक्ष करती है तब रतनसेन कहता है कि जोगी—भले ही वह कपटी क्यो न हो—रावण का तो सीता न भी भीख दी थी। क्या तुम अपनी प्रेम भिक्षा मुझे न दोगी ?

वन मे रावण द्वारा सीता का हरण—राम सीता के वियोग मे आकुल

रावण द्वारा सीता के हरे जाने की घटना का उल्लेख 'चदायन'[4] 'मगावती'[5]

---

१ धौ पुनि बरनि कहै सब कोई बरहि सभार बरनी सोई।
राघव औ लागि सग सीता बिछुरै बनम दुख सब बीता॥ —चित्रावली ४७२।३ ४

२ है प्यारी मन प्रीतम पासा पिय सग लीन्ह सिया बनवासा।
पिय को साथ न छाडउ सीता जो दुख बीत कन्त लिग बीता॥
—इन्द्रावती (मुद्रित) पूर्वार्द्ध छन्द २७।१ २
जब बनवास राम कह भयेऊ सीता सती मोहेन बन गयेऊ।
सन्त नरक भा पिउ बछुरावें बन बकुण्ठ भयेउ तेहि जातें॥
—वही (मुद्रित) पूर्वार्द्ध छन्द २८।१ २
दूर देस मैं करउ पयाना भलो न होइ नारि ल जाना।
राम जानकी कह सग लीन्हा रावन देखु कवन छल कीन्हा॥
—वही (हस्तलिखित) उत्तरार्द्ध पृ० १००

३ पद्मावत ३०७।७

४ चन्दायन (भूपाल प्रति—सपादक वि० प्र०) पृ० ५७ छन्द ३७

५ मगावती ६१।दोहा २४०

पद्मावत',[1] नल-दमन[2] 'चित्रावली'[3] और कथा छीता[4] में आया है। इनमें सीता हरण की घटना को मुख्यतः प्रतिनायक या किसी दुष्ट द्वारा नायक से नायिका को वियुक्त कर देने के उपमान के रूप में ग्रहण किया गया है। इसमें कोई नई उद्भावना नहीं दृष्टिगत होती।

सीता से वियोग हो जाने पर राम का विलाप करना

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों के नायक-नायिकाओं का एक बार मिलन हो जाने के बाद जब विछोह हुआ है तब राम सीता के वियोग-दुःख में उन्हें अपने दुःख का सादृश्य मिला है और उनके विलाप के लिए विरही राम का विलाप कवियों को उपयुक्त उपमान के रूप में सूझा है। ऐसे प्रयोग चंदायन[5] मृगावती',[6] 'पद्मावत',[7] 'माधवानल-कामकंदला'[8] 'चित्रावली'[9] तथा 'कथा छीता'[10] में किये गये हैं। सबमें नायक का नायिका से वियोग होने पर दुःखी, संतप्त होना और विलाप करना वर्णित है।

---

१ पदमावत ४०२।६-७ ४१३।३ ६

२ धन सीता पिउ राम मन बिछुर भयौ सजोग।
दोऊ मानन्दित मदन रावन हुना बियोग ॥ —नल-दमन ३३६।दोहा

३ मृगहुन सकल महुन की करी धन सीता रावन केहि हरी।
विरह असोक सौंप फल करा तेहि की छाहिं धूप सिर करा ॥
राम कि हनुवंत से सुधि लीन्हा तू पिय निठुर सुरति नहिं कीन्हा।
कहो जोगि दूत जे सुधि पाई, रावन हनि सिय आइ छोड़ाई ॥
तू जोगी बस कैसि न चाही जानि बूझि त करबस काही।
विरह दैत दुरग होए चर सकल सुख-जारि।
आइ निवस एक राम होइ कस न आहु पिय मारि ॥ —चित्रावली ४६२।१ ५

४ छीता बिना राम क्यों जीव दुख चिता विपु कौलौं पीव।
सीता माइ छीता हरी रामहि राम अवस्था परी ॥ —कथा छीता छन्द १०
छीता सीता ज्यों हरी रावन हूँ पतिसाहि।
परी अवस्था राम की राम कहै दुख काहि ॥ —वही छन्द १०

५ चन्दायन (स० विश्वनाथ प्र०) पृ २७ छन्द १७ स परमेश्वरी ला गु० ३५१।१

६ मृगावती ६१।दोहा

७ पदमावत ४०५।६ ७

८ कहा करौं कित जाऊँ हौं राजा राम न आहि।
सिय वियोग सताप बस रायौ जानत काहि ॥
रामचन्द्र नहिं जग महँ माहीं सिया वियोग कियौं दुख जाहीं ॥
—माधवानल-कामकंदला (हि० प्र गा का स) पृ २ ८ पंक्ति १३ १५
कौन भयो कल तिया वियोगी राघव नल जु भरथरी जोगी।
—वही हस्तलिखित प्रति पत्र २४

९ गयो चित्र नगर ते छोड़ि जस दसरथ सुत सीय विछोही।
को सेवक हनिवत समाना कत सोसाइ काहि को माना ॥ —चित्रावली १०६।३ ४

१० कथा छीता छन्द १०

सीता का अशोक वृक्ष के नीचे बठी रहकर राम का विरह दु ख सहना—वियोग मे राम नाम का ही सहारा

'पदमावत'[1] और 'चित्रावली'[2] म अशोक वक्ष के नीचे बैठी सीता का आलकारिक प्रयोग किया गया है। 'इन्द्रावती'[3] म दार्ष्टी तक प्रयोग हुआ है। इन प्रयोगो में अन्तर यही है कि पदमावत मे जहाँ अशोक वक्ष के नीचे बठी सीता को उस वियोगिनी का उपमान बनाया गया है जिसका दु ख बीत गया वहाँ 'चित्रावली' म उनकी रात्रि के एक एक याम को कठिनता से काटनेवाली विरहिणी का उपमान बनाया गया है। इन्द्रावती म सीता की मूर्ति राजकुवर की पहली पत्नी सुन्दरी को अशोक वक्ष के नीचे बैठकर शोक सहन करने का अपना ही दृष्टान्त देकर सान्त्वना देती है।

सीता को पास रखते हुए भी रावण द्वारा उनका भोग न कर पाना

पदमावत[4] म उल्लेख आया है कि रावण सीता को अपने पास रखकर भी उनका भोग न कर सका किन्तु ऐसा वह किन्हीं शापो[5] के भय से नहीं करता। यहाँ तो इसका अभिप्राय यह लिया गया है कि प्रेमी प्रेमिका कुछ समय तक पास पास रहकर भी शरीर-सुख न ले सके। पदमावती न रतनसेन को जो पत्र लिखा है, उसम उसका यही अभिप्राय है।

सुग्रीव का बालि को बाधना—बालि द्वारा पर-स्त्री-हरण, इससे उसका नाश

शेख नबी न ज्ञानदीप मे सुरज्ञानी के मुह से कुँवर ज्ञानदीप को कहलाया

१ पदमावत ४१४।१

२। निसि दुख देखा बिरहिनी सब निसि एक-एक याम।
जस असोक तर, जानकी बिरह सहा बिनु राम॥

—चित्रावली प० ५ छद १२७।दोहा

३ सुरत कह नहआइ क सौंपा कव मेराव दयावन्त म सीता सवन करन मों थाव।
का पाहन के पूजें लहई पूजो ताहि जो करता अहई।
पाहन सुन न तेरी बातें सुमिरू जगत करता निन रातें॥
महू सहेउँ यह बिछुरन पीरा दुबल पीयर भयउ सरीरा॥

—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्तलिखित प० २७५

४ पदमावत २३२।दोहा २३।१६

५ रावण को ब्रह्मा ने पुञ्जिकस्थली वेश्या के साथ बलात्कार करने के कारण यह शाप दिया था कि यदि तू किसी स्त्री का बलात भोग करेगा तो तेरे मस्तक के सौ टुकड़े हो जाएगे (दे० वाल्मीकि रामायण युद्धकांड १३।११ १४)। कुबर के पुत्र नलकूबर ने भी अपनी पत्नी रम्भा के साथ बलात्कार करने के कारण रावण को एसा ही शाप दिया था (दे महाभारत वन पर्व २८० (६))। रावण इन शापो के डर से सीता का बलात भोग करने से डरता था।

है—'होइ सुग्रीव बालि हठि बाँधो।'[1] किन्तु वाल्मीकि रामायण[2] तथा अन्यत्र जहाँ भी सुग्रीव-बालि प्रसंग का उल्लेख है, वहीं भी सुग्रीव को इतना बली नहीं दिखाया गया कि वह बालि को बन्दी बना सके इसके विपरीत बालि से वह संत्रस्त है। उसकी स्त्री तक को बालि ने छीन लिया है।[2] ज्ञानदीप[3] में यह माना गया है कि बालि का विनाश पर-स्त्री (सुग्रीव पत्नी) का हरण करने के कारण हुआ। इसमें पौराणिक तथ्य का उल्लंघन नहीं है क्योंकि राम ने भी बालि को मारने का औचित्य इसी आधार पर ठहराया था यद्यपि इसमें उनका तर्क यह था कि अनुज की पत्नी का भोग करने वाला पापी होता है और उसका वध करने में पाप नहीं लगता।[4] पौराणिक प्रसंग का उपयोग नीति कथन के रूप में करने का यह एक उदाहरण है।

हनुमान का राम के आदेश पर सीता का पता लगाने के लिए लंका जाना—वहां रावण का गर्व खर्व करना—ब्रह्मपाश में बँधना—लंका को जला डालना—लंका का एक तपस्वी के शाप से क्षार होना—हनुमान का सीता की सुध लाकर राम को देना—हनुमान की सहायता से राम सीता का पुनर्मिलन सम्भव होना

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में हनुमान द्वारा लंका जाकर अशोक-वाटिका का विध्वंस करना कहीं तो पराक्रम प्रयास का दृष्टान्त बनकर आया है[5] और कहीं नारी बाला (नायिका) का विध्वंस (कौमार्य भंग) करने के अर्थ में।[6] हनुमान द्वारा लंका को जलाना मुख्यतः विरही राम की सहायता करने के उनके प्रयास के रूप में ग्रहण किया गया है। सूफी प्रेमाख्यानक काव्य का नायक जब असहाय और विपत्ति ग्रस्त होता है तब उसे हनुमान की याद हो आती है और इसके साथ ही राम की प्रिया को हरनेवाले खलनायक (रावण) के विनाश कार्य में की जानेवाली उनकी महत्त्वपूर्ण सहायता का भी स्मरण उसे हो आता है। उसे लगता है काश! ऐसा ही कोई सहायक उसको भी प्राप्त होता। ऐसी ही स्थिति में उसे लक्ष्मण जैसे बन्धु और

---

१ छोड़ि ध्यान मन कर दुख सुने धाइ धरो धीरज दस गन।
रावन होइ राम होइ बाजो भीम जुगुति कीचक विधि साधो॥
होइ नरसिंह हनो हिरनाकस हनोवत जगति हनो दिषि राकस।
होइ सुग्रीव बालि हठि बाँधो चक्र परछीत कि छाती बाँधो॥ —ज्ञानदीप छंद १२४
२ वाल्मीकि रामायण किष्किंधा काण्ड सर्ग ६ १०
३ परदारा पर जेइ चित लावा असी जगुति मुगति तेन पावा।
राम घरनि जो रावन हरी एही जगति विपति ओहि परी॥
बालि जो नारि परायी लीन्हा बहु बिधनं कइसी मति कीन्हा॥ —ज्ञानदीप छंद ४४४
४ वाल्मीकि रामायण किष्किंधा काण्ड सर्ग १८
५ लोर-कहा (स डॉ० माताप्रसाद गुप्त) ४६।४ ५ तथा चंदायन (प ला० ग०) ३५१।४ ५
६ पद्मावत १६७।६ ७ दोहा २ ।१५ और १६८।४ ६

सहायक का भी स्मरण होता है। इस प्रसग का इस रूप मे उपयोग 'चदायन',[1] 'मगावती'[2], 'पदमावत[3] 'चित्रावली'[4] 'कथा कँवलावती',[5] कथा कनकावती',[6] 'कथा छीता[7] और 'अनुराग बाँसुरी[8] म किया गया है। 'कथा रतनमजरी[9] म हनुमान की तरह ही लक्ष्मण को राम की विपत्ति में सहायक बताया गया है और राम लक्ष्मण की प्रीति को भ्रात प्रेम का आदर्श माना गया है। हनुमान का लका म प्रवेश किसी स्थान पर छल द्वारा पहुँचने का उपमान भी चित्रावली[10] मे बन गया है। उनका ब्रह्मपाश मे बँध जाना किसी प्रिय काम के लिए अपने को सकट म डालने का उदाहरण बन गया है।[11] 'पदमावत मधुमालती' और नानदीप मे लका-दहन का प्रयोग कुछ अन्य प्रकार से भी किया गया है। पदमावत के अनुसार जिस आग ने लका को जलाया वही आग चित्तौडगढ मे भी लगी थी।[12] लका के रहनेवाले लोग काले भी इसीलिए हो गए क्योकि लका को जलानेवाली आग न उन्हें भी झुलसा

---

१ चदायन (प० सा० गु) ३२१।१४

२ मगावती ६६।३४ ११८।दोहा १७८।४ २७८।६ २४३।१

३ पदमावत ४ ५।६ ७

४ चित्रावली ४६२।१ ५ दोहा

राम हेतु जिमि जानकी तजि कुल कीन्ह पयान।
अस न जान जो लकापति करहि प्रान की भान॥ —वही ४९५। दोहा
कहे कुमर सुनु हनिवत बीरा लाग कठ ज्यो सीत समीरा।
कहु कुसलात बगि सिय केरी निसरत प्रान राखु घर फेरी॥ —वही ४६७।१ २

५ कपी कोटि को अपसव बोरें सक हनूमान नहि जारें।
—कथा कँवलावती पत्र ३१।छद १६३
चितरि चितेरा घर को धायो हनु मुरति मनो सीता ल्यायो।
जारि चरयो चितरगढ लका दुख परिहरि कै भयी बिलका॥ —वही पत्र ६ छद ६५

६ लषमन ह्वै रावन ज्यों मारो हनवत ह्वै लका ज्यौ जारौं।
—कथा कनकावती पत्र ७।छद ५१

७ सीता गाइ छीता हरी रामही राम अवस्था परी।
हे लषमन हनवत-से यार मेरे कौन बिना करतार॥ —कथा छीता छद ३०
हनूमान सौ जो सब होइ हनूमान रिपु सब सुख होइ।
ल पाव यह जीवन मूर पुरि पावहि दुख पाव सपूर॥ —वही छद ३१

८ भा हनुवत प्रम बरियारा परि चिता को लका जारा। —अनुराग बाँसुरी १७।३

९ रामचद की बिपति मैं लषमन सगी होइ भायन सौ या जगत मैं दूसर नाही कोइ।
—कथा रतनमजरी पत्र ३३ छद २२८

१० पुनि सँभारि के बोला राजा सजहु बगि जुझि कर साजा।
हनुमत जस लकाहुत माया तस छलि क यहि काहु बचाना॥
—चित्रावली ५ १।१ २

११ चदायन (प सा० म०) १६७।४ ५

१२ पदमावत ५२३।दोहा ४३

दिया ।[1] लका दहन करनेवाली ज्वाला को बादशाह जहाँगीर की खड्ग की ज्वाला बतलाकर उसके प्रताप की भी अभिव्यजना की गई है ।[2] लका-दहन विनाश का भी प्रतीक बन गया है ।[3] क्रोधाग्नि की तुलना भी लका को जलानेवाली आग से की गई है ।[4] सूफी कवियो को नायक या नायिका के हृदय में प्रज्वलित विरहाग्नि के लिए लका दहन के रूप में एक अच्छा उपमान हाथ लगा है । हनुमान द्वारा जलाई गई आग ने जैसे लका को जलाकर राख कर दिया वैसे ही विरह की आग नायक-नायिका के अस्तित्व को ही स्वाहा कर डालती है । इसके उदाहरण मृगावती[5] पदमावत[6] और ज्ञानदीप[7] में मिलते हैं । लका-दहन पराजय और दुर्भाग्य का सूचक बन गया है ।[8] लका-दहन का कारण कासिमशाह दरियाबादी एक तपस्वी के शाप को बताते हैं ।[9] राम के अतिरिक्त वह तपस्वी और कौन हो सकता था ? विरही राम की आग ने लका को भस्म कर दिया । दिलजले की आह ऐसी ही होती है । या यो कहे कि आध्यात्मिक शक्ति के आगे भौतिक शक्ति की प्रतीक स्वर्ण गढ़ लका भी न ठहर सकी । लका का जलाया जाना रावण के अहकार को चूर किया जाना भी तो हो सकता है । गर्व ने किसका सर्वनाश नहीं किया ?[10]

---

१ पदमावत ३६०।१ ३

२ मधुमालती ९ ।५

३ ज्ञानदीप छद २६०

४ तुम रिसि कपि सरग पताला तुम रिसि परबत धसि सब हाला ।
तुम रिसि इद्र निठ हिए सका तुम रिसि भसम भई जरि लका ॥ —वही छद १७७

५ रावन लका जरि छली हूँ यह कसो न बसाउ ।
जेहि कारन यह लागी तेहि भेंट तो आइ ॥
—मृगावती २८४वें छद का पाठान्तर दोहा

६ पदमावत २४८।दो० २४।१० २५३।२ ३५१।२ ३ ३६३।१ और ५

७ एक राति एक दिवस महँ लका दाह जिमि दाहु ।
रावट बरन कनक का रावट जरि भा साहु ॥ —ज्ञानदीप छद ३०६

८ जौना हस जो दुरजन मारा चला सन्त गन्त ताकि बुखारा ।
भागवन्त रन जीत सुभाया दुरजन लागि लक उस लाया ॥
—हस-जवाहिर प० २८७ छद ६८ ।१ २

९ तपसी शाप लक भइ छारा कस बिलान तपसि कर मारा ।
—वही प १५६ छद ४२६।६

यह गढ़पति जो गढ़ अभिमाना तपसी केर साज नहिं जाना ।
जरा कटक भा रावन छारा कोटि दत्य द तपसी मारा ॥
— वही प० २२५ छद ६२०।२ ३

१० गब सौं ध्याघ्र आपनो छाहीं परा देखि क कुए माहा ।
रावन गयऊ गब सौं मारा लका एसी हनिवत जारा ॥
—इद्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त प० ११२

विभीषण का लका को छोडकर राम की शरण मे आना—भाई-भाई की फूट विनाशकारी

लोरकहा[१] पदमावत'[२] 'मधुमालती'[३] और 'नानदीप'[४] म लका के रावण द्वारा विभीषण के निष्कासन या विभीषण द्वारा लका के परित्याग का आलकारिक अथवा दार्ष्टान्तिक प्रयोग किया गया है। विभीषण का लका-त्याग इस बात का दृष्टान्त बनकर भी उपस्थित हुआ है कि घर का भेदिया कितना विनाश करवा सकता है। पदमावत' मधुमालती और नानदीप के कवियो न इस घटना से एक अनूठा आशय निकाला है जिस उनकी मौलिक उद्भावना कहा जा सकता है। विभीषण लका को छोड आया, अब उसकी बला से उसका चाहे जो हो। यह जहाँ स्वार्थपरता का सूचक हो सकता है, वहाँ विरक्ति का भी। इन कवियो ने विरक्ति-परक अर्थ ही ग्रहण किया है।

राम द्वारा नल और नील की सहायता से समुद्र पर सेतु बाधा जाना

समुद्र पर सेतु बाँधना अपनी प्रिया को प्राप्त करने के लिए राम के दृढ सकल्प और महत्प्रयास का सूचक तो है ही वह आगिक सौन्दर्य का उपमान भी बना है। मृगावती[५] म सेतुबध को इस बात का दृष्टात बनाया गया है कि एक विरही अपनी प्रियतमा की प्राप्ति के लिए क्या नही कर सकता ? पदमावत[६] मे नल और नील द्वारा समुद्र पर सेतु बाँधे जाने का उल्लेख आया है। वाल्मीकि रामायण' स लेकर 'अध्यात्म रामायण तक के पौराणिक साहित्य म नील द्वारा सतु बधन मे सहयोग दने का उल्लेख नही आया है। रामचरित मानस[७] म अवश्य इसका उल्लेख हुआ है। वहा समुद्र न राम को बताया है कि उनकी सेना म जो नल और नील नामक दो वानर भाई हैं उन्ह उनके बचपन मे एक ऋषि ने यह वरदान दिया था कि भारी से भारी पहाड भी उनक स्पर्श कर लने मात्र से जल पर तर जाएँगे। जायसी न नल के साथ नील के भी सतु बध करने की बात लोक से ग्रहण की होगी जहाँ स कदाचित तुलसीदास ने भी की। पदमावत[८] म सेतु बध को पराक्रम और उपलब्धि का द्योतक माना

---

१ लोरकहा (सं मा० प्र० गु०) छद ७८ (केवल उल्लेख रूप में)
२ पदमावत ३८४।४ ५ ३९१।३ व ६४७।दोहा ५६।१
३ मधमालती (मा प्र ग) ५११।दोहा
४ नबी मिलनियाँ मिला जो होइ बाँचै कहा सच सो कोइ।
मिले मिलनियाँ सोपहि लूटी घर के भेद लका गढ़ टूटी ॥
—नानदीप छद ११६ देखिए छद ३८८ भी
५ मगावती ६६।२
६ पदमावत ४७५।१ ३ ६१।११ और ४
७ रामचरितमानस सुन्दरकांड छन्द ६०।चौ १ २
८ पदमावत ४१९।५ और ५३०।१ ३

गया है। नायिका की नासिका[1] और भौंह[2] का उपमान बनकर भी सेतुबंध उपस्थित हुआ है।

अंगद का रावण की सभा मे पाव रोपना

रावण की सभा म अंगद के पाँव रोपने की कथा इस रूप म पौराणिक साहित्य म कही नही मिलती। वाल्मीकि रामायण[3] म अंगद का राक्षसो को पिटककर रावण के प्रासाद पर चढ जाना और सौध शिखर को पदाघात से विदीर्ण कर देना मात्र उल्लिखित है। रामचरित मानस म राम के एक सामान्य सेवक और दूत की शक्ति का परिचय देने के लिए रावण की सभा म अंगद के पाँव रोपने और उसे उठाने म किसी के समर्थ न होने की घटना दी गयी है।[4] मध्यकाल म अंगद के पाँव रोपने की घटना राम भक्त की शक्ति का प्रतीक होने के कारण लोक म बहुत प्रचलित हो गयी होगी तभी तो रामचरित मानस म पूर्व की रचनाओ मृगावती[5] और 'पद्मावत'[6] के साथ साथ उससे परवर्ती रचनाओ चित्रावली[7] एवं अनुराग बाँसुरी[8] म भी इस घटना का आलंकारिक और उल्लेख रूप मे प्रयोग हुआ है। इन सभी काव्यो म अंगद के पाँव रोपने की घटना पराक्रम और पौरुष की सूचक बनकर आयी है।

लक्ष्मण को शक्ति बाण लगना—
हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी
लाकर उनके प्राण बचाना

लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने और उनकी मुमूर्षु अवस्था को दूर करने के लिए हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाने की घटना का आलंकारिक रूप म मृगावती[9],

---

१ पदमावत ४७५।१ ३

२ वही ४७३।४

३ वाल्मीकि रामायण युद्ध कांड सर्ग ४१

४ रामचरितमानस लकाकाण्ड छन्द ३४।चौ० ४७ दोहा क ख और छद ३२।चौ १ २

५ मृगावती २६।४ ५

६ पदमावत ६११।१ २ ६१२।१ ६१४।४ ६३१।७

७ आवत हस्ति चुवत मद मथा तोरत तरुवर धावत कथा।
गज बाजी बहु परली कोपा अंगद पाँव पुहुमि जस रोपा।

—चित्रावली ४९९।१ २

८ अंगद इहाँ न रोप पाऊ बरस खड्ग बान कै घाऊ।

—अनुराग-बाँसुरी पृ० ११५।छद १९।६

९ मृगावती २४२।दोहा २२५।२ और ५

'पद्मावत'[१] मधुमालती,[२] 'माधवानल-कामकदला',[३] कथा छीता'[४] और अनुराग-बाँसुरी'[५] में उल्लेख हुआ है। इन काव्यों में न तो यह उल्लेख हुआ है कि लक्ष्मण को शक्ति-बाण किसने मारा—रावण ने या मेघनाद ने—और न यही कि हनुमान केवल सजीवनी बूटी ही लाये या समूचे द्रोणगिरि को ही उखाड़ लाये। बूटी की जगह भी इनमें सर्वत्र 'मूर' (जड़ी) शब्द का प्रयोग हुआ है। फिर भी इस घटना से सूफी कवि परिचित हैं और इसका उपयोग उन्होंने अपने साम्प्रदायिक सिद्धान्त प्रतिपादन के लिए भी किया है। 'मृगावती'[६] पदमावत'[७] 'मधुमालती'[८] और कथा छीता[९] में विरह दुःख को शक्ति-बाण से और मिलन को सजीवन मूर से तथा प्रेमपात्र से मिलाने वाले को हनुमान से उपमित किया गया है। एक अन्य स्थल पर मृगावती[१०] में काम-बाण की तुलना शक्ति-बाण से की गयी है। 'माधवानल कामकदला'[११] में हनुमान के इस कार्य को परमार्थ या परोपकार का द्योतक बताया गया है। अनुराग बाँसुरी[१२] में प्रेम के घाव को शक्ति-बाण कहा गया है। जैसे शक्ति-बाण का लक्ष्मण नहीं झेल सके और मूर्च्छित हो गये वैसे प्रेम के प्रखर संघर्ष में डटे रहना सबके बूते की बात नहीं।

राम का सीता के कारण रावण से संघर्ष मोल लेना—राम रावण की शत्रुता—राम द्वारा लंका पर चढ़ाई—राम रावण का युद्ध—राम द्वारा लंका का विनाश करना—रावण को मारना और सीता को उसके बंधन से छुड़ाकर लाना—वनवास से लौटकर राम का कौसल्या से मिलना

'रामायण' के युद्ध काण्ड की इन घटनाओं को जो एक प्रकार से राम-कथा

१ पदमावत १२।१ ३ २५४।दोहा २४।१७

२ मधुमालती २४४।दोहा

३ यह हनुमंत महाबली पर-स्वारथ चल्यो दूरि।
लक्ष्मण को संकट हर्यो आनि सजीवन मूरि॥
—माधवानल-कामकन्दला (हि० प्र० भा का ॥) पृ० २२२।छन्द १६२०

४ जा काउ हूँ सम लषमन की करो उपाव बिपति लखि मन की।
हनुमान सौं जो सब होइ हनुमान रिप सब सुख होइ॥
ल भाव यह जीवनमूर पुरि भावहिं दुख घाव संपूर।
असो बलु मो दन मैं नाहिं जो चलि द्रिली लन को जाहिं॥ —कथा छीता छन्द ३१

५ है सनेह की कठिन लड़ाई सकती घाइ लखन मरि जाई॥ —अनुराग-बाँसुरी १६।५

६ मृगावती २४२।दोहा

७ पदमावत १२०।चौ० ३ ५ २५३।दोहा २४।१०

८ मधुमालती २४४।दोहा

९ कथा छीता छन्द ३१

१० मृगावती २५५।३ और ५

११ माधवानल-कामकन्दला पृ० २२२।छन्द १६२०

१२ अनुराग-बाँसुरी १६।५

का उपसंहार ही है, कई सूफी काव्यों में अपनाया गया है। राम को नायक, सीता को नायिका, रावण को खलनायक या नायिका की प्राप्ति में बाधक-तत्व और लंका-नाश को खलनायक का विनाश करके नायिका को प्राप्त करने से उपमित किया गया है। किसी किसी काव्य में राम को 'रामा' (बाला), रावण को 'रमणकर्ता' और लंका को 'लंक' (कटि प्रदेश) के श्लेषार्थ में प्रयोग कर नायक द्वारा नायिका के साथ रमण करने का भी रूप दे दिया गया है। प्रथम प्रकार के प्रयोग 'मृगावती'[1] 'पदमावत'[2] 'चित्रावली'[3] और 'ज्ञानदीप'[4] में हुए हैं। दूसरे प्रकार के प्रयोग विशेषतः 'पद्मावत'[5] में मिलते हैं। राम रावण का युद्ध दो विरोधियों के संघर्ष और पराक्रम के उपमान के रूप में भी प्रयुक्त हुआ है और ऐसे उल्लेख 'पदमावत'[6] 'चित्रावली'[7] 'ज्ञानदीप',[8] 'नल-दमन',[9] और 'इन्द्रावती'[10] में हुए हैं। 'पदमावत' में दोनों बरौनियों को राम रावण की आमने सामने डटी सेनाओं का और आँखों को समुद्र का रूपक भी दिया गया है[11] तथा राम द्वारा रावण को मारना एक संत्रासकारी घटना के रूप में चित्रित किया गया है।[12] राम द्वारा रावण को मारकर सीता को छुड़ाने का उल्लेख नायिका

१ मृगावती १ २।दोहा तथा १०३।१

२ पद्मावत १६७।५-७ दोहा २०।१२ १६८।४ ५

३ बीजानगर केर एक गुनी। माधा रूपनगर अस सुनी।
धन लगि घर तजि भा परदेसी गाव कथा देखाव भभी॥
गाव सत सती कर भामी हरिचन्द भरा डाम घर पानी।
रामचन्द्र जिमि रावन हना सीता आनि दीन्ह पुनि बना॥ —चित्रावली ४७७।१ ४
मनमथ दाम जोंघ पुनि कारी रावन बार लंक गहि चाँपी। —वही ५६७।४

४ छोड़ि ध्यान धन कर दुख सुन धाइ धरो धीरज दस गुने।
रावन होइ राम होइ बाँधौं भीम जगति कीचक बिधि साधो॥ —ज्ञानदीप छंद १२४

५ पद्मावत २८ ।५ ३०४।१ ३१८।१ २ ३३ ।४ ५

६ वही २६६।१८

७ दक्खिन परबत उत्तर गंगा साइ बल जेहि पौरुष संगा।
पहिलहि जो महि कर बिचारा बीचहि मारि लहि बटमारा॥
जहाँ तहाँ देखहि परिहर डंका राम जाव जस रावन लंका।
जो पुन्यो बलि करन राजा तहाँ जाउ काउ पूछ न बाता॥ —चित्रावली ४२२ ६

८ ज्ञानदीप पृ० १ ५ छंद २६२ (पूर्वोल्लिखित)

९ राम हरा रावन जिहि कृष्ण हरा जिहि कंस।
त ब धनन्त हु ज मना वही धनक कर धंस॥ —नल-दमन ६०।दोहा

१० तहाँ मिल रावन औ रामू तहाँ राम लछिमन संगरामू।
तहा मिलाप जहाँ बिछराऊ औषध उहाँ जहाँ है घाऊ॥
—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्तलेख पृ० ८२
कहाँ राम औ रावन कहाँ किसुन औ कंस।
कहा भीम अरजन करन कह सरवर कह हंस॥ —वही पृ० १७६

११ पद्मावत १ ४।२

१२ वही ५७६।५

का बंदी बनानेवाले दुष्ट व्यक्ति या राक्षस को मारकर नायक द्वारा नायिका या उसकी सखी को छुड़ाने के प्रतीक के रूप में भी हुआ है। 'मधुमालती' में ऐसा एक प्रयोग मिला है।[1] रावण ने खूब धन-संचय किया और बिल्कुल दान नहीं किया, इसलिए उसका नाश हुआ यह कारण 'पदमावत' के कवि ने दिया है।[2] रावण वध के उपरान्त राम सीता का मिलन 'पदमावत'[3] 'ज्ञानदीप'[4] और 'नल-दमन'[5] में नायक नायिका के मिलन का उपमान बना है। वनवास से लौटकर राम द्वारा अपनी माता कौसल्या से भेंट करने की घटना की तुलना 'पदमावत'[6] में नायक (रतनसेन) के सिंहल से नायिका के साथ लौटकर अपनी वृद्धा माता से मिलने की घटना से की गयी है।

'कथा कनकावती'[7] में लछमन ह्वै रावन ज्यों मारों की उक्ति में रावण का लक्ष्मण द्वारा मारा जाना सूचित होता है। स्पष्ट ही कवि की यह ऐतिहासिक एवं पौराणिक अज्ञानता है।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में राम कथा के विविध प्रसंगों का जिस रूप में उपयोग हुआ है उससे यह पता चलता है कि कवियों में राम-कथा प्रसंगों को अधिकता से अपनाने की रुझान रही है। यदि ऐसा कहा जाय तो तथ्य-कथन ही होगा कि समस्त सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में राम कथा के प्रसंगों का ही सर्वाधिक प्रयोग किया गया है। कदाचित इसका कारण राम में नायक का, सीता में प्रतिबिंबित नायिका का, रावण में प्रतिबंधक खलनायक का, लक्ष्मण-हनुमान में नायक को नायिका प्राप्ति के उसके प्रयास में सहायता करनेवाले सहायक-तत्त्वों का, लंका के रूप में नायिका का नायक से न मिलने देनेवाली दुर्लध्य प्राचीरों एवं दुर्गों का पूरा साम्य मिल जाना है। कृष्ण कथा के प्रसंगों को मध्यकालीन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में उतना नहीं अपनाया गया जितना राम-कथा के प्रसंगों को यह भी एक ध्यान देने योग्य बात है।

राम और परी की कथा

कासिमशाह कृत हंस-जवाहिर में राम और परी की किसी कथा का संकेत

१ मधुमालती २८८।६४
२ पदमावत ३८७।६७
३ वही ४१३।३६
४ भाग चाहि एहि अवसर पीता छहु केहि राम मिलइ केहि सीता।
—ज्ञानदीप छन्द २२०
५ धन सीता पिउ राम मनु बिछुर भयो संजोग।
दोऊ आनंदित मगन रावन हना वियोग॥ —नल-दमन ३२१।दोहा
६ पदमावत ४२६।२
७ हौं जगपति जगत सम जान सु सकहा जो आन न भान।
लछमन ह्वै रावन ज्यों मारौं हनवत ह्व लंका ज्यों जारौं॥
—कथा कनकावती पत्र ७।छंद ५१

मिलता है[1] परन्तु ऐसी किसी कथा का पता पौराणिक साहित्य में तथा रामायण-ग्रन्थों में नहीं मिला। लोक में भी ऐसी किसी कथा का प्रचलन आजकल नहीं मिलता।

राहु के शरीर के दो टूक करना

इस प्रसंग का आलंकारिक उल्लेख मधुमालती[2] और नल दमन[3] में हुआ है किन्तु उसमें कथा के मूल रूप पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता। 'नल दमन' में जो प्रयोग हुआ है उसमें चन्द्रमा द्वारा अपना घर निकालने के लिए तलवार से राहु के दो टूक किए जाने का उल्लेख है।

विष्णु का मत्स्यावतार—शंखासुर को लील जाना और वेदों का उद्धार करना

पदमावत[4] में एक स्थल पर तो विष्णु द्वारा सात पातालों में खोजकर वेद ग्रन्थों को लाने का उल्लेख है और दूसरे स्थल पर[5] मत्स्यावतारी विष्णु द्वारा शंखासुर का लीलना था। उसमें वेदों के उद्धार की चर्चा नहीं है। ज्ञानदीप[6] में केवल मत्स्यावतार का संकेत मात्र है।

जल में से निकाली गई मंजूषा में से ज्ञानदीप जब बाहर निकला तब यह ऐसा दिखाई दिया मानो विष्णु ने जलचर (मत्स्य) का अवतार लिया हो।

शकुन्तला का दुष्यन्त से वियोग और पुनः संयोग

पद्मावत और ज्ञानदीप में दुष्यंत शकुन्तला का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। पद्मावत में दुष्यंत को शकुन्तला के विरह में दुःखी दिखाया गया है,[7] किन्तु 'ज्ञानदीप' में देवजानी और ज्ञानदीप के प्रथम मिलन की तुलना शकुन्तला और दुष्यंत

---

१ दिया दीप राजा रूपकला। सरन्दीप कह कह सब मिला॥
कह कह राम कहाँ कह परी। कहाँ सु जाय कहाँ उठ परी॥
—हंस-जवाहिर पृ० ६६ छन्द २७२।५ ६

२ मधुमालती ६१।५

३ बदन चंद जनु कर सभारा की हेसि खरग राहु द्वै फारा। —नल-दमन ८७।४
काढ़ खरग तहि उदर बिदारा निकस परी मनि भा उजियारा।
चीर राहु मनु चंद बिगासा सोरह करा कीन्ह परगासा॥ —वही २७५।३ ४
धन है चन्द उई इहि बारा धार कुचीर राहु रग कारा। —वही ३५३।६

४ पद्मावत १४६।७ १५।४

५ वही ५७६।६

६ उमगउ देखन कहँ सबै नग्र लोग संसार।
पहुकर सहित प्रभाकर जलचर सो अवतार॥ —ज्ञानदीप छन्द ११०

७ पदमावत २०१६-७

के समागम से दी गई है।[1] एक में इस कथा का उल्लेख वियोग पक्ष में हुआ है दूसरे में संयोग पक्ष में। दुष्यंत में विरह की तीव्रता का स्थापन सूफी दर्शन के अनुरूप ही हुआ है।

श्रवणकुमार की मात-पित-भक्ति—दशरथ द्वारा अनजान में श्रवणकुमार की हत्या—उसके अन्धे माता-पिता का प्यासे मर जाना, पर दशरथ के हाथ का पानी न पीना—अंधतापस का शाप—दशरथ द्वारा उनकी अंत्येष्टि

'मृगावती', 'पदमावत', 'चित्ररेखा' 'मधुमालती', 'चित्रावली' और 'नल दमन' में इस आख्यान का आलंकारिक और प्रतीकात्मक प्रयोग हुआ है। सूफी प्रेमाख्यानों के नायक माता पिता के रोकने पर भी नायिका की खोज में चल देते हैं, अतः उनको श्रवण से तो उपमित नहीं किया जाना चाहिए था, परन्तु सूफी कवियों ने इसका उपयोग बड़े कौशल से किया है। इन्होंने इस आख्यान के दो अंशों को ही अपने उपयुक्त पाया है—(१) एकाकी पुत्र माता पिता की आंखों का तारा वृद्ध माता पिता का सहारा,[2] उसके वियोग में उनकी मृत्यु (२) पुत्र वियोग में रोते रोते माता पिता का अंधा हो जाना। पुत्र न हो तो उनकी सेवा कौन करे? 'पदमावत'[3] में नागमती सिंहलगामी रतनसेन को संदेश भेजते हुए उसकी माता के पुत्र वियोग में मर जाने का समाचार भेजती है और कहती है कि जैसे अंधी-अंधा श्रवण श्रवण रटते हुए मर गए दशरथ के हाथ का उन्होंने पानी तक न पिया, कावर ज्यों की त्यों वृक्ष की शाखा से टिकी पड़ी रही क्योंकि अब उसका उपयोग क्या था, वैसे ही तुम्हारी माँ तुम्हारा नाम रटते रटते चल बसी। तुम कैसे मातृ भक्त पुत्र हो कि माँ की यह दशा तुमने हो जाने दी? 'चित्रावली' में एक स्थल पर[4] नायक

---

१ तीनि पहर एहु रनि महं करिय जो करना होइ।
तब निचिंत बइठ एक ठांई आवहु रति रतिपति की नाई॥
उथा मीच जनु मनमथ मीता राए दुपत जस कुन्ता कीता। —ज्ञानदीप छंद १६४

२ सरवन पुत्र हुता तो काधें कावर लिय फिरा सत बांधे।
कीन्हेंसि मात पिता कर सेवा को अस पुत्र बिना सुत देवा॥
भागीरथ गंगा लै आवा किन किन काज पुत्र नहिं आवा।
पुत्रहि सों पूजहि सब स्वारथ पुत्र न होई तो जनम अकारथ॥ —नल-दमन ६०१६ ६

३ पद्मावत ३६२।६-७ दोहा ३११४ ३६८ ३ ६

४ कुंवर कहा सुनु प्रान पियारी तुम चित आनि बढ़ेउ दुख भारे।
मैं अपने कुल सरवन अहेऊं अंधीअंधा कावरि बहऊं॥
मोरे पेम पियास सतावा बाट छाड़ि एहि सरवर आवा।
जस-दसरथ आहे सर छोंड़ा मकु बोलत मार बिख बाना॥
इंधा लागि आइ अस बाना अंधा अंधी तजहिं पराना।
उन कहं अइन कौन ढूंढेला अंधलकुटिया महा अकेला।
को एहि भस आइ सुधि लेहू मुए जियत दुनहु गति देहू॥
—चित्रावली ४७४।० ०

अपने को श्रवणकुमार के तुल्य मानता है और नायिका का विदा कराके अपने माता पिता व दशनाथ अपने देश के लिए रवाना हो जाता है। चित्रावली में अयत्र[1] दशरथ द्वारा धोखे में श्रवण को मारकर शापित होने का उल्लेख है। मृगावती[2] चित्ररेखा[3] और मधुमालती[4] में दशरथ का वात्सल्य की उत्कटता के कारण पुत्र वियोग में मर जाने का आलंकारिक उल्लेख है।

शिव के ललाट पर द्वितीया का चन्द्रमा होना

शिव द्वारा दूज के चन्द्रमा को अपने ललाट पर धारण करने का उल्लेख अकेले 'पदमावत'[5] में एक स्थल पर आया है। पदमावती को सिंहासन पर बैठे देखकर शिव ने उसके सामने सुन्दर द्वितीया के चन्द्र को अपने ललाट पर स्थान दिया।

शिव का कामदेव के सामने हार जाना

मझनकृत मधुमालती[6] में कामदेव के सामने शंकर के हारने का उल्लेख कामदेव के प्रभाव को बताने के उद्देश्य से किया गया है।

शिव के कंधे पर दो हत्याएँ होना

(१) ब्रह्मा की हत्या

(२) कामदेव की हत्या (कामदेव दहन)

शिव के कन्धे पर दो हत्याओं का पातक होने का उल्लेख केवल पदमावत में हुआ है। रतनसेन जब चिता पर जलने को उद्यत होता है तब उसको आत्महत्या से रोकने के लिए शिव बैल पर बैठे एक कोढ़ी के रूप में उपस्थित होते हैं। उस समय उनका रूप वर्णन करते हुए जायसी ने उनके कन्धे पर दो हत्याएँ होने का उल्लेख किया है।[7] पार्वती रतनसेन की परीक्षा लेने के बाद शिव से निवेदन करती हैं कि इसकी इच्छा-पूर्ति कीजिए अन्यथा व्यर्थ ही इसकी भी हत्या का पाप आपको लगेगा। पहले से ही आपने दो हत्याएँ अपने कन्धे पर चढ़ा रखी है अब यह तीसरी तो मत लीजिए।[8] शिव द्वारा कामदेव दहन या कामदेव विजय का उल्लेख माधवा-

---

१ रानी कहा बसि बसि जाहु लग न पाउ मयकहि राहु।
जाइ जनाउ नरेस रिसाना जौ लहुँ छुट पाव नहि बाना॥
दसरथ धोख सरवन मारा पाइ सराप भयो हत्यारा। —चित्रावली ४०७।१ ३

२ मृगावती ४८।१ २

३ चित्ररेखा प ६७ चौ २

४ मधुमालती १७१।४

५ पदमावत ६१२।दोहा ४१।७

६ मधुमालती १२४।५

७ पदमावत २०७।१ २

८ वही २११।६ ७ दोहा २२।५

नल कामकदला (आलम)[1] एव 'चित्रावली'[2] म हुआ है ।

शिव के द्वारा अधकासुर-कधकासुर का वध

केवल 'चित्रावली'[3] मे शिव द्वारा अधकासुर के वध का उल्लेख हुआ है। कौलावती सुजान क मगलाथ शिव की स्तुति करते हुए, उनको अधकासुर के वधकर्ता क रूप म स्मरण करती है।

शिव का त्रिनेत्र और योगीश्वर होना

'इन्द्रावती'[4] म राजकुवर को योग म त्रिनेत्र के समान बताया है। इस उल्लेख स शिव के त्रिनत्र होने और उनके महान् योगी हाने की सूचना मिलती है।

शिव की शरण मे आकर राम का रण जीतना

पदमावत[5] म पावती शिव की प्रशसा करती हुई कहती हैं कि आपकी शरण म आन पर ही राम रावण पर विजय पा सकते थे।

शिव द्वारा त्रिपुर सहार

चित्रावली[6] मे शिव द्वारा त्रिपुर सहार करने का उल्लेख मात्र हुआ है। वहाँ भी कवि त्रिपुर और त्रिपुरारि का अन्तर नही समझ सका है। तभी तो वह लिखता है—

तुम ही दच्छ प्रजापति मारा, जीति मार तिपुरारि सघारा। अन्य किसी सूफी काव्य म त्रिपुर सहार का उल्लेख नही आता।

शिव द्वारा दक्ष प्रजापति को मारना (उनका यज्ञ विध्वस करना)

चित्रावली[7] म शिव को दक्ष प्रजापति का हन्ता कहकर सम्बोधित किया गया है। पौराणिक साहित्य म दक्ष यज्ञ विध्वस कथा म कही दक्ष-वध का उल्लेख नही है। शिव ने अपने अश वीरभद्र से उनका वध कराया था। लोक मे शिव के द्वारा दक्ष-वध की बात प्रचलित होगी उसी को उसमान कवि ने ग्रहण कर लिया होगा।

---

१ अति कठोर कुच तन उठे सब सें सहित सुभाइ।
मनहु मन को भस्म करि बठे ईस मनाइ॥
—माधवानल-कामकदला पृ० १८६ पं० ११ १२

२ तुम तें सब असुरपति हारे, तुमहीं अधक कधक मारे।
तुमही दच्छ प्रजापति मारा जीति मार तिपुरारि सघारा॥ —चित्रावली १६२।४ ५

३ चित्रावली १६२।४ ५

४ जोगी कहिए जोगी सोई भोगी कहिए भोगी होई।
जोग देखि तिनन बखाना भोग देखि क किसन सजाना॥
—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्तलिखित पृ० २२७

५ पदमावत २११।६

६ चित्रावली १६२।५

७ वही १६२।४ ५

शिव का पार्वती के कहने से कैलाश छोड़ देना

यह कथा केवल 'हंसजवाहिर'[1] में दृष्टान्त रूप में उल्लिखित है। वहाँ ससुराल में रहने की बुराई के अर्थ में इसका स्मरण नहीं किया गया है, प्रत्युत इस अर्थ में कि स्त्री की बुद्धि से काम करना ठीक नहीं होता। दृष्टान्त देते हुए बताया है कि पार्वती की मति से चलने के कारण जगत्पिता शिव को कैलाश तक छोड़ देना पड़ा।

गुरुदेव का दो घड़ी से अधिक कहीं न ठहरना

'पद्मावत'[2] में इस प्रसंग का साहित्य अभिप्राय के रूप में एक सुन्दर प्रयोग उस स्थल पर मिलता है जहाँ अलाउद्दीन द्वारा भेजी गई दूती जोगिन के छद्म वेश में आकर पद्मावती से कहती है कि रतनसेन को मिलनेवाली यातना को न देख पाने के कारण ही तो मैं गुरुदेव बन गई हूँ।

सती का सीता के वेश में राम को छलने की चेष्टा—शिव द्वारा सती का परित्याग

यह कथा केवल 'पदमावत'[3] में दृष्टांत रूप में उल्लिखित है। बन-ठनकर रहने वाली स्त्री भली नहीं होती। इस अभिप्राय को प्रकट करने के लिए सीता के वेश में राम को छलने की सती की चेष्टा को निन्दनीय बताया है।

सती का दक्ष-यज्ञ-कुण्ड में कूदकर अपने को भस्म कर देना

'पद्मावत'[4] में इस प्रसंग का आलंकारिक रूप में वर्णन हुआ है। हीरामन तोता पद्मावती से रतनसेन का विरह-वर्णन करते हुए कहता है कि तुम्हारे कटाक्ष बाण उसके रोम रोम में बिंध गए। नेत्रों से रक्त धार बह निकली। सती जो उससे लाल बनी, तो उनकी सारी काया में आग लग गई। सती के शरीर को जलाने वाली आग की ललाई से आकाश के मेघ लाल हो गए।

समुद्र का मथन—विष्णु के सहयोग से

सूफी प्रेमाख्यानों में चन्द्रमा और राहु के बैर का प्रसंग जिस रूप में मिलता है उसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है। क्षीर समुद्र मथन की कथा 'पदमावत' और 'चित्रावली' में आलंकारिक रूप में वर्णित मिलती है। 'पद्मावत' में एक स्थल[5] पर तो समुद्र मथन के समस्त उपकरणों का उल्लेख कर दिया गया है और ब्रह्मा

---

१ मात पिता को भवन कर छोड़ दीन कैलास।
सीन तिरिया केमने मारग मिटा सुवास ॥ —हंस जवाहिर पृ० १५६ छन्द ४३८। दोहा
२ पद्मावत ६ ४।५
३ वही ४१५।६
४ वही २२८।६
५ पदमावत ४ ६।१ ५

विष्णु तथा महेश स मिलन वाली सहायता की ओर भी सकेत कर दिया गया है। दधि-समुद्र म तूफान आन पर पद्मावती से बिछुडकर रतनसेन सोचता है कि क्षीर समुद्र मथन के समय ता ब्रह्मा, विष्णु महेश सुमरु, वासुकि तथा शेषनाग सबन सहायता की थी, पर इस दधि समुद्र को मथन कर मेरे खाए रत्न—पदमावती—को निकालने म मेरी कौन सहायता करेगा ? यहाँ सुमेरु को मथानी माना गया है मदराचल को नही। पदमावत म दूसरे स्थल[1] पर समुद्र मथन का सकत मात्र है। चित्रावली[2] मे नायिका की नाभि की उपमा क्षीर समुद्र म से मथन के उपरा त मथानी के निकालन पर बने आवत्त स दी गयी है।

सहदेव का पण्डित होते हुए भी चक जाना

सूफी प्रेमाख्यानो म पाण्डु-पुत्र सहदेव पाण्डित्य के उपमान दृष्टात एव प्रतीक के रूप मे कवियों को बहुत प्रिय हैं यही कारण है कि कई सूफी काव्यो म इनका उल्लेख मिलता है। चदायन[3] 'मगावती'[4] 'पदमावत'[5] 'चित्ररेखा',[6] मधुमालती[7] चित्रावली[8] ज्ञानदीप[9] 'हस जवाहिर'[10] तथा 'इन्द्रावती'[11] मे इनका उल्लेख हुआ है। चित्ररेखा मे कहा गया है कि पढे लिखे भी कभी कभी भूल कर जात हैं। सहदव कितने पण्डित थे, फिर भी जूआ खेलने के लिए युधिष्ठिर के साथ कौरव सभा मे वे भी पहुँचे और राज्य हार गए।

---

१ पद्मावत ४६५।२ ३

२ छीर सिंधु मथनी जब काढी नाभि भौंर आही वह ठाढ़ी।

—चित्रावली, पृ० ७६। चौपाई

३ चन्दायन (प० मा गुप्त) २६३।२ ३

४ मगावती २७।४

५ पदमावत ७६।४ ८१।५ ४४६।२

६ चित्ररेखा पृ० ८६ चौ० ८ ६

७ मधुमालती १५६।१ ३ और १६४।२

८ निमिष न जाइ निखादे तोरा तै सहदेव धनतर मोरा।

—चित्रावली ३०८।४

९ करता घहै करता कर भेऊ आनै नाहिं मरम सहदेऊ।

—ज्ञानदीप छन्द २०

१० तब लौं पाछी एक परेवा नाऊ शम्भ ज्ञान सहदेवा। —हस-जवाहिर २४३।६

११ तुम जोगें कछ बस्तु न मोरे है यह सुवा देउ कर जोरें।

यह पण्डित जानत सब भेऊ जैस बेयास और सहदेऊ।

—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० ८१

सूर्य का राहु द्वारा ग्रस्त होना

'चंदायन'[1] 'पदमावत'[2] 'चित्रावली'[3] 'नल-दमन'[4] 'हंस जवाहिर'[5] तथा 'अनुराग-बाँसुरी'[6] में राहु द्वारा सूर्य को ग्रसने का उल्लेख हुआ है। उनमें राहु दुष्टता का प्रतीक बनकर उपस्थित हुआ है जो सज्जनों को सताता है। सूर्य और राहु के बैर के मूल कारण पर उनमें कहीं प्रकाश नहीं डाला गया।

हनुमान द्वारा महिरावणपुरी (पाताल) में जाकर जमकातर तोड़ना और महिरावण को मारकर उसके बन्धन में राम-लक्ष्मण को छुड़ा लाना

ऐसी लोक कथा है कि समुद्र के नीचे पाताल में महिरावणपुरी बसी है। उसमें जमकात (यम की तलवार) लगी है जिससे उस पुरी में कोई शत्रु प्रवेश नहीं कर सकता। महिरावण राम-लक्ष्मण को लंका के समुद्र-तट से हर ले गया था। हनुमान जी ने पाताल में प्रवेश कर जमकात को तोड़ा था और महिरावण को मारकर राम लक्ष्मण को उसके बन्धन से छुड़ाया था फिर अपने कन्धों पर दोनों को बिठाकर वे उन्हें लंका में लाये थे। रामानन्द जी ने अपने एक पद में जमकातर का उल्लेख किया है— 'पैठि पाताल जमकातर तोर्यौ।'[7]

'पदमावत' में महिरावणपुरी के पाताल में होने और उसमें जमकातर लगी

---

१ चंदायन (प्र. सा. सप्त) २१।३

२ पदमावत २४७।३ २४६।दोहा २४।११ २५०।३ २५५।३ २५५।३ ४७१।दोहा ४६।२ ६ ॥ दो ५१।३ ६१०।७ ६२५।दो० ५३।५

३ आज सपथ जो देहु पिय आज कहे नहि जाहु।
बन्द छोरिकर चरम गहि सूर छड़ावहु राहु॥ —चित्रावली १८७।दोहा

४ बार्मों गहन कौन गुन पर रवि कहु रूप सुरत जब कर।
देखत स्याम तिहि सीसा कीन्ह चहै अन तिहि की रीसा॥
तन बारौछ लगाइ दिखाव कहै देख बग गहन बताव।
चद गन्न ससी पुनि होई राहु दोस देहु जिन कोई॥
का तिहिं रूप सदा तन राहू एकति दाग एक कह दाहू। —नल-दमन ७६।४
कलिजग राहु सुरुज मल गहा बधि परकास मन्द होइ रहा। —वही २४५।८

५ प्रथ सुन शाह कहौ यहि बाता कौन देस अस कौन विधाता।
आलमशाह यहाँ सुलताना महापुरुष का करौं बखाना॥
तेहि घर महै जवाहिर बारी बरनि न जाय रूप उजियारी।

× × ×

चाँद सुरुज कह लाग राहू कह न सकत बरणि तेहि काहू॥
—हंस-जवाहिर १२५।१ ३ और ६

६ तब मलीन रवि ससि को पावें जब धन राहु दोउ प आवें।
—अनुराग-बाँसुरी पृ १९१ छंद १०।४
रही चित चित बीच उगासी चिंता राहु मध्य दुगरासी। —वही पृ १६१ छंद ६०।३

७ हिन्दी शब्द-सागर (पुराना संस्करण) भूमिका पृ० ६२

होने का उल्लेख चार स्थलों[1] पर आया है। हनुमान ने उस 'जमकातर' को ताड़ा था।[2] महिरावण बहुत विशालकाय था, जैसा कि विभीषण के राक्षस के कथन से पता चलता है। उसके मरने पर उसकी अस्थियों का ढेर पहाड़ जैसा था समुद्र में सेतु-बंध जैसा दिखाई देता था।[3]

महिरावण द्वारा राम लक्ष्मण के हरे जाने और हनुमान द्वारा उनको छुड़ा लाने की कथा किसी पुराण में नहीं आती। वाल्मीकि रामायण 'अध्यात्म रामायण' और 'रामचरित मानस' में भी यह नहीं है। परन्तु लोक में यह बहुत प्रसिद्ध है। वस्तुतः यह लोक-कथा ही है जिसका कई रामायणों में प्रवेश हो गया है।

बंगला की कृत्तिवास रामायण और संस्कृत के 'आनन्द रामायण' में यह कथा आयी है। कृत्तिवास रामायण की कथा का रूप यह है—महिरावण रावण का पुत्र और अहिरावण का भाई था। राम लक्ष्मण को काली की भेंट चढ़ाने के उद्देश्य से वह उन्हें लंका में हर ले गया था। हनुमान को पता चलते ही वे पाताल में गए और वहाँ महिरावण उसकी पत्नी तथा पुत्र को मारकर राम लक्ष्मण को छुड़ा लाए।[4]

'पदमावत' में इस कथा का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। उससे इतना ही पता चलता है कि हनुमान समुद्र में पैठकर पाताल गए थे और वहाँ जाकर उन्होंने 'जमकात' को ढाहा था तथा राम को (लक्ष्मण का नाम नहीं आता) बंधन से छुड़ाया था। उनके द्वारा महिरावण-वध का संकेत नहीं मिलता।[5] 'मधुमालती'[6] में भी राम के पाताल में हरकर ले जाए जाने और हनुमान द्वारा राम को छुड़ाकर उन पर उपकार करने का उल्लेख मिलता है। इस कृत्य को किसी राक्षस के बंधन में पड़े नायक को उसके सहायक द्वारा पराक्रम करके मुक्त करने के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

हनुमान का आकाश में चढ़ना

'चंदायन'[7] में एक स्थल पर इस प्रसंग का आलंकारिक उल्लेख हुआ है। चाँद की सखी बिरस्पत लोरिक से कहती है कि चढ़ सको तो हनुमान की तरह ऊँचे चढ़कर चाँद के धौराहर में प्रवेश करो।

---

१ पदमावत ३६४।१५ ३६५।५६ दोहा ३३।६ ६१३।५ ६२६।७
२ वही ६२६।७
३ वही ३६४।१५ और ३६५।५६ दो० ३३
४ रामकथा डॉ० कामिल बुल्के पृ० ४०२ और पदमावत की संजीवनी टीका डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल प्र संस्करण पृ० ६६२ ६६६ ७२६
५ पदमावत ६११।६-७ ६१४।७ ६२६।७
६ मधुमालती २६१।२ ३
७ चंदायन (प० मा० गु०) १६०।४ ५

हनुमान द्वारा ऋषि राक्षस (कालनेमि) का वध करना

ज्ञानदीप[1] म हनुमान द्वारा ऋषि राक्षस के मारे जाने का आलकारिक प्रयोग हुआ है। उसम हनुमान द्वारा युक्तिपूर्वक इस काय को करने की प्रशसा की गयी है।

हनुमान का लका की रखवाली करना—छह महीने तक एक पवत पर सोते रहकर छठे महीने जागना और जोर से हाक लगाना

इस कथा का कोई पौराणिक आधार नही है। यह विशुद्ध लोक कल्पित कथा है। पदमावत मूल और सजीवनी टीका मे डा० वासुदेवशरण अग्रवाल न इस सम्बन्ध म एक टिप्पणी दी है उससे इस कथा पर किंचित प्रकाश पडता है। टिप्पणी यह है— सिंहल के माग म भारत और लका के बीच हनुमान जी प्रहरी बनकर आज तक आवाज देत हैं जिससे भय स राक्षस लोग इधर न आवें ऐसा किंवदन्ती है (दे० श्री सुधाकर द्विवेदी कृत पदमावत की टीका पृ० २७२)।

सूफी कवियो म केवल जायसी ने ही इस किंवदन्ती का काव्यगत उपयोग किया है। पदमावत म कइ स्थलो[2] पर हनुमान जी के छह महीने तक सोने और छठे महीने उठकर लका की रक्षा के लिए जोर से हाक लगाने का उल्लेख किया गया है।

हनुमान का अजुन की ध्वजा पर जा बठना, जिससे अर्जुन की जीत होना

पदमावत म अजुन की ध्वजा पर हनुमान जी के जा बठने स बल बढ जाने का एक स्थल[3] पर उल्लेख हुआ है।

हरिश्चन्द्र राजा का नीच के घर जल भरना (चाण्डाल का दास बनना)

मृगावती[4] पदमावत[5] मधुमालती[6] तथा चित्रावली[7] म राजा हरिश्चन्द्र

---

१ छोडि ध्यान धनकर दुख सुने धाइ धरो धीरज बल सुने।

X X X

होइ नरसिंह हनो हरिनाकस हनीवन जगति हनो रिषि राकस। —ज्ञानदीप छन्द १२४

२ पद्मावत १ ४।४ ६ २ ६।१४ और दो० २१।८ २३७।१७ १५५।२ ५३०।११

३ वही ६४१।७

४ मृगावती ३७६।दोहा

५ पदमावत १६०।१

६ मधुमालती ११।४ १३।४

७ तपन्ह कहा तै धम सलोना सत हरिचन्द मान बलि जीना।
मोहि करि पहुमि न राजा दूजा हम नित करहि सत्य की पूजा॥ —चित्रावली ४२।१२

X X X

कोथि-पून एक देस बखाना सत्य पून चारौं खंड जाना।
निहचय सत्य अमर की मूरी प्रगट दखिय हरिचद पूरी॥ —वही प १८ छ० ४३।६

की सत्यवादिता एव दानशीलता का उल्लेख हुआ है और उनका युधिष्ठिर एव बलि के समकक्ष बनाया गया है। माधवानल कामकदला[1] (आलम) तथा चित्रावली[2] मे उनके डोम के घर रहकर सत्य रक्षा के लिए जल भरन का दाष्टांतिक प्रयाग हुआ है।

---

१ कम हेत हरिचद जल भरा कम हेत बलि सवसु हरा।
कर्म हेत पांडव फल खाये कम हेत रघपति बन धाये॥
—माधवानल-कामकन्दला (हि० प्र या का० स) पृ १६६ पक्ति १३।१४

२ गाव सत सती कर जानी हरिचद भरा डोम घर पानी।
रामचद्र जिमि रावन हना सीता आनि दाह पुनि बना॥ —चित्रावली ४७७।१ २

७

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में पौराणिक आख्यानों का प्रतीकात्मक प्रयोग

मनुष्य प्रतीकों का आश्रय मुख्यतः दो अवसरों पर लेता है (१) जब वह अपने हृद्गत भावों को यथावत प्रकट करने में अपने को असमर्थ पाता है और (२) जब वह किन्हीं कारणों से अपने कथन को गुह्य बनाना चाहता है। पहली स्थिति में उसकी दृष्टि प्रधानतः प्रकृति की ओर जाती है। प्रकृति के नाना रूपों के साथ उसे अपनी वृत्तियों का रागात्मक सम्बन्ध दिखायी देता है। अपने हृद्गत भावों से मिलते जुलते व्यापार उसे प्रकृति में मिलते हैं और वह अपने सुख-दुःख, राग-द्वेष तथा अन्य मनोभावों को प्रकट करने के लिए प्रकृति से प्रतीक चुन लेता है। धीरे धीरे कुछ विशेष वस्तुएँ तथा व्यापार कुछ विशेष भावों तथा विचारों के साथ बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव स्थापित कर लेते हैं और अपने प्रयोग में रूढ़ हो जाते हैं। जैसे चलते चलते सिक्का घिस जाता है वैसे प्रतीक भी जब सहज बोधगम्य और बहु प्रचलित हो जाते हैं तब वे अपनी प्रतीकात्मकता खो देते हैं और तब मनुष्य नये प्रतीकों की खोज करने लगता है। प्रकृति के क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों से भी प्रतीक चुने जाते हैं परन्तु चुनाव का आधार उनके साथ मनुष्य का रागात्मक सम्बन्ध और व्यापार-साम्य ही होता है। मनुष्य के भाव प्रकाशन से सम्बद्ध होने के कारण प्रतीक-परंपरा बहुत प्राचीन है। प्रत्येक युग में क्षेत्र विशेष की आवश्यकता के अनुसार उनमें परिवर्तन होता रहा है परन्तु उनकी आवश्यकता कभी कम नहीं हुई। एक प्रकार की भाव धारा के प्रतीक दूसरे प्रकार की भावधारा के लिए अनुपयुक्त सिद्ध होते हैं। छायावादी काव्य के प्रतीक प्रगतिवादी काव्य के काम नहीं आये उसने अपने लिए अलग प्रतीक गढ़े। ऐसे ही प्रगतिवादियों के प्रतीक आज की नयी कविता के भाव और विचार वहन में समर्थ नहीं हुए और उसने अपने भावों एवं वृत्तियों से रागात्मक या बौद्धिक साम्य रखने वाली वस्तुओं तथा व्यापारों से अपने लिए प्रतीक संग्रह किये। प्राचीन और साहित्यिक रूढ़ि बन गये प्रतीक भी नव-संस्कार के साथ नया अर्थ-वहन करने में सक्षम बनाये जाते रहे हैं। मानव जीवन के साथ प्रतीकों का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ रहा है कि

उन्होंने उस पर दूरगामी प्रभाव भी डाला है। जब-जब भाव से अधिक प्रतीक का महत्व दे दिया गया है तब तब अनर्थ हुआ है। भारतीय बहुदेववाद और मूर्ति पूजा के पीछे प्रतीक-कल्पना नहीं तो और क्या है ? परन्तु इतिहास में ऐसे अनेक अवसर आये हैं जब प्रतीक-पूजा और अंधश्रद्धा ने धार्मिक और साम्प्रदायिक विद्वेषों एवं संघर्षों को जन्म दिया है। प्रारम्भ में सभी प्रतीक हमारे भावों के आलम्बन रहते हैं उनसे हमारा रागात्मक सम्बन्ध जुड़ा रहता है और उनमें हम अपनी अपनी भावना के अनुसार अर्थ बोध पाते हैं परन्तु कालान्तर में ऐसी स्थिति आ जाती है जब प्रतीकों पर आरोपित मूलभाव तो उड़ जाते हैं और फिर उनकी ठठरी की उपासना होने लगती है।[1] मोह और ममत्व के कारण प्रतीकों को आराध्य से भी अधिक समझा जाने लगता है।[2] ऐसी दशा सभी विचार सम्प्रदायों में देर सबेर आती रही है।

प्रतीक प्रयोग की दूसरी स्थिति वह होती है जब कोई धार्मिक सम्प्रदाय विचार-प्रकाशन में अपने को स्वतन्त्र नहीं पाता। वह किसी सत्ता के दमन और कोप से बचने के लिए अपनी बात को सीधे न कहकर अप्रस्तुत प्रतीकों के माध्यम से कहने लगता है। अन्योक्ति की जाने लगती है। ईरान के सूफियों को ऐसी ही परिस्थिति में प्रतीक-प्रयोग का आश्रय लेना पड़ा था। उनके विचार स्वातन्त्र्य और औदार्य का जब इस्लाम के कट्टरपंथी शासकों शेखों और जाहिदों द्वारा दमित और प्रतिबंधित करने की चेष्टा हुई तब सूफियों ने अपने भाव प्रकाशन के लिए प्रतीकों का आश्रय लिया। प्रत्येक गुह्य विधि में अपना एक रहस्यात्मक आकर्षण होता है। लोक रुचि उधर सहज ही आकृष्ट हो जाती है। सूफियों के प्रतीकों के साथ भी ऐसा ही हुआ और ऐसा ही हुआ भारत में सहजयानी सिद्धों और नाथपंथी योगियों तथा उनके मतानुयायियों द्वारा प्रयुक्त जटिल और मर्ममान प्रतीकों के साथ। कभी कभी किसी मतवाद के तात्विक रहस्य को सहज सुलभ और सस्ता न बना देने के लिए भी प्रतीक प्रयोग की प्रवृत्ति को स्फुरण प्राप्त होता है। प्रतीक ग्रथित होने के कारण वह विचार धारा अनधिकारियों के हाथ में जाने से बच जाती है और गुरु-गम्य हो जाती है। अधिकारी व्यक्ति ही किसी गुरु की कृपा से उन प्रतीकों का फलितार्थ समझकर तत्त्व-मर्म में डुबकी लगा पाते हैं।

सूफी कवियों के प्रतीक

भारत के सूफी साधकों और कवियों ने फारसी-परम्परा के सूफी साधकों तथा कवियों द्वारा गृहीत प्रतीकों का प्रयोग जहाँ एक सीमा तक जारी रखा, वहाँ उन्होंने सिद्धों और नाथपंथी योगियों के योग प्रतीकों को भी उनकी लोकप्रियता के कारण ग्रहण कर लिया। उनका प्रयोग उन्होंने बिलकुल उन्हीं अर्थों में नहीं किया जिन अर्थों

---

१ तसव्वुफ अथवा सूफीमत आचार्य चन्द्रबली पांडेय प्रकाशक सरस्वती मन्दिर जतनबर बनारस द्वितीय सं० १९४८ पृ० १०१

२ वही पृ १२

में सिद्ध और हठयोगी करते थे अपितु अपने साम्प्रदायिक प्रयोजन के अनुरूप उनका नव संस्कार कर लिया। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि भारतीय सूफी कवियों को नाथ सम्प्रदाय के साधकों के प्रतीक बहुत मन भाये और उन्होंने चुनकर उनका प्रयोग अपने काव्य में किया। मलिक मुहम्मद जायसी का 'पदमावत' इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। जायसी ने सूफी प्रेम साधना के अंतर्गत कुण्डली योग की सब प्रक्रियाओं को अंगीकार किया। सूफी साधना की शब्दावली सरल बनकर भारतीय भावनाओं के साथ इस प्रकार घुल मिल गयी कि पढ़ते हुए दोनों में कोई विरोध या पार्थक्य नहीं दिखायी देता।[1] सिंहलगढ़ के नवों खण्ड और नवों पौर के साथ काय साधन का साम्य बढ़ाते हुए जायसी ने बड़ी सूक्ष्मता से सूफीमत की साधना के चार पड़ावों—शरीअत तरीकत हकीकत और मारीफत—का भी उल्लेख कर दिया

> नवौं खण्ड नव पवरी औ तहँ बज्र केवार।
> चारि बसेरें सों चढ़ै सत सौं चढ़ै जो पार॥[2]

ऐसे प्रयोग जायसी ने अपने काव्य में प्रचुर परिमाण में किए हैं और उन्होंने उसे एक प्रकार से साहित्यगत अभिप्रायों के साथ-साथ अध्यात्म अर्थों का एक कोश ही बना डाला है।[3] इतना तो नहीं परन्तु पर्याप्त अंश में अन्य सूफी कवियों ने भी अपने काव्यों में सूफी और नाथपंथी प्रतीकों का सम्मिश्रण किया है।

जिस प्रकार सूफी कवियों ने अपने पूर्ववर्ती और समकालीन भारतीय मतवादों से प्रभावित होकर उनकी प्रतीकात्मक शब्दावली को ग्रहण किया उसी प्रकार उन्होंने अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए लोक प्रचलित तथा कुछ स्वकल्पित आख्यानों का भी उपयोग किया। सूफियों ने जितने प्रेमाख्यानक काव्य लिखे उनमें कहानी के साथ साथ अपने मत प्रचार का उद्देश्य भी सामने रखा है। कभी कभी तो इतिवृत्त से अधिक उन्हें अपना मतवाद अधिक प्रिय हो उठा है और अन्योक्ति तथा समासोक्ति के साँचे में ढलकर उनका काव्य सामान्य से अधिक विशेष अर्थ का द्योतक बन गया है।

हिन्दी के सूफी कवियों ने पौराणिक आख्यानों का उपयोग पूर्ण आख्यानक या अन्तर्आख्यानक काव्यों के रूप में बहुत कम किया है परन्तु प्रतीक अलंकार तथा दृष्टान्त के रूप में उनका प्रचुर प्रयोग उनके काव्य में मिलता है। पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों के आलंकारिक और दार्ष्टान्तिक प्रयोग के विषय में तो चर्चा अगले अध्यायों में होगी यहाँ उनके प्रतीकात्मक प्रयोग पर ही कुछ विचार किया जाएगा।

पौराणिक आख्यान तथा कुछ पौराणिक पात्र लोक रुचि और जन भावना के

---

१ पद्मावत मूल और संजीवनी टीका डॉ वासुदेवशरण अग्रवाल प्रकाशक साहित्यसदन चिरगाँव (झाँसी) द्वितीय सं॰ २०१८ वि॰ प्राक्कथन पृ॰ ५९
२ वही छ ४१ दोहा २।१७
३ वही प्राक्कथन पृ ६२

लिए इतने आकर्षक तथा मोहक सिद्ध हुए हैं कि उनका प्रयोग काव्य मे साहित्यिक रूढ़ि का रूप ग्रहण कर चुका है। लोकोक्तियो और मुहावरो तक मे उनको स्थान मिल गया है। किसी पात्र या आख्यान का लोकोक्ति बन जाना अपने-आपमे उसकी लोकप्रियता और काल सिद्धता का प्रमाण है। स्वाभाविक ही था कि ऐसे लोकप्रिय आख्यान और पात्र सूफी कवियो के आख्यानों मे स्थान पा जाते। किन्तु सूफी कवियों ने उनका प्रयोग अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए भी किया है। प्रस्तुत प्रबन्ध के अध्याय ११ मे इस पर विचार किया जाएगा।

जिन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे पौराणिक आख्यानो अथवा पौराणिक पात्रो का प्रतीक के रूप मे उपयोग हुआ है वे हैं— चदायन मृगावती पद्मावत, चित्ररेखा 'मधुमालती 'माधवानल-कामकदला (आलम) चित्रावली' ज्ञानदीप 'हस जवाहिर, 'इन्द्रावती' और 'अनुराग-बाँसुरी'। केवल पदमावत नलदमन पुहुपबरिषा, तथा हस-जवाहिर मे शामी पौराणिक आख्यानो तथा पात्रो का प्रतीकात्मक उपयोग किया गया है।

इन काव्यो[1] मे प्रतीक के रूप मे प्रयुक्त भारतीय एव शामी पौराणिक आख्यानो एव पात्रो का अकारादि क्रम से उनके प्रतीक विषय एव कथा सदर्भ के सहित नीचे दिया जा रहा है। जिन हस्तलिखित एव दुर्लभ प्रेमाख्यानो की मूल पक्तियो को हम अध्याय ६ मे पाद टिप्पणी के अन्तर्गत उद्धृत कर चुके हैं उनको यहाँ पुन नहीं उद्धृत किया जायगा। आवश्यकतानुसार उनको उस अध्याय मे देखा जा सकता है।

भारतीय पौराणिक आख्यान

(१) अगद का रावण की सभा मे पाव रोपना[2]—वैरागी अत करण मे कहता है कि प्रेम के रणक्षेत्र में अगद जसे वीरो के भी पाँव उखड जाते हैं।

(२) अगस्त्य द्वारा समुद्र शोषण[3]—राजा रायभान के सैनिको की वीरता का प्रतीक। राजा का आज्ञा पाकर वे समुद्र भी सोख सकते हैं।

(३) अर्जुन का द्रौपदी-स्वयवर मे मत्स्य वध कर साधिकार द्रौपदी से विवाह करना[4]—रतनसेन ने सिंहल जाकर साधना के द्वारा सिद्धि रूप पदमावती को प्राप्त किया। वह माया रूप अलाउद्दीन के कहने से उसे कैसे छोड दे?

---

१ चदायन मृगावती पद्मावत चित्ररेखा मधुमालती माधवानल-कामकदला (आलम) चित्रावली ज्ञानदीप हस जवाहिर इन्द्रावती और अनुराग-बाँसुरी।

२ अनुराग-बाँसुरी पृ० ११५ छद १६।६

३ ज्ञानदीप छद १२

४ पद्मावत १६७।५ ६-७ १६८।६ ४६१।३ ४ इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) खण्ड छंद १८।५ दोहा १८

अजुन भावी वर का द्रौपदी नायिका का राहु वेध नायिका को पान की घात (समुद्र म स मोती निकालना) का प्रतीक।

(४) उद्धव द्वारा गोपियों से कृष्ण को मिलाना[1]—उद्धव द्वारा गोपियो म कृष्ण को मिलाना किसी प्रमघटक द्वारा प्रमी प्रेमिका को मिलान की क्रिया का प्रतीक। कृष्ण=नायक (रूपवदन)। गोपियाँ=नायिका (कवलावती)। उद्धव=माध्यम (चितरा)।

(५) उषा अनिरुद्ध का प्रेम—बाणासुर का बाधक बनना—अतत बाणासुर का हार मानना अनिरुद्ध को उषा की प्राप्ति[2]—यहाँ अनिरुद्ध प्रेमी का उषा प्रेमिका की और बाणासुर उन दोनो क मिलन म बाधक तत्त्व (यहाँ राजा गधवमन) का प्रतीक है।

(६) कच देवयानी का प्रेम—कामदेव का मारा जाना—कच का कामदेव को जिलाने क लिए शुक्राचाय के पास रहकर सजीवनी विद्या सीखना[3]—प्रथम रात्रि म देवजानी कुवर ज्ञानदीप स रति क्रीडा म पराजित। यही है यहाँ कामदेव का मारा जाना। कच यहाँ प्रतीक है नायक (ज्ञानदीप) का और देवयानी प्रतीक है नायिका (देवजानी) की।

(७) कृष्ण द्वारा बाल्यावस्था मे की गई चमत्कारी और वीरतापूण लीलाए करना[4]—कृष्ण अल्पवयस म ही वीरतापूण काय करनवाल साहसी बालक क प्रतीक। यहा बालक अपन को कृष्ण मानता है।

(८) कृष्ण का निष्ठुर बनकर राधा (गोपियों) को विरहावस्था मे छोडकर मथुरा जा बसना—गोकुल का उनक न रहने पर उजाड हो जाना[5]—कन्हैया (कृष्ण) उस नायक का प्रतीक है जो नायिका को विरहावस्था म छोड देता है।

मधुवन उस स्थान का प्रतीक है जहाँ नायक जा बसा है।

गोकुल उस स्थान का प्रतीक है जहाँ नायिका विरह-दुख झेल रहा है।

गोपिकाएँ नायिका की प्रतीक हैं।

(९) चद्रमा और राहु की शत्रुता—राहु का चन्द्रमा को ग्रसित करना।[6] (अमावस्या को ही सूय-ग्रहण होना, अर्थात सूय-ग्रहण स दुखी होकर चन्द्रमा का भी मुख काला पड जाना)—सूय प्रेम का प्रतीक है और चन्द्र प्रेमिका या शीतलता का प्रतीक।

---

१ कथा कँवलावती (हस्तलिखित) पत्र १० छन्द ७१

२ पदमावत २७४।३ ४ इद्रावती (पूर्वाद्ध) मन्दिर प० २७ छन्द १।चौ ५ और दोहा।

३ ज्ञानदीप छन्द २७६

४ पद्मावत ६१४।दोहा ४२।२

५ इन्द्रावती (पूर्वाद्ध) फाग खड छन्द ४।दोहा ४ छन्द ५।दोहा ५

६ पद्मावत २३।१ २५७।१२ ३८६।६-७ ४४१।६-७ ४४८।७ ६१०।७ चित्ररेखा प० ८८।चौ ३ वही प ६७।चौ ३ चित्रावली ५०७।१

राहु दोनो पर दु ख ढानवाले शतान या दुष्टात्मा का प्रतीक है। राहु विघ्न या अनिष्ट का भी प्रतीक है। चद्र पर राहु की ग्रह दशा शुभ काय मे आनवाले विघ्न की प्रतीक है। यहा चाद प्रतीक है नायक का और राहु प्रतीक है काल (मत्यु) का।

(१०) दशरथ द्वारा अनजान मे श्रवणकुमार की हत्या—उसके अधे माता पिता का प्यासे मर जाना, पर दूसरे के हाथ का पानी न पीना—श्रवण श्रवण रटते उनकी मत्यु—दशरथ द्वारा उनके शव का अग्नि-सस्कार[1]—नायक की पूव विवाहिता पत्नी द्वारा श्रवणकुमार की मात पित भक्ति' आख्यान का प्रतीक के रूप म प्रयोग।

(११) नल और दमयन्ती का एक-दूसरे से बिछुडकर फिर मिल जाना—दमयन्ती के विरह-दु ख का अन्त होना[2]—नल नायक का और दमयन्ती नायिका की प्रतीक है।

नल-दमयन्ती का बिछुडकर पुन एक-दूसरे म मिल जाना प्रेमी प्रेमिका के पुर्नमिलन का प्रतीक है।

(१२) महाभारत का युद्ध पाण्डवों और कौरवों के मध्य[3]—महाभारत भीषण युद्ध का प्रतीक है। कौरव-दल अन्याय-पक्ष का प्रतीक है। महाभारत पाण्डव तथा कौरव लोक-अनुश्रुति म क्रमश युद्ध, न्याय और अन्याय के प्रतीक बन गये हैं।

(१३) राम और सीता का प्रावश दाम्पत्य प्रेम—पारस्परिक अनुरक्ति—राम का सीता के हठ के कारण उन्हें वन ले जाना—वन मे रावण द्वारा सीता हरण—राम-सीता का वियोग रावण के कारण—राम रावण की शत्रुता सीता को लेकर—सीता का रावण के बधन मे रहना—सीता के पास रहते भी रावण का उसको भोग न कर सकना—सीता के लिए राम द्वारा रावण का वध—सीता और राम का पुन मिलन। इस अभियान म राम के सहायक मित्र और सेवक लक्ष्मण तथा हनुमान[4]—राम सीता परस्पर अनुरक्त पति पत्नी और प्रेमी प्रेमिका के प्रतीक हैं। रावण प्रेमी और प्रमिका को वियुक्त करानेवाली शक्ति का प्रतीक हो गया है। वियोगी राम वियागा नायक के और वियोगिनी सीता वियोगिनी नायिका की प्रतीक। रावण और राम परस्पर शत्रु के प्रतीक।

राम और लक्ष्मण परस्पर मित्र और सहयोगी के प्रतीक। हनुमान प्रिय का सन्देश ल जानेवाले दूत और नायक के विश्वस्त सवक के प्रतीक।

---

१ पद्मावत ३६२।६७ दोहा ३१।४ ३६८। ६

२ मृगावती २४३।२

३ चित्रावली ३८३।दोहा

४ मगावती ६१।दो० ६३।६ १ २।दोहा १०३।१ पदमावत ११९।४ २३२।दोहा २३।१६ ६५१।१ २ मधमालती २८८।१ और ४ चित्रावली ४६७।१ २ और ५ तथा दोहा ज्ञान दीप छ० २२० इन्द्रावती (उत्तराद्ध) हस्तलिखित प० ८७ छंद २७१

राम नायक सीता नायिका और रावण खलनायक के प्रतीक।

रावण नायिका को बंदिनी बनाकर रखनेवाले राक्षस का प्रतीक। रावण नारी-अपहर्त्ता का और सीता अपहरित नारी का प्रतीक।

पदमावत ३२२।दो०२३।१६ में रावण को प्रेमी के प्रतीक और सीता को प्रेमिका के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। रावण सीता को पास रखकर भी उसका भोग न कर सका। ऐसे ही नायक-नायिका मिलन होने पर भी भोग न कर सके। राम द्वारा रावण को मारना खलनायक (या नायिका को बंदी बनाने वाले राक्षस) को नायक द्वारा मारने का प्रतीक।

सीता राम का पुनर्मिलन नायक नायिका के पुनर्मिलन का प्रतीक।

(१४) शुकदेव का कहीं दो घड़ी से अधिक न ठहरना[1]—शुकदेव किसी स्थान पर गोदोहन समय से अधिक नहीं ठहरते थे। उनका एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमते फिरना साधु का रमते राम होने का प्रतीक। यहाँ शुकदेवजी की कथा का साहित्यिक अभिप्राय और प्रतीक के रूप में प्रयोग हुआ है।

(१५) सुमेरु पर्वत को झुकाना[2]—सुमेरु को झुकाना अहंकारी का मान मर्दन करने का प्रतीक।

(१६) हनुमान द्वारा रावण की पुष्प वाटिका (बारी) का विध्वंस करना—लंका-दहन करना और रावण का गर्व-खर्व करना[3]—हनुमान द्वारा वाटिका (बारी) का विध्वंस करना नायक द्वारा नायिका (बाला) का कौमार्य भंग करने का प्रतीक। लंका दाह विरहाग्नि द्वारा शरीर को जलाने का प्रतीक।

शामी पौराणिक एवं निजंधरी आख्यान

(१) मंसूर का सूली पर चढ़ना[4]—मंसूर शहीद का प्रतीक है।

(२) लैला मजनू में प्रेम का अविच्छिन्न सूत्र होना[5]—लैला प्रेमिका का और मजनू प्रेमी का प्रतीक है।

(३) सुलेमान द्वारा जिन्द (देव) पर चढ़ाई करके उसे अपनी जादुई अंगठी को

---

१ पद्मावत ६०४।५

२ ज्ञानदीप छन्द १२

३ पद्मावत १६७।दोहा २ ।१५ १६८।५ ६ ३२७।२ ।

मिथ्याव भाषा भुइ मारे देउ अराप होइ जरि छार।
रावन गव रहा नहिं राखा ताका नस सहित सुप साथा॥

× × ×

लंका-दहन भजौ एह गाऊ पल करऊ छन महँ एह ठाउँ।
घरी आध महँ पोवउ होइ सो बावन रूप॥ —ज्ञानदीप छन्द २६०

४ पद्मावत २६०।६

५ नल दमन १३८।७ हंस-जवाहिर पृ० १६६।१५

सहायता से अपने वश में करना—उससे सेवा लेना[1]—सुलमान वीरता का प्रतीक। जिन या देव उस नायक का प्रतीक जो बलशाली शत्रु के बंधन में पड़ गया हो।

भारतीय पौराणिक पात्र, घटना तथा स्थान

अर्जुन[2]—अर्जुन पराक्रमी और वीर नायक का प्रतीक है।[3]

इन्द्रलोक[3]—इन्द्रलोक ऊँचाई का प्रतीक है।

उषा[4]—उषा नायिका की प्रतीक है।

कंस[5]—कंस अत्याचारी राजा का प्रतीक है।

कृष्ण[6]—कृष्ण उस नायक के प्रतीक हैं जो कुछ दिन रस भोग कर नायिका को छोड़ जाता है।

धन्वन्तरि[7]—शामी परम्परा में जैसे हकीम लुकमान योग्य चिकित्सक के प्रतीक हैं, वैसे ही भारतीय परम्परा में धन्वन्तरि। धन्वन्तरि ही समुद्र मथन के उपरान्त अपने सिर पर अमृत घट लेकर निकले थे अतः यह मान्यता है कि उन्हीं में अल्पायु को दीर्घायु बनाने की सामर्थ्य है। यह लोकविश्वास है।

नल[8]—नल सुन्दर और विरह पीड़ित नायक का प्रतीक।

भीम[9]—भीम पराक्रम का प्रतीक।

मदन (मनोज)[10]—मदन (कामदेव) सुन्दर नायक का प्रतीक।

---

१ पद्मावत १७७।१ मान बहुत कर मुना बयानि मारयो देव कीं न गति हानि।
एता और न माता जामी कहा सुलेमा फिरि अगु मायो॥
—मृगावतीरिया पत्र १४ छं० ६८

२ एहु मरजन भइ भारथ बांधा अरजुन रहे बनाकर बांधा।
—चित्रावली ३८६।७ अनुराग-बांसुरी १९।४

३ पद्मावत ४।१२

४ मृगावती १५। दोहा

५ पद्मावत ६२६।२

६ लोरकहा (चन्दायन) (भोपाल प्रति), छं० २। दोहा

७ चित्ररेखा प० ९२। दोहा १
चित्रावली १ ८।४ (निमिष न लाइ निबाहै तोरा तें सहदेव धनधर मोरा।)
माधवानल-कामकंदला (हि० प्रे० मा० का संग्रह) प० २२२ पंक्ति १९

८ माधवानल-कामकंदला (हि० प्रे० का० सं०) प० २१८ पंक्ति १४

९ धनगर कुंभ भीम सों जो अरजुन सम होइ।
पर्वा जाइ घर मारने जो आएउ मनि घोइ॥
(ज्ञानदीप का कथन सुलेमान से) —ज्ञानदीप छं० ४०, अनुराग-बांसुरी १९।५६

१० भरि पंचबार किने रति-मैन मन उमंग पै उमड़न मन।
(रत्नावती और कुंवर मोहन का आलिंगनबद्ध होना।)
—रतन रत्नावली (हस्त०) छं० १०। चौ० ३

महाभारत युद्ध[1]— महाभारत का युद्ध लोक अनुश्रुति में भयंकर युद्ध का प्रतीक।

रति[2]— कामदेव और रति की कामना उभर आई। प्रेमी प्रेमिका का प्रतीक।

राधा[3] – राधा नायिका और मुरारी नायक के प्रतीक।

रावण[4]—रावण स्त्री अपहर्ता का प्रतीक। नगर सभा के पंचों ने लोरिक को रावण कहा क्योंकि उनकी दृष्टि में वह स्त्री उभारनेवाला था।

लक्ष्मी[5]—लक्ष्मी सुशीला स्त्री का प्रतीक।

शिवलोक[6] शिवलोक चले जाना स्वर्गवास का प्रतीक।

सहदेव[7]— सहदेव जो पंच पाण्डवों में से एक थे अपनी विद्वत्ता के कारण लोकानुश्रुति में पाण्डित्य के प्रतीक बन गये हैं।

---

१ पद्मावत २४२।१, दोहा २४।४ २६४।२ २६४।दोहा २८।८ ६१२। दोहा ५३।१२
चित्रावली १८६।७ (एह अरजुन अइ भारथ साधा अरजन रहे बचाइर बाँधा)
भौंह धनष औरा सो तानी जिन तिरपी सो ह्वयो बिनानी।
भति भचक सनमथ भयें भारत अरजन हू दपित सो हारत॥
—कथा कवलावती पत्र ७ छं० ४४
जगपनि भारथ कियो प्रचार जीवित रह्यो भरथ असार॥
—कथा कनकावती पत्र ७ छं० ५४
गिरे गयन्द हाथ निज चूना भारथ पर भारथ भा दूना।
—हुस जवाहिर पृ० २१८ छं० ६२१। चौ० ४
भई जूझ रन भारथहि गा परलो भस बीत। —वही पृ० २३९ छं० ६५८। दोहा
भयो जूझ जस सब सुना भाग है भारत आ गुना॥
—वही पृ० २४० छं० ६६२। चौ १
भय भारत भी गइ तज दूजो इ छा जो चाकर सो पूजो।
—वही पृ० २४६ छं० ६७६। चौ० ५
बानई घटा धूर सा दिनमनि रहा छिपाय।
तहाँ महाभारथ भा सबद परेउ हू हाय॥ —इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) युद्ध खंड दोहा ७
२ भरि भरवार मिले रति मन मन उमग प उमडउ गन।
—कथा रतनावती छंद ११०।चौ ३
३ स कें उठयो ऊहाँ ते पयो मायो जहाँ तहाँ हरनपी।
बठी हा बहु दुख को जारो मरयी राधा देखि मुरारी।
—कथा कवलावती पत्र ३२ छं० २००
४ चन्दायन (प ला गुप्त) मनेर शरीफ १८ प्र०।३८२।४
लोरकहा (सपा० डा० मा० प्र गुप्त) ६७।४ १
५ पद्मावत ५३।६
६ वही ७६।१
७ वही ८१।५
निमिष न जाइ निसाँ तोरा तूं सहदेव धनतर मोरा। —चित्रावली ३०८।४
करता चहे करता कर भऊ जान नाहि मरम सहदेऊ। —ज्ञानदीप छं० २०

सावित्री[1]—सावित्री सती साध्वी स्त्री की प्रतीक बन गयी है।

गोरखनाथ (गोरख का वेश)[2]—गोरख योगी का प्रतीक। गोरख-वेश मध्यकालीन योगियों द्वारा धारण किये जाने वाले वेश का प्रतीकात्मक शब्द।

गोरखपंथ[3]—यह मध्यकालीन विश्वास था कि हर जोगी गोरखपंथी होता है। जोगी वेश भूषा के लिए गोरखपंथ प्रतीक बन गया था।

प्रतीक के रूप में प्रयोग किये गये भारतीय पौराणिक आख्यानों एवं पात्रों आदि के उपर्युक्त विवरण पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट हो जायेगा कि हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में सर्वाधिक प्रतीक भारतीय पौराणिक आख्यानों एवं पात्रों से ग्रहण किये गये हैं। प्रतीक रूप में राम कथा के आख्यान अधिक प्रयुक्त हुए हैं और महाभारत-कथा के पात्र। इनकी सारिणी इस प्रकार है—

आख्यानक स्रोत	प्रयुक्त प्रतीकात्मक आख्यान		प्रयुक्त पात्र	
रामायण (राम-कथा)		४		१
महाभारत-कथा		२		४
पौराणिक स्रोत—				
भारतीय		६		११
शामी		३		—
योग	भारतीय	१५	भारतीय	१७
	शामी	३	शामी	—

यदि राम-कथा महाभारत कथा और पौराणिक आख्यानों एवं पात्रों आदि को एक ही वर्ग (पौराणिक) में परिगणित कर लिया जाय तो आख्यानक प्रतीकों के प्रयोक्ता सोलह सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में इन प्रयोगों की आवृत्ति-सारिणी इस प्रकार होगी—

---

१ सावित्री के पाँव तर है बकुण्ठ मनूप।
जो सेव सो पाव रॉक होइ की भूप॥

—इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध), मानिक खण्ड दोहा ६६

तुम जिउ भव प्रभुपन काया धन सावित्री जँ तेहि जाया।

—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध—हस्तलिखित) प० २६६

बल्लभ की सावित्री रोव बरन रकत आँसु सो धोव। —वही प० ३०१

२ मधुमालती (मा प्र० गु), १७२। दोहा २६१।५

३ पदमावत १७४।१२ (रीलण्ड्स ११२) मधुमालती १०४।५ और दोहा

पौराणिक आख्यानक एव पात्रादिक प्रतीको की आवत्ति सारिणी

क्रम सख्या	सूफी प्रमाख्यानक का य	भारतीय पौराणिक प्रतीक		शामी पौराणिक प्रतीक	
		आख्यान	पात्र आदि	आख्यान	पात्र आदि
१	चदायन	—	२	—	—
२	मगावती	५	१	—	—
३	पदमावत	१०	६	१	—
४	चित्ररेखा	२	१	—	—
५	मधुमालती (मझन)	२	—	—	—
६	माधवानल कामकदला (आलम)	—	२	—	—
७	चित्रावली	४	४	—	—
८	ज्ञानदीप	५	२	—	—
९	कथा कँवलावती	१	२	—	—
१०	कथा कनकावती	—	१	—	—
११	पुहुप बरिखा	—	—	१	—
१२	कथा रतनावती	—	२	—	—
१३	नल-दमन	—	—	१	—
१४	हस जवाहिर	—	४	१	—
१५	इद्रावती	६	४	—	—
१६	अनुराग बासुरी	१	२	—	—
	योग	४६	३६	५	—

टिप्पणी—गोरखनाथ और गोरखपथ सम्बन्धी उल्लेखो की गणना इस सारिणी म नही की गई है। उनकी आवत्ति चदायन म १ बार पदमावत म १ बार और मधुमालती म २ बार हुई है।

आख्यानक प्रतीको के विषय

प्रतीको क उपयुक्त काश पर दष्टिपात करने पर यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि अधिकाश प्रतीक प्रेमाख्यानो म सम्बन्धित हैं। इतर प्रतीको का प्रयोग भी प्रेम तत्व निरूपण क लिए ही किया गया है। जिन विविध गुणो और कार्यों क लिए आख्यानक प्रतीक प्रयुक्त हुए ह वे य हैं—

दन्त कठिन काय सपादन, पराक्रम, अल्पवयस्क म वीरता और साहस के कृत्य प्रेमी प्रेमिका का अवश्यम्भावी मिलन, नायिका को प्राप्त करन की कोई शत, प्रेम-सम्बन्ध घटक या दूत द्वारा प्रेमी प्रेमिका का मिलन कराना नायक की निष्ठुरता, नायक का अदभुत काय प्रेमी प्रेमिका के मिलन म बाधक तत्व नारी अपहर्त्ता खलनायक को पराजित कर नायिका की प्राप्ति विरह-दाह अति सौन्दय, शुभ काय म विघ्न अनिष्ट सती साध्वी और सुशीला नारी पाण्डित्य मान पिल भक्ति बल शाली अयाय पक्ष के साथ निबल याय-पक्ष का सघर्ष और उसम उसकी विजय अहकारी का मान मदन अत्याचारी का विनाश अत्याचार के गढ का ध्वस भीषण युद्ध याग्य चिकित्सक इत्यादि।

हिन्दी के मध्यकालीन काव्य मे आख्यानक प्रतीक-परम्परा

हिन्दी के मध्ययुगीन काव्यो म आख्यानक प्रतीका की परम्परा का अनुसधान करन हुए यह तथ्य उदघाटित हुआ कि 'रामचरित मानस सूरसागर' तथा 'राम चद्रिका म पौराणिक आख्यानो का प्रतीक के रूप म प्रयोग नही किया गया है। केवल विद्यापति का पदावली म राहु और चद्रमा के आख्यान का एक स्थल पर प्रतीकात्मक प्रयोग मिला है[1]। उसम सुरति क्रीडा क समय राहु को प्रेमी (कृष्ण) का और चन्द्र को प्रमिका (राधा) का प्रतीक माना गया है। इससे इस निष्कष पर पहुँचना तथ्याधारित है कि मध्यकालीन काव्या म पौराणिक आख्यानों का प्रतीकात्मक प्रयाग मुख्यत सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो म हुआ। मृगावती पदमावत, मधुमालती, चित्रावली ज्ञानदीप हस जवाहिर इन्द्रावती तथा अनुराग बाँसुरी आदि प्रमुख सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो म एस प्रयोग विशेषत मिल हैं।

---

१ विद्यापति की पदावली स श्री रामवृक्ष बनीपुरी पुस्तक भण्डार लहेरिया सराय पटना द्वितीय सस्करण पद ६४ पक्ति १४

८ | सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे पौराणिक आख्यानो का आलकारिक प्रयोग

कवियो द्वारा काव्य की शोभा बढ़ान के लिए कथन की वक्रता या उक्ति वचित्र्य का प्रयोग प्राचीन काल स किया जाता रहा है। हमारे देश के प्राचीन काव्य साहित्य वाल्मीकि रामायण' और महाभारत म उक्ति वचित्र्य के अनक उदाहरण मिल जात हैं। पुराण साहित्य म भी इसकी कमी नही है। वस्तुत अपनी बात को ऐस चमत्कारिक ढग स कहन की प्रवृत्ति जिसस भाव-सप्रेषण म सहायता तो मिले ही उसम तीव्रता भी आ जाय मानव स्वभाव म बद्धमूल है। कथन की इस वक्रता को ही काव्य शास्त्र म अलकार की सज्ञा दी गयी है। दो वस्तुओ या काय व्यापारो के परस्पर रूप गुण एव स्वभाव सम्बधी सादृश्य या विरोध के आधार पर उनकी तुलना करन की प्रवृत्ति न कथन की अनक शलियो को जन्म दिया और उनका वर्गीकरण करके काव्यशास्त्रियो न उनको १८० स भी अधिक अलकारो क अतगत परिगणित कर दिया।[1] श्रेष्ठ कवि कभी अपन काव्य को अलकार बोझिल नही करत। उनके लिए अलकार भावोत्तेजन क साधन मात्र होते हैं अपन-आप म वे साध्य नही बन जात। किसी काव्य म अलकारो का स्वरूप कवि और पाठक की सास्कृतिक चेतना के द्वारा निर्धारित होता है। अलकार प्रयोग क बाद यदि कवि की उक्ति पाठक या श्रोता

---

१ भरत मुनि के नाट्यशास्त्र म केवल ४ अलकारों की ही गणना की गयी है। अग्निपुराण म उनकी सख्या १६ हो गयी है। तदुपरात छठी शती म हुए भट्टि और भामह ने उनकी सख्या ३८ तक पहुचा दी। ८वीं शती तक दण्डी उद्भट तथा वामन आदि आचार्यों ने इस सख्या म १४ की और वृद्धि कर दी। आठवी स बारहवीं शती के मध्य रुद्रट भोज मम्मट रुय्यक आदि ने अलकारों की सख्या को १०३ तक पहुचा दिया। १३वीं शती म जयदेव के चन्द्रालोक म १६ अथवा नवीन अलकार सामने आये। १४वीं से लेकर १७ वीं शती तक विश्वनाथ और अप्पय दीक्षित के द्वारा १३३ अलकार परिगणित कर लिये गये थ। सत्रहवी शती में जो भारतीय अलकार शास्त्र के विकास का अन्तिम काल है पण्डितराज जगन्नाथ का रसगगाधर' लिखा गया। उसमें विभिन्न आचार्यों द्वारा निरूपित अलकारों की सख्या को १८० स भी ऊपर पहुँचा दिया गया है। दे 'सक्षिप्त अलकार मजरी भूमिका सेठ कन्हैयालाल पोद्दार हिन्दी सा० स प्रयाग स २ १२ पृ० १ १२।

के लिए सहज बोधगम्य न रही, उससे रसोद्रेक में सहायता न मिली, तो अलंकार का प्रयोजन ही नष्ट हो जाता है। कवि की भाव संप्रेषण क्षमता और पाठक या श्रोता की भाव बोध क्षमता में जब तक सामंजस्य नहीं होता किसी काव्य का कथ्य आनंद की उपलब्धि नहीं करा पाता। इसीलिए रससिद्ध कवि अपने पाठक या श्रोता के रसबोध की सामर्थ्य का ध्यान रखकर चलते हैं।

चौदहवीं से सत्रहवीं या अठारहवीं शती तक का काल एक ओर जहां अलंकार-शास्त्र के विकास का समय रहा वहाँ दूसरी ओर हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के उद्भव और विकास का भी। अतः सूफी कवियों द्वारा अपने काव्य में अलंकारों की बिल्कुल उपेक्षा सम्भव न थी। परन्तु चूंकि सूफी कवि अधिकांशतः लोकोदित कवि थे, जनता की ठेठ भाषा में काव्य रचना करनेवाले और लोक प्रचलित कथाओं से अपनी काव्य वस्तु का एक विशेष आध्यात्मिक अर्थ की व्यंजना के लिए शृंगार करनेवाले इसलिए उन्होंने उन्हीं अलंकारों को चुना जिनमें उनके सामान्य श्रेणी के पाठकों को आवश्यक भावोत्तेजन प्राप्त हो सके। सूफी कवियों ने बौद्धिक कलाबाजी से अपने को दूर ही रखा और शब्द-कौतुक से अलग, यहां तक कि श्लेष और यमक जैसे शब्दालंकारों का प्रयोग भी इन कवियों द्वारा भूले भटके ही किया गया। अर्थालंकारों में भी इन्होंने अधिकतर सादृश्य मूलक अलंकारों को ही चुना है और उनमें भी इनकी अधिक ध्यान उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, उदाहरण, दृष्टांत, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, उल्लेख, व्यतिरेक, सन्देह आदि बहुप्रचलित अलंकारों की ओर ही रही।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में अलंकारों का समावेश सायास नहीं अनायास और सहज है। इन काव्यों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हुए बिना नहीं रहती कि ये कवि भारतीय साहित्यिक परम्परा से परिचित थे और लोक भावना के लिए अपने काव्य को सग्राह्य बनाने हेतु इन्होंने अपने अप्रस्तुत विधान में अधिकांशतः परम्परागत सादृश्य योजनाओं को स्थान दिया। भारतीय लोक जीवन विशेषतः पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक जीवन से इन कवियों ने अपने को इतना एकरस कर लिया था कि इनकी अलंकार-योजना में ग्रहण किए गए अप्रस्तुत विधानों में जन रुचि की पर्याप्त झाँकी मिल जाती है। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की अलंकार-योजना में गृहीत अप्रस्तुत विधान पर विविध शोध प्रबन्धों एवं ग्रन्थों में प्रकाश डाला जा चुका है। उसके पिष्टपेषण की आवश्यकता नहीं। यहाँ तो इन काव्यों में पौराणिक आख्यानों के आलंकारिक प्रयोग के स्वरूप एवं प्रकार पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाएगा। अभी तक एक तरह से यह अंग अछूता ही है। हिन्दी के सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों में पौराणिक आख्यानों के साथ-साथ कुछ भारतीय निजंधरी आख्यानों, लोक-कथाओं और प्रेमाख्यानों का भी आलंकारिक प्रयोग किया है। कुछ शामी परम्परा की निजंधरी लोक कथाओं का तथा पौराणिक कथाओं का भी इस निमित्त उपयोग किया गया है। साथ ही इन कवियों ने भारतीय और शामी परम्परा के पौराणिक तथा निजंधरी पात्रों, वस्तुओं

स्थानों, घटनाओं, पशु-पक्षियों, वृक्षों, पर्वतों एवं समुद्रों आदि का भी आलंकारिक प्रयोग किया है और उनकी संख्या नगण्य नहीं है। उनकी एक सूची इस ग्रंथ के परिशिष्ट में मिलेगी। अपने अध्ययन क्रम में हम जिन पौराणिक आख्यानों एवं पात्रादि के आलंकारिक प्रयोग प्राप्त कर सके हैं उनकी एक संख्यासूचक तालिका नीचे दी जा रही है।[1]

भारतीय		सामी			
पौराणिक आख्यान	पौराणिक पात्रादि	निजंधरी आख्यान	निजंधरी पात्रादि	पौराणिक निजंधरी एवं लोक आख्यान	पौराणिक निजंधरी एवं लोक कथाओं के पात्रादि
१	२	३	४	५	६
१०५ (राम-कथा के लगभग ३० प्रमुख आख्यानों सहित)	५६ (इनके अतिरिक्त २१ से अधिक पौराणिक प्रसिद्धि के स्थान, वस्तुएं घटनाएँ, पशु-पक्षी वृक्ष पर्वत समुद्र आदि भी हैं।)	४	६	१०	३

यहाँ मुख्यतः भारतीय पौराणिक आख्यानों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। सुविधा की दृष्टि से इन आख्यानों को (१) रामायण स्रोत, (२) महाभारत स्रोत एवं (३) पौराणिक स्रोत इन तीन वर्गों में विभाजित करके उनके उपयोग के स्वरूप पर विचार होगा।[2]

१ इस सारिणी की संख्याएं प्रायः ठीक हैं किन्तु भारतीय पौराणिक आख्यानों की संख्या में कुछ आख्यानों को एक साथ सम्बद्ध कर दिये जाने और कुछ महत्वहीन को छोड़ दिये जाने के कारण इस संख्या में दो-चार की *न्यूनाधिकता* हो सकती है।

२ आख्यानों को प्रसंगानुसार न लेकर अकारादि क्रम से लिया गया है। आख्यानों के शीर्षक सूफी काव्यों में प्राप्त उनके रूप के आधार पर हैं। हस्तलिखित एवं दुष्प्राप्य प्रेमाख्यानों से सम्बंधित उद्धरण इस ग्रंथ के अध्याय ६ में दिये जा चुके हैं। पुनरावृत्ति से बचने के लिए उनको यहाँ पुनः उद्धृत नहीं किया गया है।

मध्यकाल म पौराणिक आख्याना के आलकारिक प्रयोग की एक समद्ध परम्परा हिन्दी म मिलती है। विद्यापति सूरदास, तुलसीदास तथा केशवदास आदि ने अपने काव्यो म ऐसे प्रयोग प्रचुरता से किय हैं। 'विद्यापति की पदावली' 'सूरसागर' 'राम चरित मानस' और 'रामचन्द्रिका' म तो बहुत से पौराणिक आख्याना के आलकारिक प्रयोग हुए हैं। परन्तु यहा केवल उन्हीं आख्याना क प्रयोग पर तुलनात्मक दृष्टि स विचार किया जाएगा जिनका उपयोग सूफी कवियो ने किया है।

रामायण-स्रोत के आख्यानो के आलकारिक प्रयोग

(१) अगद का रावण की सभा मे पाव रोपना

१ १	अडिगता	गोरा बादल की वीरता।[1]
१ १ १		प्रम पथ म अगद जस शूरवीरो के भी पाँव नही टिकत।[2]
१ २	आतक	बिगडल हाथी द्वारा उत्पन्न प्रलय दश्य।[3]
१ ३	स्वामी के काय साधन का सकल्प	गोरा बादल द्वारा बीडा उठाना।[4]

अलकार १ १ १ ३ म उपमा और १ १ १ तथा १ २ म उदाहरण।

(२) दशरथ का सुत वियोग मे प्राण देना

२ १	पुत्र वियोग की मर्मान्तक पीडा	राजकुवर क घर छोडकर जान पर उसके पिता की मत्यु।[5]
२ १ १		कुवर मनोहर का घर स जाना।[6]
२ १ २		प्रीतमसिंह के जान पर माता पिता का प्राण त्याग।[7]

अलकार २ १ और २ १ १ म उपमा। २ १ २ म उदाहरण।

---

१ पदमावत ६१४।४ ६३१।७
२ मनराग-बाँसुरी १६।६
३ चित्रावली ४६६।१ २
४ पदमावत ६१२।१ ६१४।४
५ मगावती ६६।१ २
६ मधमालती १७१।४
७ चित्ररखा प० ६७ चौ० २

(३) दशरथ द्वारा अनजान में श्रवणकुमार के अन्ध माता पिता की हत्या—उनका श्रवण का नाम रटते मर जाना—दशरथ के हाथ का पानी न पीना—पुत्र वियोग में मरने का शाप—दशरथ द्वारा उनकी अंत्येष्टि—श्रवण की मातृ पितृ भक्ति।

३ १ पुत्र वियोग में प्राण-त्याग — राजकुँवर के जोगी बनने पर उसके पिता का मरना।[1]

३ १ २ — नागमती का रतनसेन को उसकी माता की मृत्यु का समाचार भेजना।[2]

३ २ मातृ पितृ भक्ति — उपयुक्त।[3]

३ ३ धोखे में अपराध करके ताड़ित और दण्डित होना — रानी हीराकुँवर का परेवा से कथन।[4]

अलंकार ३ १ २ में उपमा शेष में उदाहरण।

(४) राम और सीता का आदर्श दाम्पत्य प्रेम—सीता का सतीत्व

४ १ दुःख में पति पत्नी का साथ — कौंलावती का सुजान के साथ चलने का आग्रह।[5]

४ १ १ पति से वियुक्त होने पर प्रतिक्षण उसी का ध्यान — सुन्दरी का वियोग-वर्णन।[6]

अलंकार ४ १ में उदाहरण और ४ १ १ में रूपक।

(५) राम के राजतिलक का समारम्भ

५ १ पिता के द्वारा पुत्र को उत्तराधिकार देना — राजकुँवर द्वारा रायभान को राज्य सौंपना[7]।

अलंकार उदाहरण।

(६) राम के बिना अयोध्या का सूना हो जाना (राम वन गमन)

६ १ नायक के चले जाने से उसका नगर उजाड़ — हंसराज के अपना राज्य छोड़ जाने पर राज्य की दशा।[8]

अलंकार उदाहरण।

---

१ मृगावती ६६ दोहा
२ पदमावत ३६८।३ ६
३ वही ३६२।६ ७ दोहा ३९।४
४ चित्रावली ५०७।१ १ (देखिए इस ग्रंथ का प्र ६ श्रवणकुमार की मातृ पितृ भक्ति संबंधी कथा)
५ वही ४७१।६ ७
६ इन्द्रावती उत्तरार्द्ध हस्त० पृ० २७१
७ मृगावती ३ ६।४ ५
८ इन्द्रावती उत्तरार्द्ध हस्त० पृ० १६३

(७) राम सीता के वियोग म विरहाकुल—विलाप करना

७ १	प्रिया वियोग म दु खी	चदा की सपदश से मत्यु लोरिक का विलाप।[1]
७ १ १	'	समुद्र का कथन वियोगी रतनसन म।[2]
७ १ २	' '	सुजान का विलाप चित्रावली के लिए।[3]
७ १ ३	' "	छीता के अपहरण स राम दु खी।[4]

अलकार ७ १ ७ १ ३ म उपमा। ७ १ १ और ७ १ २ म उदाहरण।

(८) राम रावण की शत्रुता सीता को लेकर

८ १	नारी को लेकर शत्रुता	सुरनानी का कथन ज्ञानदीप से।[5]

अलकार रूपक।

(९) राम को विपत्ति मे लक्ष्मण जसे भाई और हनुमान जसे सेवक की सहायता मिलना

९ १	विपत्ति म सहायता	सरजा को अमीर हमजा और अली की मदद।[6]
९ १ १	'	उदयभान का कथन अपने भाई से।[7]
९ १ २	'	छीता के पति राम का विसूरना।[8]

अलकार ९ १ म व्यतिरेक ९ १ १ म अर्थान्तरन्यास और ९ १ २ म उपमा।

(१०) राम द्वारा बाण चलाकर सेतुबन्ध के पास समुद्र को दो टुकडों मे काट देना

१० १	धनुष क लक्ष्य की अचूकता	पद्मावती की भौंहो की प्रशसा।[9]

अलकार व्यतिरेक।

चन्दायन (प्र सा म०) ३५९।१
पद्मावत ४१३।३ ६
चित्रावली १०६।१ ५
कथा छीता छद ३
ज्ञानदीप छद १२४
पदमावत १३५।३
कथा रतनमजरी पत्र ३३। छद २२८
कथा छीता छद ३०
पदमावत ४७३।४

(१५) लक्ष्मण का रावण को मारना (?)

१५ १ साहसपूर्ण कृत्य	जगपति की गर्वोक्ति।[1]

अलंकार उपमा।

(१६) लक्ष्मण को शक्ति-बाण लगना—हनुमान का सजीवनी लाकर उनकी मूर्च्छा दूर करना

१६ १ मूर्च्छाग्रस्त होना	पदमावती का सौंदर्य-वर्णन सुनकर रतनसेन की दशा।[2]
१६ १ १ आनन्द स्रोत का छिन जाना दुःख आ पड़ना	रतनसेन बंदी। पदमावती विरहाकुल।[3]
१६ १ २ विरह की तुलना शक्ति बाण से	मनोहर का प्रेमा से मधुमालती के प्रति अपना विरह कथन।[4]
१६ १ ३ स्नेह-पथ की दुर्गमता की शक्ति बाण से तुलना	वैरागी द्वारा भ्रत करण से स्नेह-पथ की कठिनाई का वर्णन।[5]
१६ १ ४ वियोग की तुलना शक्ति-बाण से	मृगावती विरह-पीड़ित।[6]
१६ १ ५ कामबाण की तुलना शक्ति बाण से	राजकुंवर का कथन।[7]
१६ १ ६ परमार्थ के लिए कष्ट सहन	विक्रमादित्य का कामकन्दला को अमृत देना।[8]

अलंकार १६ १ में उत्प्रेक्षा १६ १ १ में अन्योक्ति (सारूप्य निबन्धना)। १६ १ २ में उपमा और रूपक। १६ १ ३ से १६ १ ६ तक उदाहरण।

(१७) विभीषण द्वारा लंका का परित्याग—(उनका निष्कासन)

१७ १ शरीर में से प्राण निकल जाना	रतनसेन की मृत्यु।[9]
१७ १ १ कन्या की बिदाई पीहर से	मधुमालती की बिदा।[10]

---

१ हौं जगपति जगत सब जान। तू सखहा ओ आन न मान।
समगन ह्वै रावन ज्यों मारौं। हनवंत ह्वै लंका ज्यों जारौं॥

—कथा कनकावती प ७ छद ५१

२ पद्मावत १२।३४
३ वही ३५५। दो० ३४।७
४ मधुमालती २४४। दो
५ अनुराग-बाँसुरी १६।५
६ मृगावती २४३। दो०
७ वही २५५।३ ५
८ माधवानल-कामकन्दला (हि० प्र० ना० का० स), प २२३।१६ २०
९ पद्मावत ६४७। दो० ६६।१
१ मधुमालती ३११। दो०

१७ १ २ विरक्ति के साथ परित्याग — ज्ञानदीप की रायभानपुर म जाने की इच्छा ।[1]

अलकार तीनो म उत्प्रेक्षा ।

(१८) सीता स्वयवर मे शिव धनुष की प्रत्यचा चढ़ाकर राम का सीता से विवाह करना

१८ १ राम के धनुष की पद्मावती की भौंह की वक्रता और कटीलेपन से तुलना — पद्मावती की भौंहो की प्रशसा ।[2]

अलकार रूपक ।

(१९) सीता हरण

१९ १ पत्नी का अपहरण — सीता का अपहरण अलाउद्दीन द्वारा ।[3]

१९ ११ — चदा को साप ने डँसा ।[4]

अलकार दोनो म उपमा ।

(२०) सीता का अशोक वृक्ष के नीचे राम का विरह दुःख सहना

२० १ वियोगिनी नायिका द्वारा दुःख सहन — रतनसेन से पद्मावती वियुक्त होकर दुःखी ।[5]

२० ११ — सुजान के विरह म चित्रावली की दशा ।[6]

अलकार २० १ म उदाहरण २० ११ म उपमा ।

(२१) सीता और राम का वियोग के बाद फिर सयोग होना

२१ १ प्रिय प्रिया मिलन — नल और दमयन्ती का वियोग के बाद पुनर्मिलन ।[7]

अलकार रूपक ।

---

१ ज्ञानदीप छन्द ३८८
२ वही १ २१३
३ कथा छीता छन्द ३
४ लोरकहा (मा प्र स०) छद ४६
५ पद्मावत ४१४।१
६ चित्रावली १२७। दो
७ नल-दमन ३५६। दो०

(२२) सुग्रीव द्वारा वालि को बाँधना

२२.१	पराक्रमपूर्ण कृत्य	सुरजानी का थानदीप से जादुई घोड़े का पकड़न के लिए कहना।[1]

अलंकार : रूपक।

(२३) हनुमान का आकाश में ऊँचे चढ़ना

२३.१	नायिका प्राप्ति के लिए प्रयास	विरस्पत लोरिक का चंदा के धौराहर पर चढ़ने को उकसाती है।[2]

अलंकार : संदेह।

(२४) हनुमान द्वारा लंका की पुष्प-वाटिका को तहस-नहस करना

२४.१	कौमार्य भंग	पदमावती का स्वप्न-दर्शन।[3]
२४.१.१		स्वप्न का अर्थ-कथन सखियों द्वारा।[4]

अलंकार : २४.१ में उत्प्रेक्षा उपमा। २४.१.१ में रूपक तथा मुद्रालंकार।

(२५) हनुमान का सीता की सुध लाना और उनके कारण लंका को जला डालना

२५.१	सहायक का अद्भुत कार्य। नायिका प्राप्ति में नायक की सहायता	चंदा संपदर्शिता। लोरिक का विलाप।[5]
२५.१.१	"	मृगावती के चले जाने पर राजकुंवर का बिसूरना।[6]
२५.१.२	भ्रू और धनुष की तुलना	राजकुंवर मूर्च्छित।[7]
२५.१.३	विरह की ज्वाला की तुलना लंका को जलाने वाली आग से	पदमावती का विरह-वर्णन।[8]
२५.१.४		नागमती का विरह।[9]

---

१ थानदीप छंद १२४
२ चंदायन (प्र० मा० गु०) १६७।४.५
३ पद्मावत १६७।६ दो० २।१५
४ वही १६८।४.६
५ चंदायन (प्र० मा० गु०) ३२१।२.५
६ मृगावती, ६६।१.४
७ वही १७८।४
८ पद्मावत २५३।२
९ वही ३५५।२.३

२५ १ ५ पराक्रमपूण कृत्य	जगपति की गर्वोक्ति ।[1]
२५ १ ६ नायिका को मुख लाना	कँवलावती का चित्र बनाकर चितर का वापस जाना ।[2]
२५ १ ७ अप्रतिम काय	कोटि कवि भी हनुमान सा कृत्य नही कर सकत ।[3]
२५ १ ८ विरह का हनुमान की तरह गजन-तजन	नागमती का विरह वणन ।[4]
२५ १ ९ घर का भेदी लका ढाय	रतनसन द्वारा भाइयो के षडयन्त्र का बहाना बनाकर गधवसन से घर लौटन की आज्ञा लना ।[5]

अलकार २५ १ २५ १ ३ २५ १ ८ और २५ १ ९ म उदाहरण

२५ १ १, २५ १ ३ और २५ १ ७ म उपमा

२५ १ २ २५ १ और २५ १ ४ म रूपक ।

(२६) हनुमान का अजुन क रथ की ध्वजा पर बठना जिससे अर्जुन की जीत होना

२७ १ पराक्रम की प्रशसा	पदमावती द्वारा बादल की आरती उतारना ।[6]

अलकार रूपक ।

(२८) हनुमान का जमकात तोडकर राम लक्ष्मण को पाताल (महिरावणपुरी) से बधन-मुक्त करके ले जाना—महिरावण को मारना

२८ १ प्रिय क लिए कठिन काय की सिद्धि	मगावती राजकुवर का दशन क लिए पाताल तक भी जान का प्रस्तुत ।[7]
२८ १ १ साहसपूण कृत्य करक नायक को छुडाना नायिका म मिलाना	पदिमनी का गोरा-बादल म कथन ।[8]
२८ १ २	युद्धक्षेत्र म गोरा की उक्ति ।[9]
२८ १ ३	सुजान का विलाप ।[10]

१ कथा कनकावती पत्र ७ छन्द ४१
२ कथा कँवलावती पत्र ६ छन्द ६५
३ वही पत्र १ छन्द १६
४ पद्मावत ३५५।२ ३
५ वही ७६।१ २
६ वही ६४१।७
७ मगावती २५१ २ ३
८ पद्मावत ६११।६ ७
[illegible] वही ३६।७
१० चित्रावली १ ८।१ ३

२८ १ ४ विशाल कायत्व	विभीषण के दूत राक्षस का कथन।[1]

अलंकार २८ १ १ में उदाहरण। २८ १ २ में रूपक। २८ १, २८ १ ३ और २८ १ ४ में उपमा।

(२९) हनुमान द्वारा छद्म ऋषि राक्षस (कालनेमि) का वध

२९ १ युक्ति-पूर्वक पराक्रम का काय करना	सुरजानी का मानदीप से जादुई घोड़ा पकड़ने को कहना।[2]

अलंकार उदाहरण।

(३०) हनुमान द्वारा लंका की रखवाली करना—छह महीने सोना—छठे महीने जागकर जोर की हाँक लगाना

३० १ विरही के विरह का प्रभाव	रतनसेन की चिता की आँच हनुमान तक पहुँची।[3]
३० १ १ हृदय को सुलगा देना	रतनसेन को पदमावती का सन्देश।[4]
३० १ २ जागने का काय	अलाउद्दीन द्वारा गढ़ पर मल-बध।[5]
३० १ ३ विरह की तीव्रता	नागमती का विरह वर्णन।[6]

अलंकार ३० १ में अतिशयोक्ति, ३० १ १ और ३० १ २ में उपमा। ३० १ ३ में रूपक।

महाभारत स्रोत के आख्यानों के आलंकारिक प्रयोग

(१) अभिमन्यु का चक्रव्यूह में जूझना

१ १ दुर्धुर्ष संघर्ष	रतनसेन पदमावती की रति क्रीडा। रति क्रीडा की चक्रव्यूह से और रतनसेन की अभिमन्यु से तुलना।[7]

अलंकार उदाहरण।

---

१ पदमावत ३६४।१६
२ ज्ञानदीप छन्द १२४
३ पदमावत २६१।४ से २९१।८
४ वही १८७।१२
५ वही ५१३
६ वही ३५५।२
७ वही ३२४।१

(२) अर्जुन का द्रौपदी-स्वयंवर में बाण से मत्स्य वध

२ १	धनुष की वक्रता	पदमावती की भौंहों में अर्जुन के उस धनुष की तुलना जिससे उन्होंने मत्स्य-वध किया।[1]
२ १ १	" "	राघवचेतन द्वारा अलाउद्दीन से पद्मावती की भौंहों की प्रशंसा।[2]
२ २	लक्ष्य-वध की अचूकता	अर्जुन के बाणों ने जैसे राधा-वेध किया वैसे ही रतनसेन पद्मावती के साथ रतिक्रीड़ा करते समय लक्ष्य-वध में तन्मय।[3]
२ २ १	"	रति क्रीड़ा में नल द्वारा दमयन्ती का कौमार्य भंग।[4]
२ ३	वशवर्ती बनाना	स्वप्न फल-कथन। कोई आकर पद्मावती को अपने वश में करेगा।[5]
२ ४	शर्त पूरी करके साधिकार पाना	रतनसेन का कथन अलाउद्दीन के दूत से। पदमावती को उसने वैसे ही जीता जैसे अर्जुन ने द्रौपदी को।[6]
२ ४ १	"	इन्द्रावती को सखियों का समझाना कि कोई अर्जुन की तरह का वीर आकर समुद्र में से मोती अवश्य निकाल कर तुम्हें ब्याहेगा।[7]
२ ५	तीक्ष्णता	अर्जुन के बाणों की तरह ही सब मंगला के कटाक्षों में तीक्ष्णता।[8]

अलंकार रूपक २ १ उपमा २ २, २ ४ १
उत्प्रेक्षा २ २ १ उदाहरण २ ३ २४ २ ४ १
हेतूत्प्रेक्षा २ ५ प्रतीप २ १ १

१ पद्मावत १०२।५
२ वही ४७३।५
३ वही ३१६।४
४ नल-दमन छन्द २१७ के बाद ना प्र स० की प्रति के ३ छन्दों में से प्रथम छन्द की ७वीं पंक्ति।
५ पद्मावत १६७।५-७
६ वही ४६१।३ ४
७ इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) काम खण्ड १६।१ ३
८ अनुराग बाँसुरी ७८।५

(३) अर्जुन द्वारा कौरव-दल का संहार

३ १	शत्रु-नाश के लिए सन्नद्धता	लोरिक अर्जुन की तरह शत्रु सेना से लड़ने के लिए सन्नद्ध ।[1]
३ १ १		कामदेव ने नायिका के सुख को नष्ट करने के लिए पुष्प बाण संभाला ।[2]

अलंकार उत्प्रेक्षा ३ १, रूपक ३ १ १

(४) अर्जुन का नाग (अहिबन) की चपेट में आकर रोना

४ १	पुत्र के जोगी बन जाने पर पिता की विकलता	राजकुंवर के जोगी बन जाने पर उसके पिता की दशा ।[3]

अलंकार उदाहरण ।

(५) द्रौपदी का दु शासन द्वारा सताया जाना—कृष्ण से रक्षा की पुकार

५ १	विरह की तुलना दु शासन से	दमयन्ती नल की याद में रो रही थी । उसकी सखी द्वारा विरह की तुलना दु शासन से और दमयन्ती की दशा की तुलना द्रौपदी से ।[4]
५ २	कृष्ण की कृपा	द्रौपदी का चीर बढ़ाना । कवि द्वारा कृष्ण की प्रशंसा ।[5]

अलंकार ५ १ में उत्प्रेक्षा, ५ २ में रूपक और उल्लेख ।

(६) दुर्योधन द्वारा छल करना

६ १	सज्जनों के साथ छल	भोलाशाह के पुत्र के साथ जवाहिर के पिता के छल की तुलना दुर्योधन के छल से । भोलाशाह के मंत्री का दृष्टिकोण ।[1]

अलंकार उदाहरण ।

(७) पाण्डवों द्वारा कौरवों पर विजय

७ १	भौंह की तुलना धनुष से	मृगावती की भौंह की तुलना अर्जुन के उस धनुष से जिसमें उन्होंने

१ चंदायन (प० मा गु) १२१।२
२ चित्रावली ४३५।२ ३
३ मृगावती ६६।३
४ नल-दमन १६३।२ ३
५ सूरसागर १।१६२ पंक्ति ३ से ५, १।१७२ प० ३ ४ १।१६० प० ३ ४ १।३०६ प०७
६ हंस-जवाहिर प० १ ३।दो० २८२

	कौरवों का नाश किया।[1]

अलंकार रूपक।

(८) पांडवों का बंधन में पड़ जाना

८.१ सज्जनों के ऊपर संकट	रतनसेन अलाउद्दीन का बंदी बना। इसकी तुलना पाण्डवों के बंधन में पड़ने से।[2]

अलंकार उत्प्रेक्षा।

(९) भीम द्वारा दुःशासन की भुजा उखाड़ लेना

९.१ सज्जन के ऊपर संकट	अलाउद्दीन के द्वारा रतनसेन का बंदी बनाया जाना एक सन्ताप कारी घटना। उसकी तुलना भीम द्वारा दुःशासन की भुजा उखाड़ने से।[3]

अलंकार उत्प्रेक्षा।

(१०) भीम का लाक्षागृह में साहस करके पांडवों के प्राण बचाना

१०.१ विपत्तिग्रस्त की सहायता करने में साहस प्रदर्शन	पदमावती का कथन गोरा-बादल से कि जैसे भीम ने लाक्षागृह से पाण्डवों को बचाया वैसे तुम राजा को बचाओ।[4]

अलंकार उदाहरण।

(११) भीम द्वारा कीचक का वध

११.१ युक्तिपूर्वक कार्य करना	सुरज्ञानी ने कुंवर से कैसी ही युक्ति से घोड़ा पकड़ने को कहा जैसी युक्ति से भीम ने कीचक को मारा था।[5]

अलंकार उदाहरण।

(१२) भीम का अधिक भोजन करना

१२.१ अपनी शक्ति से बाहर कार्य	जो मछली कुंवर को निगल गई

१ मृगावती १७८।५
२ पद्मावत ५८६।७
३ वही ५८६।७
४ वही ६११।दो ५९।५
५ ज्ञान दीप ८० १२५

थी वह उसे नही पचा सकी ।[1]

अलकार उपमा ।

(१३) भीम द्वारा पाडवों को कबिरा दानव के बधन से मुक्त कराना

१३ १	बधन से मुक्त कराने वाला सहायक	बहरियार की कद मे पड़ा हुआ राजकुमार सोचता है कि मेरे पास कोई हनुमान जसा सेवक नही है ।[2]

अलकार उपमा ।

(१४) युधिष्ठिर (जुदिस्टिल) का हरा जाना—कबिरा दानव का पकड़ा जाना

१४ १	अपहरण की घटना	राजकुवर राक्षस द्वारा अपहरित । इसकी तुलना युधिष्ठिर के अपहरण से ।[3]

अलकार उदाहरण ।

(१५) महाभारत के युद्ध-रूपक

१५ १	सुहागरात का वणन ।	नायिका के कणफूल, भौंरा ताम्बूल रजित मुख प्रथम समागम और रोमावली की तुलना क्रमश युधिष्ठिर कण पाथ दुशासन और दुर्योधन को मारनेवाले भीम एव कृष्ण से की गई है । रतिसग्राम की तुलना महाभारत से ।[4]

अलकार रूपक ।

पौराणिक स्रोत के आख्यानो के आलकारिक प्रयोग

(१) अगस्त्य द्वारा समुद्र को सोखना

१ १	चमत्कारिक कृत्य	राघव चेतन को अगस्त्य बताना । जसे अगस्त्य का कृत्य चमत्कारिक वसे ही राघव चेतन का भी ।[5]
१ १ १	राजा का मर्यादा-युक्त होना	जसे अगस्त्य समुद्र को पीकर पचा

१ ज्ञानदीप छ० १८७
२ मृगावती १३६।१ २
३ वही २ ३।४ ५
४ ज्ञानदीप छ० २६४
५ पद्मावत ४४८।१

		गए वैसे ही सोहिलसेन सागरपति को हरा सकता है।[1]
१ २		कुश के बाण में वैसी ही दाहकता जैसे अगस्त्य के उदर में। जैसे अगस्त्य ने समुद्र सोखा वैसे कुश ने रामचन्द्र की सेना को समाप्त कर दिया।[2]

अलंकार १ १ और १ १ १ में रूपक।

(१क) इन्द्र द्वारा परनारी को छलना (अहल्या से व्यभिचार)

१क १	नायक की तुलना छलिया इन्द्र से	विक्रमादित्य के पूछने पर कामकन्दला की सखियाँ बताती हैं कि कोई विप्र आकर कंदला को छल गया। कहा वह कोई दूसरा इन्द्र तो न था।[3]

अलंकार सन्देह।

(२) उषा का अनिरुद्ध से मिलन

२ १	प्रेमिका का प्रेमी से मिलन	पद्मावती के स्वप्न का फल यह कि उसे उसका पति मिलेगा जैसे उषा को अनिरुद्ध मिला।[4]
२ १ १	,,	देवजानी और कुँवर ज्ञानदीप का प्रथम मिलन ऐसा ही मानो उषा-अनिरुद्ध परस्पर मिल रहे हों।[5]

अलंकार २ १ में उदाहरण और २ १ १ में उत्प्रेक्षा।

(३) उद्धव के द्वारा गोपियों को कृष्ण से मिलाना

३ १	नायक से मिलाना	कृष्ण की नायक से गोपियों की कवलावती से और उद्धव की चितरा से तुलना।[6]

अलंकार रूपकातिशयोक्ति।

---

१ चित्रावली ३६२।६ ७ तथा दोहा
२ रामचन्द्रिका ३६।११
३ माधवानल-कामकन्दला हस्तलिखित पत्र ३२
४ पद्मावत १६८।७
५ ज्ञानदीप छन्द १६४
६ कथा कवलावती पत्र १ छन्द ७१

(४) कच-देवयानी का प्रेम—कामदेव का मारा जाना

४ १	कामहनन	कच और देवयानी से क्रमश ज्ञानदीप और देवजानी का उपमित करना। उनके मिलन और रति की तुलना कामदेव के मारे जाने से।[1]

अलंकार रूपक।

(५) कामदेव को शिव द्वारा जलाया जाना

५ १	गर्वोक्ति	जगपति अपनी तुलना महादेव से और अन्य राजाओं की तुलना कामदेव से करता है।[2]
५ १ १	ईश्वर की महिमा	कामदेव का शिव द्वारा मारा जाना।[3]

अलंकार ५ १ में रूपक और ५ १ १ में उल्लेख।

(६) कृष्ण द्वारा लात मारकर कुब्जा का कूबड़ ठीक कर दिया जाना

६ १	बुराई से भी भलाई	मन इन्द्र का सन्देश लेकर दमयन्ती के पास जाता है। इससे जहाँ उसे दुःख वहाँ यह सुख भी कि दमयन्ती का दर्शन उसे हो गया। कुब्जा को कृष्ण ने लात मारी, लेकिन उससे वह सुन्दरी बन गई।[4]

अलंकार उल्लास।

(७) कृष्ण द्वारा व्रजवासियों पर आये संकट को टालना

७ १	अल्पायु में पराक्रम का कृत्य	बादल की उक्ति अपनी माता से—मैं छोटा हूँ तो क्या हुआ वीर हूँ। कृष्ण का उदाहरण देना।[5]
७ १ १		।[6]

अलंकार ७ १ और ७ १ १ में उदाहरण।

---

१ ज्ञानदीप छं० ८७६

२ हौं जगपति जगत सब जान तू सकहा को मान न मान।
  ×   ×   ×
मन्न भये हूँ ईस जराऊँ हरि भये मष्टपात हू धाऊँ॥
बान्र भये पवन हूँ फारू मान भये फागुन हूँ डारू॥ —कथा कनकावती पद्य ७ छं० २१

३ रामचरित-मानस १।दो ४

४ नल-दमन १६२।४

५ पद्मावत ६१४।६

६ वही ६१४।दो ५२।२

(८) कृष्ण से गोडिया का प्रतिशोध लेना

८ १	घात पाकर शत्रु को न छोडना चाहे वह कितना भी बलवान हो	कुटीचर कुवर से कहता है कि मैंने अपना बदला तुमसे ले लिया।[1]

अलकार अर्थान्तरन्यास (सामान्य से विशेष का साधर्म्य-समर्थन)— अप्रस्तुत प्रशसा मिश्रित।

(९) कृष्ण का कसासुर को मारना

९ १	भौंहो की तलना धनुष से	पदमावती की भौहें उतनी ही टूटीनी जितना कृष्ण का धनुष।[2]

अलकार रूपक।

(१०) कृष्ण द्वारा कालियनाग का दमन

१० १	वेणी के सौंदर्य की तुलना नाग से	हीरामन तोता पदमावती की वेणी की प्रशसा रतनसेन से करता है।[3]
१० १ १		[4]
१० २	गर्वोक्ति	गन्धर्वसेन अपनी तुलना कृष्ण से करता है।[5]
१० ३	सत्रासकारी घटना	अलाउद्दीन द्वारा रतनसेन को बदी बनाना वसी ही सत्रासकारी घटना जसी कृष्ण द्वारा कालिय नाग का नाथन की थी।[6]

अलकार रूपक १० १ म उपमा १० १ १ म उत्प्रेक्षा १० ३ म और अतिशयोक्ति १० २ म।

(११) कृष्ण का गोपियों को छोडकर मथुरा चले जाना

११ १	यौवन की दुवह मादकता	यौवन की समुद्र से नायिका की नाका से तथा कृष्ण का मामी से उपमा देना।[7]

---

१ चित्रावली ३६३।दोहा
२ पद्मावत १ २।४
३ वही ११५।२
४ वही ११२।६
५ वही २६५।३
६ वही ५७६।५
७ इन्द्रावती मुक्ति फागखण्ड छद ४।दो ४

११ २	नायक को विरहिणी का उपालम्भ	कृष्ण की तुलना उस नायक से जो अपनी विवाहिता पत्नी को छोड़कर अन्यत्र जा बसा हो।[1]
११ ३	नायक के चले जाने पर नगर का उदास हो जाना	कृष्ण के गोकुल चले जाने से इसकी तुलना।[2]
११ ३ १	नायिका के विरह के दुःख से सारा संसार दुःखी (नायक में सहानुभूति)	नल का मन्त्री प्रहतसेन उसे समझाता है कि सारा संसार तुम्हें दमयन्ती विरह में दुःखी देखकर दुःखी है।[3]

अलंकार ११ १ में उदाहरण ११ २ में रूपकातिशयोक्ति ११ ३ में रूपक, १० ३ १ में उपमा तथा उदाहरण।

(१२) कृष्ण द्वारा कंस को मारना

१२ १	नायिका के कटाक्ष की तीक्ष्णता	नायिका के कटाक्ष की तुलना उस धनुष बाण से जिसमें कृष्ण ने कंस को मारा।[4]

अलंकार उत्प्रेक्षा।

(१३) कृष्ण द्वारा सांदीपनि के खोये पुत्र का पता लगाना

१३ १	खोये पुत्र को मिलाकर पिता को सुखी करना	राय शिरोमणि राघभान के प्रति कृतज्ञ कि उसने उसके खोये पुत्र को मिलाया।[5]
१३ २	परोपकारिता	राजा शिरोमणि सुखदेव के प्रति कृतज्ञ। उसकी तुलना कृष्ण से करना।[6]

अलंकार १३ १ में उदाहरण और १३ २ में तुल्ययोगिता।

(१४) गन्धर्वों का सुन्दरी कन्याओं पर मुग्ध हो जाना

१४ १	सौन्दर्य का आकर्षण	पदमावती की सखियों के शरीर की सुगन्ध पर गन्धर्वों का मोहित हो जाना।[7]

अलंकार अतिशयोक्ति।

---

१ इन्द्रावती मुद्रित फागखण्ड ५।दो ५
२ वही हस्तलिखित पृ० १६३
३ नलदमन ११६।दोहा
४ वही [illegible] ।दोहा
५ ज्ञानदीप छं २६७
६ वही छं ४१६
७ पदमावत ५६।चौ० ४।१

(१५) गरुड़ का अपने पंखों से अमृत झाड़ना

१५ १	प्रिय के स्पर्श की मधुरता	पदमावती के दन्त की तुलना संजीवनी से और हीरामन की तुलना गरुड़ से।[1]

अलंकार उपमा।

(१६) चन्द्रमा राहु का ऋणी

१६ १	ऋणदाता और ऋणी का अटूट सम्बन्ध।	रतनसेन पदमावती की रूप प्रशंसा सुनकर मोहित। उसके साथ उसका मन सम्बद्ध।[2]

अलंकार उत्प्रेक्षा।

(१७) चन्द्रमा और राहु की शत्रुता--राहु द्वारा चन्द्रमा को ग्रसा जाना

१७ १	चन्द्रमा की तुलना नायिका से और राहु की तुलना विरह से	मैना का सन्देश सुनकर चंदा का मुख राहु ग्रस्त चन्द्रमा के समान हो गया क्योंकि उसे डर हुआ कि लोरिक अब घर चला जाएगा।[3]
१७ १ १	यौवन की उपमा चाँद से और विरह की राहु से	पदमावती की विरह व्यथा।[4]
१७ १ २		नागमती का विरह प्रलाप। चन्द्रमा = नागमती राहु = विरह।[5]
१७ १ ३	पति के आने पर विरह छूटना	रतनसेन के लौट आने पर नागमती का दुःख दूर।[6]
१७ १ ४	प्रेमी प्रेमिका के प्रेम में बाधा देनेवाले की तुलना राहु से	चन्दा लोरिक को घर में छिपा लेती है। माता पिता उसे राहु दिखाई देते हैं।[7]
१७ २	नायिका के बाल की तुलना राहु केतु से और मुख की तुलना चन्द्रमा से	परेवा द्वारा चित्रावली के नख-शिख का वर्णन।[8]

---

१ पदमावत २३५।दो २३।१६

२ वही ६६।६ ७

३ चंदायन (प० ला० गु०) ४३१।१ वही ४३३।दो० भोपाल प्रति २५।१

४ पदमावत १७२।दोहा १८।५

५ वही ३४८।३

६ वही ४२४।६

७ चंदायन (प० ला गु०) २३०।३

८ कंचन खटिया जान बखाना गरु सिर देन्ह लाग ससि नाना।
राहु अद्ध कहूँ सपरि निसका दुइ कर सौंहे सेति मयका॥
—चित्रावली छंद १८६।चौ ५ ६

१७२१	ग्रीवा का सौन्दर्य-वर्णन	परेवा द्वारा चित्रावली के नख-शिख का वर्णन।[1]
१७३	मुख की तुलना चन्द्रमा से और दुन्द की राहु से	पदमावती रतनसेन की बारात को देखकर बारात की तुलना राहु से करती है।[2]
१७४	नायिका के केश की तुलना राहु से और मुख की चन्द्रमा से	दमयन्ती की सखियाँ उसके बिखरे केश को देखकर अनुमान करती हैं कि रात को यह चन्द्रमा राहु ग्रस्त हुआ है।[3]
१७५	मुख के सौन्दर्य की तुलना चन्द्रमा से। राहु के द्वारा उसका भयभीत होना।	राधा के सौन्दर्य की प्रशंसा।[4]
१७६	नायिका का खलनायक के द्वारा ग्रस्त होना चन्द्रग्रहण से उपमित	जानकी राक्षस रावण से आतंकित।[5]
१७७	द्वितीया के चन्द्रमा को राहु द्वारा न ग्रसा जाना	सीता द्वितीया का चन्द्र और रावण राहु। रावण ने सीता का हरा पर वह उसका भोग न कर सका।[6]
१७८	ससुराल-गमन राहु के तुल्य—नायिका चन्द्रमा के समान	इन्द्रावती ससुराल जाने को राहु द्वारा ग्रस्त होना मानती है।[7]

---

१ सीहन हाँस जराउ गर कन्न हेठ निकलंक।
धर ॥ मयंक सूर जनु डुरत राहु के संक॥ —चित्रावली छंद १६ दोहा

२ पद्मावत २८१।३

३ बिथुरे केस कन्न चहुँ पासा पूछो चन्द राहु जन ग्रासा।
—नल-दमन २२१।७

४ विद्यापति की पदावली ६६।८

५ सूरसागर ६।७६।५९६

६ रामचन्द्रिका १२।१६

७ सुनि सासुर की गवन पियारा ससि के ऊपर कंपंप भारी।
भयउ वचन पिय सूरज केरा राहु माइ ग्रन-ससि कहँ घेरा॥
—इन्द्रावती उत्तरार्द्ध हस्तलिखित प २४७

१७६	नायिका का मुख चन्द्रमा नायक का मुख राहु	संभोगावस्था में सुजान अपने मुख में चित्रावली का मुख ढँक लेता है।[1]

अलंकार उत्प्रेक्षा १७१ १७२ १७२१, १७४ १७८ में।
उपमा १७११ १७३ १७६ में।
विरोधाभास १७१२ में। रूपक और अप्रस्तुत प्रशंसा १७८ में।
अप्रस्तुत प्रशंसा (सादृश्य निबंधना) १७६ में।

(१८) चन्द्रमा का कलंकी होना बृहस्पति की पत्नी तारा के हरण के कारण

१८१	कलंकी होने पर भी यशस्वी	जायसी की एक आँख काना परन्तु वह यशस्वी कवि।[2]
१८२	नायिका के मुख को चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर बताना	पदमावती के नख शिख का वर्णन हीरामन तोते द्वारा।[3]
१८२१		सीता के मुख की प्रशंसा करते हुए चन्द्रमा को उससे हीन बतलाना।[4]

अलंकार १८१ में उपमा १८२ तथा १८२१ में व्यतिरेक।

(१६) चन्द्रमा का रोहिणी से विवाह

१६१	नायक-नायिका का विवाह	मोहिनी का ब्याह मोहन से।[5]
१६२	नायिका की शोभा का वर्णन	सीता राम और लक्ष्मण के बीच ऐसे सुशोभित मानो चन्द्रमा और बुध के बीच रोहिणी।[6]

अलंकार १६१ में उत्प्रेक्षा और सन्देह भी। १६२ में उत्प्रेक्षा।

---

१ अधर मधु रस सो अमिरित पीया अमिय के पियत अमर सा होया ॥चौ० १॥
राहु गरास कलानिधि कीया सीतल चल आनन पट दीया ॥चौ० २॥
पुनि मनमथ रति राग सवारी खोलि अछूत अनंग विथकारी ॥चौ० ६॥
रंग गगान दोऊ में भरे रोम रोम तन बोरी झरे ॥चौ० ७॥
—चित्रावली छंद ५३६।चौ० १ और ५ ७
करहु सो रतन आइ जो खोई आपन बहुरि पाव जग कोई।
आन दीप कहाँ का बाउ मन्त्र सोइ साध्यो ससि राहु ॥ —वही छंद २६८।चौ० ६ ७
रानी कन्त कबि चति आहू लग न पाउ अबकहिं राहू।
आइ जनाउ नरेस रिमाना जो सनु छट पाव नहिं बाना ॥ —वही छंद ५७।चौ० १२
२ पद्मावत २११।२
३ वही २०१।३
४ रा० च० मा० १।२३७।दोहा
५ ब्याह दई रति मैन का विधि रोहनी चंद। —कथा मोहिनी पत्र ५।चौ० ११५
६ रा० च० मा० २।१२।१४

(२०) जनमेजय (जलमेदव) द्वारा वर्जित कार्य करके पछताना

२०.१ वर्जित कार्य करने में विपत्ति — कुंवर ने मृगावती के मना करने पर भी वर्जित काम खोला। फिर उसका अपहरण। बाद में पछताना।[1]

अलंकार उदाहरण।

(२१) जलमधर (?) जनमेजय को कुएँ से निकालना

२१.१ विपत्ति-ग्रस्त का उद्धार — कुंवर द्वारा अपहरित होने पर ईश्वर से प्रार्थना।[2] जनमेजय को कुएँ से निकालने का उदाहरण देना।

अलंकार उदाहरण।

(२२) जनमेजय (जलमेदव) द्वारा नाग-यज्ञ में सर्पों का विनाश—परीक्षित का बदला लेना

२२.१ दुष्ट को दण्ड देना — मृगावती राक्षस का कहा न करने देने के पक्ष में। कुंवर के अपहरण का बदला लेना।

अलंकार उदाहरण।

(२३) दुष्यन्त और शकुन्तला का मिलन

२३.१ नायक-नायिका भेंट — देवयानी और ज्ञानदीप के मिलन की तुलना शकुन्तला और दुष्यन्त के मिलन से।[4]

अलंकार उत्प्रेक्षा।

(२४) नल और दमयन्ती का मिलन—वियोग—पुनर्मिलन

२४.१ नायक-नायिका को मिलाने वाला माधन — मृगावती की सखियाँ हंस का सन्देश करती हैं कि वे उस राजकुंवर से वैसे ही मिला देंगी जैसे हंस ने नल-दमयन्ती को मिलाया।[5]

---

१ मृगावती २३।२

२ वही २३६।२४

३ वही २४७।२४

४ [illegible]नगीप ■ १६४

५ मधुमालती १२६।दोहा

२४ १ १	नायक नायिका को मिलाने वाला साधन	रतनसन से बिछुरकर पदमावती दुखी। उसे कौन अपने प्रिय से मिलावे?[1]
२४ १ २		दमयन्ती हस को आशीष दती है नल से मिलाने के लिए।[2]
२४ २	नायक-नायिका का वियोग	पदमावती के चल जाने के बाद रतनसेन दुखी। अपने वियोग की तुलना नल और दमयन्ती के वियोग स करता है।[3]
२४ २ १	नायक नायिका का वियोग	माधवानल कामकदला स वस ही भिन्न होता है जस नल दमयन्ती से हुआ था।[4]
२४ २ २		राजा विक्रम माधवानल को सतोष देते हैं।[5]
२४ २ ३		हस जवाहिर के वियोग म दुखी।[6]
२४ ३	नायक नायिका का पुर्नमिलन	यह जानकर कि कचनपुर की रानी मगावती है राजकुवर प्रसन्न मानो नल को दमयन्ती मिली।[7,8]
२४ ३ १		।
२४ ३ २	"	कामकदला का अनुरोध विक्रम से माधवानल से मिलाने के लिए।[9]

---

१ पद्मावत २५५।७

२ ज्ञानदीप छद २५७

३ पदमावत २० ।छद ६ ७

४ मिलन विछोह् बिधाता कीन्हीं दमयती नल को दुख दी हीं।
—माधवानल कामकदला प० २ ० प २ ५

५ राजा कहै सुनु विप्र गुसाइ दिन दस रहो मलन को नाइ। —वही प० २१४ प० १

६ हस जवाहिर प० २१२ छद १८३।२

७ मगावती १७१।२

८ वही दिल्ली प्रति हस्त० छद २०२

९ विनवत हौं सक बधो राई विरह निरिट सौं सेउ बझाई।
सो उपकार करो जिय माई दमयती ज्यौं नलहि मिलाई॥
—माधवानल-कामकदला (हि० प्रे गा का० स) प० २२४ प० २५ २६

२४ ३ ३	नायक नायिका का पुनर्मिलन	माधवानल-कामकदला का पुनर्मिलन दीघ विरह के पश्चात।[1]
२४ ३ ४	'	कामकदला विक्रम के प्रति कृतज्ञ कि उसने माधवानल से उसे फिर मिलाया।[2]
२४ ३ ५		माधवानल और कामकदला फिर मिले।[3]
२४ ३ ६		देवजानी और ज्ञानदीप का मिलन नल-दमयन्ती के मिलन के समान।[4]
२४४	नायक नायिका को किलोल	नायक-नायिका का जल क्रीडा करना। सीता जल क्रीडा करते समय वैसे ही हँसती हैं, जसे दमयन्ती हस पकडते समय हँसी थी।[5]

अलकार २४ १ २४ १ १, २४ २ २४ ३ २ २४ ३ ३, २४ ३ ४, २४ ३ ५ म उदाहरण। २४ १ २ २४ ३ २४ ३ १ म उत्प्रेक्षा। २४ २ १ २४ ३ ६ और २४४ मे उपमा।

(२५) नल और नील जिन्होंने सेतु बाधा

२५ १	नायिका और नायक को मिलान वाला सहायक	पदिमनी गौरा-बादल की उपमा नल और नील से देती है।[6]

अलकार उपमा।

(२६) नागों का पाताल लोक में वास

२६ १	पाताल म नागा का रहना एक रहस्यमय वस्तु	जागने पर चकित मधुमालती मनोहर से उसका परिचय पूछती है।[7]

अलकार सन्देह।

---

१ मिल्यो सोइ भावत भावती राजा नल रानी दमयती।
—माधवानल-कामकदला पृ० २३१ पं० ८

२ वही हस्तलेख पत्र ३६ छोटी प्रति (ना० प्र० स०)

३ वही हस्तलेख पत्र ४५ छोटी प्रति

४ ज्ञानदीप छ० १६४

५ रामचन्द्रिका ३२।३७

६ पद्मावत ६११।१४ तथा १०२।५

७ मधुमालती १०१।दोहा

३१ २	एक सज्जन व्यक्ति को छलना	नागमती का विरह प्रलाप । हीरामन की वलि से तुलना करना ।[1]
३१ ३	सत्रासकारी घटना	अलाउद्दीन द्वारा रतनसेन को बंदी किया जाना वैसी ही एक सत्रासकारी घटना जैसी बलि को बंधन मे डालने वाली घटना ।[2]
३१ ४	बैरी का छल करना	गोरा बादल की चेतावनी रतनसेन को कि अलाउद्दीन वैसे ही छल करेगा जैसे वामन विष्णु ने बलि के साथ किया ।[3]
३१ ५		बलि को बाँधकर पाताल मे भेजना ।[4]
३१ ६		विष्णु द्वारा त्रिलोक का दो डग मे नापना ।[5]

अलकार ३१ १ मे उदाहरण ३१ २ मे रूपक ३१ ३ मे उत्प्रेक्षा ३१ ४ मे उपमा ३१ ५ और ३१ ६ मे उल्लेख ।

(३२) विष्णु का सात पाताल ढूढ़कर वेदो का उद्धार करना—
शखासुर को मारना

३२ १	परिश्रम साध्य कार्य	राजा रतनसेन और उसके साथी समुद्र यात्रा करने गए ।[6]
३२ २	सत्रासकारी घटना	अलाउद्दीन द्वारा रतनसेन को बंदी बनाना वैसी ही सत्रासकारी घटना जैसी विष्णु द्वारा मत्स्यावतार मे शखासुर को निगल जाने की घटना थी ।[7]

अलकार ३२ १ और ३२ २ मे उपमा ।

१ पदमावत ३४१।४
२ वही ५७६।दोहा ५७।४
३ वही ५५८।दोहा ५६।७
४ सूरसागर १०।३५१५ १०।३५४६ १०।३८३६
५ रा०च मा २।१ १।३ ४
६ पदमावत १४१।दोहा १४।४
७ वही ५७६।६

(३३) शिव के ललाट पर द्वितीया का चद्र होना

३३ १	नायिका के सौदय की प्रशसा	शिव ने पदमावती को सिंहासन पर बठे देख द्वितीया क चद्र को अपने ललाट पर स्थान दिया ।[1]

अलकार हतूत्प्रेक्षा ।

(३४) शिव का त्रिनेत्र होना

३४ १	नायक के सौदय का वणन	राजकुवर को शिवजी से बढकर योगी बताना ।[2]

अलकार व्यतिरेक ।

(३५) शुकदेव का दो घडी से अधिक कहीं नहीं ठहरना

३५ १	साधु का रमतेराम होना	अलाउद्दीन की भेजी कुटनी अपनी तुलना शुकदेव से करती है ।[3]

अलकार उपमा ।

(३६) सती का योगाग्नि मे भस्म हो जाना

३६ १	विरहाग्नि का प्रभाव	रतनसन पदमावती के विरह म इतना तप्त कि उसके शरीर की ज्वाला स सती के शरीर म आग लग गई ।[4]

अलकार निदशना ।

(३७) समुद्र मथन—विष्णु के सहयोग से

३७ १	कठिन काम करना	समुद्री तूफान म पदमावती स बिछुडकर रतनसेन सोचता है कि कौन इस समुद्र का मथन करके पदमावती रूपी रत्न को मुझे दिलायगा ।[5]
३७ २	सन्त्रासकारी घटना	अलाउद्दीन का चित्तौड के विरुद्ध प्रयाण ।[6]

---

१ पदमावत ६१२।गोहा ५१।७
२ इन्द्रावती उत्तरार्द्ध ह० लि० प २२७
३ पदमावत, ६ ५।५
४ वही २२८।६
५ वही ४०६।१ ५
६ वही ४६५।२ ३

३७ ३	नायिका की नाभि का सौंदय	चित्रावली के सौंदय की प्रशसा दूत परेवा द्वारा ।[1]
३७ ४	मुख के स्वेन्दि ु की प्रशसा	कृष्ण के मुख पर पसीने की बूदा की तुलना समुद्र म स मथन क पश्चात निकले शशि से ।[2]
३७ ५	अमत क लिए समुद्र मथन	कृष्ण स्वण मुकुट से सुशोभित एस लगत हैं मानो लक्ष्मी और अमत का स्निग्ध प्रकाश समुद्र मथन के बाद फला हो ।[3]
३७ ६	प्रेम की अमत से विरह की मदराचल स भरत की समुद्र मे तुलना ।	चित्रकूट म राम भरत मिलन का प्रसग ।[4]
३७ ७	समु की रण भूमि के रक्त से मनाक की अगद स समुद्र म से निकले विष की विभीषण स धन्वन्तरि की जामव त म चन्द्रमा की भरत म अमत की शत्रुघ्न से शेषनाग की लक्ष्मण स तथा विष्णु की राम से तुलना ।	रावण क साथ राम क युद्ध का एक रूपक ।[5]

अलकार उपमा और उदाहरण ३७ १ म, अत्युक्ति ३७ २ म, उत्प्रेक्षा ३७ ३ ३७ ४ ३७ ५ म, रूपक ३७ ६ ३७ ७ म ।

(३८) सुमेरु पवत की अडिगता और महानता

३८ १		नपाल के राजा धरणीधर की प्रशसा । उनकी महानता की तुलना सुमेरु से ।[6]

अलकार उपमा ।

---

१ छोर सिंधु मथनी जल कान्ही
नाभि भौर आही जह ठाढ़ी । —चि ावली ७६।१
२ सूरसागर १ ।६२८ और ६४८
३ वही १ ।१८२
४ रा० च० मा २।२ ८। दोहा
५ रामचन्द्रिका ३६।६
६ तब हमि गिरिजा हर मुख हेरा
कहेसि सुमेरु सत्त एहि केरा। —चित्रावली ४४।७

(३९) सुदामा का द्वारिकापुरी से लौटकर अपनी मँडया को न पहचानना—
श्रीकृष्ण द्वारा उनका दारिद्र्य दूर करना

३९ १	भ्रमित होना	देव अपनी मढी में लौटकर उसे नही पहचान पाता। वह बदली हुई। सुदामा की स्थिति से तुलना।[1]
३९ २	कृपा करना	सुदामा को आते देखकर कृष्ण द्वारा उनके चरण पकड़ना और कृपाकर उनकी दरिद्रता दूर करना।[2]

अलंकार उदाहरण ३९ १ में, उल्लेख ३९ २ में।

(४०) हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता

४० १	सत्यवादिता की प्रशंसा	हीरामन तोते द्वारा रतनसेन की प्रशंसा।[3]
४० १ १	,,	शाहे वक्त सलीम की प्रशंसा। उसे सत्य हरिश्चन्द्र जैसा बताना।[4]
४० १ २	,, ,,	,, ,, ।[5]
४० १ ३	,,	शिव और पार्वती का तपस्वी-वेश में आकर राजा धरणीधर को हरिश्चन्द्र के समान बताना।[6] वरन उससे भी बढ़कर।

अलंकार उपमा ४० १ ४० १ १ ४० १ २ में। व्यतिरेक ४० १ ३ में।

(४१) हिरण्यकश्यपु का वध—नृसिंहावतार में विष्णु द्वारा—प्रह्लाद का उद्धार

४१ १	युक्तिपूर्वक काम करना	सुरज्ञानी ज्ञानदीप से जादुई घोड़े को युक्तिपूर्वक पकड़ने के लिए कहती है। उस प्रसंग में हिरण्यकश्यपु के वध का उल्लेख।[7]

---

१ चित्रावली १ ६।६ ७ और दोहा १ ६
२ सूरसागर १।२ २
३ पदमावत १६ ।१
४ मधुमालती ११।४
५ वही १ १४
६ चित्रावली ४२।१ २
७ ज्ञानदीप छन्द १२४

४१ २	भक्त की रक्षा	विष्णु द्वारा नृसिंह रूप में स्तम्भ से प्रकट होना। प्रह्लाद को बचाना।[1]
४१ ३	नायक की प्रशंसा	राम की प्रशंसा मन्दोदरी द्वारा। राम को विष्णु-अवतारी बताना और यह कहना कि उन्होंने ही हिरण्यकश्यपु को मारा था।[2]
४१ ४	"	रावण से मन्दोदरी का कथन।[3]

अलंकार ४१ १ ४१ २ में उदाहरण। ४१ ३ व ४१ ४ में उल्लेख।

ऊपर कुछ प्रमुख आख्यानों के आलंकारिक प्रयोग का निरूपण किया गया है। प्रसंगत यह भी निर्देश कर दिया गया है कि विद्यापति की पदावली सूरसागर रामचरितमानस और रामचन्द्रिका आदि ग्रन्थों में भी कतिपय पौराणिक आख्यानों का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। इन निरूपणों से यह पता चलता है कि सूफी कवियों द्वारा केवल चमत्कार प्रदर्शन अथवा उक्ति वैचित्र्य के लिए अलंकारों का प्रयोग नहीं किया गया। उन्होंने उपमा उत्प्रेक्षा रूपक उदाहरण, अतिशयोक्ति अप्रस्तुत प्रशंसा विरोधाभास तथा व्यतिरेक आदि अलंकारों का ही अधिक प्रयोग किया है। उनके अलंकार प्रयोग उनके पाण्डित्य के नहीं वरन लोक मानस के साथ उनके सामीप्य के ही द्योतक हैं। उन्होंने उन्हीं अलंकारों का प्रयोग किया जिनको साधारण जन अपनी बोलचाल की भाषा में प्रयोग करते रहते हैं।

---

१ सूरसागर ९।२४४३ प २

२ रा०च०मा० ६।६।७

३ वही ६।४८। दोहा

९ | हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों मे आख्यानक दृष्टान्त

हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो म पौराणिक और निजधरी आख्यानो तथा पात्रो का दृष्टात के रूप म प्रचुर प्रयोग हुआ है। अलकार शास्त्र म दृष्टात नामक एक अलकार भी है जिसकी परिभाषा के अन्तगत उपमेय उपमान और साधारण धम का बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव होना कहा गया है।[1] इसम उपमेय वाक्य को कहकर उपमान-वाक्य द्वारा उसका निश्चय कराया जाता है।[2] दोनो वाक्य या तो सामान्य होते हैं या दोनो ही विशेष[3] और दोनो म प्रकट रूप से साम्य होता है। किन्तु हमारा प्रयोजन यहा अलकार शास्त्र म विवेचित इस अलकार के व्यवहार को देखना न होकर उन दृष्टात कथना पर विचार करना है जिनका प्रयोग बोलचाल म लोग अपने कथन के समथन म प्राय किया करते हैं। सामान्य वाणी-व्यवहार म जिस प्रकार जनता लोकोक्तियो और मुहावरो का प्रयोग अपनी अभिव्यक्ति को अधिक अथव्यजक बनाने के लिए करती है उसी प्रकार आख्यानो एव पात्रो का दृष्टात रूप मे प्रस्तुत करके वह अपने कथ्य को अधिक प्रभावोत्पादक प्रामाणिक और सटीक बनाने म सचेष्ट रहती है। दृष्टात हमारे सामाजिक और सास्कृतिक जीवन के विशिष्ट प्रसगो एव परिस्थितियो के रूप प्रतीक से बन जाते हैं और युग युग तक उनका प्रयोग एक पीढी स दूसरी पीढी को दाय म प्राप्त होता रहता है।

हमारे नित्य प्रति के जीवन मे सद्-असद प्रवृत्तियाँ और घटनाएँ दृष्टान्तो का निर्माण करती रहती हैं। छोटे लोगो के जीवन के वृत्त भी उनके सीमित समाज म उदाहृत होते रहते हैं, परन्तु जिन वृत्तो का प्रभाव लोक मानस पर विस्तृत और चिरस्थायी होता है उन वृत्तो का किसी आप्त चरित्र से सम्बन्धित होना आवश्यक है। आप्त वाक्य प्रमाण की भाति ही आप्त चरित्र भी जन-मानस म सवेदना की अनुकूल लहरियाँ उत्पन्न करते रहते हैं। साधारणतया जनता अपने कथन को प्रामाणिक बनाने

---

१ स० अलकार-मजरी सेठ कन्हैयालाल पोद्दार पृ० १२१

२ दृष्टोऽन्त निश्चयोत्र स दृष्टान्त। —काव्य प्रकाश

काव्यांग-कौमुदी आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र भूमिका

के लिए समानधर्मा जीवन व्यापारों की ओर उन्मुख होती है। कभी उसकी दृष्टि सुदूर अतीत पर पड़ती है कभी निकट अतीत पर और कभी वर्तमान पर। इस प्रकार दृष्टांत चयन के लिए लोक मुख्यतः तीन स्रोतों का आपक्षी होता है—

(१) पौराणिक और निजंधरी आख्यान तथा पात्र

(२) ऐतिहासिक वृत्त तथा पात्र

(३) नित्य प्रति के जीवन या वर्तमान की घटनाएं तथा व्यक्ति।

वर्तमान जीवन की कोई प्रमुख घटना किस प्रकार दृष्टांत का रूप ले लेती है इसका एक उदाहरण महात्मा गांधी की हत्या है। गांधीजी की हत्या के समाचार ने समस्त संसार की चेतना को स्तब्ध कर दिया था। अंग्रेजी के प्रसिद्ध नाटककार जार्ज बर्नार्ड शा ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था— बहुत भला होना भी कितना भयानक है। वस्तुतः यह उन्हीं की प्रतिक्रिया न थी आज भी और आनेवाले युगों में भी जब किसी को यह कहना होगा कि भले से भले आदमी के भी शत्रु होते हैं तब गांधीजी की हत्या दृष्टांत के रूप में उसकी प्रतिक्रिया का साक्ष्य भरती रहेगी। जनता अपने निकट अतीत अर्थात् इतिहास का भी दृष्टांतों के लिए दोहन करती है यद्यपि उसके चरित्रों में उस बहु महत्ता और रहस्यमयता की झिलमिलाहट नहीं मिलती जो सुदूर अतीत में दृष्टि निक्षेप करने से उसे प्राप्त होती है। फिर भी ऐतिहासिक वृत्त तथा पात्र उसकी भावना को उद्वेलित किये बिना नहीं रहते। राणा प्रताप और शिवाजी की वीरता प्रत्येक हिन्दू में ओजस्विता का भाव उत्पन्न करने में समर्थ होती है। स्वतंत्रता के लिए प्रताप का कष्ट सहन हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों में एक भारतीय के लिए कितना प्रेरणाप्रद दृष्टांत और आदर्श बन सका था! तो भी सामान्य लोक जीवन में पौराणिक आख्यानों एवं पात्रों का प्रभाव सविशेष होता है इसका कारण वंश-परम्परा से प्राप्त सांस्कृतिक दाय और धार्मिक श्रद्धा का लोक मन में बद्धमूल होना है।

दृष्टान्त के निमित्त पौराणिक स्रोत की ओर उन्मुख होने पर जन मानस का तीन प्रकार के जीवन वृत्त आकर्षित करते हैं—

(१) सद् या आदर्श पात्रों के जीवन और उनसे सम्बन्धित आख्यान जैसे बलि और कर्ण की दानशीलता हरिश्चन्द्र और युधिष्ठिर की सत्यवादिता तथा इन आदर्शों की रक्षा के लिए उनके द्वारा सही गयी विपत्तियाँ।

(२) असत् अमत पात्रों के जीवन और कार्य जैसे हिरण्यकश्यप (हरनाकस) दुर्योधन और कंस आदि द्वारा सज्जनों एवं भगवद् भक्तों पर ढाये गये अत्याचार।

(३) महान और आदर्श व्यक्तियों की सहज मानवीय दुर्बलताएं और उनके स्खलन की घटनाएँ।

जो महान होता है उसके जीवन की छोटी से छोटी भूल भी जनता की दृष्टि म बडी से बडी भूल और अक्षम्य अपराध बन जाती है। फिर लोक मानस अपनी रुचियो और अरुचियो को बडे तीखेपन से व्यक्त करन म नही चूकता। चूकता ही नही जैसे वह महान की महानता का अमर बना देता है वैसे ही महान के पतन को भी। इन्द्र की पूजनीयता उनके महस्रभग या सहस्राक्ष होन के कलक के समान ही अमरत्व प्राप्त कर गयी है। नारद कितने ही बडे ऋषि क्यो न हो ब्रह्मा के मानस पुत्र ही हा भक्त, पर निया के फेर म पडकर उन्हे भी निन्दित होना पडा और एस ही सरस्वती पर ब्रह्मा की कामासक्ति ने उनके सारे पुराण पुरुषत्व का लोक मानस के समक्ष कलुषित कर डाला। विश्वामित्र और मनका पाराशर और सत्यवती के आख्यान काम शक्ति के सम्मुख तप शक्ति के पराजय और कृच्छ साधन के थोथेपन का उद्घाटन करते है। पौराणिक पात्रो के जहाँ प्रेम वीरता साहस, औदार्य परोपकार और पातिव्रत सम्बन्धी आख्यानो को जन मानस दृष्टान्त के लिए चुनता है वहा उनके दम्भ अहकार ईर्ष्या और क्लीवता तथा व्यभिचार को भी।

सूफी कवि लोक जीवन म घनिष्ठ रूप स सम्बन्धित थ। अपने प्रेमाख्यानक काव्यो म उन्होने जान बूझकर ऐस पौराणिक तथा निजधरी आख्याना को चुना जिनको लोक भावना अपन म पूर्णत आत्मसात कर चुकी थी और जो कालान्तर म लाकोक्ति या लोकानुश्रुति का रूप ले चुके थ। यहा केवल पौराणिक आख्यानो के दार्ष्टान्तिक प्रयोगो पर ही विचार किया जाएगा।

यह दिखाने के लिए कि मध्ययुग म सूफियो के अतिरिक्त अन्य कवि भी इन आख्यानक दृष्टान्तो का अपने काव्यो म प्रयोग करते थे हमन सूरसागर राम चरित मानस और रामचन्द्रिका का उपयोग तुलनात्मक अध्ययन के लिए किया है इनम पौराणिक आख्यानो के प्रति मध्ययुग की लोकरुचि पर भी प्रकाश पडेगा। नीचे आख्याना का उल्लख अकारादि क्रम स किया जा रहा है

(१) अर्जुन द्वारा परछाइ देख कर मत्स्य वेध करना और द्रौपदी को ब्याहना

१ १ प्रेमिका को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ। पदमावती रतनसेन से अर्जुन द्वारा मत्स्य वेध करन का दृष्टान्त देती है।[1]

१ २ शील सूचक। अलाउद्दीन कहता है मुझे ऊपर आँख उठा कर नहीं देखना चाहिए। अर्जुन न भी नीची दृष्टि किय हुए ही मत्स्य वेध किया था।[2]

(२) अर्जुन का विश्व भ्रमण करना

२ १ योगी सिद्धनाथ द्वारा अपनी आयु के साक्ष्य के रूप म इस घटना का उल्लेख करना।[3]

१ पद्मावत २३४।दोहा २३।१८
२ वही ५६१।७
३ ज्ञानदीप छन्द २१२

(३) इन्द्र द्वारा परनारी अहल्या का सतीत्व नष्ट करना—
उसके कारण दुःख उठाना—सहस्रभग होना

३.१ परनारी गमन पाप। ऐसे पापी का दण्डित होना।[1]

३.२ गौतम द्वारा इन्द्र को शाप। प्रसंग राम विवाह।[2]

(४) इन्द्र द्वारा त्रिशूल से सुमेरु आदि पर्वतों के पंख काटना—पंख कटने पर भी सुमेरु का आकाश तक ऊँचा उठना

४.१ जायसी की एक और सराव। ऐसे कलश को सुमेरु का दृष्टान्त देकर उन्नत सिद्ध करना।[3]

(५) उषा के लिए अनिरुद्ध का युद्ध करना

५.१ पद्मावती का रतनसेन को पत्र। यह बताना कि किस किस ने प्रेम के लिए क्या-क्या किया। उषा अनिरुद्ध का दृष्टान्त।[4]

(६) कंस का नाश तपस्वी के द्वारा

६.१ तपस्वियों को सताना ठीक नहीं। योगीनाथ महंत महीपति राय का कंस का दृष्टान्त देना है।[5]

(७) कर्ण का कवच इन्द्र द्वारा छल से मांगा जाना

७.१ छलपूर्ण कार्य से एक को दुःख दूसरे को सुख। हीरामन रतनसेन को ले गया इससे नागमती दुःखी पद्मावती सुखी।[6]

(८) कर्ण का कौरवों द्वारा पाला जाना

८.१ पालनवाले का नाम रहा असली माता पिता का हा नाम। ज्ञानदीप के पालक रायमान द्वारा कर्ण का दृष्टान्त देना।[7]

---

१ पर दारा जेइ चित लावा असी अगति भुगति तेइ पावा।
रामपतिन जो रावन हरी एही जुगति बिगति ओहि परी॥
आरि जो नारि पराई लीन्हा कहु बिधन कइसी गति कीन्हा।
गौतम की बनिता पतिबरता प्रान टरत कोउ पति करता।
कैसी सांसति भइ योन पाँही सहस जोनि उपजी तन माँही॥ —ज्ञानदीप छं० ४४४

२ रा० च० मा० बाल० ३१७।६

३ पद्मावत २१।६

४ वही २३३।७

५ हंस जवाहिर प० १२६। छं० ४२०।६

६ पद्मावत ३४१। ५

७ ज्ञानदीप छं० २६७

(९) कृष्ण (वसुदेव सुत) का नन्द द्वारा पालित होना

९ १ प्रसंग उपर्युक्त। कृष्ण को नन्द ने पाला, फिर भी वे वसुदेव पुत्र ही कहलाये। दूसरे का बेटा अपना नहीं होता।[1]

(१०) कृष्ण का गोपियों को छोड़ जाना

१० १ जिस पर वश नहीं चलता उसे छोड़ना ही पड़ता है। कृष्ण में गोपियों से जूझने की शक्ति न रही तो उन्हें छोड़ गये।[2]

१० २ पुरुष स्त्री के यौवन का साथी—यौवन ढलते ही छोड़ भागता है।[3]

(११) कृष्ण का अक्रूर द्वारा मथुरा ले जाया जाना

११ १ छल से प्रियतम को दूर ले जाना। नायिका को दुःख। नागमती का हीरामन को कोसना। उपर्युक्त घटना का दृष्टान्त।[4]

(१२) कृष्ण का कंस को मारना

१२ १ अत्याचार बढ़ने पर पापी को दण्ड मिलना। दसौंधी भाट द्वारा गंधर्वसेन को कंस-वध का दृष्टान्त देना।[5]

१२ २ अलाउद्दीन बलवान है तो क्या रत्नसेन उसे अपनी पत्नी सौंप दे? दृष्टान्त कृष्ण ने कंस को मारा तो इससे क्या किसी गोप ने अपनी गोपी कृष्ण को दे दी?[6]

(१३) चन्द्रमा का राहु द्वारा ग्रसा जाना

१३ १ नागमती द्वारा हीरामन के सामने अपने रूप की प्रशंसा। दृष्टान्त चन्द्रमा पूर्णिमा को ही राहु ग्रस्त।[7]

१३ २ राजा शिरोमणि का कथन अपनी रानियों से कि घर में सम्मान से रहो। बाहर निकलना ठीक नहीं। चन्द्र के मुख पर राहु की कुदृष्टि पड़ जाती है।[8]

१३ ३ नारी का राक्षस के हाथों पड़ना। चन्द्रमा और राहु का दृष्टान्त।[9]

---

१ ज्ञानदीप छन्द २६७
२ पदमावत १२२।१ २
३ वही ५६३।दोहा ४६।१
४ वही ३४१। ७
५ वही २६३।१ ३
६ वही ४८६।६
७ वही ८४।४
८ रहहु भवन अपने होइ नारी कामिनि नारि जो कंत पियारी।
अथवा सूर कवल कुम्हिलाने चन्द्र बदनु मय राहु समाने॥ —ज्ञानदीप छंद ३७
९ सूरसागर ६।७६।५१६

(१४) चन्द्रमा में कलंक होना

१४ १ सिंघल द्वीप का वर्णन करते हुए कुवंश । माया का मेल । सुन्दर चन्द्रमा में भी तो कलंक ।[1]

(१५) दशरथ का धोखे में श्रवणकुमार को मारना—हत्या का पाप—शापित होना

१५ १ रानी द्वारा कपूर को परवा से कथन कि राजा के पास जाकर सुजान का परिचय दो । वहाँ स्वयं हत्या का पातक न लगे । दृष्टांत दशरथ को श्रवण की हत्या से लगनेवाला पातक ।[2]

(१६) द्रौपदी का चीर कृष्ण द्वारा बढ़ाया जाना

१६ १ सुरज्ञानी का विरह दुख देखकर उसकी स्वामिनी देवजानी द्रवित । कृष्ण भी तो द्रौपदी के संकट को देखकर दुखी हुए । सहायता करना ।[3]

१६ २ भगवान द्वारा भक्त पर कृपा । दृष्टान्त द्रौपदी का चीर बढ़ाना ।[4]

(१७) नल का दमयन्ती के विरह में संतप्त होना

१७ १ विरह की प्रशंसा । प्रेमा द्वारा मनोहर की प्रशंसा कि उसके मन में विरह जागा । उपयुक्त दृष्टान्त ।[5]

१७ २ विरही का दुख विरही ही जान सकता है । माधवानल का कथन । नल का दृष्टान्त देकर कहना कि जिस राजा नल ने दमयन्ती का वियोग सहा वह तो अब इस पृथ्वी पर है नहीं अब भला किस पर साथ सहानुभूति होगी ?[6]

(१८) नल पर विपत्ति पड़ना—जूए में राज्य हारना—पत्नी से वियोग आदि

१८ १ राजकुंवर रुक्मिणि के नगर में भागकर जोगी वेष में भटकना रहा । नल पर भी ऐसी ही विपत्ति पड़ी थी ।[7]

(१९) नारद का त्रिया के फेर में पड़कर मन खोना (नारद मोह)

१९ १ कामरूप स्त्री का रूप धरकर शक्करपरी का राजा महीपत से कथन कि अपनी लड़की का विश्वास मत करो । नारी के फेर में पड़कर बड़े बड़े निन्दित हुए । उपयुक्त दृष्टांत देना ।[8]

---

१ चित्ररेखा पृ० ८६।चौ० २

२ चित्रावली ५ ७।१ ३

३ ज्ञानदीप छन्द ७७

४ सूरसागर १।५ १।१६।३ ४ १।१८।६ १।२ ।४ १।२१।३ ४ १।२२ ३७ और १ ६ और ११२

५ मधुमालती (शि ना मि०) पृ ७२ छन्द २।५

६ माधवानल-कामकन्दला (हि प्र ना० का स०) पृ० २०८ पंक्ति १६

७ मृगावती ११२।४ ५

८ हंस जवाहिर पृ० १२६ छन्द ४३८।७ और दोहा

१९ २ माया म पडकर बुद्धि खोने के सम्भ म उपयुक्त दृष्टात कथन ।[1]

१९ ३ माया म फसकर परेशान होना ।[2]

(२०) प्रह्लाद को आग मे जलाना—उसका न जलना

२० १ आयु रहते कोई न मार सकता है, न मर सकता है। ज्ञानदीप के विरह मे सतप्त। सुरज्ञानी का उसमे कथन ।[3]

२० २ प्रह्लाद भगवान की भक्ति के कारण हिरण्यकश्यपु के अत्याचार से बचा। राम नाम का प्रभाव वर्णन ।[4]

(२१) पाण्डवों का कधिरा दानव द्वारा हरा जाना—भीम द्वारा उन्हें बचाना

२१ १ विपत्ति मे सहायक का अभाव खटकना। राजकुवर चिताग्रस्त ।[5]

(२२) पाण्डवों का अपना कर्म फल भोगना

२२ १ कितना भी दान पुण्य करो यश देना भगवान के हाथ ।[6] राजा कामसन चिंतित। पाण्डवो का दृष्टात।

(२३) पाण्डवों की विजय सिद्ध (योगी) की सहायता से होना

२३ १ महीपति को योगीनाथ महन्त द्वारा समझाना कि योगियो (हस और उसके साथियो) को मत सता। योगियो म अद्भुत शक्ति ।[7] उपयुक्त दृष्टात।

(२४) बलि का सागर मथन करना

२४ १ ससार म आने वाले की मृत्यु निश्चित चाहे वह कितना भी प्रतापी। दृष्टान्त—सागर मथन करने वाला बलि भी मर गया ।[8]

(२५) बलि का वचन हार जाना—सर्वस्व देना—पाताल मे बदी होना

२५ १ यश भी कर्मफलाधीन। कामसेन को दान पुण्य करने पर भी यश नही ।[9]

२५ २ भगवान द्वारा देवताओ की रक्षा के लिए बलि को छलना। भक्तो के लिए भगवान क्या नही करते ?[10]

---

१ रा० च मा० उत्तर० दो० ११ चौ ६
२ सूरसागर १।४३।३
३ ज्ञानदीप छद २०५
४ रा च मा० बाल० २८।१२ २७।१दोहा
५ मृगावती (दिल्ली प्रति) छ० १७१ पौ० १
६ माधवानल-कामकदला (हि० प्र० गा का० सग्रह) पृ० १६६ पक्ति १३ १४
७ हस-जवाहिर पृ १५७ छद ४३१।५
८ मृगावती ३७६।५
९ माधवानल कामकदला पृ० १६६।प० १३ १४
१० सूरसागर १।६।४ १।१०४।६।१० १।३१६५।५ १०।३८२७।४

२५ ३ धम के लिए सकट सहना । रतिन्त, बलि आदि का दृष्टात ।[1]

(२६) बालि द्वारा परस्त्री हरण—उसके कारण विनाश

२६ १ पर स्त्री म अनुरक्ति रावनवाल की दुदशा । बालि का दृष्टात ।[2]

२६ २ राम द्वारा बालि का वध पर-स्त्री हरण क कारण ।[3]

(२७) भगीरथ द्वारा गगा को पथ्वी पर लाना

७ १ पुत्र से ही सारी आशाए पूण—भाग्नि का कथन नल स । दृष्टात भगीरथ द्वारा पितरो को तारन क लिए गगा को लाना ।[4]

(२८) भीम का कुम्भकण की खोपडी म गिरना

२८ १ गव करना ठीक नही । बड बड भी गव स पतित हुए । भाट दसौधा का कथन गधवसेन स । उपयुक्त दृष्टात दना ।[5]

(२९) रामचन्द्र का मनुष्य रूप धारणकर कष्ट सहना

२९ १ शाह तिमार क पुत्र का कथन पिता स—मनुष्य देहधारी के लिए दु ख सहना अनिवाय । उपयुक्त दृष्टान्त ।[6]

(३०) रामचन्द्र का कमफल क कारण वन जाना

३० १ यश भी कमफलाधीन । रामचन्द्र कमफल क कारण वन गय । काम सेन का सोचना ।[6]

(३१) राम का सीता को वन ले जाना फलस्वरूप सीता का हरण

३१ १ नागमती का रतनसेन को जान स रोकना । रतनसेन का कथन कि स्त्री की बुद्धि स चलना ठीक नही । उपयुक्त दृष्टान्त दना ।[8]

३१ २ सुजान का कौलावती स कथन कि स्त्री का घर म रहना ही ठीक अन्यथा दु ख उठाना पडता है । उपयुक्त दृष्टान्त देना ।[9]

---

१ रा च मा अयोध्या ३ ।७ और ६१।३ ४

२ ज्ञान दीप छ० ४४४

३ रा च० मा बाल० २९ (क)।६ ८

४ नल दम ६०।८ ■

५ पदमावत २६१।दोहा २४।६

६ रामचन्द्र जो दुख सह्यो सो जायो सब कोइ।
मानष देह धर सभ दुख तैं व्याकुल होइ ॥
—युसुफ-जलेखा (हि० प्रे० गा० का० स०) पृ ४१२ प० १६ २

७ माधवानल कामकदला प १६६ प० १३ १४

८ पदमावत १३२।१ २

९ चित्रावली ४७२।३ ४

३१ ३ हंसराज का कथन अपनी स्त्री से। साथ ले चलना उचित नहीं। राम-सीता का दृष्टांत।[१]

(३२) राम का पत्नी वियोग में दुःखी होना (सीता के लिए विलाप करना)

३२ १ माधवानल कामकंदला के लिए दुःखी। दृष्टांत राम, नल और भर्तृहरि का।[२]

(३३) राम द्वारा सीता के उद्धार के लिए समुद्र पर सेतु बाँधना

३३ १ राजकुंवर का सोचना कि मैं मृगावती के लिए कुछ भी न कर सका, जब कि राम ने सीता के लिए समुद्र पर पुल बांध डाला।[३]

(३४) राम और परी की कथा

३४ १ शब्दपरी का समझाना जवाहिर को। सब भगवान की माया। कहाँ के राम और कहाँ की परी, दोनों का मिलन हुआ।[४]

(३५) रावण का साधु वेश में सीता को हरना

३५ १ सुहागगात में पद्मावती का कटाक्ष जोगी वेशधारी रतनसेन पर। पद्मावती का कथन कि इसी वेश में रावण ने सीता को हरा।[५]

३५ २ योगियों का क्या विश्वास? देवजानी का कथन सुरजानी से।[६]

(३६) रावण को अहंकार हो जाना—अहंकार से उसका नाश

३६ १ रावण अहंकारी था और गंधर्वसेन भी। जैसे उसका नाश हुआ वैसे ही इसका भी होगा।[७]

(३७) रावण का नाश एक तपस्वी (राम) के द्वारा

३७ १ भाट दसौंधा की चेतावनी गंधर्वसेन से कि जोगियों को मत छेड़ो। राम भी एक जोगी था जिसके शाप से लंका जल गई।[८]

३७ २ हंस के सामंत ने मौलाशाह के दूत से कहा कि वह तपस्वियों की शक्ति नहीं जानता। दृष्टांत रावण की सेना को एक तपस्वी राम ने मारा।[९]

---

१ इन्द्रावती हस्तलिखित उत्तरार्द्ध पृ० १००
२ माधवानल-कामकन्दला हस्तलिखित प्रति पत्र २४
३ मृगावती ६६।२
४ हंस-जवाहिर पृ० ६६ २०२।२६
५ पद्मावत ३०६।४२
६ रावन जोगी ओ भए आइ हरेंनि पर ताय।
ध्यान अउर हिय बोइ धरे औरे हाथ गहि सोय॥ —ज्ञानदीप, छंद ३३७
७ पद्मावत २६६।१
८ वही २६६।८-७
९ हंस जवाहिर पृ० २२१।६२।२३

३७.२ तपस्वी राम के शाप से नृग का शाप होना।[1]

(३८) लक्ष्मण को शक्ति बाण लगना—हनुमान का संजीवनी बूटी लाकर उन्हें जिलाना

३८.१ पद्मावती का सौन्दर्य वर्णन सुनकर रतनसेन मूर्छित। शक्ति बाण लगने से उसकी तुलना।[2]

(३९) विभीषण द्वारा लंका का भेद राम को दिया जाना

३९.१ सुरजनी ने पार्वती से प्रार्थना की कि कुँवर का प्राण हर ला। उसमें प्रेम भर दो। कवि-कथन।[3]

(४०) श्रवणकुमार की मातृ पितृ भक्ति

४०.१ मालिन का कथन नल से पुत्र बिना माता पिता की कौन सेवा करे? श्रवण का दृष्टांत।

(४१) शिव का पार्वती के कहने से कैलास छोड़ देना

४१.१ स्त्रियों के कहने के अनुसार चलना ठीक नहीं। पार्वती ने शिव से कैलास छुड़ा दिया। नारद का मान मिटा। मन्दरी का कथन मनोपति से।[5]

(४२) सती का सीता के वेश में राम को छलने की चेष्टा—शिव द्वारा सती का त्याग

४२.१ छल-छन्द कर रहनेवाली स्त्री ठीक नहीं। लक्ष्मी का रतनसेन की परीक्षा लेना।[6]

(४३) सहदेव का पण्डित होते हुए भी चूक जाना और राज्य खोना

४३.१ पण्डिता ने जान-बूझकर चित्ररेखा के लिए सिंघलद्वीप के कुंवर को वर चुना। सहदेव का दृष्टांत।[7]

(४४) सीता (पृथ्वी सुता) का जनक द्वारा पाला जाना

४४.१ पालित पुत्री या पुत्र से किसी का नाम नहीं चलता। दृष्टांत सीता का। जनक ने उसे पाला पर कहलाई वह पृथ्वी की सुता।[8]

---

१ हंस-जवाहिर पृ० १२६।४२६।६
२ पद्मावत १२। ५
३ ज्ञानदीप छं० १। ६
४ मन-दमन ६।६
५ हंस-जवाहिर पृ० १५६।४ ८ दोहा
६ पद्मावत ४१५।६
७ चित्ररेखा पृ० ८६।चौ ८-७
८ ज्ञानदीप छं० २६७

(४५) सीता का अपने प्रियतम के साथ वन जाना—वहा घर का-सा सुख मानना

४५ १ स्त्री के लिए पति के साथ रहने म ही सुख। इन्द्रावती की सखिया द्वारा उसको समझाना। सीता का दृष्टात देना।[1]

(४६) सीता द्वारा जोगी वेशधारी रावण को भिक्षा देना

४६ १ सुहागरात म पदमावती से रतनसेन की प्रेम-याचना। वह जोगी, अत भिक्षा का अधिकारी।[2]

(४७) सीता को वियोग दु ख मे राम नाम का ही सहारा

४७ १ सीता की मूर्त्ति का राजकुवर की प्रथम पत्नी सुन्दरी से कथन। वियोग दु ख म नारी को भगवान का स्मरण करना सहायक। सीता द्वारा अपना ही उदाहरण देना।[3]

(४८) सीता का हरण करने पर रावण का दु ख उठाना

४८ १ परनारी पर कुदृष्टि डालना पाप। इससे दु ख उठाना पडता है। कवि कथन। रावण का दृष्टात।[4]

(४९) सुदामा का दारिद्र्य कृष्ण द्वारा दूर किया जाना

४९ १ देवजानी की महानुभूति सुरज्ञानी की विरह व्यथा के प्रति। वह स्वामी धन्य जो भक्त के दु ख स दु खी। सुदामा-कृष्ण का दृष्टात।[5]

४९ २ भगवान द्वारा अपने भक्त के कष्ट को दूर करना। कवि कथन।[6]

(५०) सोलह सहस्र गोपियों का कृष्ण मे अनुरक्त होना

५० १ देवजानी सुरज्ञानी को अपने पति प्रेम का भागीदार बनाती है। कई स्त्रियाँ एक पुरुष स प्रेम कर सकती हैं। दृष्टात कृष्ण और गोपियां का।[7]

(५१) हनुमान का सीता के कारण लका को जला डालना—हनुमान की सहायता से राम सीता का पुर्नमिलन

५१ १ चदा को साप न डँस लिया। लारिक का विलाप। विपत्ति म उसका

---

१ इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) पायखण्ड २७।१२। वही ब्याह खण्ड २८।१२

२ पदमावत ३ ७।७

३ इन्द्रावती उत्तरार्द्ध हस्त प २७५

४ मानदास छ० ४४४

५ वही छ ७७

६ सूरसागर ९।५।६ १ ९।७।५ ६ ९।९८।५ ९।१६।५ ९।२०।६ ९।२६।३ ९।३१।६ ९।३५।५ ९।१३ ।३ ९।१३५।२ ५ ९।१६४।५ ६

७ मानदास छ० १०३

कोई सहायक नहीं। दृष्टान्त राम को अपनी विपत्ति में हनुमान की सहायता मिली जिससे सीता से उनका मिलन हो गया।[1]

५१.२ राजकुँवर मृगावती को पाने के लिए विकल। सखी द्वारा उनको सब जान की प्रेरणा।[2]

५१.३ सखियों द्वारा गुफा में बन्द राजकुँवर मन में सोचता है कि काश उनको हनुमान जैसा कोई सहायक होता।[3]

५१.४ गन्धर्व सुन्दरी से पद्मावती से मिलन पर रत्नसेन राजा बैठा सोच रहा है कि इस परदेश में कौन मिलाये? दृष्टान्त हनुमान का।[4]

५१.५ योगी सिद्धनाथ अपनी आयु और शक्ति के दृष्टान्त-स्वरूप हनुमान द्वारा लंका उजाड़ने की बात कहता है।[5]

(५२) हरिश्चन्द्र का नीच के घर जल भरना (चाण्डाल की सेवा)

५२.१ राजा कामसेन चिन्तित कि दान पुण्य के बाद भी उनको पुत्र क्यों नहीं मिलता। सब भी कर्माधीन। भाग्यवश हरिश्चन्द्र ने नीच की सेवा स्वीकार की।[6]

५२.२ समय के फेर से सज्जन व्यक्ति को भी दुःख उठाना।[7]

५२.३ विश्वामित्र दशरथ को समझाते हैं कि हरिश्चन्द्र ने सत्य के लिए राज्य दे दिया क्या तुम पुत्र भी नहीं दे सकते?[8]

५२.४ रावण का मन्त्री महोदर रावण को बताता है कि कितने प्रकार के राजा होते हैं। हरिश्चन्द्र का दृष्टान्त देता है जिन्होंने राज्य तक दे दिया।[9]

(५३) हिरण्यकशिपु का लालच के कारण पकड़ा जाना

५३.१ चित्रावली बन्दीगृह में पड़े सुजान के पहरेदारों को घूस देती है। उसको विश्वास कि सब कोई लालच के वशीभूत। दृष्टान्त हिरण्यकशिपु का लालच के कारण पकड़ा जाना।[10]

---

१ पद्मावत (प॰ मा॰ गु॰) ३५९।१ २ (वि॰ प्र॰) ३७।२ सौरकहा (माताप्रसाद गुप्त) ४६।४ ५
२ मृगावती ६६।३
३ वही १३७।दोहा
४ पद्मावत ४०२।६-७
५ ज्ञानदीप छन्द २६२
६ माधवानल-कामकन्दला (हि॰ प्र॰ मा॰ का॰ सं॰) पृ॰ १९९। पंक्ति १३ १४
७ सूरसागर १।२६४।६
८ रामचन्द्रिका २।२१
९ वही १७।२१
१० चित्रावली ३४५।६ ७ (देखिए प्रह्लाद-कथा प्रस्तुत प्रबंध का क्र ६)

१० | हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे पौराणिक आख्यानो का उल्लेखात्मक प्रयोग

हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे पौराणिक आख्यानो के प्रतीकात्मक, आलकारिक एव दार्ष्टान्तिक प्रयोगो का अध्ययन करते समय बहुत से ऐसे प्रसग मिले जिनको इनमे से किसी भी श्रेणी मे नही रखा जा सकता था और जो मात्र उल्लेख के रूप मे प्रयोग किए गए है। उनको सगृहीत कर देना भी आवश्यक जान पडा।

अन्य मध्ययुगीन आख्यानक काव्यो मे भी एसे उल्लेखात्मक प्रयोगो की परपरा मिलती है। नीचे इस प्रकार के कुछ ऐसे आख्यानो की एक सदर्भ-सूची दी जा रही है जो किसी न किसी रूप मे सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो मे भी सकेतित हुए है

विद्यापति की पदावली (विद्यापति)

चन्द्रमा का राहु द्वारा ग्रसा जाना।[1]
शिव की कामदेव से शत्रुता।[2]

सूरसागर (सूरदास)

कालिय नाग की नाथना—नाग-पत्नियो की प्रार्थना पर उसे छोड देना।[3]

कृष्ण द्वारा सादीपनि गुरु के मृतक पुत्र को जिलाना—उसे यमपुर से लाकर गुरु दक्षिणा चुकाना।[4]

समुद्र मथन प्रक्रिया मे सुमेरु, शेषनाग, कच्छप आदि का उपयोग।[5]

---

१ विद्यापति की पदावली स० रामवृक्ष बेनीपुरी प्रकाशक पुस्तक भवन लहेरिया सराय पटना ११।१६ ११३।१६
२ वही २१२।७
३ सूरसागर १०।५७४।११६२ १०।५७५।११६३ १०।५७६।११६४ १।५७७।११६५
४ वही १।३४११
५ वही १।३३५६ पक्ति ५

रामचरितमानम (तुलसीदास)

ककयी द्वारा दशरथ स दो वरदान प्राप्त करने की कथा ।[1]

गगा को भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर लाया जाना ।[2]

नल नील की कथा ।[3]

नारद मोह की कथा ।[4]

बालि का वध राम द्वारा ।[5]

रावण द्वारा सीता हरण राम रावण-युद्ध, रावण का सपरिवार विनाश सीता का उद्धार ।[6]

श्रवणकुमार क अधे माता पिता द्वारा राजा दशरथ को शाप ।[7]

शिव द्वारा कामदेव का दहन—उस अनग बनाना ।[8]

शिव द्वारा सती त्याग—गिरिजा के रूप म पुन प्राप्ति ।[9]

शिव द्वारा त्रिपुर-दाह ।[10]

शिव द्वारा गरल पान ।[11]

शेषनाग का पृथ्वी को अपन सहस्र फनो पर धारण करना ।[12]

रामचन्द्रिका (केशवदास)

कार्तिकेय द्वारा क्रौंच पवत का वध ।[13]

बलि का पाताल भेजना वामन द्वारा—पुरानी गास के कारण ।[14]

बाणासुर शिवजी का शिष्य ।[15]

बालि का वध राम द्वारा ।[16]

---

१ रामचरितमानस २।२२।५ ६ और २।२७। दोहा
२ वही २।२०६।७ और १।२१२।१ २
३ वही ६।१।५
४ वही ७।६४।८
५ वही ४।६ १ १३ दो ७।११ २ २५ ३० दो० ८।१ ८ ६।१ दोहा १ ।दा
६ वही १।२५।५
७ वही २।१५५। ६
८ वहा १।८३।५ १।८४।४ १।८७।१ २ १।८४।४ १।८७।स० १।८७।दो० १।८८।१ २
९ वही १।५१।१ २
१० वही १।५७।८
११ वही ४।१।सो० २
१२ वही २।११७।दो
१३ रामचन्द्रिका ७।२६
१४ वही १८।१८
१५ वहा ४।२८
१६ वही १३।१

भगीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाना।[1]

मैनाक पर्वत का समुद्र में से ऊपर उठना, हनुमान को विश्राम देने के लिए।[2]

लक्ष्मण का १२ वर्ष तक क्षुधा, त्रिया और निद्रा को जीत लेना—इसीलिए मेघनाद का वध कर सकना।[3]

सीता—छाया रूपिणी।[4]

मध्यकालीन काव्यों में आख्यानों के सूच्यात्मक प्रयोगों की परम्परा में ही सूफी कवियों के इन प्रयोगों को देखना चाहिए।

आगे सूफी काव्यों में प्रयुक्त उल्लेखात्मक आख्यानों का प्रसंग एवं संदर्भ सहित निर्देश किया जा रहा है। पौराणिक पात्रों स्थानों आदि का भी उल्लेख रूप में प्रयोग हुआ है। उनके लिए इस ग्रंथ का परिशिष्ट देखिए।

केवल उल्लेख के रूप में प्रयुक्त पौराणिक आख्यान प्रसंग-सहित

अंगद का रावण की सभा में पाँव रोपना[5]—राजकुंवर के लिए मानसरोदक के किनारे बनवाए गए महल की भित्तियों पर उरेहे गये चित्रों में इस प्रसंग का चित्र भी था।

अगस्त्य मुनि द्वारा समुद्र शोषण करना[6]—स्वर्ग के देवताओं ने अगस्त्य को समुद्र का पानी कम करने को कहा। सुजान की रक्षा के लिए देवताओं की सहायता।

यहाँ अगस्त्य के समुद्र शोषण को संदर्भ कथा के रूप में नहीं प्रत्युत कथानक के अंश के रूप में प्रयोग किया गया है। अगस्त्य और उदधि यहाँ कहानी के पात्र बन गए हैं। समुद्र को यह डर लगा कि कहीं अगस्त्य मेरा पुनः शोषण न करें।

सूफी काव्यों में पौराणिक प्रसंग के इस रूप में प्रयोग का यह अकेला ही उदाहरण है।

अभिमन्यु का चक्रव्यूह में घिर जाना[7]—चंदा की चित्रसारी में लोरिक अनेक चित्रों में एक चित्र इस प्रसंग का भी देखता है।

अर्जुन द्वारा द्रौपदी स्वयंवर में मत्स्य वेध[8]—राजकुंवर के लिए मानसरोदक तट पर निर्मित प्रासाद के भित्ति चित्रों में से एक यह चित्र था।

---

१ रामचंद्रिका ६।१९

२ वही १३।३६

३ वही १८।३१

४ वही १२।१२

५ मधुमालती छन्द २६।४-५

६ चित्रावली प० २३२।छंद ६०६।१-४

७ चंदायन (प० ला० गु०) २०२।१ और ५

८ मधुमालती २७।३

अर्जुन का कौरवों को मारकर द्रौपदी को जीतना[१]—राजकुवर क लिए मानसरोदक तट पर निर्मित प्रासाद के भित्ति चित्रा म से एक यह चित्र भी ।

अर्जुन (पार्थ) द्वारा विश्व भ्रमण[२]—योगी सिद्धनाथ का रायभान म कथन कि उसके देखत पार्थ ने ससार को खूद डाला ।

आदिमानव क चालीस पुत्र होना[३]—एक सती का इद्रावती को सान्त्वना देना और भगवान की रहस्यमयी लीला का बखान करना । यह कहना कि आदि मनुष्य को भगवान न मिट्टी से पदा किया, फिर वीय स सतति उत्पन्न की आदि मानव को चालीस पुत्र दिय ।

कृष्ण द्वारा कस को मारना[४]—बीजापुर क वियोगी गुनी द्वारा कुछ पौराणिक कथाओ का गायन उनम स यह प्रसग भी एक ।

चद्रमा और सूय पर ग्रहण का विधान[५]—कवि जायसी द्वारा ग्रथारम्भ म ईश्वर के प्रताप का वणन ।

तीन सौ नौ वष तक निद्रामग्न रखना (किसको ?)[६]—ईश्वर जिसे मार दे उस बचानवाला कोई नही । ईश्वर चाहे तो किसी को ३०९ वष तक नीद म ही रखे ।

प्रयाग मे करवत लेना—इसका माहात्म्य[७]—गिरनार तीथ म जाने समय कुवर सुजान विचार करता है ।

पाण्डवो द्वारा कौरवों को महाभारत युद्ध मे मारना[८]—बीजापुर का वियोगी गुनी जिन कथाओ का गायन करता था उनम स एक कथा यह भी ।

पाण्डवों और दुर्योधन का कुरुक्षेत्र मे युद्ध[९]—चदा की चित्रसारी म कई चित्र बन हुए थे, उनम स एक चित्र यह भी ।

बलि राजा को विष्णु द्वारा पाताल म रहने को भेजना[१]—अथगाह म पडा हुआ कुवर सुजान भगवान का स्मरण करता है । भगवान की महिमा का वणन ।

---

१ मृगावती २७।३
२ ज्ञानदीप छद २९२
३ इद्रावती (पूर्वार्द्ध) प १६१ मोतीखण्ड छद १२।४ ५ और दोहा
४ चित्रावली प० १८९ छद ४७७।१ ७
५ चित्ररेखा प० ६६।चौ ५
६ इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) प० ४१ छन्द २४।दोहा
७ चित्रावली प० १५० छद ४१२।दोहा
८ वही प १८१।छद ४७७।१ ७
९ चदायन (प० मा ग०) २ ३।१ ३
१ चित्रावली प० ११५ छद ३००।५ ७

भीम द्वारा कीचक वध[1]—राजकुवर के लिए मानसरोदक तट पर निर्मित प्रासाद की भित्तियो पर बने चित्रो मे एक चित्र इस प्रसग का भी उरेहा गया।

भीम का दु शासन की भुजा उखाडना[2]— " "

महिरावण की पुरी मे जमकातर लगी होना—महिरावण की मत्यु[3]—विभीषण के राक्षस ने रतनसेन के जहाज को भटका दिया। उसे वह पातालपुरी के द्वार तक ले गया। वहाँ महिरावण की अस्थियो का पहाड जैसा ढेर दिखाई देना।

राम द्वारा लका को जलाना[4]—विभीषण का दूत राक्षस अपने काले होने का कारण यह बताता है कि राम ने जब लका जलायी तब उसकी आँच से वह झुलस गया।

राम द्वारा सेतु-बधन करना[5]—विभीषण के राक्षस का रतनसेन से कहना कि वह उसे उस सेतु बधन तक ले चलेगा जिसे राम ने बाँधा था।

राम द्वारा रावण का वध—सीता को लौटा लाना[6]—बीजापुर का वियोगी गुनी जिन कथाओ का गायन करता था उनमे से एक कथा यह भी।

राम रावण का सग्राम[7]—चदा की चित्रसारी मे जब लोरिक पहुँचा तब उसने वहाँ बहुत से चित्र अकित देखे। उनमे से एक चित्र इस प्रसग का भी।

रावण द्वारा राम पत्नी सीता का हरण[8]—

राजकुवर के लिए उसके पिता ने मानसरोदक पर जो प्रासाद बनवाया उसकी भित्तियो पर पौराणिक आख्यानो के चित्र अकित कराये गये। उनमे से एक चित्र राम-कथा से सम्बन्धित।

राक्षसो की दिशा दक्षिण मे होना[9]—कुवर मनोहर ने राक्षस को दक्षिण से आते देखा।

शिव कामदेव के शत्रु[10]—सुरभानी ने शिव के अनगरिपु विशेषण का उल्लेख कर उनसे प्रार्थना की कि उसके कागज के घोडे को जीवित कर दे।

---

१ मृगावती २७।१

२ वही २७।१

३ पदमावत ३६४।३ ५ ३६५।५ ६

४ वही ३६३।१ ४

५ वही ३६३।१ ४

६ चित्रावली पृ० १८१ छन्द ४३३ चौ १ ७

७ चदायन (प्र० ला० गु०) २०५।१ ३

८ वही २ ५।१ ३ मृगावती (दिल्ली प्रति प्रतिलिपि उ० श शास्त्री छन्द ३४ ३५) मुद्रित मृगावती में छद २५।४

९ मधमालती पृ० २२२।छद २६२।चौ० १

१० ज्ञानदीप पृ ४४।छद १२०

शिव द्वारा कामदेव को जीतना[1]—कुँवर सुजान के मंगलार्थ कौंलावती द्वारा शिव की स्तुति।

शिव का कामदेव को भस्म करना[2]—नेपाल के राजा धरणीधर के सम्मुख शिव का प्रकट होना। उनके मंत्री का उल्लेख जिनमें उन्होंने कामदेव को भस्म किया था।

कौंलावती द्वारा कुँवर सुजान के मंगलार्थ शिव की स्तुति। शिव द्वारा कामदेव के नाश का उल्लेख।

शिव का कामदेव के सामने हार मान लेना[3]—मनोहर और मधुमालती परस्पर काम चेष्टा करने लगे जिसे देखकर रतिपति भी डर गया कि कहीं यह मुझे भी न मार दें। पर जिससे शंकर जी ही हार गये, उस काम को कौन जीत सकता है ?

शिव के कंधे पर दो हत्याएं[4]—(१) कामदेव की, (२) सरस्वती पर आसक्त ब्रह्मा की—रतनसेन जब चिता में जलने को हुआ और हनुमान जी ने पलंग जाकर शिव को सूचना दी तब शिव का सिंहमण्डप के पास आना। पार्वती का शिव से यह कहना कि दो हत्याएँ तो आपके ऊपर पहले से ही हैं इस तीसरी का पाप भी क्या अपने ऊपर लेते हैं।

शिव द्वारा अंधकासुर का वध[5]—कौंलावती की शिव स्तुति सुजान के कल्याणार्थ।

शिव द्वारा कंधकासुर का वध[6]—कौंलावती की शिव स्तुति सुजान के कल्याणार्थ।

शिव द्वारा त्रिपुर-संहार करना[7]—सुजान के कल्याण के लिए कौंलावती की शिव से प्रार्थना। शिव की प्रशंसा।

शिव द्वारा दक्ष प्रजापति को मारना[8]—

शिव की शरण में आकर राम का रण जीतना[9]—पार्वती रतनसेन की परीक्षा लेने के बाद उसकी संस्तुति शिव से करती है। शिव की कृपा होने पर

१ चित्रावली ८६२।४४
२ वही प० १६ छन्द ४१।चौ० ६ प० १४६ छन्द ६२ चौ० ४५
३ मधुमालती प० १० छन्द १२४।चौ० ५
४ पद्मावत २ ७१।२ २१११६ ओझा २२।२
५ चित्रावली प० १४६ छन्द ३६२ चौ० ४५
६ वही प० १४६ छन्द ६२ चौ० ४५
 वही ६२।४५
८ वही ३६२।४५
६ पद्मावत २११।६

ही राम रावण को जीत पाये। यदि रतन सेन पर भी कृपा हो जाय, तो वह अपनी मनोवांछित वस्तु प्राप्त कर ले।

हनुमान की हांक सुनायी पड़ना (लंका की रखवाली करना)[1]—रतनसेन के मार्ग की कठिनाइयों का वर्णन। लंका की रखवाली हनुमान द्वारा करना। जोर से हांक लगाना।

हरिश्चंद्र का डोम के घर सेवा-कार्य करना[2]—बीजापुर के वियोगी गुनी द्वारा गायी जानेवाली गाथाओं में से एक गाथा सत्यवादी हरिश्चन्द्र की भी।

---

१ पदमावत १३६।४ ६

२ चित्रावली पृ० १८१ छंद ४७७।चौ० १

११ | प्रयुक्त पौराणिक आख्यानों में सूफी दर्शन-तत्त्व

जहाँ सूफियों ने अपने प्रेमाख्यानक काव्यों के लिए लोक-कथाओं का ग्रहण कर अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक प्रयोजन की सिद्धि के निमित्त उनमें आवश्यक परिवर्तन कर लिया और उनका निरूपण इस ढंग से किया कि वे उनके मत प्रचार के साधन बन सकें वैसे ही भारतीय पौराणिक आख्यानों या पात्रों का अपने काव्य में प्रयोग करने में सूफियों का क्या कोई विशेष दृष्टिकोण या प्रयोजन था ? यह एक स्वाभाविक प्रश्न है जो सूफी काव्य के प्रत्येक अध्येता के मन में उठ सकता है। सूफी कवियों ने सूफी दर्शन को अपने काव्य के माध्यम से प्रकट करने की चेष्टा की। वह लोक ग्राह्य बन सके इसके लिए उन्हें लोक रुचि का ध्यान रखकर चलना पड़ा। इसके लिए जहाँ उन्होंने लोकप्रिय और लोकप्रचलित कथानकों तथा उपमानों को ग्रहण किया वहाँ उन पौराणिक आख्यानों और पौराणिक पात्रों आदि को भी जिनका जन मानस पर गहरा सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभाव था।

पौराणिक आख्यानों के प्रयोग में सूफी कवियों के विशिष्ट दृष्टिकोण और प्रयोजन को समझने के लिए आवश्यक है कि सूफी दर्शन के मूलभूत तत्त्वों से सामान्य परिचय प्राप्त कर लिया जाय।

सूफी दर्शन के आधारभूत तत्त्व

सूफी दर्शन में प्रेम सौन्दर्य विरह मिलन प्रेममार्ग की कठिनाइयों और गुरु आदि का विशेष महत्त्व है। प्रेम तो इस सूफी दर्शन का प्राण-तत्त्व ही है। समस्त सूफी साधना प्रेम पर ही आधारित है। सच्चा सूफी वही है जो हर समय प्रेम में डूबा रहे। सूफी प्रेम को असाधारण अलौकिक और ईश्वरीय शक्ति सम्पन्न समझते हैं। वह ईश्वरीय तत्त्व है। ईश्वरीय प्रेम मनुष्य के हृदय में स्वतः ही जाग्रत होता है, परन्तु होता तभी है जब ईश्वर की कृपा हो। इसलिए साधक अपने हृदय को सर्वात्मभाव से ईश्वर का नैवेद्य बना देता है। ईश्वर की सत्ता में अपनी सत्ता का विसर्जन ही उसका चरम प्राप्य होता है। प्रेमी के साथ तादात्म्य तब तक नहीं हो सकता जब

तक मनुष्य अपने अहंकार को खुदी की भावना को समाप्त न कर दे। 'अहं' या स्व की भावना मिटे बिना मनुष्य में समभाव से संसार को देखने की भावना उत्पन्न नहीं होती। प्रेम समभाव ही चाहता है संकीर्णता नहीं। जो ईश्वर का अपना परम प्रिय समझता है, वह ईश्वर के द्वारा प्रेम के कारण ही बनायी इस सृष्टि इसके मनुष्यों पदार्थों आदि से घृणा कैसे कर सकता है? उसके हृदय में तो सबके लिए प्रेम का अथाह सागर हिलोरें लेता रहता है। प्रेम इसीलिए संकीर्णता से दूर है। हृदय का औदार्य ही प्रेम को पल्लवित होने के लिए उपयुक्त भूमि प्रदान करता है।

प्रेम तर्क और ज्ञान से दूर भागता है उसे तो श्रद्धा चाहिए और चाहिए विश्वास। प्रेम की चटसार की पढ़ाई ही भिन्न है। उसकी वर्णमाला को प्रेमी ही पढ़ सकता है। प्रेम के बिना सब अपूर्ण है, प्रेम ही मनुष्य को पूर्णत्व की उपलब्धि कराता है। मनुष्य को जब तक अपने वैभव अपने पद और अपने गौरव में आसक्ति रहती है, जब तक उसमें मद और अहंकार रहता है तब तक वह ईश्वरोन्मुख नहीं हो पाता। जब मनुष्य के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम के अतिरिक्त और कुछ रह न जाय तभी उसका घट प्रेम से लबालब भर उठने के लिए व्याकुल हो उठता है।

सूफी दर्शन में प्रेम के साथ ही सौन्दर्य का भी महत्त्व है। सूफी सौन्दर्य और प्रेम का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित मानते हैं। जहाँ सौन्दर्य है वहाँ प्रेम के लिए सहज आकर्षण उपस्थित है। नारी का सौन्दर्य भी ईश्वरीय ज्योति का ही प्रतिबिम्ब है। जिसने संसार में सौन्दर्य की सृष्टि की वह स्वयं कितना सुन्दर होगा!—यही है वह भावना जो सूफी किसी सुन्दर वस्तु को देखकर अपने मन में करता है। सूफी काव्य में लौकिक सौन्दर्य का इसीलिए महत्त्व है क्योंकि वह अलौकिक सौन्दर्य की ओर साधक के मन को मोड़ने के लिए एक साधन का एक माध्यम का एक सोपान का काम करता है। सूफी दर्शन में लौकिक प्रेम की ही अलौकिक प्रेम में परिणति हो जाती है इश्क मजाजी इश्क हकीकी बन जाता है।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में नायिका के नख शिख सौन्दर्य का जो अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन मिलता है उसके मूल में यही भावना है। नारी सौन्दर्य को ओर देखने में सूफी साधक की दृष्टि वासनात्मक नहीं रहती वह उसकी आँखों कपोलों, ओठों भौंहों आदि में एक अलौकिक सौन्दर्य की झलक देखता है। सौन्दर्य का मूल स्रोत परमात्मा है इसलिए लौकिक सौन्दर्य की उपासना परमात्मा की ही उपासना बन जाती है। सूफी प्रेमाख्यानों में लौकिक सौन्दर्य वर्णन के साथ-साथ आध्यात्मिक संकेत मिलने का कारण यही है। लौकिक चूंकि पारलौकिक का साधन या माध्यम है, इसलिए सूफी काव्यों में सांसारिक प्रेम के आलम्बन अनुभाव, विभाव और संचारी भावों का इतना विशेष चित्रण मिलता है।

सूफी साधक की इस प्रेम यात्रा के मार्ग में अनेक प्रकार की साधनात्मक कठिनाइयाँ आती हैं, अनेक अवरोधों और विरोधों का उसे सामना करना पड़ता है।

सूफी साधना में नायक के प्रेम मार्ग की कठिनाइयों का चित्रण सादृश्य होता है। प्रेमी का हृदय कुन्दन की तरह बारहवानी सोने की तरह दमक सके शुद्ध हो सके इसके लिए आवश्यक है कि वह कठिनाइयों में से गुजरे। बिना कष्ट सहे दर्द को जिया इसमें उसकी आत्मा में परिष्कार नहीं आ पाता। प्रेमी को मिलनेवाला अति शय दुःख उसके हृदय के कल्मष को मिटा डालता है जिससे वह ईश्वरीय प्रेम की अनीरार करने के लिए उपयुक्त पात्र बन जाता है। सूफी साधना में मृत्यु भय वा वस्तु नहीं यह एक यात्रा का पड़ाव मात्र है उसकी समाप्ति नहीं। यही कारण है कि सूफी प्रेमाख्यानों के नायक को हम मौत में जीवन और मृत्यु में अभीत पाते हैं।

सूफी साधना में मार्ग की कठिनाइयों का महत्त्व होने के कारण इस आध्या त्मिक गुरु की भी आवश्यकता अनुभव हुई है जो साधक को पथभ्रष्ट और विषय गामी बनने से बचा सके। गुरु न हो तो व्यक्ति के सांसारिकता में भटक जाने का सतरा बना रहता है।

सूफी साधना में विरह का भी अपना महत्त्व है। संसार के सारे पदार्थ और समस्त प्राणी अपने मूल स्रोत से अलग होकर तड़प रहे हैं—एक व्यापक विरह की अग्नि जल रही है। प्रेमी के हृदय का विरह उस व्यापक अग्नि का ही रूप है। परमात्मा से मिलन हो इसके लिए आवश्यक है कि साधक के हृदय से वासनाओं का परिष्कार हो। इस परिष्करण के लिए प्रेमी को एक बार या कई बार विरह की अग्नि परीक्षा में से गुजरना आवश्यक है। प्रेम की तरह विरह भी ईश्वर प्रदत्त है। जिसके हृदय में विरह उत्पन्न हो जाय वह धन्य है। गुरु का काम जहाँ साधक के मार्ग की कठिनाइयों में उसका मार्ग-दर्शन करना उसकी रक्षा करना उसकी सहायता करना है वहाँ सूफी दर्शन में उसका एक बड़ा कार्य साधक या प्रेमी के हृदय में विरह की चिनगी जला देना भी है।

सूफी दर्शन के इस सामान्य परिचय के बाद सूफियों के पौराणिक आख्यान सम्बन्धी प्रयोगों का उद्देश्य समझने में कठिनाई नहीं रहती।

सूफी दर्शन तत्त्व निरूपण के लिए पौराणिक आख्यानादि का प्रयोग

हमारे आलोच्य ग्रन्थों के सूफी कवियों ने सभी पौराणिक आख्यानों एवं पौराणिक पात्रों का सूफी दर्शन-तत्त्व के निरूपण के लिए ही प्रयोग किया हो ऐसी बात नहीं। अधिकांशतः तो उन्होंने सामाजिक सम्बन्धों, मान्यताओं तथा लोक व्यवहार के मानव सिद्धान्तों का निरूपण करने के लिए ही इनका उपयोग किया है परन्तु कई आख्यानों एवं पात्रों का उन्होंने अपने विशिष्ट साम्प्रदायिक प्रयोजन के लिए भी प्रयोग किया है। नीचे हम ऐसे कुछ प्रयोगों पर विचार करेंगे।

सौदय-चित्रण

उवशी[1] मनका[2] पलोमना[3] घ्रिताची,[4] तिलात्तमा[5] रम्भा[6] सुकेशा,[7] रति[8] आदि अप्सराएँ जो पौराणिक आख्याना म उत्तोक सौदय का प्रतिमान बन कर उपस्थित हुई हैं सूफी कविया द्वारा अपनी नायिकाओ के अतिशय सौदय चित्रण के लिए उपमान के रूप म प्रयोग की गयी हैं। कई नायिकाओ को तो उनस भी बढ चढकर बताया गया है।

नायिका क सौदय म ईश्वरीय सौदय की प्रतीति कराने के लिए सूफी कविया न लोक में अप्सराओ के अत्यन्त सुदर होन के विश्वास का उपयोग करके अपना काय सरल कर लिया।

नायिका की नाभि के लिए जहाँ उन्होंने क्षीर समुद्रम म मथन के उपरात मथानी निकालन म बन आवत्त का उपमान बनाया[6] वहा नायिका की भौंह के लिए अजुन[1] परशुराम[11] और कृष्ण[12] क उन धनुषो को उपमान बना दिया जिनका उपयोग उन्होने क्रमश कौरवो सहस्रबाहु और कस के विनाश के लिए किया था। इन प्रयोगो स सूफी कवि केवल नायिका की भौंह की वक्रता का ही नहीं सूचित कर सक वरन् उसकी अप्रतिम शक्ति का भी सहज ही बोध करा सके।

अहकार का नाश

सूफी दशन साधक के अहकार का नष्ट करन पर विशेष बल देता है क्योकि उसक बिना परमात्म-तत्त्व का उदभास साधक क हृदय म नही हो सकता। दभ या

---

१ चित्रावली ६०८।१ २ कथा कौतूहली, पत्र २ छन्द २ यूसुफ-जुलेखा (हि प्र० गा० का० स०) पृ० ३६ ।पंक्ति १२ १३ प्रमरागबांसुरी १।४ ५ १३।५ ६ ७१।६

२ कथा छीता छद ५ कथा कौतूहली पत्र ३।छद २ कथा नल-दमयन्ती पत्र ३।छद १७ इन्द्रावती (उत्तराद्ध) हस्त पृ० ११ और १६

३ कथा नल-दमयन्ता पत्र ३।छन्द १७ ज्ञानदीप छन्द ७१

४ कथा कौतूहली पत्र ३।छद २ ज्ञानदीप छद ७१ कथा नल-दमयन्ती पत्र ३। छद १७ कथा छीता छद ५

५ कथा छाता छन्द ५ इन्द्रावती (मुद्रित) ६।१ वही हस्त० उत्तराद्ध पृ० ७६

६ चित्रावली ३१८।५ ६०८।१ २ कथा रतनावती ८४।१ कथा कामलता ११।१ ३ माधवा-नल-कामकदला पृ० १६ ।पं० ३ इन्द्रावती स्वप्न खड ३३।दोहा

७ कथा छीता छद ५ कथा कौतूहली पत्र ३ छन्द २

८ इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) ६।१ उत्तराद्ध हस्त पृ ७६ अनुराग-बाँसुरी ४।३

९ चित्रावली पृ० ७६ चौ० १

१ मृगावती १७८।५

११ वही १७८।दोहा पदमावत १ २।५

१२ पदमावत १ २।४ और

राम हरा रावन जिहि कृष्ण हरा जिमि कस।
त बै धनक हु व मनो वही धनक कर यस। —नल-दमन ६०।दोहा

अहंकार व्यर्थ है संसार के बड़े बड़े प्रतापी राजा अहंकार के कारण ही नष्ट हो गये इसके लिए अगस्त्य मुनि द्वारा समुद्र शोषण[1] कुंभकर्ण की खोपड़ी में भीम के डूब जाने[2] रावण,[3] कंस[4] तथा कौरवों[4] के मारे जाने तथा चंद्रमा के ग्रस जाने[5] आदि से सम्बन्धित आख्यानों का उपयोग किया गया है।

मृत्यु में अभीतता

मृत्यु से निडर होना साधक के लिए आवश्यक है तभी वह संकटों का सामना साहस से कर सकेगा, इस विचार को प्रकट करने के लिए प्रह्लाद को अग्नि में जलाने[6] तथा मंसूर को सूली पर चढ़ाने[8] की घटनाओं का उपयोग किया गया है।

प्रेम पथ की विकटता

प्रेम पथ पर चलना सबके बूते की बात नहीं। बड़े बड़े धनवानों के धन यहाँ छूट जाते हैं बड़े बड़े पराक्रमियों को यहाँ हार माननी पड़ती है। इस पर चलता वही है जिसमें अभंग साहस हो दृढ़ आत्म विश्वास हो और अपने प्रीति पात्र को प्राप्त करने की अदम्य इच्छा हो। इस विचार को उदाहृत करने के लिए सूफी कवियों ने अंगद का रावण की सभा में पाव रोपने से सम्बन्धित आख्यानक प्रसंग का बड़ा सुन्दर प्रयोग किया है।[9] अभिमन्यु के चक्रव्यूह में जूझने[1] और नल पर विपत्ति पड़ने[11] का भी इसी प्रयोजन के लिए प्रयोग हुआ है।

---

१ चित्रावली ५६२।६ ७ तथा दोहा
२ पद्मावत २६५।दोहा २८।६
३ सिंघनाथ माथ भइ मारे देउँ सराप होउ जरि छारे।
रावन गर्ब रहा नहि राखा तावा नत सहित सुख साखा।। —ज्ञानदीप पृ १०४ छन्द २६०
गर्व सो व्याघ्र भावनो छाहीं, परा देखि मैं कूए माहीं।
रावन गयउ गर्व सों मारा लंका ऐसो हनिवन आरा।।
—इन्द्रावती उत्तरार्द्ध हस्त० प० ११२
४ अमर भई मोहन की बात नित नित को जग ना ठहरात।
× × ×
नित बल बन कहाँ कसार करी पांडो बल अपार।
—कथा रतनावती पृ १७३ ज्ञानदीप छन्द ५०४ (इन्द्रावती उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ १७६
५ मृगावती ३७९।दोहा
६ पद्मावत ८४।४
७ ज्ञानदीप छन्द २ ५
८ पुहुप बरिखा पत्र १४।छन्द ८८ पद्मावत २६ ।६
९ अनुराग बाँसुरी प० ११८।छन्द १६।६
१ पद्मावत २६४।१ २ माधवानल कामकन्दला हस्त० पत्र २४ मन्दिर प्रति (हि प्र० गा का सं०) पृ २०८ प १० १४
११ मृगावती १३२।४ ५

विरह की उत्कटता

नायक म विरह की उत्कटता का चित्रण करन म रामचद्र,[1] नल[2] आदि का उपयोग सूफी कवियो ने सुदरता से किया है।

विरह कितना कष्टदायक है, इसको चित्रित करने के लिए राहु,[3] दुशासन[4] और अजुन को पकडन वाले अहिबन[5] का उपयाग हुआ है।

नायिका को प्राप्त करने मे नायक का उद्योग और प्रेम के प्रति उसकी निष्ठा

साधक अपने लक्ष्य को सतत और कठिन प्रयास के बिना नही पा सकता, इसका उल्लेख अजुन द्वारा मत्स्य वेध कर द्रौपदी को जीतन के आख्यान के द्वारा किया गया है।[6] भीम का अधिक भोजन करना[7] भी यहां विष—सासारिक छल, पान आदि—को पचाने म नायक की आत्मिक शक्ति का परिचायक बनकर उपस्थित हुआ है। राम द्वारा सीता को पाने के लिए समुद्र पर सेतु-बधन और अजुन द्वारा मत्स्य-वध कर द्रौपदी को प्राप्त करना[8] आदि आख्यान भी इसी सन्दभ म प्रयुक्त हुए हैं।

नायक के प्रेम-पथ के सहायक

सूफी प्रेमाख्यानो म नायक-नायिका का बिछोह हो जाने के बाद नायको को प्राय हनुमान और भीम का स्मरण आया है। य दोना ही प्रसिद्ध पराक्रमी और बलशाली पौराणिक पात्र हैं। नायको की यह अभिलाषा रही है कि उनकी विपत्ति मे हनुमान और भीम जसा कोई सहायक उनक पास होता जो उन्ह अपनी प्रेयसी से मिला सकता।

ससार के प्रति वैराग्य

ससार के प्रति साधक के वराग्य का चित्रण विभीषण के लका छोड दने[8] और शुकदेव जी के कभी दो घडी एक स्थान पर न ठहरने[9] के पौराणिक आख्यानो के द्वारा किया गया है।

य हैं कुछ पौराणिक आख्यान और पात्र जिनका उपयोग सूफी प्रेमाख्यानक काव्या म सूफी दशन-तत्त्व निरूपण के लिए हुआ है।

---

१ मधुमालती २१५
२ माधवानल-कामकदला (हि० प्रे० गा० का० स) पृ० ०० । पृ० २५ पृ० २१४ पृ० १
३ पदमावत १७२।दोहा १८।५
४ नल दमन १६३।२ ३
५ मृगावती ६६।३
६ पदमावत ४६१।८ ४
७ ज्ञानदीप छद १८७
८ पदमावत ३८४।४ ५
९ वही ६०४।५

१२ सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की पौराणिक कथानक-रूढ़ियाँ

जबसे विभिन्न देशों के विभिन्न प्रदेशों की लोक कथाओं का अध्ययन प्रारम्भ हुआ है अध्येताओं की दृष्टि स्वभावतः इस तथ्य पर गयी है कि कुछ कथाएँ अपने परम्परागत रूप में मिलती हैं। एक ही कथा किंचित शैलीगत परिवर्तन एवं वस्तुगत संशोधन परिवर्द्धन के साथ एक ही देश की विविध भौगोलिक इकाइयों में प्राप्त होती है। कथा रूपों की समानता के अतिरिक्त एक बात और दृष्टिगत होती है कि प्रत्येक कथा बहुत से लघु तंतुओं का समवाय होती है और ये तंतु या तत्व संसार के अनेक देशों में प्रचलित लोक कथाओं के लघु तत्वों से समानता रखते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय कथा रूपों तथा कथा तत्वों के तुलनात्मक अध्ययन की सामग्री उपलब्ध होने लगी है।

कथा रूपों को कथा प्रकार (टेल टाइप) तथा कथा तत्वों या तंतुओं को कथानक रूढ़ि (मोटिफ) की संज्ञा दी गई है। उनके स्वरूप और अन्तर को यहाँ स्पष्ट कर देना समीचीन होगा।

कथा प्रकार

स्टिथ थामसन ने कथा प्रकार की परिभाषा देते हुए कहा है— प्रकार (टाइप) एक परम्परागत कथा है जिसका स्वतन्त्र अस्तित्व है। यह एक पूर्ण कथा के रूप में कही जा सकती है और अपना अर्थ स्पष्ट करने के लिए यह अन्य किसी कथा पर निर्भर नहीं करती। हो सकता है कि यह अन्य कथा के साथ कह दी जाय परन्तु यह तथ्य कि यह अकेले भी उपस्थित हो सकती है इसकी स्वतन्त्रता को प्रमाणित करता है। इसमें केवल एक कथानक रूढ़ि (मोटिफ) भी हो सकती है और एकाधिक भी। अधिकांश पशु विषयक कथाएँ और चुटकुले तथा प्रवाद एक अभिप्राय वाले प्रकार हैं। साधारण कथाएँ एकाधिक अभिप्राय वाले कथा रूपों का उदाहरण हैं।[1]

---

1 A type is a traditional tale that has an independent existence It may be told as a complete narrative and does not depend for

उक्त परिभाषा से यह सूचित होता है कि कथा प्रकार स्वतन्त्र कथाएँ ही होते हैं जिनका एक परम्परागत रूप निश्चित हो चुका होता है। एक से कथा प्रकारों के मूल मानक रूप भी होते हैं जिनमें वे निर्मित हुए होते हैं। उदाहरण के लिए पुरूरवा उर्वशी के वैदिक आख्यान को ही लें। इस आख्यान में एक परामानवी सुन्दरी अपने मनुष्य (प्रेमी) के साथ रहती तो है परन्तु एक शर्त के साथ कि वह उसको (प्रेमी को) कभी नग्नावस्था में न देखे। गन्धर्वों के षडयन्त्र के कारण एक रात विद्युत प्रकाश में अप्सरा अपने प्रेमी को नग्न देख लेती है और वह इन्द्रलोक चली जाती है। मानव प्रेमी विरह-व्याकुल हो उसे ढूँढता फिरता है। अन्ततः अप्सरा को उस पर तरस आता है। वह प्रकट होकर उसे उपाय सुनाती है कि तुम गन्धर्वों से गन्धर्व योनि में सम्मिलित हो जाने का वरदान माँग लेना फिर हम साथ रह सकेंगे। इन तीलियों पर निर्मित पुरूरवा उर्वशी का आख्यान स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हुए भी एक कथा मानक रूप से सम्बद्ध है जिसको लेकर अपने ही देश में नहीं वरन विदेशों में भी अनेक कथाओं का निर्माण हुआ है। सी० एस० बर्न महोदया ने अपनी पुस्तक हैण्डबुक आव् फोकलोर में जिन सत्तर कथा रूपों का संग्रह किया है उनमें एक कथा रूप क्यूपिड एण्ड साइक का है। तनिक उस कथा रूप और पुरूरवा उर्वशी के उपर्युक्त कथा रूप की तुलना कीजिए। क्यूपिड तथा साइक (Cupid and Psyche) के कथा रूप (टाइप) की तीलियाँ इस प्रकार हैं

१ एक सुन्दर लड़की को एक परामानवीय जाति का व्यक्ति प्रेम करता है।

२ वह मनुष्य रूप में रात्रि को लड़की के पास आता है पर इस शर्त के साथ कि वह उसे देखे नहीं।

३ लड़की निषेध का उल्लंघन कर देती है, फलतः अपने दिव्य जाति के प्रेमी को खो बैठती है।

४ वह लड़की उसकी खोज में निकलती है और बहुत सी कठिनाइयों का सामना करती है।

५ अन्ततः वह उसे पा लेती है।

पुरूरवा उर्वशी के आख्यान की तीलियों और इस कथा रूप की तीलियों में कितनी तात्त्विक समानता है! अन्तर है तो इतना ही कि क्यूपिड तथा साइक कथा

its meaning on any other tale It may indeed happen to be told with another tale but the fact that it may appear alone attests its independence It may consist of only one motif or of many Most animal tales and jokes and anecdotes are types of one motif The ordinary marchen are types consisting of many of them"

—Stith Thompson Folk Tale, p 415

रूप में जो यूरोप में प्रचलित है प्रेमी परामानवीय जाति का है जबकि पुरूरवा उर्वशी आख्यान में प्रेमिका। विवाह के उपरान्त अन्त में दोनों ही कथा रूपों में प्रेमी प्रेमिका का मिलन हो जाता है। क्या यह मानना ठीक न होगा कि कथा रूपों ने एक देश की सीमाओं का अतिक्रमण कर दूसरे देशों में संक्रमण किया है? फिर एक देश के भीतर भी तो कथा रूपों के मूल ढाँचे को सुरक्षित रखते हुए उनके पूर्णांश या अल्पांश को लेकर लोक रचनाओं का निर्माण होता रहा है। पुरूरवा उर्वशी के कथा रूप के अन्तिम भाग का यह परिवर्तित रूप हमें एक लोक-कथा में उपलब्ध होता है—एक मनुष्य एक अप्सरा को प्रेम करने लगता है। अप्सरा उसको इन्द्र के सम्मुख ले जाती है। मनुष्य मृदंग बजाकर इन्द्र को रिझा लेता है और अप्सरा के परामर्श के अनुसार इन्द्र से अपनी प्रेमिका को माँग लेता है।

यदि हमें कथा रूप के मूल तन्तुओं को अंकित करना हो तो उसका रूप यह होगा—

(१) अप्सरा (२) देवता या परामानवीय पुरुष (३) मानव और परामानवीय जाति का प्रेम (४) मानव और परामानवीय जाति का प्रेम निषिद्ध (५) इन्द्र अप्सराओं का राजा (६) इन्द्रलोक (७) इन्द्रसभा (८) निषेध : परामानवीय प्रेमी को देखना या मानव प्रेमी को नग्न देखना (९) अन्य लोक की यात्रा : परामानवीय पत्नी नायक को अन्य लोक में ले गयी, (१०) दण्डित कार्य—निषिद्ध कार्य करने से अप्सरा का चला जाना (११) दण्ड : वियोग (१२) खोज : प्रिय की खोज में लगी नायिका (१३) खोज : प्रिया की खोज में लगा नायक (१४) नायक या नायिका के मार्ग में आनेवाले संकट (१५) खोज में सफलता (१६) तबला (मृदंग) बजा इन्द्र को प्रसन्न कर प्रिया को पाना (१७) पुरस्कार : नायिका प्राप्ति का साधन मालूम होना (१८) पुरस्कार : वर माँग लो (प्रेमिका प्राप्ति), (१९) मानव और परामानव का विवाह।

वस्तुतः किसी 'कथा रूप' या 'प्रकार' (टाइप) के मूल तत्व ही कथानक-रूढ़ि या मोटिफ हैं।

कथानक रूढ़ि

अंग्रेजी में मोटिफ शब्द का अर्थ प्रधान अभिप्राय या भाव होता है। हिन्दी में उसके लिए कई शब्द प्रचलित हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कथानक रूढ़ि शब्द का प्रयोग करते हैं।[1] श्री कृष्णानन्द गुप्त ने उसको कथानक का मूल लक्षण एवं मुख्य लक्षण कहा है।[2] डा० सत्येन्द्र ने इसके लिए अभिप्राय[3] और कथानक रूढ़ि[4] दोनों

---

१ हिन्दी साहित्य का आदिकाल पृ० ८०

२ मासिक मधुकर (झाँसी) के लोक-वार्ता में इनका प्रकाशित लेख।

३ देखिए ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन पृ० ४४१ और लोक साहित्य विज्ञान पृ० २८७

४ मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्विक अध्ययन पृ० २४८

शब्द का प्रयोग किया है। डा० सावित्री सरीन ने भी 'अभिप्राय' शब्द को ही चुना है।[1] डा० श्यामाचरण दुबे ने 'मोटिफ' को मूल भाव माना है। डा० ब्रजविलास श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक 'पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढियाँ' में 'कथानक रूढि' शब्द को पसन्द किया है। डा० कृष्णदेव उपाध्याय अभिप्राय को मोटिफ का उचित पर्याय नहीं मानते।[2] जो हो, आजकल हिन्दी मे अंग्रजी के 'मोटिफ' शब्द के लिए 'कथानक रूढि' (कथा रूढि) और 'अभिप्राय' (मूल अभिप्राय)—इन दो शब्दो का ही प्रयोग साधारणतः किया जा रहा है।

शिप्ले ने 'मोटिफ' की परिभाषा इन शब्दो मे की है— अभिप्राय (मोटिफ) उस शब्द अथवा विचार के उस साँचे को कहते हैं जो समान परिस्थिति मे अथवा समान मन स्थिति उत्पन्न करने के लिए किसी कृति या एक ही जाति की विभिन्न कृतियो मे बार-बार आता है।"[3] डा० स्टिथ थामसन इसको लोकवार्त्ता का वह अंश मानते हैं जिसमे लोकवार्त्ता की किसी वस्तु का विश्लेषण किया जा सके।[4] यो तो लोक-कला और लोक संगीत के भी अपने 'मोटिफ' होते हैं परन्तु जिस क्षेत्र मे अभिप्रायो (Motifs) का व्यवस्थित अध्ययन किया गया है वह क्षेत्र लोक कथाओ का ही है।

प्रायः लोक कथाओ मे बहुत सीधी सादी बातें भी अपना स्थान परम्परागत रूप मे रखती आती हैं। वे अप्सराए जादूगरिनें राक्षस क्रूर सौतेली माँ, मानव वाणी मे बोलनेवाले पशु पक्षी तथा इसी प्रकार की अन्य बातें हो सकती हैं। ये सारी बातें किसी लोक कथा का अभिप्राय (मोटिफ) बन जाती हैं। कभी कभी कोई लघु कथा या श्रोताओ का मनोविनोद करने वाला चुटकुला भी अभिप्राय (मोटिफ) का रूप ग्रहण कर लेता है। अकबर बीरबल विनोद के चुटकुले लोकवार्त्ता क्षेत्र मे मोटिफ का ही रूप ग्रहण कर चुके हैं।

अभिप्राय (मोटिफ) शब्द की व्याप्ति इतनी अधिक है कि इसके अंतर्गत

---

१ डॉ सावित्री सरीन का शोधप्रबन्ध ब्रज की लोक-कथाओ के अभिप्रायो का अध्ययन कलकत्ता विश्वविद्यालय से १९५७ मे पी-एच डी उपाधि के लिए स्वीकृत (अप्रकाशित)

२ देखिए हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास —षोडश भाग पृ० १२१

3 Motif —A word or a pattern of thought which recurs in a similar situation or to evoke a similar mood within a work or in various works of a genre' — Shiple Dictionary of World Literature

4 Motif —In folklore the term used to designate any one of the parts into which an item of folklore can be analyzed — Stith Thompson in Standard Dictionary of Folklore Mythalogy and Legend' Vol II, Editor Maria Leach New York First Ed, 1950

किसी परम्परागत कथा के अनेक तत्त्वों में से कोई भी तत्त्व गृहीत हो सकता है, पर उस तत्त्व में ऐसी कोई असाधारणता या विचित्रता अवश्य होनी चाहिए जिसके कारण लोग उसे स्मरण रख सकें और उसकी आवृत्ति होती रह सके ताकि वह एक रूढ़ि बन जाय। उदाहरण के लिए, माँ किसी कहानी का तत्त्व होते हुए भी एक अभिप्राय (मोटिफ) नहीं है, क्योंकि उसमें साधारणता है। पर क्रूर सौतेली माँ या क्रूर सौतेले भाई या क्रूर सास[1] अपनी असाधारणता के कारण अभिप्राय हैं। यदि कोई कहे कि जान ने कपड़ा पहना और वह शहर गया, तो इसमें ऐसी कोई बात नहीं जो स्मरण रखने योग्य हो, परन्तु यदि इसी को इस रूप में कहा जाय कि नायक ने एक ऐसी टोपी पहनी जिसमें यह गुण था कि उसे पहनने वाला दूसरों की दृष्टि में अदृश्य रहकर भी स्वयं सबको देख सकता था, इसके बाद वह अपने जादू के गलीचे पर बैठा और एक ऐसे लोक में गया जो सूर्य के पूर्व में और चन्द्र के पश्चिम में अवस्थित है, तो चार अभिप्रायों का कथन हो जाएगा : (१) अदृश्य बना देनेवाली टोपी, (२) जादू का गलीचा, (३) जादू के बल से आकाश मार्ग से यात्रा और (४) आश्चर्य-जनक लोक।[1] इनमें से प्रत्येक अभिप्राय (मोटिफ) लोक रुचि को सन्तुष्ट और आकर्षित करने की अपनी शक्ति के कारण परम्परागत रूप से लोक-कथाओं में व्यवहृत होता आ रहा है। इस प्रकार अभिप्राय कथा का वह लघुतम तत्त्व है जो परम्परा में स्थिर रूप से रहने की शक्ति रखता है। इस प्रकार की शक्ति रखने के लिए उसमें कुछ असाधारणता और अनूठापन होना चाहिए।[2] सोकोलोव के शब्दों में 'अभिप्राय कथानक का आन्तरिक अविभाज्य तत्त्व है।[3]

इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अभिप्राय किसी भी लोक-कथा का एक आवश्यक मूल तत्त्व है जिसके बिना उसका निर्माण ही नहीं हो सकता। 'अभिप्राय घटना, चरित्र और कार्य तीनों से सम्बन्धित हो सकते हैं और किसी कथा में घटना, चरित्र और कार्य का क्या महत्त्व है यह कहने की आवश्यकता नहीं।

कथा प्रकारों और अभिप्रायों में अन्तर

कथा प्रकारों (Tale types) का क्षेत्र अभिप्रायों की अपेक्षा संकुचित होता है। कथा प्रकारों की व्याप्ति मुख्यतः एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र में ही देखी जाती है

१ वही, पृ० ३५३

2 A motif is the smallest element in a tale having a power to persist in tradition. In order to have this power it must have something unusual and striking about it.—Stith Thompson: Folktale, Page 416

3 The motifs are seen to be an integral part of the plot.—Sokolov: Russian Folktale, Page 418

जब कि अभिप्रायों का क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय व्याप्ति लिये है। एक कथा रूप या प्रकार का जब अध्ययन किया जाता है तब उसके परिवर्तित रूपों के मध्य ऐतिहासिक सम्बन्ध का अनुसंधान करना भी आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए ऊपर 'क्यूपिड और 'साइक' तथा पुरूरवा और उर्वशी के कथा प्रकारों में जो निकट समानता देखी गयी उससे स्वभावतः अध्येता का ध्यान इस बात पर जा सकता है कि इस साम्य का कारण क्या है? कहीं ऐसा तो नहीं कि पुरूरवा उर्वशी की वैदिक कथा प्रकार (टाइप) के रूप में भारत की सीमाओं को लाँघ कर पश्चिम में पहुँच गयी और वहाँ उसने क्यूपिड तथा साइक का कथा रूप ग्रहण कर लिया? और ऐसा क्या इसी एक कथा रूप के साथ हुआ या अन्य कथा रूप भी हैं जिनके कारण बनफे के साथ हम भी कहना पड़े कि यूरोप की लोक कथाओं का जन्म भारत में हुआ?

परन्तु अभिप्रायों या कथानक रूढ़ियों के तुलनात्मक अध्ययन के समय उनके किसी ऐतिहासिक सम्बन्ध सूत्र को ढूँढने की आवश्यकता नहीं होती। यही कारण है कि जब लोक-कथाओं के विश्व व्यापी मूल तत्वों के अध्ययन का प्रश्न उपस्थित होता है तब 'अभिप्राय (मोटिफ) कथा प्रकारों' (टेल टाइप्स) से अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। कथाओं के अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को दिखाने के लिए कथा अभिप्राय जितने महत्वपूर्ण और उपादेय हैं उतने कथा प्रकार नहीं।

कथा प्रकार और कथानक रूढ़ि के अंतर को स्पष्ट करने के लिए यहाँ सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों के कथा प्रकार तथा उनकी कथानक रूढ़ियों का उल्लेख कर देना उचित होगा।

सूफी प्रेमाख्यानों का कथा प्रकार

अधिकांश सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों के कथानक लोक-स्रोत से गृहीत हैं परन्तु कुछ काव्यों के कथानक कवि कल्पित भी हैं। जहाँ तक कथा प्रकार का सम्बन्ध है दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। कल्पित कथाएं भी लोक कथाओं के ढर्रे पर चली हुई हैं। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों का कथा संगठन कुछ समान शैलियों के सहारे हुआ है। 'चंदायन' और 'मृगावती' से लेकर 'प्रेम दर्पण' (नसीर कृत) तक सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की जो लम्बी परम्परा मिलती है उसमें कथा संगठन की अद्भुत समानता है यहाँ तक कि यदि पात्रों और स्थानों के नाम बदले हुए न हों तो एक कवि की रचना को सरलता से दूसरे कवि की रचना समझा जा सकता है। इससे एक प्रकार की एकरसता (मोनाटनी) इन कथा काव्यों में आ गयी है। केवल जान कवि ने कथानक के सम्बन्ध में कुछ स्वतंत्रता का परिचय दिया है। फिर भी सूफी प्रेमाख्यानों का अपना एक कथा प्रकार है जो परम्परागत रूप ले चुका है। सूफी काव्य रचयिताओं में से बहुत कम को उस रूढ़ परम्परागत चौखट के बाहर हाथ पर पसारने का साहस हुआ है। सूफी काव्यों का वह कथा प्रकार कुछ इस प्रकार का है—

(१) नायक या नायिका प्रायः अपने माता पिता की इकलौती सन्तान

होती है। उसका जन्म काफी जप-तप दान पुण्य अथवा किसी साधु संत के आशीर्वाद या उसके द्वारा प्रदत्त अभिमन्त्रित फल चरु आदि के परिणामस्वरूप होता है।

(२) ज्योतिषी नायक की जन्म कुण्डली बनाते समय भविष्य वाणियाँ करते हैं। प्राय किसी के प्रेम में पड़ने और राजपाट छोड़कर चल देने की बात वे पहले ही कह देते हैं।

(३) नायिका या तो सिंहल द्वीप की राजकुमारी होती है या किसी दूरस्थ देश की राजकन्या परन्तु वह पद्मिनी स्त्री के लक्षणों से युक्त तो होती ही है।

(४) प्राय गुण श्रवण स्वप्न दर्शन और चित्र दर्शन से प्रेम उत्पन्न होता है। किसी किसी प्रेमाख्यान में प्रत्यक्ष दर्शन से भी। प्रेम घटक का कार्य या तो कोई पक्षी करता है या कोई सखी या अप्सरा या देव।

(५) कुछ सूफी प्रेमाख्यानों के नायकों का एक विवाह हो चुका होता है और कुछ कुंवारे ही होते हैं। दूत चित्र या स्वप्न के माध्यम से नायिका की प्रशंसा सुन या उसको देख नायक प्रेम-पीड़ित हो जाता है।

(६) नायक के रोग का निदान करने के लिए वैद्य हकीम ओझा-पंडित बुलाये जाते हैं वे कोई रोग समझ नहीं पाते। अन्तत प्रेम रोग का निदान करते हैं। नायिका प्राय अपनी किसी विश्वस्त और अंतरंग सखी या दूती धाय से अपने मन का रहस्य बताती है।

(७) नायक अपने माता पिता के सम्मान दुखाने की कोई परवाह न कर राजपाट छोड़ पूर्व पत्नी को त्याग (यदि वह पहले से विवाहित है) नाथपंथी जोगिया का वेश धारणकर अपने कुछ साथियों के संग नायिका की खोज में निकल पड़ता है। मार्ग में अनेक विघ्न पड़ते हैं। राक्षस रक्षित बीहड़ मार्गों सात भयंकर वनों और सात समुद्रों से उसका सामना होता है।

(८) उसके खोज प्रयत्न में उसका गुरु कोई साधु संन्यासी या कहीं का राजा सहायक बनता है।

(९) मानसरोवर शिव मंदिर या किसी उद्यान में नायक नायिका का मिलाप होता है। बहुधा यह मिलाप पूर्व योजित होता है और कभी कभी आकस्मिक भी। नायिका के अपूर्व सौन्दर्य की झलक पाकर नायक मूर्च्छित हो जाता है। नायिका उसकी छाती पर या चीर पर कुछ लिखकर लौट आती है।

(१०) नायक को शिव पार्वती या किसी अन्य परामानवीय शक्ति अथवा किसी सिद्ध की सहायता प्राप्त होती है। सिद्ध गुटिका या लोपाजन का भी प्रयोग होता है। कहीं-कहीं विवाह के लिए कुछ युद्ध भी होता है।

(११) अन्ततः नायक नायिका को प्राप्त कर लेता है। दोनों का समारोहपूर्वक विवाह होता है, खूब दान-दहेज मिलता है। कुछ काल तक नायक अपनी ससुराल में ही रहकर रस केलि करता है।

(१२) उधर उसकी पूर्व पत्नी विरहाकुल हो अपना विरह-संदेश किसी पक्षी या दूत के माध्यम से भेजती है। कहीं कहीं पवन को भी दूत बनाया गया है। इसी विरह वर्णन प्रसंग में बारहमासा या छः मासा या दोनों का चित्रण होता है। यह भी एक रूढ़ि बन गयी है। नायक यदि पूर्व विवाहित नहीं होता तो उसे स्वप्न में रो रोकर अन्धे हुए अपने माता पिता दिखाई देते हैं।

(१३) पूर्व पत्नी का सन्देश पाकर या स्वप्न से सूचना पाकर उसे घर की याद हो आती है और वह हठपूर्वक अपने श्वसुर से विदा लेकर नायिका को साथ ले चल देता है। उसके पास श्वसुर प्रदत्त हाथी-घोड़े लाव-लश्कर तथा धन धान्य भी होते ही हैं।

(१४) मार्ग में विपत्ति आती है। समुद्र में तूफान आने से नायक की नौका या जहाज टूट जाता है नायक-नायिका अलग अलग काष्ठ फलकों पर बहते हुए किसी तट या द्वीप पर जा निकलते हैं।

(१५) पुनः कोई परामानवीय शक्ति लक्ष्मी या समुद्र उनका मिलाप कराते हैं और नायक नायिका के साथ अपने देश पहुँचता है।

(१६) उसकी पूर्व-पत्नी और नायिका में सौतियाडाह दिखाया जाता है। अन्ततः वे दोनों (कहीं कहीं उनकी संख्या तीन भी है) साथ साथ मिलकर रहने लगती हैं। किसी किसी प्रेमाख्यान में नायक पूर्व-विवाहित नहीं होता पर नायिका की खोज में जाते हुए उसे मार्ग में किसी राजकुमारी (उपनायिका) से विवाह करना पड़ता है। इस दशा में भी सौतिया डाह और सामंजस्य का प्रसंग उपस्थित होता है।

(१७) कुछ प्रेमाख्यानों में तो मिलन के उपरान्त कथा आगे नहीं बढ़ती और वह सुखान्त हो जाती है। किन्तु कुछ प्रेमाख्यानों में मिलन के पश्चात भी व्यवधान उपस्थित होता है और कथा आगे खिचती है। ऐसे स्थलों पर कोई खलनायक नायिका की रूप प्रशंसा किसी दुष्ट दूत या कुटीचर के द्वारा सुन नायक से उसकी माँग कर बैठना

है। नायिका को फुसलाने के लिए वह दूती (कुटनी) भी भेजता है जिसे नायिका निकाल बाहर करती है परन्तु अपने सत से नहीं डिगती।

(१८) नायिका को न देने पर खलनायक से नायक का युद्ध होता है नायक मारा जाता है नायिका और उसकी सौत नायक के शव के साथ चितारोहण कर सती हो जाती हैं।

(१९) शकुन अथवा अपशकुन का विचार भी प्रायः प्रत्येक काव्य में हुआ है।

(२०) कथा में कहीं कहीं जादू मन्त्र टोने टोटके का भी उल्लेख मिलता है। जान कवि लिखित प्रेमाख्यानों में यह विशेष है।

(२१) सूफी कवियों ने कथा में प्रतीक-योजना और आध्यात्मिक प्रेम की तीव्रता का समावेश किया है।

यह है वह कथा प्रकार (टल टाइप) जिस पर अधिकांश सूफी प्रेमाख्यानों का संगठन हुआ है। यत्र-तत्र कुछ परिवर्तन भी दृष्टिगोचर होता है कुछ नयी उद्भावनाएँ भी मिलती हैं परन्तु मूल ढांचा यही रहता है। सूफी प्रेमाख्यानों का यह सांचा (pattern) सूफी कवियों की अपनी उपज हो ऐसी बात नहीं। बहुत से असूफी प्रेमाख्यानों का भी सांचा यही है। यही नहीं हिन्दी और हिन्दी-पूर्व के जन चरित काव्यों का भी सांचा बहुत कुछ यही है। निश्चय ही यह सांचा लोक स्रोत की देन है पर सूफी प्रेमाख्यानों में यह रूढ़ हो गया है इसलिए इसे सूफी प्रेमाख्यानों के कथा प्रकार का नाम देना उचित है।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रयुक्त कुछ प्रमुख कथानक रूढ़ियाँ

सूफी प्रेमाख्यानों के उपयुक्त कथा प्रकार (टल टाइप) के आधार पर हिन्दी में जो प्रेमाख्यान लिखे गये उनमें अधिकांशतः भारतीय कथा साहित्य की चिरपरिचित कथानक रूढ़ियों का ही प्रयोग हुआ। उसमान कृत चित्रावली तक लिखी सूफी प्रेम कथाओं पर भारतीय कथा रूढ़ियों का ही विशेष प्रभाव दिखाई देता है। उसके अनन्तर जो प्रेम कथाएं लिखी गयीं उनमें दक्खिनी हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानों की देखा देखी फ़ारसी परम्परा की भी कुछ कथानक रूढ़ियों का ग्रहण होने लगा। जान कवि के काव्यों कासिमशाह दरियाबादी के हंस जवाहिर एवं शेख निसार के यूसुफ जुलेखा में यह बात विशेषतः परिलक्षित होती है।

हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रयुक्त कुछ प्रमुख कथानक रूढ़ियाँ निम्नलिखित हैं—

१ निस्सन्तान राजा। सन्तान न होने के कारण दुःखी।

२ पुत्र (किसी किसी में पुत्री) उत्पन्न—

(क) ईश्वर भक्ति और जप-तप दान-पुण्य के प्रभाव से

(ख) शिव (कहीं कहीं शिव पार्वती दोनों) के वरदान से या अन्य देवताओं के वरदान से,

(ग) सिद्ध पुरुष के आशीर्वाद से,

(घ) सिद्ध पुरुष या ऋषि द्वारा प्रदत्त अभिमन्त्रित फल को रानी को खिलाने से।

३ ज्योतिषियों द्वारा राजकुमार (या राजकुमारी) का भविष्य कथन। प्रेम वियोगी बनकर विदेश-यात्रा करने की बात।

४ अल्पवयस में ही नायक सब विद्या-कला निपुण।

५ आखेट खेलने जाकर मार्ग भूलना। किसी निर्जन वन में पहुँच जाना। वहाँ एक सूने महल में जो किसी राक्षस या देव का होता है सुप्त सुन्दरी का दर्शन।

६ राक्षस को मारकर सुन्दरी का उद्धार। (कभी कभी यह सुन्दरी नायिका नहीं नायिका की सखी होती है)।

७ मानसरोवर तट पर किसी सुन्दरी का दर्शन उससे प्रेम।

८ चीर चुराकर अप्सरा को वशवर्ती बनाना।

९ राजकुमार होते हुए भी नायक का सामान्य जन जैसा आचरण।

१० नायक नायिका में विरह ताप की तीव्रता होने पर वैद्य ओझा का रोग के निदान के लिए बुलाया जाना। निदान प्रेम रोग।

११ नायक (क) पूर्व विवाहित या

(ख) नायिका प्राप्ति के प्रयास के मध्य उपनायिका से विवाह।

१२ नायक नायिका के हृदय में परस्पर प्रेमोदय—

(क) प्रत्यक्ष दर्शन से

(ख) स्वप्न दर्शन से

(ग) चित्र दर्शन से

(घ) रूप गुण श्रवण से —

(i) पक्षी (तोता या स्वर्णिम हंस) के द्वारा,

(ii) भाट भाटिन या लोगों के मुख से,

(ङ) मूर्ति दर्शन से

(च) साहचर्य से—

(i) एक गुरु की चटसार में पढ़ते हुए।

(ii) साथ साथ खेलते कूदते।

१३ नायक नायिका में पूर्वानुराग।

१४ नायक नायिका अत्यन्त रूपवान। विशेषत नायिका जो ईश्वर का प्रतीक। नायिका में पद्मिनी स्त्रियों के सब लक्षण।

१५ नायक—आत्मा का प्रतीक अन उनम प्रेम की अपमाकृत उन्मत्तता। विरह की तीव्रता। यो तुल्यानुराग। मम प्रेम।

१६ प्रेम सम्बन्ध घटक
(क) पक्षी (ख) सखी (ग) मालिन (घ) परी या अप्सरा
(ङ) अन्य काई।

१७ जोगी-वेश (नाथपंथी जोगियो जसा) धारण कर, किंगरी पर विरह का राग अलापते नायक का नायिका की खोज म निकल पड़ना (अकेले या साथियो सहित)।

१८ प्रेम-योगी होने के कारण नायक मृत्यु से अभीत। प्रत्येक संकट का सामना करने को प्रस्तुत।

१९ भिन्न देश या द्वीपान्तर की यात्रा।

२० शास्त्रज्ञ मानव भाषा-भाषी तोता।

२१ मानव भाषी पशु पक्षी।

२२ कोई मार्ग निर्देशक गुरु (आध्यात्मिक गुरु)
(क) शास्त्रज्ञ तोता (ख) सिद्ध पुरुष।

२३ मार्ग की कठिनाइयाँ (आध्यात्मिक साधना के पथ में आनेवाली कठिनाइयों की प्रतीक)
(क) मार्ग में सात सागर
(ख) मार्ग में सात बीहड़ वन
(ग) मार्ग में दुर्गम पर्वत
(घ) हिंसक पशु-पक्षी मनुष्य भक्षी राक्षस इत्यादि।

२४ शकुना पर विश्वास लोक मान्य शुभ अथवा अशुभ शकुन।

२५ मानसरोवर (मानसरोवर) का चित्रण।

२६ चमत्कारिक और अविश्वसनीय घटनाओं की सृष्टि करके कौतूहल या रोमांच उत्पन्न करना।

२७ नायक अद्भुत शक्ति सम्पन्न। विरोधी कितना भी बलवान नायक ही अतत विजयी।

२८ दुष्ट-बुद्धि राक्षस देव प्रेत या परियो द्वारा नायक को कष्ट देना।

२९ विशालकाय मनुष्य भक्षी राक्षस या देव।

३० राजपक्षी (गरुड़ भरुण्ड) द्वारा—
(क) नायक की सहायता
(ख) नायक को कष्ट।

३१ कोई देव या राक्षस भी नायिका का प्रेमी। वह नायक को कष्ट पहुँचाता है, या उस नायिका के पास पहुँचने देने में बाधक बनता है

या नायिका से नायक को वियुक्त कर देता है।

३२ नायक नायिका को मिलाने में परामानवीय सहायक
(क) देव (ख) परियाँ (अप्सराएँ) (ग) राजपक्षी या गरुड़।

३३ नायक (या नायिका) के दैवी सहायक
(क) शिव पार्वती अथवा अन्य देवी देवता (वेश बदलकर)
(ख) आकाशवाणी (घटना प्रवाह को नयी गति देने के लिए नायक नायिका को किसी द्विविधापूर्ण स्थिति से उबारने के लिए किसी रहस्य कथन या साक्ष्य देने के लिए।)

३४ पशु पक्षियों की बातचीत उनके अनजाने सुन लेना उससे किसी गुत्थी का सुलझ जाना या कार्य में सहायता मिलना या भावी घटना का संकेत पाना।

३५ जादू-टोना यन्त्र मन्त्र सिद्ध गुटिका लोपांजन (लुकांजन) उड़न खटोला का आश्रय लेना (आकाश गमन या अदृश्य होने के लिए)।

३६ नायक-नायिका का प्रथम साक्षात्कार—
(क) राजा की फुलवारी में
(ख) किसी मन्दिर (विशेषतः शिव-पार्वती के मन्दिर) में।

३७ प्रथम साक्षात होते ही नायक नायिका (अधिकतर नायक) मूर्च्छित। सुध आने पर उसके विरह-ताप में और वृद्धि।

३८ नायक की मूर्च्छावस्था में नायिका का (क) उसकी छाती पर या (ख) चीर पर सन्देश लिखकर गमन।

३९ नायक या नायिका के पूर्व जन्म का प्रसंग-कथन अथवा दोनों का पूर्व-जन्म में भी प्रेमी होना (किसी किसी सूफी प्रेमाख्यान में ही यह कथा रूढ़ि) प्रेमियों के लोकान्तर सम्बन्ध का परिचायक।

४० सहिदानी — (क) अंगूठी (ख) सिर के बाल
(ग) नायक नायिका के बीच हुई कोई बात या घटना
(घ) अन्य कोई वस्तु।

४१ नायक द्वारा (क) मतवाले हाथी (ख) हिंस्र पशु (सिंह), (ग) राक्षस को मारकर नायिका की रक्षा करने पर या (घ) कोई कठिन कार्य-सम्पादन कर देने पर नायिका के माता पिता का प्रसन्न होकर नायक से नायिका का विवाह कर देना या उसे आधा राजपाट दे देना।

४२ विवाह के लिए कोई कठिन शर्त — नायक द्वारा उसे पूरा कर दिया जाना।

४३ नायिका द्वारा प्रेमी को गिरफ्तार करवा लेना।

४४ नायिका जिसे चाहती है उससे उसका विवाह न होकर ऐसे से हो जाना जिसे वह नही चाहती—
(क) गलत फहमी के कारण
(ख) माता पिता की इच्छा से ।

४५ प्रेम वंचिता नारी का प्रतिशोध (नायक पर झूठा लाछन लगाकर उसे दण्डित कराना) ।

४६ पहेली बुझाना ।

४७ राजा और मत्री को साथ ही पुत्र उत्पन्न । राजकुमार के प्रेम प्रयत्न में मंत्रि पुत्र का अभिन्न मित्र के रूप में सहयोग और परामर्श ।

४८ नायिका को प्राप्त कराने में किसी राजा का जो स्वयं विधुर निराश्रित नायक का या तो अभिभावक होता है या उसका शरणदाता, सहायक होना । इसके लिए नायिका के पिता या अभिभावक से युद्ध भी ।

४९ नायिका के माता पिता का प्रेमियो के मिलन में कटक बनना—
(क) कठोर माता (ख) कठोर पिता ।

५० अप्सरा मानव—ससर्ग निषिद्ध ।

५१ रूप-परिवर्तन
(क) वेश बदलकर (ख) योनि परिवर्तन कर (ग) अभिमन्त्रित जल छिड़ककर (घ) मन्त्र-बल से या सिद्ध गुटिका मुह में रखकर (ङ) दिव्य परिधान पहनकर ।

५२ प्राण की अन्यत्र स्थिति (किसी राक्षस या देव के प्राण किसी वस्तु मे—बन्दिनी राजकुमारी का रहस्य ज्ञात—उसकी सहायता से नायक द्वारा राक्षस या देव का वध) ।

५३ सुप्त सुदरी का उद्यान में टोटन ।

५४ यथा काम्य वस्तु देन वाला पानी ।

५५ (क) नायिका अप्सरा जाति की या
(ख) पूर्व जन्म में अप्सरा ।

५६ *सुन्दरी का अपहरण ।*

५७ भार्या का विश्वासघात ।

५८ साहसिक कार्य करने के लिए बीडा उठाना ।

५९ आत्महत्या करने की धमकी (प्रेम-पात्र के न मिलने की दशा में) ।

६० दुष्ट प्रकृति साधु या योगी ।

६१ नायक-नायिका के प्रेम की परीक्षा—किसी देवी या परामानवीय शक्ति के द्वारा—प्रेम में दृढ पाकर उनकी सहायता

(क) पार्वती द्वारा (ख) समुद्र-पुत्री के द्वारा (ग) किसी अन्य मनुष्य या परी (अप्सरा) द्वारा।

६२ प्रतीक-कथन (नायिका द्वारा अपना प्रेम-भाव नाव ठाँव सन्देश आदि प्रत्यक्षतः या स्वप्न में सांकेतिक भाषा में नायक पर प्रकट करना। नायक का उसे अपने मित्र की सहायता से अर्थ-बोध कराना)।

६३ स्वप्न विचार (सांकेतिक स्वप्न की व्याख्या नायिका की सखी या नायक के किसी बुद्धिमान मित्र या अन्य द्वारा)।

६४ काष्ठ-मञ्जूषा (कठघर) में नायक (नायिका) को बन्दकर समुद्र (नदी) में बहा दिया (डुबा दिया) जाना। किसी मच्छ द्वारा उसे निगल जाना या मछुआरे द्वारा बचाया जाना।

६५ भाग्य परिवर्तन।

६६ शाप (क) पत्थर हो जा,
(ख) मर जा,
(ग) पक्षी हो जा या अन्य कोई।

६७ वरदान (क) ऋषि या सिद्ध पुरुष द्वारा
(ख) किसी देवता (मुख्यतः शिव-पार्वती) द्वारा।

६८ कृतज्ञ पशु पक्षी (ख) कृतज्ञ मानव।

६९ कृतघ्न मानव।

७० नख शिख-सौन्दर्य का साभिप्राय अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन और काव्य-रूढ़िगत चित्रण।

७१ सतखंडी धौराहर पर नायक नायिका के प्रथम समागम का काम-शास्त्रीय अनावृत्त चित्रण (आत्मा-परमात्मा के मिलन के प्रतीक रूप में)

७२ सच्च क्रिया (क) यदि मैं पतिव्रता रही होऊं या मैंने कभी असत्यवादन न किया हो तो अमुक कार्य हो जाए।
(ख) सतीत्व की परीक्षा।

७३ सत रक्षा (क) कुटनियां (दूतियों) द्वारा नायिका का सत से डिगाने की चेष्टा। नायिका अडिग।
(ख) पति का वेश धारण कर व्यभिचारी पुरुष का जाना। सतवती नारी छली नहीं जाती।

७४ खलनायक द्वारा नायक नायिका का अस्थायी वियोग करा देना।

७५ मिलन-उपाय पथिकों से प्रेम पात्र (या प्रेम पात्रा) का पता पाने के लिए—

(क) पथ पर प्रासाद बनवाना

(ख) धमशाला बनवाकर सदावत्त बँटवाना एव
(ग) अ य उपाय ।

७६ अपन से बडे क पास भेजना ('ओल्डर एण्ड ओल्डर मोटिफ)

७७ निषेध—(क) वर्जित कक्ष म प्रवश
(ख) वर्जित दिशा म गमन ।

७८ विवाह क बाद नायिका के पिता द्वारा पूरा (या आधा) राजपाट देकर नायक को अपन देश म ही रोक लेना (अपना उत्तराधिकारी बना देना)।

७९ नायक को अपने दश की (माता पिता की या पूव विवाहिता पत्नी की) अचानक सुधि आ जानी—
(क) पूव विवाहिता पत्नी का विरह-सन्देश पाकर —
(i) किसी दूत द्वारा (मानव या पवन द्वारा)
(ii) किसी मानव भाषी पक्षी द्वारा ।
(ख) माता पिता का सदश पाकर
(ग) स्वप्न म वृद्ध माता पिता को अधा या दुखी देखकर ।

८० विदाई म नायक का ससुराल स हाथी घोडे स्वण रत्न जवाहर आदि का प्रभूत दहज पाना ।

८१ ब्राह्मण वश म आकर समुद्र का दान माँगना । नायक का लोभ म आकर उस टाल देना फलस्वरुप समुद्र म बोहित के साथ ही उस सम्पत्ति का डूब जाना ।

८२ नायक की वापसी यात्रा म समुद्र म तूफान । उत्ताल तरगें । भँवर म पडकर जल-यान का टूट जाना । नायक-नायिका का काष्ठ-फलका क सहार अलग अलग दिशाओ म बह जाना। प्राण रक्षा—समुद्र या समुद्र की बटी लक्ष्मी द्वारा ।

८३ सागर और लक्ष्मी द्वारा नायक-नायिका क पुनर्मिलन म सहायता ।

८४ नायक-नायिका का सकुशल अपन दश म आगमन । पूव विवाहिता पत्नी तथा माता पिता हर्षित ।

८५ सौतिया डाह (नायिका और उपनायिका म कलह) । नायक द्वारा बीच बिचाव करक सौतो म सौमनस्य स्थापित करना ।

८६ नायक का मत्यु होन पर नायिका और उपनायिका का उसक शव क साथ चिता म जलकर सती हो जाना ।

८७ प्रकृति का उद्दीपनगत चित्रण
(क) सयोग पक्ष म षट्ऋतु वणन
(ख) वियोग पक्ष म— बारहमासा ।

सूफी प्रेमाख्यानों की कथानक-रूढ़ियों का अध्ययन

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में जिन कथा रूढ़ियों का प्रयोग हुआ है उनमें से कुछ की ओर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने 'हिन्दी साहित्य : उसका उद्भव और विकास' शीर्षक इतिहास ग्रन्थ में कदाचित् सर्वप्रथम संकेत किया है।[1] 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' में भी उन्होंने 'पदमावत' में भारतीय कथा रूढ़ियों के व्यवहार की उपयोगी चर्चा की है।[2] उसी को आधार बनाकर 'पदमावत का काव्य सौन्दर्य' में प्रो० शिवसहाय पाठक ने 'पदमावत' की कथानक रूढ़ियों पर विस्तृत विचार किया।[3] डॉ० शम्भूनाथ सिंह ने भी 'हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास' में[4] 'पदमावत' की कथानक रूढ़ियों का नामोल्लेख किया है। डा० सत्येन्द्र ने डी० लिट० के अपने शोध प्रबन्ध 'मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्त्विक अध्ययन' में[5] 'पदमावत' की कथानक रूढ़ियों का उल्लेख करने के अतिरिक्त कुछ विशेष अभिप्रायों पर विस्तृत विचार भी किया है। 'हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यान'[6] (आचार्य परशुराम चतुर्वेदी) और 'मध्ययुगीन प्रेमाख्यान'[7] (डा० श्याममनोहर पाण्डेय) में भी सूफी प्रेमाख्यानों की कतिपय प्रमुख कथानक रूढ़ियों का उल्लेख हुआ है।

अब तक सूफी प्रेमाख्यानों की कथानक रूढ़ियों पर जो कार्य हुआ है उसमें या तो किसी एक प्रेमाख्यानक काव्य (मुख्यतः 'पदमावत') की कथानक-रूढ़ियों पर विचार हुआ है या सूफी प्रेमाख्यानों को समग्र रूप से लेकर उनकी कुछ प्रमुख कथानक-रूढ़ियों का उल्लेख मात्र कर दिया गया है। एक-एक सूफी प्रेमाख्यान-काव्य को लेकर उसकी कथानक रूढ़ियों का संग्रह करने और उनका वर्गीकरण करने का अभी तक कोई प्रयास नहीं हुआ है। डॉ० सावित्री सरीन ने ब्रज की लोक कथाओं के अभिप्रायों का वर्गीकरण और क्रमांकन स्टिथ थामसन की अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली को अपनाकर किया है। उस कार्य को पुरस्सर करते हुए इस अध्याय में सूफी प्रेमाख्यानों की केवल पौराणिक कथानक रूढ़ियों को उनकी अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी में बैठाने की चेष्टा थामसन प्रणाली के अनुसार की गई है।

यद्यपि हमने अपने अध्ययन क्रम में समस्त हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की कथानक रूढ़ियों के विश्लेषण, वर्गीकरण तथा क्रमांकन का कार्य पूरा कर लिया है तथापि इस अध्याय में केवल पौराणिक कथानक रूढ़ियों (पौराणिक कथाओं में व्यवहृत रूढ़ियों) का ही उल्लेख किया जाएगा।

---

१ हिन्दी साहित्य : उसका उद्भव और विकास, प्रथम संस्करण १९५५, पृ० २६७-२६८
२ हिन्दी साहित्य का आदिकाल, तृतीय संस्करण १९६१ ई०, पृ० ८०-८१
३ पदमावत का काव्य सौन्दर्य, प्रो० शिवसहाय पाठक, प्रथम संस्करण १९५६, पृ० ३५-४६
४ पृष्ठ ४६१
५ पृष्ठ २७१-२८८
६ पृष्ठ ६४
७ पृष्ठ १७१-१७४

एम (न) अप्राकृतिक क्रूरता विषयक अभिप्राय

टी (प) यौन (संयम) या विवाह और प्रेम सम्बन्धी अभिप्राय

यू (फ) जीवन स्वरूप सम्बन्धी अभिप्राय

व्ही (ब) धर्म विषयक अभिप्राय

डब्ल्यू (भ) चारित्रिक विशेषताओं-सम्बन्धी अभिप्राय

एक्स (म) विनोद (हास्य) विषयक अभिप्राय

वाई (य) (यह वर्ग अभी अनिर्धारित ही है)

जेड (र) अभिप्रायों के अन्य विविध समूह (अवर्गीकृत अभिप्राय आदि)

उपर्युक्त वर्गों में से आर (र) ओ (उ) यू (फ) एक्स (म) और वाई (य) वर्गों को छोड़कर शेष सभी वर्गों की कथानक रूढ़ियाँ सूफी कवियों द्वारा लिखित प्रेमाख्यानों में प्राप्त हुई हैं।

आगे इन काव्यों की केवल पौराणिक कथानक रूढ़ियों का एक वर्गीकृत कोश दिया जा रहा है जिसमें नवीन (मोटिफ इण्डेक्स में असम्मिलित) रूढ़ियों का भी निर्देश + चिह्न द्वारा कर दिया गया है। इस कोश में प्रमुख ३५ प्रेमाख्यानों[1] की कथानक रूढ़ियों का वर्गीकरण किया गया है। ग्रंथों के नाम के संक्षिप्त सांकेतिक शब्द प्रत्येक रूढ़ि के आगे दे दिए गए हैं जिससे पता चल सके कि वह रूढ़ि किस किस काव्य में मिलती है।

---

१ जिन प्रेमाख्यानों में पौराणिक कथानक रूढ़ियों का प्रयोग हुआ है उनके नाम और उनके संकेताक्षर (जिनका उपयोग कथानक रूढ़िकोश में किया जाएगा) उनके आगे कोष्ठक में दिये जा रहे हैं —

(१) चंदायन (चं०) (२) मृगावती (मृ०) (३) पद्मावत (प०) (४) चित्ररेखा (चि०) (५) मधुमालती (मधु०) (६) माधवानल-कामकंदला (मा०) (७) चित्रावली (चित्रा) (८) ज्ञानदीप (ज्ञा०) (९) कथा कँवलावती (कँ०) (१०) कथा कलावती (कला०), (११) कथा कनकावती (क०) (१२) कथा कौतूहली (कौ०) (१३) कथा कामलता (काम०) (१४) कथा सतवंती (स०) (१५) कथा सीलवंती (सील०) (१६) कथा रूपमंजरी (रू०) (१७) कथा पुहुपवरिखा (पु०) (१८) कथा रतनमंजरी (रतन०) (१९) कथा बुद्धिसागर या मधुकर मालती (बु०) (२०) कथा रतनावती (र०) (२१) कथा लैलै मजनूं (ल०) (२२) कथा कामरानी पीतमदास (का०) (२३) चन्द्रसेन-सीलनिधान की कथा (चन्द्र०) (२४) कथा छीता (छी०) (२५) कथा खिज्र खाँ देवल दे (खि०) (२६) कथा मोहिनी (मो०) (२७) कथा कलन्दर की (कल०) (२८) कथा छविसागर (छ०) (२९) कथा नल-दमयंती (नल०) (३०) कथा सुभट राइ (सु०) (३१) नल दमन (न०) (३२) हंस जवाहिर (हं०) (३३) इन्द्रावती (इ०) (३४) अनुराग-बाँसुरी (अनु०) (३५) यूसुफ जुलेखा (यू०)।

पौराणिक कथानक रूढ़ि कोश

क (ए)—धर्मगाथात्मक अभिप्राय (Mythological Motifs)

+ क (ए) १०२ १३	दयालु शिव	प०, चित्रा ना०
+ क (ए) १०२ १३	दयालु पार्वती	प०, चित्रा०, ज्ञा० इ०
क (ए) १२४ १	शिव	प० चित्रा० ज्ञा०
क (ए) १८५	देवी और देवता उन नायकों की सहायता करते हैं जिनको वे चाहते हैं प०, चित्रा० ना०	
+ क (ए) १८८ १	इन्द्र वायु यम आदि का वर बन आना नद०, नल०	
+ क (ए) २६३ ३	वरुण	नद०, नल०
+ क (ए) २ ७	इन्द्र	नद०, नल०
क (ए) ४७३	लक्ष्मी	प०
+ क (ए) ४८७	यम	नद०, नल०
क (ए) ४९३	अग्नि	नल०
क (ए) ५२४	दयालु विक्रम	मा०
+ क (ए) ६६१	इन्द्रपुरी	मा०
क (ए) ६६१ ४	इन्द्रसभा	मा०
क (ए) ११०१ १	कलियुग	नद०, नल०
क (ए) —	देवी देवता का स्वप्न में या साक्षात दर्शन देना—भक्त की सहायता करना ज्ञा०, इ०	

ख (बी)—पशु पक्षी विषयक अभिप्राय

ख (बी) १२२ ३	सर्वज्ञ या शास्त्रवक्ता तोता (हीरामन) प०	
ख (बी) १३१ २	चतुर तोता प०	
ख (बी) २११	पशु का मानव वाणी में बोलना यू०	
ख (बी) २११ ३ ४	मनुष्य भाषा भाषी पक्षी, (तोता) प० मधु०, पु०, इ०	
+ ख (बी) २९१ १	हंस दूत नल०	
ख (बी) २९१ १ ६	तोता दूत प० इ०	
+ ख (बी) २९९	मंत्री निभानेवाले पशु (पक्षी भी) स०	
ख (बी) ३६०	कृतज्ञ सर्प नद०, नल०	
ख (बी) ३६४ २	कृतज्ञ सर्प—अग्नि से रक्षा करने के कारण नल० नद०	
ख (बी) ३६६	कृतज्ञ पक्षी तथा कृतज्ञ मनुष्य हंस (कैद से छुड़ाने के कारण) कला० नल०	
ख (बी) ३६६	कृतज्ञ पक्षी—तोता (कैद से छुड़ाने के कारण) प०	
ख (बी) ४४१ १	सहायक वानर (वनमानुष) चित्रा०	
ख (बी) ५०१ ४	शरीर की कोई वस्तु देकर सहायता करना नद० नल०	

ख (बी) ५११ १ ३	साँप से विष खिंचवाना (पूर्वरूप प्राप्त करना नद०, नल०
ख (बी) ५८२ २ १	गरुड़ मरण्ड पक्षियों द्वारा नायक की सहायता (राज पक्षी द्वारा) प० चित्रा० क० रतन०
ख (बी) ५८२ २ ३	वर ढूँढनेवाला हंस नल०

ग ('सी)—वर्जन या निषेध (Taboo) विषयक अभिप्राय

ग (सी) ६६	मानव और परामानव (अप्सरा) में यौन-संसर्ग निषिद्ध म० मधु० मा०, पु० र०
+ ग (सी) ११६	पत्नीवत व्यवहार का निषेध म०, मधु० क० स० पु० स० यू०
ग (सी) ६११६ ४	किसी विशेष द्वीप में एक विशेष लक्षण-सम्पन्न स्त्रियों का होना—सिंहल द्वीप में पद्मिनी स्त्री प० नद०
ग (सी) ६५२	अन्य लोक पहुँचना (यात्रा) मा०
ग (सी) ६६१ २	पत्थर बनना ह० (अधूरा योग छोड़ने के कारण योगी वीरनाथ के चेले पत्थर हो गये)
ग (सी) ६६१ २	शाप देकर अप्सरा को पत्थर बना देना मा०
ग (सी) ६६२ २	निषेध भंग करने के कारण व्यक्ति को दूसरे लोक में रहना ही पड़ेगा मा० (जीवन्ती अप्सरा को मर्त्युलोक में रहने की आज्ञा इन्द्र द्वारा)
ग (सी) ६८७	शापित होना मा०
+ ग (सी) ६८६	मरना प० मा०

घ ('डी)—जादू (Magic) और रूपान्तरण (Transformation) सम्बन्धी अभिप्राय

घ (डी) १२	रूपान्तरण (वेश परिवर्तन से रूपान्तरण नायक की परीक्षा लेने के लिए पार्वती और लक्ष्मी आदि देवियों का नायिका का रूप धारण कर प्रकट होना) प०, स० छी० इ०
घ (डी) ५२ १	मानव कुरूप बना नद० नल० (नल सर्पदंश से कुरूप)
× घ (डी) १५२ ६	रूप परिवर्तन हो जाने पर भी पूर्व स्मृति का बने रहना मधु० पु०
+ घ (डी) १७३	योगी की जादू शक्ति (नायक को लाना) (नायिका को लाना) ह०

घ (डी) १८०	मनुष्य को कीड़ा बना देना मा० (जीवन्ती अप्सरा माधव० को भौंरा बनाकर कंचुकी में छिपा लेती है और इन्द्रलोक दिखा लाती है)
घ (डी) २३१	मानव पत्थर बने ह०
+ घ (डी) २३१ १	स्त्री पत्थर बनी मा०
+ घ (डी) ३३६	समुद्र ब्राह्मण का वेश धरकर प्रकट हुआ—प० इ०
घ (डी) ४३६ ५	अप्सरा का नायिका (मानवी) के रूप में अवतार (जयन्ती अप्सरा कामकंदला के रूप में जन्मी)
घ (डी) ४३६ ५	शिव विष्णु आदि देवताओं का मानव रूप धारण कर प्रकट होना—प०, चित्रा०, नद० नल०
घ (डी) ५३०	चमड़े का वस्त्र (साँप की केंचुल) पहनने से रूप परिवर्तन नद०
घ (डी) ५६२	स्नान करने से रूपान्तरण। यू० (देवदूत जबरल के कहने से जुलेखा ने सरोवर में स्नान किया और साठ वर्ष की अंधी बुढ़िया से चौदह वर्ष की युवती बन गयी)
+ घ (डी) ५६६	जादू तंत्र-मंत्र का प्रयोग (विद्याधरी शक्ति से) च०, प० मधु० चित्रा० मा० पु०, ह० (यक्षिणी सिद्धि के बल पर राघवचेतन ने दूज का चन्द्रमा दिखाया प०)
घ (डी) ६५८ १	नारी को छलने के लिए उसके पति (प्रेमी) का रूप धारण कर लेना स०
घ (डी) ६६१	रूप परिवर्तन—दण्डस्वरूप मधु०, मा० पु०
घ (डी) ७००	बाद में मंत्र से जादू उतारना मधु० पु०
घ (डी) ८११ १	देवी-देवता (इन्द्र, ब्रह्मा, शिव, भवानी आदि से) जादू की वस्तु उपहार में पाना। (यहाँ इन्द्र वरुण यम शिव) प० नद०
घ (डी) ८१२ १	साधु-तपस्वी द्वारा प्रसन्न होकर वरदान—जादू की वस्तुएँ उपहार में देना रतन० मृ०
घ (डी) ८३८ १०	नहाती अप्सरा का चीर चुराकर उसे अपना वशवर्ती बनाना म० ह०
+ घ (डी) ८५२ २	मंत्र से रूप-परिवर्तन मधु०, पु० (मधुमालती की माँ ने मंत्र पढ़कर मधु के ऊपर जल फेंका, वह पक्षी हो गयो)
घ (डी) ८६१ ४ १	प्रेमी द्वारा दूती (कुट्टनी) भेजी गयी प० स० इ०
घ (डी) १००३	जादू का रक्त (रक्त बिन्दु से जीवनदान) नद०, नल०

घ (डी) १२७३	जादू का मन्त्र मधु०, क०, पु० छ०, नल०, ह०
घ (डी) १३४६ १ २	अमृत मा० न०, नल०
घ (डी) १३४६ १ २	अमृत लाकर जीवित करना (बेताल द्वारा) मा०
घ (डी) १३६१ २३	अदृश्यता—मन्त्र बल से क०, न०
घ (डी) १४२० ४	सहायक का आना—पुकारने से या स्मरण करनाम च० नद० नल०
घ (डी) १४४१ १ १	वीणा वादन से पशु-पक्षी मोहित छी०
घ (डी) १४७२ १ ६	घड़े या कड़ाही म (यहाँ सिद्ध प्रदत्त गोली म) इच्छानुसार भोजन लाभ ना०
घ (डी) १५३२ ५	उड़नखटोला (विमान) पर बैठकर उड़ना ना०
+ घ (डी) १६४८ ?	अग्नि ठन्डी पड़ गयी ना० नद० नल०
घ (डी) १७१२	ज्योतिषी (भविष्यवक्ता) प० चि० मधु० चित्रा०, ना० ह० आदि प्राय सभी प्रेमाख्याना म।
घ (डी) १७१३	तपस्वी साधु या योगी की करामाती शक्ति प०, चि० चित्रा० ना० ह०
घ (डी) १७१४ १	सती की करामाती शक्ति नद० नल० ह०
घ (डी) १७१६ ३	परामानवीय जाति (अप्सरा गधर्व विद्याधर) की की जादू शक्ति मधु० पु० ह०
घ (डी) १७१६ ५	परी जाति की जादुई शक्ति मधु०, पु० छ० ह०
घ (डी) १७३३ ३	तपस्या से प्राप्त जादुई शक्ति प० ह०
घ (डी) १७७७	ध्यान करते ही न्यालु देवता (यहाँ सिद्ध पुरुष) का सहायतार्थ प्रकट होना चि० न०
घ (डी) १८१० ३ ३ ६	भावी पति-पत्नी का स्वप्न म दर्शन क० छ० न०, नल० ह० यू०
घ (डी) १८१० ८ ३	स्वप्न म सूचना मिलना या स्वप्न स भविष्य ज्ञान ह० यू० (हस न स्वप्न म माता को विरह म अधी देखा। यूसुफ ने ग्यारह ग्रहो और रवि शशि का सिर नवाते स्वप्न म देखा—याकूब ने बताया कि यह राजयोग का लक्षण है)।
घ (डी) १८१२ ५	शकुन से भविष्य ज्ञान शकुन-अपशकुन प० मधु० ना० नल०
+ घ (डी) १८१२ ४	दायी आँख का फड़कना (पुरुष के लिए शुभ स्त्री के लिए अशुभ) प० ह०

+ घ (डी) १८१२५	बायें अंग का फड़कना (स्त्री के लिए शुभ, पुरुष के लिए अशुभ) प०, ह०
+ घ (डी) १८१३१	स्वप्न म जानना रतन०, ह०
+ घ (डी) १८१४३	स्वप्न में उचित माग दशन च०
घ (डी) १९८३१	अदृश्यता—देवता के वरदान स नद०, नल०
घ (डी) २००३१	पति का पत्नी को भूलना प०
घ (डी) २०६१२५	सतीत्व के प्रताप से मत्यु (व्याध की) नद० नल०
घ (डी) २०७४२५	प्रायना से सहायक बुलाना प०
+ घ (डी) २१६३२१	युद्ध म नायक का दवी सहायता प०
+ घ (डी) २१९९	परकाय प्रवेश मा०
+ घ (डी) २१९९	प्राण डालन की शक्ति शा० (शिवजी न कागज के घोडे म प्राण डाल दिये) मा०

च ('ई') मतक (पुनरुज्जीवन), मृत प्रेत आदि

च (ई) ५२	सप डँसे को जिलाना मत्र से न००
च (ई) ८०	जिलाना अमत से मा०
च (ई) १०२२	जिलाना अमत छिड़ककर मा०
च (ई) ६०१	पूवजन्म की याद होना (पूव योनि की बात याद रखना) मधु०, पु०
च (ई) ६०५२	देवता मानव क रूप म अवतरित मा० (माधवानल कामन्द का अवतार)
+ च (ई) ६९३	अप्सरा का पुनजन्म मा०
च (ई) ७८३	कबन्ध (विना सिर के धड) का युद्ध प०

छ (एफ) चमत्कारिक (आश्चयजनक)

+ छ (एफ) ११	इन्द्रपुरी की यात्रा मा०
छ (एफ) १७४	परामानवीय पत्नी द्वारा नायक को अन्य लोक (इन्द्र-लोक) म ल जाना मा०
+ छ (एफ) २१५	अप्सरा म० मा०, मधु० पु० ह०
छ (एफ) २३४२५	अप्सरा सुन्दरी स्त्री के रूप म म० मधु मा०, पु० ह०
छ (एफ) २३४३	अप्सरा वस्तु के रूप म मा० (जयन्ती अप्सरा पत्थर के रूप म)
छ (एफ) २५२१२	इन्द्र अप्सराओ का राजा मा०
छ (एफ) २५२४	अप्सरा का अप्सरा-लोक स निष्कासन मा०

छ (एफ) २५२ ४ १	अप्सरा दुराचरण के लिए निष्कासित मा०
छ (एफ) २५३	अप्सराओं की असाधारण शक्ति म० मधु० ह०
छ (एफ) २८२	परियों का उन्माद ह०
छ (एफ) ३०१	अप्सरा प्रेमिका म० मधु० मा० पु०
छ (एफ) ३०२ ४ २	अप्सरा मनुष्य के वश में—उसके पंख चुरा लेने पर—उन्हें पुनः प्राप्त कर लेने पर वह नायक को छोड़ जाता है म०
छ (एफ) ३०२ ४ २ १	कपड़े चुराकर पर काबू पाना म० ह०
छ (एफ) ३०२ ६ २ १	तबला (मृदंग) बजाकर पत्नी को प्रसन्न करके उसे पाना (संगीत के माध्यम से प्रेमिका की प्राप्ति) मा०, कर्ता० कौ० छा० (पुरन्दर बीन बजाकर कलावती को मोहित कर लेता है)
छ (एफ) ३३६	परी उस आदमी के प्रति निष्ठावान रहती है जिसके पास उसका चोर होता है म० ह०
छ (एफ) ३८६ २	अप्सरा मर्त्य की सेवा करती है ह०
छ (एफ) ३७०	अप्सरा लोक (इंद्रलोक) में मानव पुत्र मा० र०
छ (एफ) ४१९ २	प्रेमिका को ले उड़नेवाला देव—कुं० सु०
छ (एफ) ५३१	राक्षस या देव (विशालकाय राक्षस) मधु० पु० र०, सु०
छ (एफ) ५३१ २ ११	देव पहाड़ सा (विशालकाय) मधु० पु० र०, सु०
छ (एफ) ५७१ २	अपने से अधिक बूढ़े (अपने से अधिक ज्ञानी) के पास भेजना र०
छ (एफ) ५७५ १	असाधारण सुन्दरी सभी प्रेमाख्यानों की (नायिका—असाधारण सुन्दरी—उसका नख शिख वर्णन)
छ (एफ) ६०१	असाधारण माया (कम्पूज्ञ ज्ञान मोटिफ) चित्रा० पु० र० का०, सु० ह०
छ (एफ) ६२१	असाधारण शक्तिशाली—नायक चित्रा०
+ छ (एफ) ६८०	असाधारण संगीतज्ञ—नायक मा० छी०
छ (एफ) ७६९	मिहन द्वीप प० चि० नद०
छ (एफ) ९६६	आकाशवाणी—सतीत्व की साक्षी देते हुए नल०
छ (एफ) ९६६	आकाशवाणी—नायक या नायिका की कठिनाई हल करने के लिए नल० र०
छ (एफ) ९६६	आकाशवाणी—नायिका की प्राप्ति का उपाय बतलाना इ०

छ (एफ) १०४१ १ २ २ ३	मत्यु (पत्नी या प्रेमिका की) पति (प्रेमी) की मत्यु सुनकर मा०
ब (एफ) १०४१ ३	रो रोकर अधा होना ह० तथा अ य कई प्रेमाख्यानो म नायक के मातापिता अधे (जुलखा यूसुफ के विरह म रो रोकर अधी)

जी) दयत (राक्षस) विषयक अभिप्राय

ज (जी) ११ ३	नर मक्षी राक्षस म० प० र० (मृगावती म मनुष्य-भक्षी नरकरिया एक राक्षस ही है)
ज (जी) ३६६ १	राक्षस—सुन्दर राजकुमारी का प्रेमी म० मधु०, कॅ०, पु०, र०
ज (जी) ५३०२	र क्षस की पुत्री सहायक र०

एच) परीक्षाएँ

(एच) ११	सहिदानी (पहचान या स्मति चिह्न) मधु० चित्रा०, कला खि० ह० इ०
म (एच) ११	सहिदानी नायिका न दूत के हाथ अपना प्रीति चिह्न (एक दर्पण) भेजा चित्रा०
म (एच) ९४	सहिदानी मुद्रिका (अगूठी) मधु०, खि० ह०
म (एच) ९६	पहचान सच्च क्रिया स नद० नल०
म (एच) ३१२	वर-कसौटी शारीरिक मानसिक योग्यता इ० मो०
म (एच) ३२४	वर कसौटी एक-से वेश म सजे हुआ म स अपना वर चुनना नल० नद०
म (एच) ३८१	वधू-कसौटी सिंहल द्वीप की पद्मिनी प० नद०
म (एच) ४११	सत-परीक्षा च० चद्र० नद०
म (एच) ४१३	सती नकित नद० नल०
म (एच) ४५२	सत परीक्षा भेष बदलकर ह०
म (एच) ५४१ १	पहली का उत्तर दा नहीं तो मत्यु दण्ड मिलगा मा०, छ०
म (एच) ६०७ ३	प्रतीक म प्रेम निवेदन — नायिका द्वारा क०
म (एच) ६११	प्रतीक-सदश भेजना छ०
म (एच) ६१७	प्रतीकात्मक स्वप्ना की व्याख्या प० यू०, ज०
म (एच) ९८४	साधु की सहायता से काय करना ह०
म (एच) ९८७	जादू की वस्तु की सहायता स काय करना छ०, ह०
म (एच) ११५१	वर कसौटी—काय पूरा करना (विवाह) की शत छ इ०

झ (एच) १२३३ ३ खोज में (नायिका की) सहायता—साधु द्वारा कं०, इ० अनु०
झ (एच) १२३६ २ खोज में बीहड़ मार्ग र०
झ (एच) १२३६ ४ खोज में कठिन रास्ता—राक्षस रक्षित र०
झ (एच) १३८१ ३ खोज—स्वप्नदर्शित नायिका की हं०, र०
१ ७ २
झ (एच) १३८५ प्रिया की खोज म० प० मधु० चित्रा०, र० हं० इ० आदि
झ (एच) १३८५ खोज—खोयी हुई प्रेमिका की च० हं०
झ (एच) १३८५ ३ खोज—खोयी हुई पत्नी की च० हं०
झ (एच) १५५२ परीक्षा—दानव्यथा की प० हं०
झ (एच) १५५६ पातिव्रत-परीक्षा (पत्नी के सतीत्व की परीक्षा) च० प० न० घ० र०
झ (एच) १५५६ ४ प्रेम में सत्यता की परीक्षा प० मा० बु० र० चन्द्र० इ०
+ झ (एच) १५६६ एकाग्रनिष्ठा की परीक्षा प० मा० चन्द्र० इ०
+ झ (एच) १५६६ सत्यवादिता की परीक्षा चन्द्र० (अष्टधातु की मूर्ति सच्ची बात सुनकर मौन रहती है और झूठी बात सुनकर हँस देती है)

ट (जे') ज्ञान एवं बुद्धि (बुद्धिमान तथा मूर्ख) विषयक अभिप्राय

+ ट (जे) ८८२ प्रेमपीड़ित (वियोगी) का देख प्रेम-पीड़ित (वियोगी) का ज्ञान मधु० स०
+ ट (जे) १०७६ आत्महत्या की धमकी देकर काम करवाना च० प०
+ ट (जे) ११४५ पक्षी एवं पशु की सहायता से (नायिका का) पता लगाना प० हं०
+ ट (जे) ११४६ झूठे स्वयंवर के ढोंग में (नायक का) पता लगाना नद० नल०
+ ट (जे) ११७७ मूर्तियों (चित्रों) में से अपनी मनचीती मूर्ति (चित्र) को पकड़ना (छाँटना) नद०
+ (जे) १६६६ प्रतीक-वचन समझना रू० आ०

ठ ('के') धोखे विषयक अभिप्राय

+ ठ (के) ५२० सोती पत्नी को छोड़ बच भागना न० नल० भेष
ठ (के) ५२१ बदलकर बचना रू०
(तपस्वी ने नानसिंह को उसके श्वसुर से बचाने के लिए उसका जोगी रूप बना दिया)

ठ (के) १२३७	जूए म हराना और बद करना [देश निकाला देना] नद०, नल०
ठ (के) १३२१ ७	अन्त पुर प्रवेश स्त्री वेश म ज्ञा०
ठ (के) १३३५	नहाती लड़की (अप्सरा) के कपड़े चुराकर उसे छलनाया रिझाना या विवाह करना म०
+ ठ (के) १३६६	पत्नी का रूप धर व्यभिचार चेष्टा प०
ठ (के) १५०१	पुरुष को छिपाकर रखना (नायिका द्वारा) च०
+ ठ (के) १८१७ १ १	जोगी का वेश धारण करना। (कन्था, भस्म, अधारी, रुद्राक्ष की माला किगरी (सारगी) आदि) नायिका का वियोगी और अन्वेषक बनकर च०, म० प०, मधु० कला० रू० ज्ञा०, ह० इ०
+ ठ (के) १८२७	साधु के वेश म राक्षस (दव) रतन०
ठ (के) १६३५	ब्याही गयी नायिका का चुराया जाना ह०
ठ (के) १६६१	कपटी साधु च० (टाटा जोगी) रतन० (दव साधु के वेश म)
ठ (के) २१११ २	प्रेम निवेदन ठुकराय जाने पर झूठा अभियोग यू०
ठ (के) २१ ४	नायक पर झूठा अभियोग व्यभिचार का यू०
+ ठ (के) २१२६	झूठा अभियोग चित्रा० यू०
ठ (के) २२२२	ईर्ष्यालु सौत (सौतें) (सौतिया डाह) च० प०, ह०
ठ (के) २२८६	खलनायक प० चित्रा० कॅ० छी०, ह० इ०

ड ('एल') भाग्य का पलटना

ड (एल) १११ २ १	भावी नायक का किसी नाव मजूषा या झाडीम पाया जाना (यहाँ मजूषा) मा०
ड (एल) १२३	दारिद्र नायक मा० कल०
+ ड (एल) १६१	गणिका का किसी क प्रति एकनिष्ठ प्रेम मा०

ढ ('एम') भविष्य निर्माण (निर्देशन), भविष्यवाणिया शाप आदि

+ ढ (एम) १३०	प्रेमिका को ढूढने जाने पर राह म दूसरी स्त्री (उप-नायिका) से भी विवाह च० चित्रा० ज्ञा० ह०
+ ढ (एम) १५०	नायक या नायिका की वापस आने की प्रतिज्ञा बु०
+ ढ (एम) ३०२	भविष्यवाणी म० प० चि० मधु० चित्रा० ना० नद०, नल० बु० पु० र० छी० ह० इ०
+ ढ (एम) ३१०	पुत्री के विवाह की भविष्यवाणी चि० नल०
+ ढ (एम) ३१०	स्वामी से मिलाप की भविष्यवाणी नद० नल०

+ ड (एम) ३१०	स्वप्न में सफलता (नायक या नायिका की प्राप्ति) की भविष्यवाणी च० नद०, नल ह०
ड (एम) ३११	पुत्र चक्रवर्ती राजा बनेगा—भविष्यवाणी प० मा० यू० र० ह०
ड (एम) ३४१ १	मृत्यु की भविष्यवाणी शिकार खेलने में मा०
ड (एम) ३४१ १ १	मृत्यु की भविष्यवाणी एक निश्चित आयु या अवधि में या एक निश्चित व्यक्ति द्वारा या एक निश्चित प्रकार में चि० र०
+ ड (एम) ४११	इन्द्र का शाप अप्सरा का मा०
+ ड (एम) ४१२	शाप नत्तरी बनो मा०
+ ड (एम) ४२०	स्पर्श में शाप मुक्ति (यहाँ विवाह बन्धन में) (शाप शान्ति नायक के छूने पर) मा०
+ ड (एम) ४३०	शाप पत्थर बना मा०
+ ड (एम) ४३०	शाप पक्षी बनो मधु० पु०
+ ड (एम) ४३०	शाप मनुष्य-योनि में जन्म लो मा०
+ ड (एम) ४६०	शाप सती स्त्री से बलात्कार की चेष्टा में मृत्यु नद० नल० (बहेलिया मर गया)

त ('एन') अवसर तथा भाग्य विषयक अभिप्राय

त (एन) २५	जूए में हारकर राज्य देना नद० नल०
+ त (एन) २५	जूए में हारकर पत्नी देना (पत्नी को दाँव पर लगा देना) च०
+ त (एन) ३००	दुर्भाग्य (नायक का विपत्तिग्रस्त होना) च०—(नायिका का अपहरण—सर्पदंश से मृत्यु—युद्ध आदि) म०—(मनुष्य भक्षी गडरिया भयंकर जंगल आदि से सामना।) नद०, नल०—जूए में राज्य हारना कई वर्ष दिनों तक भूखा प्यासा रहना अंतिम वस्त्र भी पक्षी ने उड़ा आदि।)
+ त (एन) ३००	दुर्भाग्य प्रियतमा को दुष्ट उठा ले गया च०, का०
+ त (एन) ३१०	पृथक होना (नायिका से) कलि के प्रभाव से नद० नल०
+ त (एन) ३१०	पृथक होना (नायिका से वियोग) जल ढूँढ़ने या भोजन लाने जाने पर (नायिका का अपहरण) या असुर दर्शन च०

+ त (एन) ३१०	आखेट करने जाना—(आँधी)—रास्ता भूलना—साथियों से बिछोह चित्रा० ह०
+ त (एन) ३१०	अकेला पाकर नायिका का हरण च०
त (एन) ३१०	सुन्दरी राजकुमारी का हरण देव राक्षस या राजा द्वारा मधु०, पु०, का०
+ त (एन) ३१०	नायक का अपहरण म० (राक्षस द्वारा) चित्रा० (कुटीचर द्वारा) रतन० (राजपक्षी द्वारा)
[illegible] (एन) ३१६	पृथक होना (जगल म) नद० नल०
+ त (एन) ७११	मन्दिर सरोवर वन उपवन म नायक नायिका का साक्षात्कार च० म०, प० छी०
त (एन) ७११ १	निजन वन म एक महल—उसम एक रूपसी राजकुमारी राक्षस की कद मे—नायक स मिलाप मृ०, मधु० पु० र०
त (एन) ७११ ३	नायक का नायिका स मिलाप—नायिका के उद्यान म मी० का० रू० इ०
त (एन) ७३१	मिलाप—पुत्र पिता का यू० इ०
त (एन) ७४१	मिलाप—खोया प्रियतमा से च० मधु० पु० ह०
+ त (एन) ७६०	मिलाप—सहायक या सगी साथी से पु० र० ह
+ त (एन) ८१०	सहायक—परामानवीय शक्ति (शिव विष्णु इन्द्र०, देव हनुमान) प०, चित्रा० यू०
+ त (एन) ८१०	सहायक सिद्ध ऋषि या तपस्वी पजमीर गुरु का आशीर्वाद और सहायता चि०, ह० इ०, अनु०
+ त (एन) ८१२	सहायक – राक्षस-पुत्री र०
[illegible] (एन) ८१७	सहायिका देवी– पार्वती लक्ष्मी वनदेवी प० मा०
[illegible] (एन) ८२०	नायिका की सहायिका—कुटनी धाय यू०
+ त (एन) ८२०	नायिका की सहायिका—सखी च०, मधु० पु० ह०
त (एन) ८३६	नायक (नायिका) का सहायक—किसी देश का राजा च० मा० र० पु० ल०
त (एन) ८४३	सहायक—साधु तपस्वी कँ० क० ह० र० अनु०
त (एन) ८४५	सहायक—पशु-पक्षी (तोता हस गरुड राजपक्षी) प० चित्रा० कँ० नल०
त (एन) ७४५	सहायक वनमानुष (नायक का सहायक) चित्रा०

प (पी) समाज विषयक अभिप्राय

+ प (पी) १२	[illegible] राजा (विरह [illegible]) मा० मै० मृ०
प (पी) १२१	[illegible] पागल राजा मा० (मान्धाता का [illegible])
प (पी) १३०२	निःसन्तान राजा का दान धर्म या दैवी शक्ति के वरदान या सिद्ध तपस्वी के आशीर्वाद के फलस्वरूप राज्य का उत्तराधिकारी प्राप्त करना (नायक और नायिका अपने माता पिता की प्रायः एकलौती सन्तान) प० चि० मा० पु० र० ह० मृ० (मिरगा का निस्सन्तान बादशाह अपने वजीर पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बना लेता है मृ०)
+ प (पी) ६००	रिवाज विवाह के समय दहेज देना प्रायः सभी प्रेमाख्यानों में वर्णित प० चित्रा० मधु० मा० पु० ह० इ० म०

द (क्यू) पुरस्कार तथा दण्ड विषयक अभिप्राय

द (क्यू) ४६	शरणागत की रक्षा (उसके लिए युद्ध आदि) प० मा०
द (क्यू) ११०	पुरस्कार—उस अप्सरा (गन्धर्वकन्या) से विवाह जिसे नायक ने बन्धन (कैद) से छुड़ाया था म० मधु० पु० र०
+ द (क्यू) ११०	पुरस्कार—नायिका प्राप्ति का साधन ज्ञात होना म०
+ द (क्यू) ११५	पुरस्कार वर माँग लो (कोई विद्या) न० नल०
+ द (क्यू) १४०	सुप्तावस्था में दूरस्थ प्रेमिका के पास पहुँचाया जाना (देवों या परियों द्वारा) चित्रा० ह०
+ द (क्यू) १७०	ध्यान करने से देवता (सिद्ध सहायक) उपस्थित—सहायता के निमित्त प० न० नल०
द (क्यू) २१३	दण्डित कार्य—अपहरण चित्रा०
द (क्यू) २२०	दण्डित कार्य—[illegible] प०
द (क्यू) २५५	देवताओं को छोड़ मर्त्य प्रेमी को पसंद करनेवाली स्त्री को दण्ड मा० न० नल०
द (क्यू) २८१	दण्डित कार्य—[illegible] हारना न० नल०
द (क्यू) ४३१	दण्ड—निष्कासन (देश निकाला) प० (राघव चेतन का निष्कासन) मा० (जयंती अप्सरा इन्द्रलोक से

	और माधवानल अदन देश स निकाले गय) नद० नल०
द (क्यू) ४३३	दण्ड—कद किया जाना मृ०, चित्रा० यू० (चित्रा वलीम प्रेमिका नायक को वदी बनवा लती है झूठा अभियोग लगा कर)
द (क्यू) ४७२ १	दण्ड—नाक कान काटा जाना व्यभिचारिणी का च द०
द (क्यू) ५५१ ३ ४	दण्ड—पत्थर बना दना मा० ह०
+ द (क्यू) ५६०	दण्ड—वियोग (नायक नायिका का परस्पर) प०, मधु०, पु०

(घ) आर')—अपहरण तथा रक्षा विषयक अभिप्राय

+ घ (आर) १०	अपहरण—नायक का म० प० चित्रा०
घ (आर) १० १	अपहरण—नायिका का च० कँ०, ह० सु०
घ (आर) १११ १४	देव (राक्षस) को मारकर उसके द्वारा बंदिनी राजकुमारी का नायक द्वारा उद्धार मधु०, पु०
+ घ (आर) २२०	रक्षा—वेश बदल कर ह०

न ('एस)—अप्राकृतिक क्रूरता विषयक अभिप्राय

न (एस) ३१	क्रूर सौतले भाई यू०
+ न (एस) ७०	क्रूर भाई—भाइयो (भाई) द्वारा नायक का कष्ट नद० नल०

प ('टी)—प्रेम और विवाह (यौन)-सम्बंधी अभिप्राय

+ प (टी) ११	प्रेमोदय—प्रत्यक्ष दशन से च०, मृ०, मधु० ना०
प (टी) ११ १	प्रेमोदय— नायक या नायिका के रूप-गुण की प्रशसा सुनकर च० प० कला० कौ०, नद०, नल० अनु०
प (टी) ११ २	प्रेमोदय—नायक का नायिका के चित्र दशन से चित्रा०, कँ० काम० रू०, रतन० र० छी० नद० नल०, अनु०
प (टी) ११ २।११ ३	प्रेमोदय—चित्र दशन और स्वप्न दशन दोनों स काम० नद० नल० र० रू०
प (टी) ११ २ १	प्रेमोदय—मूर्त्ति देखन स का०
प (टी) ११ ३	प्रेमोदय— नायक का नायिका को स्वप्न मे देखकर च० काम० रू० र०, नद० नल० ह० इ०, अनु० यू०

प (टी) १२	नायक के जन्म से ही ज्योतिषियों द्वारा भविष्यवाणी—वह प्रेम वियोगी बनेगा (योगी या सिद्ध बनना प्रेम के लिए, माता पिता से बिछुड़ना भटकना फिर मिलना) म० प० मधु० चित्रा० ज्ञा० र० यु० ह०
प (टी) १२ १	नायिका के जन्म से ही उसके विवाह वियोग आदि के विषय में ज्योतिषियों की भविष्यवाणी मृ० नल०
प (टी) २२	पूर्व निर्धारित पति-पत्नी मधु० चि० ज्ञा० र० पु०
प (टी) २२	पूर्व जन्म की प्रीति की स्मृति मधु० पु०
प (टी) २२ २	पूर्व निर्धारित पत्नी चि० मधु० ज्ञा० र० पु०
प (टी) २२ ३	पूर्व निर्धारित पति चि० मधु० ज्ञा० र० पु०
+ प (टी) २४	विरह-वर्णन बारहमासा के माध्यम से प० मधु० चित्रा० ज्ञा०, कमा० क० पु० ह० इ० यू०
+ प (टी) २४	प्रेम-व्यंजना (संवाद रूप में) पत्रों के माध्यम से प० र० ह०
प (टी) २४ १	विरह पीड़ित होना—प्रेमी का नाम रटना उन्माद हो जाना किसी काम में मन न लगना म० म० प० मधु० ज्ञा० नल० र० ह० इ०
प (टी) ५१	प्रेम का दूत प० मधु० चित्रा० पु० ज्ञा० र०
प (टी) ५२ ४	ब्याह पर दहेज देना प्राय सभी प्रेमाख्यानों में विशेषत प० मधु० चित्रा० ज्ञा०, पु० ह० इ० म।
प (टी) ५५	प्रिय की याद में जगी नायिका म० प० चित्रा० नल०, नम० यू०
+ प (टी) ५५	प्रिय के पास प्रेम-संदेश भेजना म० प० ज्ञा० चित्रा० इ०
+ प (टी) ६६	प्रिय प्राप्ति के निमित्त तपस्या (नायिका का) १२ वर्ष तक (यहाँ ४० वर्षों तक) यू०
प (टी) ६६	प्रिय प्राप्ति के निमित्त शिवपूजा म० प० इ०
प (टी) ६६	प्रिय प्राप्ति के निमित्त गौरी (पार्वती) पूजन ज्ञा०
प (टी) ६६	एक नायिका के कई प्रेमी यु०
प (टी) ७१	स्त्री जिसका प्रेम ठुकराया गया हो क०, र० ह० यू०

प (टी) ७५	प्रेम वंचिता स्त्री का प्रतिशोध लेना कें०, र०, इ०, यू०
प (टी) ७५ १ २	देवता की उपस्थिति म मानव को वरनेवाली नायिका (दमयंती) नद०, नल०
प (टी) ८१	प्रेम म मृत्यु मा०, ल०, यू०
+ प (टी) ९०	छिपे प्रेम म मिलने के बहाने ढूंढना च०
प (टी) ९१ ॥	राक्षस पुत्री प्रेमिका र०
प (टी) ९१ ८	देवी का मर्त्य म प्रेम म० मा०, मध० पु० र०
प (टी) ९५ १	प्रेमी ने नायिका के सम्बन्धियो से मगनी किया च०, प०
+ प (टी) १०४	विवाह के हेतु युद्ध प०, मा०
प (टी) १११	मानव और परामानव का विवाह (अप्सरा से) म० मधु० मा० पु०, र०
प (टी) १३५ १०	अग्नि की परिक्रमा करके विवाह मा०
प (टी) १५१	छह माह की आन—छह मास के लिए विवाह टालना म०, मधु० — नायिका प्रथम मिलन म सुरति नही करती—विवाह होने तक सुरति के लिए नायक स वर्जन । कें०—कँवलावती न देव से कहा कि तुम दिन म मेरे पास न आओ—रात को मेरे सो जाने पर मेरा मुख निरखो—स्पर्श कर दिया तो मैं प्राण दे दूगी । स०—मतवती न मसूर से तीन दिन तक रुकने को कहा ताकि वह निश्चय कर सके कि वह उसका पति है या नही । छी०—अलाउद्दीन की देवगढ को देखे बिना न लौटने की आन ।
प (टी) २१०	सती (पतिव्रता) पत्नी च० प०, स०, सील०, नद०, नल० चन्द्र०
प (टी) २११	वियोग म (और पति के मरन पर भी) सती होना म० प० नल० ह० इ०
प (टी) २१२	प्रेमी की मृत्यु सुनकर मृत्यु मा० ल० यू०
प (टी) २१५	दरिद्रता म (बनवास म) साथ देनवाली स्त्री नद० नल०

प (टी) २५७ २	सौतिया डाह (सौतों म परस्पर ईर्ष्या-द्वेष) प० प० हं०
+ प (ट) २५७ २ १	सौतिया डाह नहीं—ज्ञा० (राजकुमारी और पद्मिनी सौत हैं पर उनम डाह नहीं)
प (टी) ३७० १	सतीत्व (पातिव्रत) की परीक्षा प० म० सो०, चन्द्र० ना० मम०
प (टी) ४५२	प्रेम-सन्देश पत्र के रूप म—पक्षी (दूती) प० मधु० ज्ञा० पु० र०
प (टी) ४५२	प्रेम-सन्देश पत्र के रूप म पक्षी (तोता हंस) प० पं० अनु० (तोता) मल० (हंस)
प (टी) ४७५ १	व्यभिचारिणी के बाद का निहत्य पाया जाना चद०
प (टी) ४८१	व्यभिचारिणी स्त्री प०
प (टी) ४८१ १	प्रेमी का व्यभिचारिणी स्त्री स बुरा व्यवहार प०
+ प (टी) ५११ १	गर्भाधान साधु प्रदत्त जभीरा नीबू और तीन सन्तफल खान स नद० नस०
+ प (टी) ५११ १	गर्भाधान साधु प्रदत्त सन्तफल और फल (आम अंगूर या नारंगी) खान स मु० नद० नन०
प (टी) ५११ ८	गर्भाधान तपस्वी प्रदत्त चावल का पिण्ड (खीर) खान स मध०
प (टी) ५१५	अतिप्राकृत जन्म र०
प (टी) ५१० ३	जन्म फल स मु० न० मल०
+ प (टी) ५४८	जन्म वरदान स (देवता या साधु के) चित्रा०—(शिव-कृपा स) मा०—(शिव-कृपा स) इं०—(शिव-पार्वती की कृपा से) हं०—(सिद्ध तपस्वी ख्वाजा खिज्र की कृपा स)
+ प (टी) ५४८	जन्म देवता के स्वप्न म आकर सभोग करन स कना०—(स्वप्न म इन्द्र रानी कनकावती के पास आया अत पुत्र का नाम पुरन्दर)
प (टी) ५४८ १	जन्म प्रार्थना से पुत्र (पुत्री) प्राप्ति (भगवान की कृपा स) म० प० रू०
+ प (टी) ६८०	अकाल म (दुर्दिन म) बच्चा को उनकी ननिहाल म छोड़ना (भेजना) नद० नल०

व ('ह्वी') धर्म और धार्मिक अनुष्ठान विषयक अभिप्राय

व (ह्वी) ४६२ १२	दुष्ट तपस्वी का अपनी जादुई चमत्कारी शक्तियों को, जिन्हें उसने तपस्या से प्राप्त किया है, गलत ढंग से प्रयोग करना—च०, हु०
+ व ह्वी ५००	संसारी प्रेम झूठा—धर्माचरण के लिए संसार से विरक्ति इ०

भ (डब्लू) —चारित्रिक विशेषताएँ विषयक अभिप्राय

टिप्पणी—द वर्ग से इस वर्ग का विभेद गुण और कार्य के आधार पर किया गया है। उदाहरणार्थ परोपकार जब गुण रूप में है तब भ' वर्ग के अंतर्गत आएगा (जैसे विक्रम या हारूरशीद में) और जब कार्यरूप में है तब द वर्ग के अन्तर्गत। यह विभेद अत्यंत सूक्ष्म है।

+ भ (डब्लू) २०	परोपकार मा० बु० (विक्रम और हारू०)
+ भ (डब्लू) २०	स्वामिभक्ति ह० (मीरबहादुर में स्वामिभक्ति के गुण हैं।)
+ भ (डब्लू) २७	कृतज्ञता—कला० नल० (बंधन में पड़े मनुष्य ने जिसे पुरन्दर ने जंगल में छुड़ाया)
+ भ (डब्लू) १५०	ईर्ष्यालु भाई यू०
+ भ (डब्लू) १५४ ८	कृतघ्न मानव कृतज्ञ पशु प० कला० ह० (प० में राघवचेतन ह० में दौलामीर कथा कलावती में एक पुरुष और सर्प नद० नल० में सर्प)

य ('जेड') अन्य विविध अभिप्राय समूह

य (जेड) ४१	परम्परा क्रमबद्ध कथाएँ—एक दूसरे पर आधारित कथाओं की शृंखला— इ०
य (जेड) ६२ २	वर सूर्य का प्रतीक और वधू चन्द्रमा की प्रतीक म० प० हु० तथा अन्य सूफ़ी प्रेमाख्यानों का रूढ़ प्रतीक।
य (जेड) ७१ ५	प्रतीकात्मक संख्या म० प० मधु० हु० इ० इत्यादि।
य (जेड) ७१ ६	प्रतीकात्मक संख्या (सात समुद्र सात वन, सात पुर सप्त खण्ड धौराहर सात लोक सात पाताल) म० प० मधु० चा० चित्रा० ह०, इ० अनु० (नायक के रास्ते में सात समुद्र सात वन, सात पुर पड़ते हैं। नायिका जिस धौराहर पर रहती है वह भी सप्त खण्डी होती है और सबसे ऊपर का खण्ड कलाम

कहलाता है। सूफी साधना के सात मुकामात तथा योग साधना में शरीरस्थ सप्त चक्रों से तात्पर्य)।

य (ज़ेड) १७५	प्रतीक-कथन—सांकेतिक भाषा अंगुलियों के संकेत से बात करना मो० छ०
य (ज़ेड) १७८ २	प्रेमियों द्वारा प्रतीकात्मक संदेश (नायिका) म०
य (ज़ेड) २१६	नायक (नायिका) का अतिप्राकृत जन्म इ०
य (ज़ेड) २३०	नायक की असाधारण सफलताएँ—प्रयास चित्रा० काम० बो०
य (ज़ेड) ३५७	शाप के अनूठे अपवाद (शाप मुक्ति के उपाय) मा०

अवर्गीकृत कथानक रूढ़ियाँ

स्टिथ थाम्सन महोदय ने अपने 'मोटिफ इन्डेक्स' की भूमिका में इस विषय के कथा रूढ़ि संग्रह कर्त्ताओं को परामर्श दिया है कि जिन कथा-रूढ़ियों का वर्गीकरण और क्रमांकन वे न कर पावें उनको एक बार य (जेड) वर्ग जो विविध अभिप्रायों का वर्ग है के अन्तर्गत संकलित कर दें फिर यथासमय उनका उचित स्थान देने का प्रयास करें। हमारे सामने भी पौराणिक स्रोत की जान पड़नेवाली कुछ नवीन कथानक रूढ़ियों के वर्गीकरण और क्रमांकन की समस्या रही है जिनके विषय में हम निर्णय नहीं कर पाये हैं। ऐसी अवर्गीकृत और अक्रमांकित कथानक रूढ़ियाँ निम्न लिखित हैं—

+ १	प्रायश्चित्त आत्महत्या के लिए उतारू मा०
+ २	अपने पूर्व आवास को न पहचानना—इन्द्रजाल के कारण आवास के स्वरूप में परिवर्तन चित्रा०
+ ३	मोतियों की गृह नहीं ना०
+ ४	नायक द्वारा नायिका का हरण म० इ०
+ ५	नायक नायिका का गांधर्व विवाह म०
६	प्रेमोदय साथ साथ क्रीड़ा करते चि०
× ७	मानसरोवर म प० तथा अन्य कई काव्यों में मानसरोदक का वर्णन।
+ ८	अल्पवयस में ही नायक का सब विद्या-पण्डित हो जाना म० मधु० ना० चित्रा० आदि कई प्रेमाख्यानों में।
+ ९	अति सुन्दर नायक को देख स्त्रियों का कामासक्त होना (स्खलित होना) मा० यु०
१०	पर स्त्री के आगे प्रेमी यु०
११	मन में डिगाने के प्रतारणा के होते हुए भी नायिका सत पर अडिग यु०

१२ प्रेम मार्ग के बाधक—माता पिता (माता पिता के विरोध के कारण नायक नायिका के मिलने पर प्रतिबन्ध) ल०
१३ अपहरणकर्त्ता से नायिका का कभी प्रेम न कर पाना का०
१४ राजा निस्संतान—बहुत धर्म-पुण्य के बाद संतानोत्पत्ति छी०
१५ शैतान द्वारा भले नायक को सताना न० नल०
१६ नायक का जीवन से वैराग्य नद० इ०
१७ समय देकर बाधा से विवश होकर न पहुँच पाना ह० (सब्ज परी ने सात दिन में जवाहिर के पास से लौटने को कहा पर चोर अपहरित हो जाने से न पहुँच सकी। हुस्न का चिंता।)
१८ इकलौता लाडला पुत्र या लाडली कन्या च० म० प०, ह०, यू० आदि।

निष्कर्ष

हिंदी के सूफी कवियों द्वारा रचित प्रमुख ५ प्रेमाख्यानों की पौराणिक स्रोत वाली कथानक रूढ़ियों की जो वर्गीकृत अनुक्रमणिका ऊपर प्रस्तुत की गयी उसके निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

कथानक रूढ़ि वर्ग	पौराणिक स्रोत की कथा रूढ़ि संख्या	नयी कथा रूढ़ियों की संख्या
१ धर्मगाथा अभिप्राय	१५	८
२ पशु पक्षी विषयक अभिप्राय	१६	२
३ वर्जन या निषेध विषयक अभिप्राय	९	५
४ जादू और रूपान्तरण	५२	१४
५ मृतक (पुनरुज्जीवन) भूत प्रेत आदि	[illegible]	१
६ चमत्कारिक (आश्चर्यजनक)	३१	४
७ दैत्य (राक्षस) विषयक अभिप्राय	३	—
८ परीक्षाएँ	२९	८
९ ज्ञान एवं बुद्धि (बुद्धिमान तथा मूर्ख) विषयक अभिप्राय	६	६
१० धोखा विषयक अभिप्राय	१६	५
११ भाग्य का पलटना	३	१
१२ भविष्य निर्माण (निर्देशन) भविष्यवाणियाँ शाप आदि	१७	१४
१३ अवसर तथा भाग्य विषयक अभिप्राय	२६	१४
१४ समाज विषयक अभिप्राय	४	२
१५ पुरस्कार तथा दण्ड विषयक अभिप्राय	१४	४
१६ अपहरण तथा रक्षा विषयक अभिप्राय	४	२

१७	अप्राकृतिक क्रूरता विषयक अभिप्राय	२	१
१८	प्रेम और विवाह (यौन) सम्बन्धी "	५७	१३
१६	धम और धार्मिक अनुष्ठान विषयक "	२	१
२०	चारित्रिक विशेषताएँ विषयक अभिप्राय	५	५
२१	अन्य विविध अभिप्राय-समूह	६	—
	योग	३२७	११०
	अवर्गीकृत विविध अभिप्राय समूह	१८	८
	कुल योग	३४५	११८

इस प्रकार प्रस्तुत कोश म कुल ३४५ कथा-रूढ़ियों का समावेश हुआ है जिनका पौराणिक स्रोत हो सकता है और ११८ रूढ़ियाँ ऐसी हैं जिनको स्टिथ थामसन मन्डेक्स के 'माटिफ इण्डेक्स म भी स्थान नहीं मिल सका है।

उपरिलिखित तालिका स पता चलता है कि सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो म सर्वाधिक पौराणिक कथानक रूढ़ियाँ—५७ प्रेम और विवाह वग म सम्बन्धित हैं। इसस यह निष्कष निकलता है कि सूफी कवि प्रेम निरूपण म भी भारतीय पौराणिक भावना से बहुत प्रभावित थे। चूंकि उन्होंने अपने काव्यो म जो कथाएँ ग्रहण की वे पहले म ही लोक प्रचलित थी इसलिए इससे यह भी सूचित होता है कि मध्यकाल म लोक जीवन म या लोक-साहित्य म पौराणिकता का प्रभाव कितनी गहराई तक पहुँचा हुआ था। आवृत्ति की दृष्टि स दूसरे और तीसरे नम्बर पर क्रमश जादू और रूपान्तरण तथा चमत्कार (आश्चय) स सम्बन्धित कथानक रूढ़ियाँ आती हैं। उनकी सख्या क्रमश ५२ और ३१ है। लोक जीवन म अदभुत का तत्व सदा स अपना आकषण रखता आया है। उसी का प्रतिबिम्ब इन रूढ़ियों के रूप म उभरा है।

परीक्षाओं सम्बन्धी कथा-रूढ़ियों का स्थान चौथा (२६) और अवसर तथा भाग्य विषयक कथा रूढ़ियों का स्थान पाँचवाँ (२६ रूढ़ियाँ) है। भाग्यवाद भारतीय लोक जीवन का निर्देशक सिद्धान्त है। वह मानव क प्रयास का आरम्भ और अवसान दोनो है। उसका प्रभाव कथानक रूढ़ियों के रूप म पड़ा यह स्वाभाविक ही था।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो म कथानक रूढ़ियों का यह अध्ययन अन्य प्रकार के कथा काव्यो म इस प्रकार के काय की आवश्यकता प्रकट करता है ताकि भारत म जो ससार को काव्यो के रूप म प्राचीनकाल स ही स्निग्ध किरणें पहुँचाता रहा है एतदविषयक अध्ययन को वैज्ञानिक आधार दिया जा सके।

परिशिष्ट

१ भारतीय पौराणिक पात्रादि के विविध प्रयोग

२ भारतीय निजधरी आख्यानों और पात्रों आदि के प्रयोग

३ लोकप्रिय प्रेमाख्यानों के नायक-नायिकाओं के प्रयोग

४ नामी पौराणिक और निजधरी आख्यानों तथा पात्रों आदि के प्रयोग

५ सहायक पुस्तक एवं पत्र पत्रिका सूची

१७	अप्राकृतिक क्रूरता विषयक अभिप्राय	२	१
१८	प्रेम और विवाह (यौन) सम्बन्धी	५७	१
१९	धर्म और धार्मिक अनुष्ठान विषयक	७	१
२०	चारित्रिक विशेषताएँ विषयक अभिप्राय	५	५
२१	अन्य विविध अभिप्राय-समूह	६	—
	योग	३२७	११०
	अवर्गीकृत विविध अभिप्राय समूह	१८	८
	कुल योग	३४५	११८

इस प्रकार प्रस्तुत शोध में कुल ३४५ कथा-रूढ़ियों का समावेश हुआ है जिनका पौराणिक स्रोत हो सकता है और ११८ रूढ़ियाँ ऐसी हैं जिनको स्टिथ थामसन के मोटिफ इण्डेक्स में भी स्थान नहीं मिल सका है।

उपरिलिखित तालिका से पता चलता है कि सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में सर्वाधिक पौराणिक कथानक रूढ़ियाँ—५७ प्रेम और विवाह वर्ग से सम्बन्धित हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सूफी कवि प्रेम निरूपण में भी भारतीय पौराणिक भावना से अत्यन्त प्रभावित थे। चूँकि उन्होंने अपने काव्यों में जो कथाएँ ग्रहण कीं वे पहले से ही लोक प्रचलित थीं इसलिए इससे यह भी सूचित होता है कि मध्यकाल के लोक जीवन में या लोक-साहित्य में पौराणिकता का प्रभाव कितनी गहराई तक पहुँचा हुआ था। आवृत्ति की दृष्टि से दूसरे और तीसरे नम्बर पर क्रमशः जादू और रूपान्तरण तथा चमत्कार (आश्चर्य) से सम्बन्धित कथानक रूढ़ियाँ आती हैं। उनकी संख्या क्रमशः ४२ और ३१ है। लोक-जीवन में अद्भुत का तत्त्व सदा से अपना आकर्षण रखता आया है। उसी का प्रतिबिम्ब इन रूढ़ियों के रूप में उभरा है।

परीक्षाओं सम्बन्धी कथा-रूढ़ियों का स्थान चौथा (२९) और अवसर तथा भाग्य-विषयक कथा-रूढ़ियों का स्थान पाँचवाँ (२६ रूढ़ियाँ) है। भाग्यवाद भारतीय लोक जीवन का निर्देशक सिद्धान्त है। वह मानव के प्रयास का आरम्भ और अवसान दोनों है। उसका प्रभाव कथानक रूढ़ियों के रूप में पड़ा यह स्वाभाविक ही था।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में कथानक रूढ़ियों का यह अध्ययन अन्य प्रकार के कथा काव्यों में इस प्रकार के कार्य की आवश्यकता प्रकट करता है ताकि भारत में जो संसार को काव्यों के रूप में प्राचीनकाल से ही स्निग्ध किरणें पहुँचाता रहा है एतद्विषयक अध्ययन को वैज्ञानिक आधार दिया जा सके।

परिशिष्ट

भारतीय पौराणिक पात्रादि के विविध प्रयोग

हिन्दी सूफी कवियो द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्यो में पौराणिक आख्यानो के प्रयोग के स्वरूप पर प्रस्तुत प्रबन्ध मे अध्याय ७ से अध्याय १२ तक विचार किया जा चुका है। सूफी कवियो ने भारतीय पौराणिक आख्यानो के अतिरिक्त भारतीय पौराणिक पात्रो आदि का प्रयोग भी प्रचुरता से किया है। पात्रो आदि का प्रतीकात्मक आलकारिक दार्ष्टान्तिक और उल्लेखात्मक प्रयोग किया गया है। पात्रादि के वर्ग हैं—(क) रामायण स्रोत के पात्रादि (ख) महाभारत स्रोत के पात्रादि (ग) भारतीय पौराणिक स्रोत के पात्रादि (घ) वैदिक और पौराणिक देवी देवता आदि, (ङ) गधर्व यक्ष अप्सरा आदि (च) पौराणिक पर्वत वृक्ष लतादि (छ) तीर्थ स्थान (ज) पौराणिक अस्त्र शस्त्र वाहनादि, (झ) पौराणिक पशु पक्षी कीट आदि, (ञ) लोक समुद्र आदि (ट) पद्मिनी नारी। सदर्भ-सूची मे पात्रो स्थानो घटनाओ तथा वस्तुओ आदि की आवृत्ति का योग भी दे दिया गया है। उसमे सकेताक्षरो के अर्थ हैं प्र=प्रतीक, दृ=दृष्टान्त अ=अलकार उ=उल्लेख।

इस परिशिष्ट और परिशिष्ट २ ४ की पाद टिप्पणी मे जहा जहाँ 'उल्लेख' शब्द आया है उसका तात्पर्य उल्लेख नामक अलकार न होकर केवल यह है कि वह पात्र स्थान घटना आदि सामान्य रूप से वर्णित हुई है।

(क) रामायण स्रोत के पात्र और स्थान	सदर्भ और प्रयोग	आवृत्ति
कैकेयी	चदायन (भूपाल प्रति) सपा० विश्वनाथ प्र० ४०।१ २[1]	द १
राम	चदायन २०५।२ ३[2] मृगावती छद ३४[3], वही ३०६।४ ५[4] पदमावत, १६७।५ ६[5] वही, १६८।४ ५[6], वही २८०।५[7], वही ३३३।५[8], चित्रावली ४२२।३ ७[9], ज्ञानदीप छद १२४[10] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० ८२[11],	प्र१, अ ८, दृ १ उ२=१२

---

१ दृष्टान्त २ उल्लेख ३ उल्लेख ४ उदाहरण ५ ६ उत्प्रेक्षा ७ दलप ८ ६ उपमा १० रूपक

११ उहाँ मित्र रावन औ रामू इहाँ राम लछिमन सगरामू।
उहाँ मिलाप इहाँ विद्धराऊँ औषध इहाँ उहाँ है घाऊ॥ (प्रतीक)

आवृत्ति

वही (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० १६६ [1] वही पृ० १७६[2]।

रावण चदायन २०५।२ ५ [3] लोरकहा (मा०प्र०गु०) प्र ३ अ १६,
६७।४ ५ [4] चदायन १२१।५,[5] वही ३८२।४ [6] मगावती द ६ उ ३
छद ३४ [7] मगावती ६६।२,[8] वही ३७६।दो० [9] पदमावत =३१
५२।ग्गे०३।३ [10] वही १०४।२,[11] वही १६१।दो० १६।३ [12]
वही १६७।५ ६,[13] वही १६८।४ ५ [14] वही २४८।दो० २४।१०,[15]
वही २ ६।१ ७ और दोहा २५।१० [16] वही २८०।५ [17] वही
३०४।१ [18] वही ३१८।१ २,[19] वही ३२५।६ [20] वही
३३३।४-५,[21] वही ३८४।४ ५ [22] वही ३८७।६ ७,[23] वही
४०२।६ ७ [24] वही ४०४।४,[25] वही ५२६।१ २ [26] वही
५७६।५,[27] माधवानल कामकदला बडी प्रति हस्तलेख,[28]
चित्रावली छद ४२२।३ ७ [29] वही ५६७।४ ६ [30] ज्ञानदीप
छद १२४ [31] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० ८२ [32] वही
पृ० १७६[33]।

लका लोरकहा (मा०प्र०गु०) ७८।१ २ [34] चन्दायन अ १४ उ ४
२०५।१ २ [35] मगावती छद ३४ [36] पदमावत २६।२ [37] वही, =१८
१५३।२ [38] वही २८०।५ [39] वही ३२५।६ [40] वही
३७६।१ २ [41] वही ३६१।३ ४ [42] वही ४०२।६ ७ [43] वही ५०७।५ [44]
वही ५०८।६।७ [45] वही ५२५।दो० ४३।१०[46] वही ५३६।१-२ [47]

---

१ व्यतिरेक
२ कहाँ राम औ रावन कहाँ बिसुन औ कस।
   कहाँ भीम अरजुन करन कहँ सरवर कहँ कस॥ (दृष्टात)
३ उल्लेख ४ प्रतीक ५ उत्प्रेक्षा ६ प्रतीक ७ उल्लेख, ८ उत्प्रेक्षा
९ दृष्टात १० उदाहरण ११ रूपक १२ अतिशयोक्ति १३ १४ उत्प्रेक्षा,
१५ रूपक १६ दृष्टात १७ श्लेष एव मुद्रालकार १८ रूपक १९ उपमा
२० मुद्रालकार २१ उपमा २२ २३ दृष्टात २४ रूपक एव श्लेष २५ उल्लेख
२६ उदाहरण २७ उत्प्रेक्षा
२८ गरब सरब दुख देत रतिपति लकापति मुए।
   कस आदि किउ रेत जुरजोधन सीसरायु जुत॥ (दृष्टात)
२९ उपमा ३० श्लेष और उपमा ३१ रूपक ३२ प्रतीक ३३ दृष्टात
३४—३६ उल्लेख ३७ व्यतिरेक ३८ हेतूत्प्रेक्षा, ३९ श्लेष ४० उपमा।मुद्रा०,
४१ उदाहरण ४२ उत्प्रेक्षा, ४३ श्लेषारूपक, ४४ हेतूत्प्रेक्षा ४५ अत्युक्ति
४६-४७ उपमा

आवृत्ति

मधुमालती १०।५,[1] वही ३४।१[2] चित्रावली ४१६।१-७ और दोहा,[3] हंस जवाहिर, पृ० २२५।छंद ६१६।५ ६[4]।

लंका और पलंका (दोनों एक नहीं)—चंदायन (भूपाल प्रति, सपा० वि० प्र०) ३७।४ ५[5] लोरकहा (मा०प्र०गु०), छंद ४६।४ ५[6] चंदायन (प०ला०गु०), ३५१।१ ५[7] मृगावती ६६।३[8] वही १०२।३[9] पदमावत २०६।३ ४[10] वही, ३५५।२ ३[11]। — अ १, दृ ५, उ १ = ७

लंका और विलंका (दोनों एक नहीं)—कथा कँवलावती (हस्त०) पत्र ९ छंद ६५[12] रतनावती (हस्त०) दोहा २८ के — अ १ उ १ = २

---

१ अतिशयोक्ति, २ उपमा ३ उल्लेख ४ (रावण के गढ के रूप म उल्लेख) उपमा।

५ ' 'लंका छांडि पलंका धावउँ' इस मुहाविरे का प्रयोग कुतुबन और जायसी ने किया है—(मृगावती ६६।३ और १०२।३, 'पदमावत २०६।३, ३५५।३)। भोजपुरी क्षेत्र म यह मुहाविरा आज भी बोलचाल म प्रचलित है। निकटवर्ती उपलब्धि को छोडकर किसी दूरस्थ वस्तु के लिए प्रयास करने के प्रसंग मे लोग इसे उदाहृत करते हैं। परन्तु कुतुबन और जायसी ने असम्भव को सम्भव कर दिखाने का साहस व्यक्त करने के अर्थ मे इस मुहाविरे का प्रयोग किया है। ऐसा लगता है कि जिन दिनों इस मुहाविरे ने रूप धारण किया उन दिनों लंका जाना सुगम न था और पलंका तो कोई ऐसी जगह थी जहाँ सामान्यत पहुँचना असम्भव समझा जाता था। पलंका (स० पाताल लंका—पायाल लंका—पायालंका—पालंका—पलंका) नाम से ऐसा ध्वनित होता है कि लंका की तरह पलंका कोई दूरवर्ती द्वीप था। हो सकता है, द्वीपांतर (हिंद एशिया) के द्वीपसमूहों के किसी द्वीप को पलंका कहते रहे हों। मलय स्थित पेनांग का भी नाम पलंका हो सकता है। किन्तु जायसी ने पलंका मे शिव का निवास बताया है (पदमावत २०६।३ ४)। सम्भव है, शिव के निवास कैलास को पलंका कहते रहे हों। — डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त चन्दायन पृ० २७६ टिप्पणी।

मध्यकाल मे पलंका लंका से भी दूर एक द्वीप समझा जाता था। एलौरा म कैलास मन्दिर के दोनों ओर एक एक गुफा मण्डप है उनम से एक को लंका और दूसरे को पलंका कहते हैं। —दे० पदमावत मूल और संजीवनी व्याख्या डा० वासुदेवशरण अग्रवाल पृ० ३५५

६ ९ १० दृष्टांत ११ उल्लेख १२ रूपक और श्लेष।

१३ चितरि चितरा घर कौं धायो हूं सुरति मनौं सीता ल्यायो।
जारि चल्यो चितरगढ लंका दुप परिहरि कैं गयो विलंका॥

(उल्लेख मात्र)

	आवृत्ति
बा० गो० १[1]।	
सवा और सिंहल (दोनों एक नहीं)—पद्मावत २६।२[2], वही १२७।दोहा १२।१२[3] वही २६२।१ ८[4] वही २८४।८ ५[5] वही २८६।८,[6] वही ३६०।१ ३[7] चित्रावली ४१६।१ ७[8] हुस जवाहिर ११५।२ ५[9]।	अ २ द १ उ ५ = ८
लक्ष्मण—पद्मावत ६२५।३[10] सीता (हस्त०) छं० ३० और ३१[11] हुमायनी (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० ८२[12]	प्र १ अ २ = ३
विभीषण—नारकहा (मा०प्र०गु०) छं० ७८[13] पद्मावत २८४।८ ५[14]।	द १ उ १ = २
सिंहल (सिंघल) द्वीप—मिरगावत (दिल्लीवाली हस्त लिखित प्रति की अनुकृति श्री उदयशंकर शास्त्री के पास) छं० २०८[15] पदमावत ८०।नागमती।१[16] वही १४०।[17] वही १५६।२ ४[18] वही १६०।४[19] वही, १७८।४[20] वही १८३।३,[21] वही २८७।५,[22] वही ३२६।४,[23] वही ४३१।४[24] मधुमालती, ६६।२[25] चित्रावली, ६६।१ २[26] रतनावती (हस्त०) दोहा ७८[27]।	अ १ उ १० = ११
सीता—मृगावती ३८७।५,[28] पदमावत ५२।चौ० ७ दोहा ३।३,[29] वही १३१।४[30] वही, ३६१।३ ४[31] वही ६४१।१ २[32] कथा लैल मजनू (हस्त) पत्र ३१।छं० ६७[33]	प्र २ अ ४ दृ १, उ २ = ६

---

१ मरव दरव हौं तोपर वारौं लंका कहा बिलका वारौं। (अतिशयोक्ति)
२ व्यतिरेक, ३ उल्लेख ४ द्वितीय निदर्शना, ५ दृष्टान्त ६ ९ उल्लेख, १० व्यतिरेक।
११ सीता माइ छीता हरी, रामहिं राम अवमथा परी।
हे लषमन, हनवंत से यार मेरें कौन बिना करतार ॥३०॥ (उपमा)
जो कोऊ ह्वै सम लषमन की, करो उपाव बिपति लषि मन की ॥३१॥
(यमक।उपमा)
१२ प्रतीक १३ उल्लेख, १४ दृष्टान्त।
१५ सिंघल दीप कहँवे जनु आवा पदुमिनि रूप बिसखहु भावा। (उत्प्रेक्षा)
१६-२७ उल्लेख २८ दृष्टांत २९ सीता का 'रामा' के रूप में उल्लेख और उनका जन्म अयोध्या में बताना। —उपमा।उदाहरण ३० प्रतीक ३१ उत्प्रेक्षा ३२ प्रतीक।
३३ मजनू की हितुर सीताराम जग रामा की लहै नाम। (उल्लेख)

	आवृत्ति
छीता, छद ३० [1] नल दमन १६५।८,[2] अनुराग बासुरी, ४।२[3]।	
हनुमान—चदायन (प०ला०गु०), ३५११, ४,[4] पदमावत २४८।दो० २४।१०,[5] वही ४६१।५[6] वही, ५२०।१ ३,[7] वही ६११।१ २,[8] वही, ६१२।१,[9] वही ६४१।७,[10] छीता (हस्त०) छद ३० और ३१[11]।	अ ६, दृ १ =१०
योग=	प्र ७ अ ६१ द १७ उ २६ ——— ११४

(ख) महाभारत स्रोत के पात्र एव घटना सदर्भ और प्रयोग

अर्जुन (पार्थ धनञ्जय)—लारकहा (मा०प्र०गु०) १३।३ ५[12] चदायन १३।४ ५[13] मिरगावत (हस्त०) दिल्ली वाली प्रति (अनुकृति उन्यशकर शास्त्री के पास) छद २१२,[14] मगावती ३७७।१[15] पद्मावत ४४२।४[16] वही ६११।१ और ४[17] चित्रावली, ३८६।७[18] ज्ञानदीप छद १०८[19] वही पृ० ६२	प्र २, अ १२ द १ उ १ =१६

---

१ उपमा।

२ तिहि क रूप चित्र एक चीता, वहै राम क जानै मीता। (रूपक)

उत्प्रेक्षा ४ दृष्टात, ५ रूपक ६ उपमा ७ उपमा।उदाहरण, ८ उपमा ९ उदाहरण १० रूपक।

११ ह लपमन हनवत म थार मर कौन बिना करतार। छद ३० (उपमा)

× × ×

हनुमान सौं जो सग होइ, हनुमान रिप सब सुम होइ। (उपमा)
ल आव वह जीवन मूर पुनि आवहि दुग धाव सपूर।
गमो बलु मो दलु मैं नाहि जो चलि दिल्ली लन को नाहि॥ छद ३१ (रूपक)

१२ उदाहरण।उपमा १३ उत्प्रेक्षा, १४ रूपक, १५ उल्लख, १६ यनिरक १७ उपमा १८ प्रतीक।

१९ तब देवजानी मन अकुलानी बवनि आस ऐन नर प्रानी।
ध्यान सनक हम तनिक जा दप छुट ताप जीवन कर नेप॥
टरत सभु कर अस्थिर आसन धारय कर सा तजत मरामन।
मोहन व्रभ धुरदर डालत मटरमुन।
नकु रूप मम दपि क कहि न हात जिव सून॥१०८॥ (अत्यक्ति)

आवृत्ति

छन्द १७३[1] वही पृ० १०६ छन्द २६८[2] यथा मधुमालती (हस्त०) पत्र ३ छद १८[3] वही पत्र ७, छन्द ४४[4] सुभटराइ (हस्त०) पत्र २ छद ४[5] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० ६४[6] वही (उत्तरार्द्ध) हस्त०, पृ० १७६[7] अनुराग बाँसुरी १६।१६[8]।

कर्ण – मृगावती ८।४[9] वही ३३।३[10] पद्मावत १७।२[11] अ ७ द १ वही १४५।७[12] वही ६१७।१ और ५[13] मधुमालती १३।३[14] चित्रावली ८०।२[15] ज्ञानदीप छन्द १६५[16]।

कौरव—मृगावती ३७६।दोहा[17] पदमावत ६२५।४[18] अ १ द २=३ रतनावती छन्द १७३[19]।

दुर्योधन—माधवानल कामकंदला (बड़ा हस्त० प्रति)[20] द १

द्रौपदी—मृगावती ३७७।२[21] पद्मावत ८३।१[22] अ १ द १=२

परीक्षित—ज्ञानदीप छन्द १२४[23] अ १

---

१ तस धन भुजा भीम कै बाना महा बानन्त परथ समाना। (उपमा)

२ भीम भुजा अरजुन धन बाँहा पुत्र मोग मुनिअत सभ कहा। (उपमा)

३ धनुष लय चूक नही पर्यहि बसेयत बान। (व्यतिरेक)

४ भौंह धनुष त्यौरी सो तानी जिन निरखी सा हू थी बिलानी।
अति अचूक सनमुख भय भारत, अरजुन हूँ दयित सो हारत॥ (व्यतिरेक)

५ भीम भुजा उपमा कुवर भारत अर्जुन बान।
चूकत नाहि न हद फर्ने जीतत है चौगान॥ (उपमा)

६ वह जिउ फिर देह मो कस काइला बीच धनमज जस। (उदाहरण)

७ कह राम औ रावन कहाँ किसुन औ कस।
कहाँ भीम अरजुन करन कहें सरवर कह हस॥ (दृष्टांत)

८ प्रतीक ९ व्यतिरेक १० उपमा ११ व्यतिरेक १२ दृष्टांत १३ उपमा, १४ १६ व्यतिरेक १७ दृष्टांत १८ अतिशयोक्ति।

१९ अमर भई मोहन की बात नित नित का जग ना ठहरात।
× × ×
कित बल बेन कहाँ कसार करौं पाडो बल अपार॥ (दृष्टांत)

२० २१ दृष्टांत २२ उपमा

२३ छाडि ध्यान धन कर दुष गुन धाइ धरा वीरज दस गुन।
× × ×
हाइ सुभाव वानि हठि बाधो चक्र परछोत कि छाती बाधो॥
(अतिशयोक्ति)

	आवृत्ति
पाण्डव—मिरगावत (हस्त०, दिल्लीवाली प्रति) छंद २१२,[1] मृगावती (प०ला०गु०) २३२।१,[2] वही, ३७६।दोहा,[3] पदमावत, ५५६।६[4] वही, ६३५।४,[5] ज्ञानदीप छंद ३०४,[6] रतनावती, छंद १७३[7]।	अ २, दृ ४ उ १=७
पाण्डु—ज्ञानदीप, छंद ३०४[8]	दृ १
भीम—चंदायन २०१।२[9] वही २६३।२ ३,[10] पदमावत ६१४।[11] चित्रावली, ४६८।५,[12] वही ५००।६[13] ज्ञानदीप, छंद १७३[14] वही छंद २६४,[15] वही छंद ६४०,[16] कथाकवलावती (हस्त०) पत्र ३ छंद १८[17] पुहुप वरिषा पत्र १३ छंद ८३[18] कथा सुभटराइ पत्र २ छंद ४,[19] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० १७६[20] अनुराग-बाँसुरी १६।१ ६[21]।	प्र २, अ ११ दृ १, उ १ =१५
महाभारत का युद्ध (कुरुक्षेत्र का युद्ध)—पदमावत २४२।दोहा २४।८[22] वही, २६४।७[23] वही २६४।दोहा २५।८,[24] वही, ६३२।दोहा ५३।१२,[25] ज्ञानदीप, छंद २६८[26] कथा कवला	प्र ११ अ २, =१३

---

१ जहिया हनवत लंक गढ़ ढाहा यहै धनुक राघौ पहँ अहा।
जो पाडौ कौरौ दल जीता यहै धनुक अर्जुन कर लेता॥ (रूपक)

२ उल्लेख ३ ४ दृष्टांत, ५ अतिशयोक्ति, ६ ८ दृष्टांत, ६ उल्लेख, १० उपमा, ११ उदाहरण

१२ बाजौं आजु भीम की नाई, मारौं जो अय दइ गोसाई। (उपमा)

१३ मानुष अस बल कर न पारा निज यह पुहुमि भीम औतारा। (उपमा)

१४ पछी जाइ कहा धौं पाव चल सरग कहँ पुहुमि मिलाव।
तस बल भुजा भीम क बाना महा बानइत परथ समाना॥ (उपमा)

१५ भीम भुजा अरजुन बल बाँहा, पुन भार सुनिअत सम कहा। (उपमा)

१६ अगसर जूझै भीम सौं, औ अरजुन सम होइ।
अबहिं जाहु घर आपन, जो आएहु मति पाइ॥ (प्रतीक।उपमा)

१७ रस करिव कौं बाहु हैं बल कौं भीम समान। (उपमा)

१८ परयौ देव ऐस आकार, भीव अढार मनहु पहार। (उत्प्रेक्षा)

१६ उपमा २० दृष्टांत, २१ उदाहरण/प्रतीक २२ उपमा/प्रतीक, २३ २५ प्रतीक।

२३ महाभारत युद्ध का रूपक (देवयानी का शृंगार सखिया द्वारा)—
बिधि सरवन बिधि पुटिल बिराग, धरम सुत अन्न काम कर साज।
तरिवन तुरन आनि पहिरावा, मानो करन रथ पहिया लावा॥

आवृत्ति

ध्रुव— पदमावत १६।८[1] वही १०।१५[2] वही, १०६। दोहा १०।११[3] वही २८२।५[4] चित्रावली पृ० १८ छं० ४४ दोहा।[5] अ ५

नल—पदमावत ४१७।७[6] माधवानल कामकंदला (हि० प्र० गा० या० स०) पृ० २२८ पंक्ति १४[7] हंस-जवाहिर ५८२।८[8]। प्र १ अ २ =

नारद— नारदवाणी (मा० प्र० गु०) छं० ८० चौ० ४[9] कथा नल दमयन्ती पत्र १२ छं० ५५[10]। उ २

पर्वत ऋषि— कथा नल दमयन्ती पत्र १३ छं० ५५[11] उ १

परशुराम—पदमावत ६१२।२ और ४[12] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० १६६[13] अ २

बलि—मृगावती ४।४[14] पदमावत १७।८[15] वही ६१४।६[16] वही ६१४।७ दोहा ५२।८[17] माधवानल कामकन्दला पृ० १६५ पंक्ति ८[18] चित्रावली १४।४[19] वही २०।४[20] वही ४०।८[21] वही ४२।१२[22] चित्रावली अ १० द १ =११

---

१ रूपक २ उत्प्रेक्षा ३ हेतूत्प्रेक्षा ४ उपमा

५ एहि कर सत्त जस ध्रुव अचल, तुम पति सारंगपानि।
परमन होयहु इन्द्र जहि बेगि पुरावहु आनि॥ (उपमा)

६ उदाहरण, ७ प्रतीप ८ उपमा

९ ब्रह्मा लइ कर नारद आवहु चाँद सूर पै आज जियावहु। (उल्लेख)

१० नारद पर्वत दोरे दोउ कह्यो इन्द्र के नर होइ। (उल्लेख)

११ उल्लेख १२ उपमा

१३ लोग भौंह कह धानुक बाचहिं राम जो प्रसराम न आवहिं। (व्यतिरेक)

१४ १५ व्यतिरेक १६ उदाहरण १७ अतिशयोक्ति १८ उपमा

१९ जहाँ तहाँ परगट भव रूपा बानि चरन चौं है जेहि ससा।
टूठ जाइ बलि बासुकि चापा ऊपर डरि सुरपति पुनि काँपा॥ (अतिशयोक्ति)

२० एकहि बर एक कहँ दई दूसरि बर न कोऊ लेई।
पिरथी बली होत जो आजू मागत दनि दान कर साजू॥ (व्यतिरेक)

२१ दान निसान चहूँ खंड बाजा, करन कुबेरु बनु बलि लाजा। (व्यतिरेक)

२२ तपन्ह कहाँ तें धर्म सँगीता सत हरिचंद दान बलि जीता। (व्यतिरेक)

४२२।३ ७[1] कथा रतनावती छंद १७३[2]। आवर्ति

भगीरथ – चन्दायन (प० ला० गु०), २४५।१[3]। अ १

मार्कण्डेय[4]— पद्मावत, ६११।१ और ३[5]। अ १

मातलि (इन्द्र का सारथी—नल-दमन, ३३३।५ ६[6]। अ १

मुद्रिका – पद्मावत, ६११।चौ० १ और ३[7]। अ १

राधा – पदमावत ४२८ १[8], वही ४२६।४[9], कथा प्र १, अ १, कवलावती पत्र ३२ छंद २००।[1] द १=३

व्यास—पद्मावत ७६।७[11], वही ४४६।२[12] इन्द्रावती अ १ (उत्तरार्द्ध) हस्त० प० ८१[13]।

वेणु राजा—पदमावत १६०।१[14] माधवानल-कामकदला अ २ द १=३ (हि० प्र० गा० का० स०) प० ११५, पंक्ति १८[15] कथा रतनावती, छन्द १७३[11]।

शालिहोत्र[17]—नल दमन, ३३३।५ ६[18]। अ १

सहस्रबाहु (सहस्रार्जुन)—चन्दायन(प०ला०गु०) १२१।५ [19] अ २

---

१ सामाजिक स्थिति चित्रण के संदर्भ में—

दक्खिन परवत उत्तर गंगा सोई चल जेहि पौरुष संगा।
पहिरहिं जो नाँहि कर विचारा बीचहिं मारि लेहि बटमारा॥
जहा तहाँ देखहिं परिकर इका राम जूझि जस रावन लंका।
जा पुहमी बलि दरवन राता तहा जात कोउ पूछ न बाता॥
आपुहि आप जनावहिं जाई, जो योहि मारग देइ बताई।

(विरोधाभास—द्रव्य का विरोध निया स)

२ कित बल थेन बहा कसार करौं पाडी धने अपार। (दृष्टांत)

३ उदाहरण, ४ मार्कण्डेय एक ऋषिकुमार थे जिन्होंने शिव की आराधना दृढ़-व्रत होकर की और उनके अनुग्रह से अपने को यम बंधन से मुक्त किया (दे० पद्मावत—संजीवनी व्याख्या, (वा० श० अ०) टिप्पणी, प० ८१६)। ५ उपमा

६ क मा सालोत्तर जिन कहा क मातलि इंदर पह अहा। (सन्देहालंकार)

७ उपमा ८ (स० राधिका —प्रा० राहिआ —अप० 'राही') उदाहरण

९ दृष्टान्त

१० नंद उड़यो कहा त पयो आयो जहा तहाँ हरनपी।
बटी हीं बहु दुप को जारी भरमी राधा देपि मुरारी॥ (प्रतीक)

११ १३ उदाहरण, १४ १५ उपमा १६ दृष्टान्त, १७ शालिहोत्र एक ऋषि थे जिन्होंने इन्द्र को अश्वचालन विद्या सिखायी थी। १८ सन्देह

१९ (स्नम 'अरजन' का अर्थ सहस्रार्जुन है जिसका रावण से युद्ध हुआ था) उत्प्रेक्षा

आवृत्ति

पदमावत, १०२।५[1]।

सावित्री—इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) पृ० १२६ मानिक मन्द दोहा ६६[2] वही, (उत्तरार्द्ध) हस्त० प० २१६[3], वही (उत्तरार्द्ध) हस्त० प० ३०१[4]। — प्र २

सुधर्मा—कथा कंवलावती पत्र ३ छंद १८[5]। — अ १

हरिश्चन्द्र—मृगावती ३७६। दोहा[6] पदमावत १६०।१[9], मधुमालती ११।८[10], वही १३।४[11] चित्रावली ४३।१२[12] वही ४३।६७[13] ज्ञानदीप छन्द ६३[14]। — अ ४ द २ उ १ = ७

हिरण्यकश्यपु—चित्रावली ४५।६७[13]

द १
प्र ११
अ ४५
द १२
उ ६
= ७४

(घ) वैदिक और पौराणिक देवी-देवता आदि सदर्भ और प्रयोग

अश्विनीकुमार—कथा कंवलावती पत्र ३ छंद १५[14]। — अ १

इन्द्र—(सहस्राक्ष, सुरपति मघवा वृष्टि का देवता)—चन्दायन २०।२ ४[14] वही २५।५[16] मृगावती ५।४[17] वही २८३।८।३[18] पद्मावत १४।८५[19] वही ५३।८।८ — अ ४२ उ २ ४४

---

१ [illegible]

२ सावित्री में पाय तर है जबहि अनूप जो सब सी पाव और हाथ का भूप। (प्रसाद)

३ तुम जिन अस [illegible] काया धन सावित्री जे नहिं आना। (प्रतीप)

४ [illegible] की सावित्री रात [illegible] आंसू की धार। (प्रसाद)

५ सभ [illegible] सभा बनाव [illegible] सुधर्मा की [illegible]। (उपमा)

६ [illegible] ७ ६ उपमा १० व्यतिरेक ११ [illegible],

१२ [illegible] मन और [illegible] तुम [illegible]।
[illegible] बाई [illegible] बिनाई॥
[illegible] हरिचंद राजा भाव। (दृष्टान्त)

१३ [illegible] हाथ [illegible]।
[illegible]। (दृष्टान्त)

१४ [illegible] बड़ी [illegible] याम [illegible]।
[illegible] प्रमानिक वार [illegible]॥ (व्यतिरेक)

१५ [illegible] १६ उपमा १७ अतिशयोक्ति १८ [illegible] १९ अनुप्रास

आवत्ति

३।८[1] वही, ६५।५[2], वही, १०८।६[3] वही, १७६।दोहा १६।५[4] वही २१८।४[5], वही २४१।५[6] वही, २६५।३[7], वही, ४२१। दोहा३४।२८[8], वही ४२२।१,[9] वही ४६५।२[10] वही, ५०५।१[11] वही ५०६।३ ५[12], वही, ५१५।चौ० २ और ४[13] वही ५२१।६[14], वही ६२६।३[15], वही, ६२६।४[16], वही ६३०।५[17] मधुमालती, १०।१ २,[18] वही, १५६।५[19], वही, १८७।दोहा,[20] वही २१८।दोहा[21] चित्रावली, १४।४ ५[22] वही, ७६।दोहा[23] वही, १६१।३ ४[24] वही, ५१०।दोहा,[25] वही ५१८।१ ४[26] वही ५४२।६[27] वही ६०८।१ २[28] ज्ञानदीप, छंद १०८[29], वही, छंद १६५[30] माधवानल कामकदला प० १८४ प० ११[31] वही, प० १८८ प० १३[32] वही, प० १२६ प० १५[33] वही प०१६४ प० ८[34] कथा कँवलावती पत्र ३ छंद १८[35] कथा नल दमयंती पत्र १३ छंद ५५[36], कथा पुहुप वरिषा पत्र ४ छंद २५[37] हंस जवाहिर, १४७।दोहा[38] नल दमन ६।८[39] वही ४५।७[40], वही ७६।३[41] वही, ११७।दोहा[42] वही २४६।६ ७,[43] वही १८१।

---

१ रूपक २ उपमा ३ ८ अत्युक्ति, ६ उपमा १० १२ अतिशयोक्ति, १३ १४ उपमा, १५ अतिशयोक्ति, १६ उपमा, १७ २० अतिशयोक्ति २१ उल्लेख

२२ जहा तहाँ परगट सब देसा बाजि' चरन चीन्हे अहि सेसा ।
हठ जाइ बलि बासुकि चापा ऊपर इरि सुरपति पुनि काँपा ।। (अतिशयोक्ति)

२३ व्यतिरेक २४ रूपक, २५ उत्प्रेक्षा

२६ बठेउ कुअर सिंह-आसना कह नर अहै पाकसासना ।
यह मघवा परतच्छ देखावा, तजि सुरभौन छर वहँ आवा ।। (रूपक)

२७ मा उर निकट बठि अब साइ, भजहु राजा इन्द्र की नाइ । (उपमा)

२८ गाऊ नारि दोऊ दिसि लसी, इन्द्र साथ रभा उरबसी । (उत्प्रेक्षा)

२९ मान्त प्रभ पुरदर डोलत मदरमूल ।
नकु रूप मम देपि क, केहि न होत जिव मूल ।।दोहा १०८।। (अत्युक्ति)

३० राज कर लागा एह राजा, दिन दिन मानहुँ इन्द्र होइ गाजा । (उत्प्रेक्षा)

३१ ३३ अतिशयोक्ति ३४ उत्प्रेक्षा

३५ ग्यान पुंज पंडित ढिग बस, बनि स इन्द्र पास सुर जस । (उपमा)

३६ नारद पवत दौर गाऊ कही इन्द्र क नेरें हाइ । (उल्लेख)

३७ ३८ अतिशयोक्ति ३९ उल्लेख ४० उत्प्रेक्षा ४१ अतिशयोक्ति
४२ व्यतिरेक, ४३ उल्लेख

दोहा,[1] वही ३३२।५६[2]।

कमला (यथा रमा लक्ष्मी)—पदमावत ५३।६[3] कथा प्र १ अ ३—४ गीता, छन्द ५[4], यूसुफ जुलेखा (हि० प्रे० गा० का० स०) प० ३६० पंक्ति १२ १३[5] (रमा), अनुराग बाँसुरी ५।३ ।[6]

कामदेव (रतिपति मदन अनंग मनोज मकरध्वज प्र १ प्र ६, मन्मथ)—पदमावत ११७।६[7] माधवानल कामकंदला वही उक्त द१ उ१—१२ निगिन प्रति[8] वही (हि० प्र० गा० म०) प० १८८ प० १३[9] वही पृष्ठ १६७ प० ११[10] ज्ञानदीप छन्द १६४[11] वही छन्द ३७१[12] चित्रावली ५३६।६ ७[13] कथा रतनावती छन्द १२० (दोहा १२६ के बाद की चौपाई ३[14]) कथा नल दमयन्ती पत्र ३ छन्द १७[15] वही पत्र १३ छन्द ६३[16] यूसुफ जुलेखा (हि० प्र० गा० का० स०), प० ३६० पंक्ति १२ १[7] (मनोज)।[17]

---

१ दम बिय वह ना मिल जो लग लगन न होइ ।
दम मिल तो इन्द्र सा दम्भी और न कोइ ।। (उपमा)

२ क मा मानासर जिन कहा क मातलि इदर पह अहा ।
क उजन राजा नल होई, क सो इद्र मघवा नहिं कोइ ।।
(स देह)

३ (लक्ष्मी) प्रतीक ४ उत्प्रेक्षा, ५ ६ व्यतिरेक ७ उत्प्रेक्षा

८ गरब सरब दुख देत रतिपति लकापति मुए ।
कम आदि किउ रेत जुरजोधन सासरायु मुन ।। (दृष्टान्त)

९ उत्प्रेक्षा १० व्यतिरेक ११ उल्लेख

१२ तीनि पहर एह रनि मह करिय जो करना हाइ ।
तब निचित अठेउ एक ठाइ मानहुँ रति रतिपति की नाई ।। (उत्प्रेक्षा)

१३ अप्रस्तुत प्रशसा (साम्य निब धना)

१४ भरि अकवार मिल रति मत मन उमग प उमडत तन ।
(प्रतीक।उत्प्रेक्षा)

१५ निपन्ही छीत लक आव न निसर डिठ मेरे जान कटि तरी रानी मन भूप की।
(उत्प्रेक्षा)

१६ कनक सदन में रति मदन दमयती नलराइ ।
कीडा लीला करत हैं मानत हैं रस चाइ ।। (रूपक)

१७ व्यतिरेक/अतिशयोक्ति

	आवृत्ति
गणेश—ज्ञानदीप छद ३०[१] वही, छद ३०४।[२]	अ १, द १=२
चद्रमा और राहु—नारवहा (मा० प्र० गुप्त) ४०।१ २[३], पदमावत, ६१।३[४] वही, ३०४।५[५] वही, ३३२।७[६], वही ३४८। ३[७] वही ३६३।५[८], वही, ४२४।६[९], वही, ४४०।७[१०] वही, ४४१।६ ७[११] वही, ४४८।७[१२] वही, ४७२।५[१३], वही, ५२०।दोहा ४३।७[१४], चित्रावली, ४३८।६[१५], वही, ८३६।६ ७[१६], ज्ञानदीप, छद ३३५[१७], हस जवाहिर, १२५।चौ० ४ और ६[१८], वही, १८४।६ ७[१९] वही, २१७।२ ४[२०], वही २५८।दोहा[२१] वही २६४।दोहा[२२] ।	प्र ३, अ १८=२१
चद्रमा-सूर्य और राहु—पदमावत ३२८।४ ५[२३] वही, ३७०।१ २,[२४] वही ६०९।दोहा ५१।३[२५], वही, ६१०।७[२६] हस जवाहिर १२५।४ और ६[२७]।	अ ५
तैतीस कोटि देवता—पदमावत, २६४।४ ७, दोहा ८।[२८]	उ १
धन्वतरि– चित्ररेखा, पृ० ६२।दोहा १[२९] माधवानल कामकदला (हि० प्रे० गा० का० म०) पृ० २२२।पक्ति १८[३०] चित्रावली, ३०८।४[३१] ।	प्र ३ अ १=४
नौ अवतार (विष्णु के)—चित्रावली, ४७६।५ ७[३२]	उ १
पार्वती—चित्रावली, ३६७।७[३३] अनुराग-बासुरी, प० १३६, छद ४ चौ० २[३४] ।	अ १ उ १=२

---

१ हौं गुन गुनी गनेस ज्यों हौं जोग जुग ब्रह्म ।
जोग सिपहु तुम चित्त धरि कर विदवा आरम्भ ॥ (उपमा)

२ मुए बाहु जेइ कहा की महीं मुए राम नहिं सीता रही ।
मुए पडु अस पाडव मुए कौरो मुए जो गर्बहिं छुए ॥
मुए रिपेश्वर मुए महमू गनपति मुए, मुए पुनि सेमू ।
ससही पुहमी भरहिं न अता ससहि सूर साएर ससमता ॥
उडइ सुमर पर सम तूला तुम पडित भल पनि गुनि भूला । (दृष्टान्त)

३ रूपक, ४ उत्प्रेक्षा ५ उदाहरण ६ व्यतिरेक, ७ विरोधाभास ८ अतिशयोक्ति ९ प्रतीक १० रूपक ११ प्रतीक, १२ प्रतीक । रूपकातिशयोक्ति, १३ उत्प्रेक्षा १४ उपमा १५ अप्रस्तुतप्रशसा (सादृश्य निबधना) १६ अप्रस्तुत प्रशसा १७ रूपक १८ व्यतिरेक १९ उदाहरण । अप्रस्तुत प्रशसा २० अप्रस्तुत प्रशसा (सादृश्य निबधना) २१ अत्युक्ति २२ उत्प्रेक्षा २३ उपमा २४ २६ अप्रस्तुत प्रशसा २७ व्यतिरेक २८ उदाहरण २९ ३० प्रतीक, ३१ प्रतीक।उपमा, ३२ उत्प्रेक्षा ३३ उदाहरण, ३४ उत्प्रेक्षा

आवृत्ति

ब्रह्मा — लोरकहा ४०।४[1] चंदायन ६३।दोहा[2], वही, २६६।गाथा[3] पदमावत ५४।गा० ?।४[4] वही १०८।६[5] वही २६५।४[6], ज्ञानदीपक छं० ३०[7] वही छं० १०८।[8] — अ ७, उ १ = ८

ब्रह्मा का दिन — नल दमन २१२।६६ । — अ १

रति — चित्रावली १८।५[9] ज्ञानदीप छं० १६८[10] कथा नल दमयन्ती, पत्र ३ छं० १७[11] वही पत्र १३ छं० ६३[13] कथा रतनावती छं० १३० चौ० ३[14], अनुराग बाँसुरी ८।३[14] । — प्र१ अ४ = ५

राहु — मधुमालती ६१।दोहा[15] वही ३१३।१[17] वही २८५।दोहा[18], हंस जवाहिर २६८।दोहा[19] । — अ३ उ१ = ४

राहु केतु — लोरकहा, ४०।१-[20] चंदायन ३।५[21] वही ६७।गाथा[22] वही ३३४।१२[23] पदमावत ३६३।५[24], यूसुफ जुलेखा (हि० ग्रं० गा० का० म०) पृ० ३५६ पंक्ति ४[25] वही पृ० ३६८, पं० १[26] वही पृ० ३६८ पं० ११[27]। — अ ६ उ२ = ८

विश्वकर्मा — पदमावत २८६।३[28] मधुमालती ६२।१[29] वही ६३।१ यूसुफ जुलेखा (हि० ग्रं० गा० का० स०) पृ० ३५६ पं० २[31] वही ६० पं० ७[32] वही पृ० ३६१ पं० २६[33] । — अ ६

विष्णु (उपेन्द्र) — चंदायन ६३।दोहा[34] — अ १

बृहस्पति — माधवानल कामकंदला (हि ग्रं गा का म) पृ० १८५ पं० १३[35] कथा कवलावती पत्र ३, छं० १५[36] । — अ २

शिव (त्रिनयन गिरिजापति, महेश) — पदमावत — अ१ द१ उ१ = ३

---

१ उल्लेख २ ६ अतिशयोक्ति ७ उपमा ८ अतिशयोक्ति (दे० इन्द्र),
९ १० उपमा ११ उत्प्रेक्षा (देखिए कामदेव ११)
१२ उत्प्रेक्षा (दे० कामदेव १५)
१३ १४ रूपक (दे० कामदेव १६)
१५ प्रतीप १६ फलोत्प्रेक्षा १७ उल्लेख १८ २० रूपक २१ २२ उल्लेख,
२३ रूपक २४ अतिशयोक्ति २५ २६ उत्प्रेक्षा २७ उपमा २८ ३१ उत्प्रेक्षा,
३२ व्यतिरेक ३३ उपमा, ३४ अत्युक्ति ३५ उत्प्रेक्षा
३६ नगर महा वडडो कहा कहिय आयो गयो न वामैं नहिय ।
ताम वसत बसतु हैं प्रोन्त सभ ब्रिहसपति ही सम सोहत ॥ (उपमा)

आवृत्ति

२१२।५[1] ज्ञानदीप, छंद, ३०४[2], इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त०, प० २२७[3]।

सूप (रवि)—ज्ञानदीप छंद १२०[4]। अ१

योग=	प्र ६
	अ ११३
	द ३
	उ ११
	१३६

(ङ) गन्धर्व, यक्ष और अप्सरा आदि सम्बन्धी प्रयोग

इन्द्र की छप्पन अप्सराएँ—हंस जवाहिर, १२५।दोहा[6], इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० प० ९[6], वही हस्त० पृ० १०[7] मृगावती, ३८२।दोहा[8] — अ ३ उ१=४

उर्वशी—कथा कौतूहली पत्र ३, छंद २[8] चित्रावली ६०८।१२[9], यूसुफ-जुलेखा (हि प्रे गा का स) पृ० ३६० प० १२ १३[11] अनुराग-बाँसुरी १।४५[12] वही १३।५६[13], वही ७१।६[14]। — अ५ उ१=६

कुबेर—पद्मावत, २६५।५[15] वही ३८७।६७ (धन — अ ४ द१=५

---

१ उल्लेख २ दृष्टान्त

३ जोगी कहिये जोगी सोई भोगी कहिये भोगी होई।
जोग देखि त्रिनन बखाना, भोग देखिक किन्न लजाना॥ (व्यतिरेक)

४ आपन हाथ कीन्ह निरदोषा समुन्द जात बिन जनु रवि पोषा। (उत्प्रेक्षा)

५ व्यतिरेक,

६ चला मखिन सग प्रेमी नाहा ... चला जनु अछरिन माहा। (उत्प्रेक्षा)

७ मंदिर मा सुख सेज बिछावा तापर राजा को बैठावा।
... भइ अपछर चहूँ पासा खाच इन्द्र बठा कबिलासा॥
(रूपकातिशयोक्ति)

८ उल्लेख ९ मनकी कि मनका मुक्सी ऊर्वशी रंभ क तों घ्रिनाची
क तिलोत्तमा क गोन है। (सन्देह)

१० आया जगन्नाथ दरबारा ममिहर निय मग दुई तारा।
नाऊ नारि दोऊ दिसि लमी, इन्द्र साथ रंभा उरबसी। (उत्प्रेक्षा)

११ व्यतिरेक १२ उल्लेख, १३ यमक और रूपक, १४ उल्लेख १५ अत्युक्ति,

आवृत्ति

सचय के कारण उसका विनाश)[1] मधुमालती २१८।दोहा[2], माधवानल कामकन्दला (हि० प्रे० गा० का० स०) पृ० १८४ पं० १३[3] चित्रावली ४०।३[4]।

घ्रिताची—ज्ञानदीप छन्द ३७१[5], कथा कौतूहली पत्र ३ छन्द २[6] कथा नल दमयन्ती पत्र ३ छन्द १७[7] कथा छीता छन्द ५।[8] अ ३ उ १ =४

क्षमजा—ज्ञानदीप छन्द ३७१।[9] उ १

तिलोत्तमा—ज्ञानदीप छन्द ३७१[10] छीता छन्द ८[11] कथा कौतूहली, पत्र ३ छन्द २[12], कथा नल दमयन्ती पत्र ३ छन्द १७[13], इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) पृ० १४१ छन्द ६०।१[14] वही इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० ७६[15] अनुराग बाँसुरी पृ० १२६ छन्द ४ चौ० ३[16] अ ६ उ १ = ७

पलोमजा—ज्ञानदीप, छन्द ३७१[17] कथा नल दमयन्ती पत्र ३ छन्द १७[18] अ १, उ १ = २

मेनका—छीता छन्द ५[19] कथा कौतूहली पत्र ३, छन्द २[20] कथा नल दमयन्ती पत्र ३ छन्द १७[21] इन्द्रावती अ ५

---

१ दृष्टान्त २ ३ अतिशयोक्ति ४ व्यतिरेक ५ उल्लेख ६ सन्देह

७ नननि मेनिका घ्रिताची छबि घेरी किया लटकी सुनट लजू है चिबुक भूप की। (उपमा)

८ राजा के घर तनिया जाई मनुष रूप धरि कवला आई।
कोऊ अस करत बिचार भयो अपछरा को अवतार॥
रच सुकसी की उनीहार क माक घ्रिताची नार। (सन्देह/उत्प्रेक्षा)

९ १० उल्लेख

११ क तिलोत्तमा आप है, चाहत बाद याहि।
किधौ निकारी रूप है किधौं मोहिनी आहि॥ (सन्देह)

१२ सन्देह १३ केस सुकेसी निवास तिल तिलोत्तमा वास।
लोम म पलोमजा है रभ जाति रूप की॥ (यमक/उत्प्रेक्षा)

१४ मुख पर अधिक स्याम तिल सोभा रति तिलोत्तमा को मन मोहा। (अत्युक्ति)

१५ है रति की है गोरी की तिलोत्तमा रूप, यह जान्दर कविलास का,
आन परी परन्धा। (सन्देह)

१६ व्यतिरेक, १७ उल्लेख १८ यमक

१९ सन्देह (दे० घ्रिताची ८) २० सन्देह (दे० उर्वशी ९) २१ उपमा (दे० घ्रिताची ७)

	आवति
(उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० ११[1], वही, पृ० १९[2]।	
मनकी—कथा कौतूहली पत्र २, छंद २।[3]	अ १
मोहिनी—कथा छीता छन्द ५।[4]	अ १
रंभा—चित्रावली, ३१८।५[5] वही, ६०८।१२[6]	अ १४
ज्ञानदीप छन्द ३७१[7], कथा रतनावती, छंद ८८।चौ० १[8] कथा कामलता ('हिन्दुस्तानी', पृ० १२७ दोहा १० के बाद चौपाई १३[9]) कथा नल दमयंती पत्र ३ छंद १७[10] कथा कौतूहली पत्र ३, छंद ७[11], माधवानल कामकंदला (हि० प्रे० गा० का० स०) पृ० १६० प० ३[12] यूसुफ-जुलेखा (हि० प्रे० गा० का० स०) पृ० ३६० प० १२ १२[13], इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) स्वप्नखंड छंद ३८।दोहा[14] वही फुलवारी खंड छन्द ४०।२[15] वही, मानिक खंड छंद ७५।दोहा[16] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त०, पृ० ७३[17] अनुराग	उ २=१६

---

१ जो तेरो छबि मैनका, देख रहे लजाय। ता मन तोव मूरत बस,
जन महुँ प्रीत न जाग ॥ (व्यतिरेक)

२ चितवन सखी मनका भेखा धन मुख ऊपर घूंघट देखा। (उपमा)

३ सन्देह (इ० उर्वशी ६), ४ सन्देह (द० तिलोत्तमा १०)

५ खेलहिं तिया सबहिं बिलम्हाइ, रति के रूप रंभ की जाई। (उपमा)

६ थामो जगन्नाथ दरबारा ससिहर लिय सग दुइ तारा।
दोऊ नारि दोऊ दिसि लसी इन्द्र साथ रंभा उरबसी ॥ (उत्प्रेक्षा)

७ उल्लेख,

८ रतनावति है मानहु चंद सखा सुक्र गुर मंगल मंद।
जल रंभा सी लागत नारी, किधौं चंद त चीर निकारी ॥ (सन्देह)

९ नाभ कुंड कलधूत विराज, के जल कैसी भौंगी छाज।

× × ×

जाध कहूँ कि रंभा खंभ रूप अनूप कि रंभ अचंभ। (सन्देह)

१० उपमा (दे० तिलोत्तमा और पलोमजा) ११ सन्देह (दे० उर्वशी, मेनका)।

१२ १३ व्यतिरेक, १४ इन्द्रावति है पदुमिनी, रंभा तुल न ताहि।
एक जीभ सो कित मैं ताको सका सराहि ॥ (व्यतिरेक)

१५ कहाँ गयी वह दीप सिखा-सी जाका स रंभा की दासी। (व्यतिरेक)

१६ सूधर सुन्दर बिमल तन बिमन सहज है जाहि।
नहिं का पूछ चाहिए रंभा चेरी जाहि ॥ (व्यतिरेक)

१७ तहि पातुर को रंभा नाऊं रंभा जनु उतरी वह ठाँऊ। (उत्प्रेक्षा)

आवृत्ति

बाँसुरी, पृ० ६३ छंद ५ चौ० ३[1] वही ८।२[2] वही ७।१६[3]।

विद्याधर — माधवानल-कामकन्दला (हि० प्र० मा० का० स०) पृ० १९६ प० १७[4] रतनमंजरी पत्र १२ छं० ८२[5]। — अ १ उ १ = २

विद्याधरी — इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) प० ८५ छन्द ११।१[6] — उ २

शची (इन्द्राणी) ज्ञानदीप छन्द ३७१[7] अनुराग बाँसुरी, ६८।३[8] वही ८।३[9]। — अ ३

मेनका — कथा छीता छन्द ५[10] कथा नलदमयन्ती पत्र ३ छन्द १७[11] कथा कौतूहली पत्र ३ छन्द २।[12] — अ [illegible]

हाहा (इन्द्र की सभा का एक गायक गंधर्व)— चित्रावली ७६।दोहा[13] कथा पुहुप बरिखा पत्र ४, छन्द २६[14] कथा रतनमंजरी, पत्र १२ छंद ८ [15]। — अ २ उ १ = ३

हूहू (इन्द्र की सभा का एक गायक गंधर्व)—चित्रावली ७६।दोहा[16], कथा पुहुप बरिखा पत्र ४ छन्द २४[17] कथा रतनमंजरी पत्र १२ छन्द ८२[18]। — अ २ उ १ = ३

योग — अ ५३
द १
उ १३

= ६७

(ख) भारतीय पौराणिक पर्वत, वृक्ष, लता आदि

अमरबेलि — पद्मावत ४३।८[19] — उ १

अमृत — ज्ञानदीप छन्द २[20] — अ १

आकाश गंगा — पद्मावत १००।दोहा १०१।२[21] — अ १

कल्पतरु — पद्मावत ८३।८[22] — अ १

छप्पन कोटि बनिया — पदमावत २८४।४ दोहा ८[23] — अ १

---

१ २ व्यतिरेक ३ उत्प्रेक्षा ४ उपमा

५ है इन्द्रावति विद्याधरी विद्याधरी आप अवतरा। (रूपक)

६ ७ उत्प्रेक्षा ८ ९ व्यतिरेक १० उपमा ११ यमक/उपमा १२ सन्देह

१३ अतिशयोक्ति/व्यतिरेक १४ अतिशयोक्ति १५ उत्प्रेक्षा १६ अत्युक्ति। व्यतिरेक १७ अतिशयोक्ति १८ १९ उत्प्रेक्षा

२० छपा छपाकर छीपा कीन्ह अमा छपाइ छप कहँ दीन्ह। (अनुप्रास)

२१ २२ उपमा २३ उत्प्रेक्षा

आवृत्ति

छियानवे कोटि मेघ—पदमावत २६४।४ ७दोहा ८[1] उ १

मदराचल—पदमावत, १४२।६[2] वही २६५।५[3], ज्ञान दीप छंद १०८[4]। अ ३

सवा लाख पर्वत—पदमावत २६८।४ ७ और दोहा[5]। उ १

सुमेरु—पदमावत २४२।६[6] वही २६८।५[7] वही २६८।६[8] वही २८२।५[9] वही, ४६५।२[10] वही, ५२६।दोहा ५३।६[11], वही ६३७।३[12] मधुमालती, १५६।५[13] वही २१८। दोहा[14] चित्रावली २०।१४[15] वही ४४।७[16], ज्ञानदीप छंद ३०४[17] वही छंद १२[18]। प्र १ अ १९ द १=१

योग	प्र १
	अ १७
	उ ४
	=२२

(छ) तीर्थ स्थान आदि

अड़सठ तीर्थ—नलदमन ४०।६ ७[19], अ १

गिरनार—चित्रावली, ४१२।दोहा[20], उ १

ठाकुरद्वारा—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० २६६[21]। अ १

---

१ उल्लेख २ उपमा, ३ ४ अतिशयोक्ति, (द० ब्रह्मा इन्द्र) ५ उल्लेख
६ रूपक ७ ६ उपमा १० अतिशयोक्ति ११ उपमा १२ १५ अतिशयोक्ति

१६ बादि मरजिआ समुद धँसाइ बादिहि लागि रतनगिरि जाइ।
बादि सुमेरु लागि जग धाव बस न बार जहँगीर के आव॥
(व्यतिरेक।अतिशयोक्ति)

१७ तब हँसि गिरिजा हरमुख हेरा कहसि सुमेरु सत्त ठहिकेरा। (उपमा)

१८ उतंग सुमेर पात सम तूला तुम पंडित भल पढि गुन भूला। (दृष्टांत)

१९ थिरन रूप राज जगमाही राजा राय सो पावँ तराही।
अस न पाव जहाँ थामहि सापहि समुद सुमेर नवावहि॥ (प्रतीप)

२० भाउ बिमानी पुरुष सजाया कोऊ नान व साज वियोगी।
निनद्वर दरसन जाइ जिन पाया जनु अठसठ तीरथ ह्व आया॥ (उत्प्रेक्षा)

२१ जहि इच्छा बसु जिय रहै आगिरा जनम विचार।
करवट लागि पराम महँ बार परहि गिरनार॥ (उल्लेख)

२२ पायउ सामु गुरो सब भारा बजनाथ पो ठाकुरद्वारा।
वहि मूरत का गुनत बगारु, पानसर बेवहारा नजान॥ (व्यतिरेक)

आवृत्ति

प्रयाग—(प्रयाग में जाकर करवत लेना) चित्रावली ४१२।दोहा[१]। — उ १

स्वयम्वर—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० २६६[२]। — अ १

योग — अ ३, उ २ = ५

(ज) पौराणिक अस्त्र शस्त्र वाहन

अर्जुन का धनुष (गाण्डीव)—पद्मावत (प० ला० गु०) ७८।३ ८[३] वही २६२।५ (मनेरशरीफ प्रति १४७ अ)[४] मृगावती ३८।१[५] पदमावत १०२।५[६] वही ४७३।५[७] नलदमन, ६०।८ ६[८] — अ १ अ५=६

अर्जुन का बाण—पद्मावत १६७।५ ७[९] अनुराग-बाँसुरी १४।[१०]। — अ २

अहुठ (साढ़े तीन) वज्र[११]—मृगावती २४६।दोहा[१२] पद्मावत ५०८।दोहा ४२।२०[१३] वही ५१८।१[१४] वही ५२६।दोहा ४३।११[१५]। — अ १ उ१=२

कृष्ण का धनुष—पद्मावत, १०२।३ ४[१६]। — अ १

चन्द्रमा का रथ—पदमावत ८१।१[१७] — अ १

---

१ उल्लेख २ व्यतिरेक ३ व्यतिरेक ४ उदाहरण ५ उपमा ६ रूपक ७ प्रतीप ८ उत्प्रेक्षा ९ उदाहरण १० रूपक

११ 'अहुठो वज्र' (साढ़े तीन वज्र)
डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने 'पद्मावत' संजीवनी व्याख्या द्वितीय सं० पृ० ६५६ पर इसके विषय में यह टिप्पणी दी है — कौषीतकि ब्राह्मण (१२।२) के अनुसार वज्र के तीन रूप थे — अन्न, सरस्वती और पंचदश ऋचाएँ। इन्हीं वज्ररूपों से देवों ने असुरों को इन लोकों से भगा दिया। शतपथ ब्राह्मण' (१।२।४।१) में इसी का एक और प्रचलित रूप दिया है — इन्द्र ने वृत्र पर वज्र चलाया। उसके चार टुकड़े हो गये। एक तिहाई में तलवार (स्फ्य) एक तिहाई से यूप और एक तिहाई में रथ बन गया। वज्र चलाने से जो एक चिप्पी गिरी, वही बाण हुआ। मत्स्य पुराण के अनुसार विश्वकर्मा ने सूर्य को खराद पर चढ़ाया। उसके तेज की जो छीलन उतरी उससे विष्णु का चक्र शिव का त्रिशूल और इन्द्र का वज्र बना। इसी में यहीं इतना और है कि संसार में जितना कुछ विनाशकारी तत्त्व है वह बचे हुए चूरे में बन गया।

१२ उल्लेख १३ उत्प्रेक्षा १४ १५ उपमा १६ रूपक १७ अतिशयोक्ति

आवत्ति

परशुराम का धनुष बाण—मिरगावत (दिल्ली वाली प्रति अनुकृति श्री उदयशकर शास्त्री के पास) छद २१२[1] मगावती, ३३।८ाहा[2], पदमावत, १०२।५[3] । — अ ३

सूय का रथ—पद्मावत ४१।१[4] — अ १

योग — प्र १, अ १४, उ १ — =१६

(ख) पौराणिक पशु पक्षी एव कीट

उच्च श्रवा—चित्रावली २६१।७[5] कथा कवलावती, पत्र ३, छद १६[6] — अ २

ऐरावत—पदमावत, ५०६।५[7] कथा कवलावती, पत्र ३, छ० १६[8] । — अ २

कूर्म (कच्छप कमठ)—पदमावत ४०।१२[9] वही ४५।दोहा २।२१[10] वही, २४१।७[11], वही, २६५।६[12] वही, ४६७। दोहा ४२।६[13] वही, ५१४।७[14], चित्रावली, ३५४।१[15], नल दमन १४।४[16] । — अ ८

गरुड—पद्मावत, २६४।दोहा २५।८[17] — अ १

तक्षक—यूसुफ जुलखा (हि० ग्र० ना० का० स०) पृ० ३५६। पक्ति १२[18] — अ १

---

१ उपमा २ ३ रूपक ४ अत्युक्ति

५ उच्चश्रवा सूर सग ली ह, छिन मह पुहुमि सहस ससि कीहे। (रूपकातिशयोक्ति)

६ सुतुति असुनि कमै कीज, कौन आन पटतर कन दीज।
उच्चइस्रवाक कहत सुरपति कै बुरौ लगै आग इन गति क ॥ (व्यतिरक)

७ अतिशयोक्ति

८ ऐरापति सम गज सभै, रथ सभ मनहु विमान।
भाति मिली अति दहुन की रूपगइ मरतवान ॥ (उपमा)

९ १० अतिशयोक्ति

११ माहिल सन साजि दल चला कमठ कसमसा, अहि खलवला। (अतिशयोक्ति,)

१२ १७ अतिशयोक्ति,

१८ कस मास का कर बखाना तक्षक दखि सो ताहि लजाना। (व्यतिरक)

आवृत्ति

नागफास—पद्मावत ६७।४[1]। उ १

नागों के अष्ट महाकुल[2]—पदमावत ६६।दोहा १०।१[3] अ १

वासुकि (फणीन्द्र)—चंदायन (प० ला० गु०) १३।१ २[4] अ २२ उ१
वही १००।दोहा[5] वही ११६।१[6] मृगावती ५।४ ५[7] वही २३
१०६।चौ० ५, दोहा[8], वही २५४।५[9] वही ३८२।दोहा[10]
पदमावत १४।४ ५[11] वही ४०।१ २[12] वही ६६।१ २[13] वही
१७६।दोहा १६।५[14] वही २४१।५[15] वही ३०२।५[16] वही
४२१।दोहा ३४।२८[17] वही ५०४।१[18] वही ६३०।४[19] मधुमालती २१८।दोहा[20], माधवानल कामकंदला (हि० प्र० गा० का० स०) पृ० १८४, प० ११[21] वही पृ० १८४ प० १३[22] वही पृ० २१७ प० १,[23] चित्रावली १४।४ ५[24] नल दमन १४।५[25]
यूसुफ जुलेखा (हि० प्र० गा० का० म०) पृ० ३५८ प० १७[26]
वही पृ० ३६३ प० १० ११[27]।

गवनाग—पद्मावत ६५।दो० २।२१[28] वही २६५।३[29] अ १७
वही ४६५।२[30] वही ४६७।दो० ६२।६[31] वही ६२६।४[32] वही द १=१८
६३७।६[33] चित्ररेखा पृ० ८२ चौ० १ ४[34] मधुमालती ११६।५[35]
वही १७०।दोहा[36] वही ४३१।१ २[37] माधवानल कामकंदला
(हि० प्र० गा० का० स०) पृ० १८८ प० ६[38] वही पृ० २२६
प० १५[39] वही पृ० २४० प० २[40] चित्रावली ४।६[41] वही
३५४।१[42] ज्ञानदीप, छंद ३०८[43] कथा कामावती, पद्य ७ छं[44]

---

१ उल्लेख

२ नागों के अष्ट महाकुल वासुकि तक्षक कुलक कर्कोटक पद्म, शंखचूड़ म[हा]पद्म धनंजय (द्र० पद्मावत संजीवनी व्याख्या पृ० ६७)

३ अनन्तो वासुकिः पद्मो महापद्मा[स्]तथैव च।
कुलीर कर्कट शंखाह्याष्टौ नागा प्रकीर्तिता ॥ (शब्दकल्पद्रुम २।८४६)

४ उत्प्रेक्षा ५ ६ अत्युक्ति ७ हेतूत्प्रेक्षा ८ अतिशयोक्ति ९ निदर्शन[ा]

१० अत्युक्ति ११ उल्लेख १२ १६ अत्युक्ति १७ व्यतिरेक

१८ २२ अतिशयोक्ति, २३ उत्प्रेक्षा २४ २७ अत्युक्ति

२८ ३१ अतिशयोक्ति ३२ रूपक, ३३ अतिशयोक्ति ३४ उपमा

३५ ४० अतिशयोक्ति

४१ नाग तहां परगट मन सा बानि चरन चौ है ब्रह्मिसता। (अतिशयोक्ति)

४२ अतिशयोक्ति

४३ मुए रिपम्बर मुए महमू, गनपति मुए मुए पुनि सेसू। (दृष्टान्त)

आवृत्ति

५१[1], कथा कामलता (हिंदुस्तानी पत्रिका, पृ० १२८) दोहा १६[2]।

योग= अ ५४
द १
उ २

५७

(ज) लोक—समुद्र आदि

अमरावती—कथा रूपनावती पत्र ३ छन्द १५[3] अ १

अष्ट ब्रह्माण्ड—पद्मावत १४।८[4], वही ५०६।१२[5]। अ २

इन्द्रलोक (इन्द्रपुरी देवलोक सुरभवन)—पद्मावत २८।८[6] प्र १
वही, ४०।१२[7], वही ५१५।२ और ४[8], वही, ५५३।३[9] वही, अ९=१०
५५४।१[10] वही ५६०।६-७[11] चित्ररेखा, पृ० ७८ चौ० ३[12],
कथा रतनावती दोहा ३ के बाद चौ० ९[13] नल दमन १४।६ ७[14],
वही २७२।५[15]।

इन्द्रसभा—(इन्द्र का अखाड़ा) लोरकहा (मा० प्र० गु०) अ ६
६५।५[16], चदायन (प० ना० गु०), २६९।३ ६[17], वही ३७०।५[18]
पद्मावत, ४७।१[19] वही ११६।६[20] चित्ररेखा पृ० १०३।चौ०
५ ६[21] मधुमालती १५६।५[22] माधवानल-कामकंदला (हि० प्र०
ना० का० स०) पृ० १९४ प० ८[23], नल दमन २५८।३[24]।

---

१ हौं जगपति जगत सभ जानै तू मकहा जा आन न भान।
× × ×
काह होइ मधुपुर ज्यों मारूँ भेस भय नायनू छाईँ॥ (उपमा)

२ जा हौ रसना सेष प करिहौ मागि बपान।
छवि अस्तुति करि 'आन कहि गन्हि मेघ निस्पान॥ (उपमा)

३ मनहुँ अंत अमरावती, रूपराइ की गाव।
पपी जन पपी उपन औ सरवर बहु ठाव॥ (उत्प्रेक्षा)

४ अत्युक्ति ५ अत्युक्ति (यहाँ सप्तखण्ड पृथ्वी के एक खण्ड का ब्रह्माण्ड कहा गया है।) ६ उपमा, ७ प्रतीक ८ उपमा ९ उत्प्रेक्षा १० उपमा ११ उत्प्रेक्षा १२ उपमा,

१३ लियो गौनताबाद रिसाइ, इन्द्रपुरी तब तैं घरराइ। (अतिशयोक्ति)

१४ अतिशयोक्ति, १५ १६ उत्प्रेक्षा, १७ प्रमानकार, १८ २० उत्प्रेक्षा, २१ २२ अतिशयोक्ति, २३ उत्प्रेक्षा, २४ उपमा।

आवृत्ति

इन्द्रासन—पद्मावत, ११६।२ २[1], मधुमालती १५६।५[2] माधवानल-कामकन्दला (हि० प्र० ना० का० सं०) पृ० १८४ प० ११[3] वही पृ० १६४ प० ८[4] चित्रावली ५११।दोहा[5] नल-दमन ६।८[6]। — अ ५ उ १=६

कविलास (कैलास)—पद्मावत ४।५[7] वही ४६।१[8] चित्ररेखा प० १०७ चौ० ४[9] मधुमालती ८४।१[10], नल-दमन २८६।६ ७[11] चित्रावली, ४१६।दो०[12], इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० पृ० १०[13] वही पृ० ७६[14]। — अ ५ उ ३ = ८

चौदह भुवन (लोक)—पद्मावत ११५[15] वही, ४०८।८[16] वही, ६६।दो० ६।५[17], चित्ररेखा, पृ० ६५ चौ० १ २[18]। — उ ४

चौदह कुण्ड (नरक)—हंस जवाहिर १२५।दोहा[19]। — अ १

जम्बू द्वीप—पद्मावत १७६।६ ७[20] वही २६८।[21], वही २७२।५[22], वही २८७।५[23] वही ३६४।चौ० ६ ७, दोहा ३१।६[24] वही ४०१।६[25] मधुमालती १६७।२ ६[26] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त० प० ८[27] चित्रावली ४१६।दोहा[28]। — उ ८

तीन लोक—पद्मावत ६६।दो०६।५[29], मधुमालती, ८१।१[30]। — अ १, उ १=२

---

१ ३ अतिशयोक्ति ४ उत्प्रेक्षा

५ दसौं लोक ढूंढ़ता चला नहिं जानौं कहि काज।
पृथ्मी आव इन्द्र जनु तजि इन्द्रासन राज ॥ ५११ दोहा ॥ (उत्प्रेक्षा)

६ उल्लेख ७ उपमा ८ उत्प्रेक्षा ९ उल्लेख १० उत्प्रेक्षा ११ १२ उल्लेख,

१३ मन्दिर में सुख सेज बिछावा तापर राजा को बैठावा।
ठाढ़ भईं अपछर चहुं पासा बीच इन्द्र बैठा कविलासा ॥ (रूपकातिशयोक्ति)

१४ है रति की है गोरा, की तिलोतमा अंग।
कह अपछर कविलास का आय परी यहि ढंग ॥ (सन्देह)

१५ १८ उल्लेख १९ छपन अप्सरा इन्द्र का छिप जगत की रान।
काउ नहिं चौदा कुण्ड मा बन्दि क रूप समान ॥
(अतिशयोक्ति)

२० २७ उल्लेख

२८ जहाँ न मानुष संचरे निरंजन जाने मरम्म।
जम्बु दीप के मानुष भरत मह औगम्म ॥ (उल्लेख)

२९ उल्लेख ३० अतिशयोक्ति।

आवति

नव खण्ड पृथ्वी—चदायन (भोपाल प्रति, स० विश्वनाथ प्रसाद) ८५।५[1] चदायन (प० ला० गु०), २५०।दोहा[2], वही ३२७।४[3], वही, ३६३।४[4], पदमावत ४६८।दो० ४२।१०[5] मधुमालती १०।३[6], वही, ११।४[7], वही, ११।दोहा[8] वही, १३।दोहा[9] वही ४४।३[1], वही, ६०।दोहा[11] वही ६२।२[12], वही ८१।१[13] वही, १८६।दोहा[14], वही, ४१४।२[15]। — अ ५, उ ६=१४

नव निधि—पदमावत, ३७।१[16]। — उ १

पाताल—पदमावत, १४।४ ५[18], वही, ४३।४[18]। — अ १

ब्रह्मांड—मधुमालती, १८६।दोहा[19]। — अ २

भग्तखड—मधुमालती ३६७ ३ ४[20], चित्रावली, ४१६।-दोहा[21]।

मधुपुर (मथुरा)—कथा कनकावती, पत्र ७, छद ५१[22]। — अ १

शिवलोक—पदमावत ५०।दो० ३।१[23], वही, ५३।दोहा ३।४[24] वही ७५।१[25]। — प्र १, अ १, उ १ =३

षटखड—पदमावत १४।४[26]। — अ १

सप्त खड पृथ्वी—लोरकहा (मा० प्र० गु०) ४६।दोहा[27], पदमावत ५०६।३[28]। — अ १, उ १ =२

सप्त द्वीप—पदमावत, २५।१ ७[29] वही २७२।५[3] वही ४६८।दो० ४२।१०[31] वही ५०६।३[32], मधुमालती १०।३[33] वही, १३।दो०[34], वही ४४।३[35], वही, ६०।दोहा[36], वही, ६२।२[37], हस-जवाहिर, ११३।४[38] वही, पृ० ४२, प० १८ २७ तक, (छद ११५)[39] वही, १२५।७[4]। — अ ७ उ५=१२

---

१ नव खड प्रिथिमी सुना न काऊ, ऐस दान को देह बताऊ। (उल्लेख)

२ ३ उल्लेख, ४ अतिशयोक्ति ५ ६ उल्लेख, १० १३ अतिशयोक्ति, १४-१६ उल्लेख, १७ १८ अतिशयोक्ति, १६ उल्लेख २० उल्लेख

२१ उपमा (दे० शेषनाग) २२ उल्लेख, २३ रूपक

२४ प्रतीक (शिवलोक गमन मत्यु का प्रतीक) २५ अतिशयोक्ति
२६ उल्लेख, २७ अत्युक्ति,

२६ द्वीपा के नाम दिया द्वीप सरन द्वीप जम्बू द्वीप, लकाद्वीप कुश-स्थल द्वीप, महुस्थल द्वीप सिंहल द्वीप (भेदकातिशयोक्ति)

३० ३१ उल्लेख, ३२ अतिशयोक्ति, ३३ ३४ उल्लेख, ३५ ३८ अतिशयोक्ति, ३६ उल्लेख (कासिमशाह न हस जवाहिर' (छद११५) म इन सप्त द्वीपो के नाम गिनाये हैं महाद्वीप, द्वीप कम अस्थ दिया द्वीप, कनक द्वीप, सिंहल द्वीप, जम्बू द्वीप, सरा द्वीप।) ४० अत्युक्ति।

आवृत्ति

सप्त पाताल—पदमावत ४०।४[1] अ १

सप्त समुद्र (उदधि)[2]—पदमावत १४१।दोहा १३।२[3] वही, १४७।६[4] वही १५०।दो० १५।१[5], वही १५३।१२[6], वही ५२२।२[7]। अ ३ उ२=५

सप्त स्वर्ग (बैकुण्ठ)—लोरकहा (मा०प्र०गु०) ४६।दो०[8] वही ४६।५[9] पदमावत ४८।चौ० २।२४[10] वही ५०६।३[11]। अ २ उ२=४

स्वर्ग नरक—पदमावत ४३।४[12] वही १७६।दो० १६।५[13] चित्ररेखा, पृ० १०१ चौ० ५[14] मधुमालती, १८७।चौ०[15], अ ३, उ१=४

हरिश्चन्द्र की पुरी[16]—पदमावत ५०६।३ ६[17] चित्रावली, ४३।६ ७[18] वही २६७।३[19]। अ २ उ१=३

योग	प्र २
	अ ६६
	उ ४०
	१०८

१ अत्युक्ति।

२ जायसी ने पदमावत १४१।चौ०१३।२ में सात समुद्रों के नाम गिनाये हैं। ६ समुद्रों के नाम तो उन्होंने स्पष्ट लिये हैं जो ये हैं—खार खीर (क्षार), दधि उदधि सुरा और किलकिला। परन्तु सातवें समुद्र का जिक्र कहाँ है। उसका अर्थ मानसरोवर लगाना चाहिए। मानसरोदक सिंहल द्वीप में माना गया है—सनए ममु द मानसर आए (पदमावत १५८।१)। (द्र० पदमावत मनीषिना व्याख्या द्वि० सं० पृ० १६२)।

३ उल्लेख ४ उदाहरण ५ उल्लेख ६ अतिशयोक्तिहेतूत्प्रेक्षा,

७ (जायसी ने उदधि समुद्र को जलती हुई आग के समुद्र के रूप में माना है। देखिए सुलमान का यात्रा विवरण काशी पृ० ३२। जायसी दधि समुद्र से उदधि समुद्र का भिन्न मानते थे।) (उत्प्रेक्षा)

८ ९ उल्लेख १० उपमा ११ १३ अत्युक्ति १४ उल्लेख, १५ अतिशयोक्ति,

१६ अयोध्या के राजा हरिश्चन्द्र अपनी सब प्रजाओं के साथ स्वर्ग लोक चले गये थे। वहाँ उनके निवास के लिए एक अलग पुरी की कल्पना की गई है।

१७ उत्प्रेक्षा

१८ कोटि-पून एक देस बखाना सत्य पूत चारौ खड जाना।
निहचय सत्य अमर की पुरी प्रगट देखिय हरिचंद-पूरी॥ (उल्लेख)

१९ धाएउँ देखि रही घर का सी गई अथ हरिचंद पुरी सी। (उपमा)

आवत्ति

(ट) पद्मिनी नारी का उल्लेख

पद्मिनी नारी[1]—चदायन (प० ला० गु०), ३३।४[2], मगावती, ७६।२[3], पदमावत, १८४।५ ६[4], वही, १६०।४[5] नल-दमन, ३१।७।०[6], कथा रतनावती, दोहा ८२ के बाद, चौ० १[7], इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) मुद्रित स्वप्न खड पृ० १६, छद ३३।दोहा[8]।	उ ७
रजद्वीप की पद्मिनी—इन्द्रावती (पूर्वार्द) मुद्रित, मालिन खड पृ० ५१, छद ३० चौ० १-४[9], वही, फुलवारी खड, छद १, चौ० १ और ३[10], वही नहान खड पृ० ६०, छद १, चौ० २[11], वही, (उत्तरार्द्ध) हस्त०, पृ० ८[12]।	उ ४
सिंहल की पद्मिनी—मिरगावत (दिल्ली वाली हस्त० प्रति, अनुकृति श्री उदयशकर शास्त्री के पास), पृ० २०४[13], पदमावत, १८३।८[14], वही ४३१।४[15], वही, २०८।३[16], चित्रावली, ४१६। चौ०७ और दो०[17] ज्ञानदीप छद ४४६[18] नल दमन ३१।७ ८ और दो०[19] वही ३२।४[20]।	अ ३, उ५=८
योग=	अ ३ उ १६ १६

---

१ साधन माला (खड १) भूमिका भाग श्री विनयतोष भट्टाचार्य गायकवाड ओरियटल सिरीज म मुद्रित। सवप्रथम 'साधन माला' म ही उल्लेख हुआ है कि सिंहल म पद्मिनी जाति की स्त्रिया मिलती हैं दे० एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का बीमन प्रमाण।

२ ६ उल्लख

७ रतनावति को सुनि कै नाम, मुसकानी पदमिनी अभिराम। (उल्लेख)

८ ११ उल्लख

१२ औ हँसि कहेनि कुवर की ओरा जम्बू दीप जनम भा तोरा।
जहा काम तिसना औ माया, तहि तजि इहाँ विरल कोउ आया॥
जाग पाव को बल तुम पाएहु तेहि तनि राजदीप मो आएहु। (उल्लेख)

१३ सिंहल दीप कहवे जनु आवा पदुमिनि रूप विसेसह भावा। (उत्प्रेक्षा)

१४ उल्लख १५ १६ उपमा

१७ सिंघल दीप दीप उजियारा जो देखा सो मनि मनिआरा।
नर नारी सुन्दर सब बसगित जनु कबिलास।
ऊच नीच घर पदुमिनि मानहि भोग विलास॥४१६॥ (उल्लेख)

१८ भरि सुपपाल महस दुइ चेरी सब पदुमिनी सिंघल केरी। (उल्लेख)

१९ २० उल्लेख।

परिशिष्ट—२

भारतीय निजधरी आख्यानो और पात्रो आदि के प्रयोग

सूफी कवियो द्वारा अपन प्रेमाख्यानक काव्यो म भारतीय पौराणिक आख्यानों क अतिरिक्त कुछ निजधरी आख्यानो तथा पात्रो का भी प्रयोग किया गया है। इनका आलकारिक दाष्टार्न्तिक तथा उल्लखात्मक प्रयाग तो हुआ है किन्तु प्रतीकात्मक नही। नाथपथ से प्रभावित होन के कारण हिन्दी सूफी कवियो ने नाथपथी योगियों जसे मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ और जालधरनाथ के नामो का भी उपयोग किया है। इनके प्रतीकात्मक प्रयाग भी हुए हैं। निजधरी आख्याना तथा पात्रा क प्रयोग का स्वरूप निम्नाकित सदभ सूची से ज्ञात हो जाएगा

भारतीय निजधरी आख्यान

आवृत्ति

गोपीचन्द राजा को कजरी बन ले जाना जालन्धरनाथ योगी द्वारा

पदमावत ३४१।३ ३[1], वही १६३।६[2] वही १३०।६ ७[3] — अ ३ द १=४

भागी गोपीचद भागा म फँसे थे। जोगी जालधरनाथ उन्ह लकर बन मे चले गय। नागमती कहती है कि इसी तरह हीरामन सुग्गा मेरे प्रियतम को हर ल गया।

चित्रावली ४१६।१ और ४[4] गिरनार म आकर कुवर सुजान सोचता है कि सना और स्त्री को साथ म लाकर उसन ठीक

---

१ उदाहरण, २ उत्प्रेक्षा ३ उदाहरण (द० पदमावत सजीवनी व्याख्या द्वि० स० पृ० १४८ पर गोपीचद और कजरी वन सम्बन्धी टिप्पणियाँ)।

४ प्रेम पथ अक्सर पग दीजे एहिजा कोऊ सग न लीज।

× × ×

कुअर कटक ल ढूढन चाला सग सकल माया जजाला।
जो सेना गौनत एहि पथा गोपिचद नहि पहिरन कथा॥
अगसर होइ जो परचो अघावा कुमरहि ढूढि वेगि ल आवा। (दृष्टात)

आवत्ति

नहीं किया, क्योकि यदि इन्ही चीजों के साथ रखने से लक्ष्य प्राप्ति होती, तो राजा गोपीचद ने कथा न पहनी होती ।

बताल (अगिया बैताल)—माधवानल-कामकन्दला, हस्त०, नागरी उ १
प्र० सभा की प्रति, पृ० ३५[१] ।

भत्त हरि का रानी पिंगला के वियोग मे जोगी बनना— थ ७ द २ उ १
कजरी बन जाना =१०

मगावती, छद ३५[२] राजा न कुवर के लिए सरोवर-तट पर एक महल बनवा दिया जिसकी दीवारो पर पिंगला के वियोग म भर्तृहरि के वन जाने का चित्र भी बना था।

मगावती, ६६।दोहा[३] वही, ६७।२[४] राजकुवर मगावती क चले जाने पर वियोग-कातर होकर भत्त हरि के जोगी बन जाने के मध्ययुगीन आख्यान का स्मरण करता है।

पदमावत, १६३।६-७[५] सखी द्वारा पद्मावती को योगी रतन-सेन के विषय मे बताना और भत्त हरि से उसकी तुलना करना ।

वही २०८।३[६] रतनसेन शिव म कहता है कि जसे भत्त हरि के लिए पिंगला थी, वैसे ही मरे लिए सिंहल की पद्मिनी है ।

माधवानल-कामकदला (हि० प्रे० गा० का० स०), पृ० २०६ प० २०[७] वियोगी की दृष्टि से माधवानल और भत्त हरि की तुलना ।

वही पृ० २०८ प० १८[८] माधवानल मदिर म यह लिखकर रख आता है कि वियोगी ही वियोगी के दुख को समय सकता है । भत्त हरि होत तो समझते।

वही पृ० २१७ प० १२[९] पिंगला न जसे प्राण द दिय थे वसे ही माधवानल के मरने (झूठ मूठ) की खबर सुनकर काम कदला ने प्राण त्याग दिये ।

वही पृ० २३१ प० ६[१०] माधवानल-कामकदला वसे ही मिले जसे भत्त हरि और पिंगला मिले थे।

---

१ कहै बताल सुनो वलवीरा मैं ल्याऊँ जीवन को नीरा ।
 वेगहि गयो वीर बैताला सुधा-कुड जहाँ हतो पताला ॥
 भर घट लियो न विलम लगावा तुरत वार अवत ले आवा । (उल्लेख)
२ उल्लेख, ३ उदाहरण ४ उपमा ५ उदाहरण ६ ७ उपमा ८ दृष्टात
९ उदाहरण १० उपमा ।

आवृत्ति

क्रम की सवा प्रगिया बताल द्वारा , अ १
मगावती, २२७।दोहा[1]

योग	अ १४
	द ४
	उ ३
	२१

भारतीय निजधरी पात्र सदर्भ और प्रयोग

कालिदास—मानदीप, छद ७३ ।[2] उ १

गोपीचद राजा[3]—पदमावत, १३०।६ ७[4], वही, १६०।२[5], वही १६२।६[6], वही, ३६२।१ २[7], मानदीप, छद २८०[8], इन्द्रावती, (पूर्वार्द्ध) पृ० ४६, छद २३।७ और दोहा ।[9]

जगदेव[10] —पदमावत, ६११।चौ० १ और ३[11], अ १ द १=२

---

१ उदाहरण

२ पडित अगम छमीछा सूझ, अरथनि अरथ रच महँ सूझ ।
 काव्य करं ससकीरत भाषा, कालिदास कवि उपमा राषा ॥ (उल्लख)

३ गोपीचन्द बगाल के राजा माणिकचन्द के और उनकी रानी मनावती क पुत्र थे । मनावती न जो भर्तृहरि की बहिन थी, योगी गुरु जालधरनाथ से शिक्षा दिलवा कर (जालधरनाथ का नाम 'हाडपा' भी था) योग माग म प्रवृत्त किया । हिन्दी म लक्ष्मणदास द्वारा रचित एक गोपीचद गान है ।—(द्र० पदमावत सजीवनी व्याख्या द्वि० स० पृष्ठ १४८ ।)

४ उदाहरण ५ व्यतिरेक ६ सदेह ७ उदाहरण,

८ जोगी सीध जानि सत धाए, राएमान मोहि आपु सो आए ।
 कहनि कहाँ सौं आगहु गोपीचद अउ [illegible] ॥
 गोरखनाथ की अरथरी की हौ आनि सनाय । ([illegible])

९ ततीय तुल्ययोगिता

१० धार के परमार राजा उदयादित्य की बड़ी रानी [illegible] पुत्र का नाम [illegible] था । जगदेव अपनी विमाता के आदेश से, उनके पुत्र [illegible] के लिए [illegible] का माग निष्कटक करने के लिए [illegible] पाटन म महाराज सिद्धराज जयसिंह के यहाँ [illegible] बना लिया । जगदेव को सिद्धराज की [illegible] ([illegible] 'पदमावत सजीवनी व्याख्या', द्वि० स०, [illegible], पृ० ८८१ ८८७)। ११ उपमा ।

आवृत्ति

वही, ६३४।४[1] ।

जाज[1]—पदमावत ६११।चौ० १ और २[2] वही, अ १, दृ १=२
६३४।४[3] ।

पिंगला—मृगावती २३२।२[5] २२६।४ ५[6] पद्मावत अ ३
१६३।६-७[7] ।

बताल (अगिया बताल)—बदायन (प० सा० गु०) अ १ दृ२=३
२०५।४[8] माधवानल-कामकंदला हस्त० वही प्रति[9], वही (हि०
प्र० गा० स०) पृ० २२० प० १० १[10] ।

भर्तृ हरि—मृगावती २३२।२[11] पदमावत १६०।२[12] अ ८ दृ२=१०
वही १६३।६ ७[13] वही २०८।३[14] वही २६५।दोहा ४६।११[14]
ज्ञानदीप छं० ६३[15] वही छं० १६०[16] वही छं० २८०[18]
वही, छं० १७६[19], इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध), २३।चौ० ७ और
दोहा[20] ।

---

१ दृष्टांत २ उपमा ३ दृष्टांत
४ जाज रणथम्भौर के राजा हम्मीर का अत्यन्त विश्वासपात्र और प्रधान वीर था। यह अत्यंत स्वामिभक्त था। हम्मीर अलाउद्दीन के साथ युद्ध करते हुए जाज को ही अपना दुर्ग सौंपकर स्वयं दिवंगत हुए। जाज ने दो दिन तक बड़ी वीरता से दुर्ग की रक्षा करते हुए वीरगति पायी। (दे० पदमावत संजीवनी व्याख्या द्वि० सं० पृ० ८१६)
५ ७ उदाहरण ८ उल्लास,
९ सात बरस की बढ़यो मान, पाँच बरस पढ़ि भयो बताल। (पाण्डित्य का प्रतीक)
१० उल्लेख ११ उदाहरण १२ व्यतिरेक १३ सन्देह १४ उदाहरण,
१५ दृष्टांत, १६ दृष्टांत (दे० 'हरिश्चन्द्र')
१७ एहि दुप मा अति चमकत माथा जागि सो जोगि मछिन्दर नाथा।
जौं भोगी तौ राजा कोई भरथरि नाहीं दूसर होई ॥ (उपमा)
१८ सन्देह (दे० गोपीचंद ६)
१९ राजा बड़इ सुजान सरेखा विक्रम भरथ भोज कर लेखा।
कहेसि सोंचु अब पूछौं ताही एहि विधि कहौ कहाँ लिन जाही ॥
(तृतीय तुल्ययोगिता)
२० जोगी भेस न सकउँ सराही गोपीचन्द दूसरो आही।
होत जियत को भरथरी ताको चेला हात।
आइ बसा फुनवारी, सुनहु खोल मन स्रोत ॥६।२३॥ (व्यतिरेक)

आवत्ति

भीम (दगवै भीम)[1]—मगावती, १००।५[2], पदमावत, ३६१।१ २[3], वही, ६२६।६[4], वही, ६३५।दोहा ५३[5]। — अ ४

भरोनन्द—(यह सयाना, चतुर समझा जाता था, परन्तु इसे भी पछताना पडा)—मृगावती, २३०।४ ५[6]। — अ १

भोज—चदायन (प० ला० गु०) २६३।२ ३[7], मगावती, २२१।५[8] वही २३०।४ ५[9], वही २८०।१ २[10] वही ३७७।३[11] पदमावत ७३।दो० ६।१[12], वही ९१।दो० ८।९[13], वही ११७।३[14] वही २१२।६[15], वही २७१।४[16], वही ४४८।दोहा ३८।३[17] वही ५३५।१ २[18] मधुमालती १३।३[19], वही, १३।५[20], माधवानल-कामकदला (हि० प्रे० गा० का० स०) पृ० १९५ प० ८[21] चित्रावली, २९१।७ और दोहा[22] वही ५०६।१ २[23] वही — अ २२, द ७ उ १=३०

---

१ दगव भीम सम्भवत यह गुजरात का चालुक्य राजा भीम द्वितीय था। यह 'भोलो भीम' के नाम से प्रसिद्ध है। उसने कई बार मुहम्मद गोरी की सेनाओ को हराया था। (विशेष दे० 'पदमावत स० व्याख्या द्वि० म० प० ४४१ ४२)

२ उदाहरण, ६ ५ उपमा ६ उदाहरण ७ ८ उपमा ९ उदाहरण

१० उल्लेख ११ *दृष्टात*, १२ *उदाहरण (ततीय तुल्ययोगिता भी)*

१३ व्यतिरेक *(ततीय तुल्ययोगिता भी)*

हारे वररुचि भोज लोककथा के अनुसार वररुचि न घर बठे भोज के राजकुमार और सिंह भालू के वत्तात को जान लिया था। वस ही रतनसेन ने सुग्गे की बात जान ली। यो वररुचि स बढ गया। भोज जस भानुमती पर अनुरक्त था वस ही रतनसन पद्मावता पर इस प्रकार वह भाज से भी बढ गया।

१४ १५ उपमा, १६ १७ दृष्टात, १८ व्यतिरक (ततीय तुल्ययोगिता भी)

१९ २० व्यतिरेक (ततीय तुल्ययोगिता भी)

२१ दृष्टात (वन करन बल विक्रम भय धार भोज लखि जिन लिये।
ये सब मुए मीचु के मारे रीझि प्रान नहि दिए पियारे।।)
(श्री उदयशकर शास्त्री क पास वाली प्रति म)

२२ विक्रम नन पुहुमि सब औंटी भरी जाइ मरघट की माटी।
कहाँ सो विक्रम सकबँधी कहाँ सो राना भोज।
हम हम करत हेराइ गे मिला न खोजे खोज ।।२६१दाहा।। (दृष्टात)

२३ कहिसि कि सदा सोहागिनि रानी तुम समान पडित औ ज्ञानी।
मैं यह सुफल सुआ सो खोजा, चीन्हहु होइ सो राजा भोजा।। (उपमा)

आवलि

५०७।दोहा और ५०८।१[1] आदमीन, छन्द १८[2], वही, छन्द २१[3] वही छन्द ६२[4] वही छन्द १७६[5] वही छन्द १६०[6] वही छन्द १६५[7] वही छन्द २८०[8] वही कंदमावती, पत्र ३।छन्द १८[9], वही पत्र ३।छन्द २६[10] वही रतनावती छन्द १७३[11], हंस जवाहिर, ५२८।५[12], वही ४८३।१ २[13]।

वररुचि— मृगावती २४०।२,४[14] पद्मावत, ६१।दोहा ... १, ३१=२८।६[15]।

विक्रम (विक्रमादित्य) चन्दायन (प० मा० गु०) ७।१२[16] ... १८ ... ५, मृगावती २१०।४,५[17] वही ७७।४[18] पद्मावत, १७।२[19] वही, ३१=२८७।दोहा ६।१[20], वही १६०।१[21] वही २१२।६[22] वही, २७१।४[23] वही, २६२।दोहा २४।२१[24] वही ४६।१६[25], वही

---

१ तहूँ माह जिन बगी हना, मान्त्रि भग वरियार।
जयू नाप नरस गोर निरमम जाति देवार ॥८०७॥
तन जस विक्रम राजा आजा मैं निशावनि कहु बर गाजा। (उपमा)
२ राय सिरामनि दिनमनि जगा तखत सिंघासन ऊपर बगा।
अतिकुन्त ऊच मुकुम जग मानी बिक्रम भोज मरम रजधानी ॥ (उपमा)
तन का विधि यह निया निनागा तन मपराज कि दुप अवतागा।
प हम गनित नहिं निजु आव बिक्रम भोज सरिस मप पाव ॥ (उपमा)
४ दृष्टान्त (दे० हरिश्चन्द्र) ५ ततीय तुल्ययोगिता (दे० भर्तृहरि १६)
६ कबनहूँ फर की हु तहु भपू गाग्यनाथ की मभु मपगु।
करन राज एहु भोज ना नाम राज मनोज निशारन जागें ॥ (सन्देह)
७ उदाहरण, म न्दे।
६ नग की बह करन बहाव ग्यान भोज नीं पटतर पाव। (उपमा)
१० गान मानस बग पटायो न्त्ररतन को निग मगायो।
त उन चित्रनि थ गग आया दवि चिनगा राज लना यो ॥
राज कह्यौ कन मन पाग कचन क ढिगु काच न लाग।
पभ कहूँ न्द काऊ मागो कना भोज कहा तनी गांगो ॥ (अप्रस्तुत प्रशंसा)
११ अमर मई माहन की बात, नित नित को जगु ना ठहरात।
बिन बिक्रम कौन जिन सार भोज कनौ गावान्न जाव ॥ (दृष्टान्त)
१२ सन्देह, १३ उपमा १४ उत्प्रेक्षा १५ व्यतिरेक (ततीय तुल्ययोगिता भी)
१६ उत्प्रेक्षा १७ उदाहरण १८ दृष्टांत १९ व्यतिरेक, २० २१ उदाहरण,
२२ उपमा २३ दृष्टांत २४ स्मरण अलंकार २५ उपमा

आवृत्ति

५३५।११ २[1], मधुमालती, १३।३[2], वही, १३।५[3] माधवानल-कामकंदला (हि० प्रे० गा० का० स०), पृ० १६५, पृ० ६७,[4] वही पृ० १६५ पृ० ८[5], चित्रावली २६।१७ और दोहा[6] वही, ५०८।१[7], ज्ञानदीप, छन्द १८[8] वही, छन्द २१[9], वही छन्द १७६[10] वही, छन्द १६५[11], कथा रतनावती, छन्द १७३[12] हंस जवाहिर, ५५८[13] वही ५८३।१ २[14]।

लघौर देव[15]—पदमावत, ६३५।५[16] — उ १

लोना चमारिन (कामरूप देश का जादू-टोना जाननेवाली[17]— अ२ उ१=३ पदमावत, ३६६।३[18] वही ४४८।६[19], वही, ८८५।२[20]।

योग — अ ६८
दृ १६
उ ८

९२

१ ३ व्यतिरेक (तृतीय तुल्ययोगिता भी) ४ उपमा, ५ ६ दृष्टांत ७ १० उपमा ११ व्यतिरेक, १२ दृष्टांत (दे० भोज), १३ संदेह १४ उपमा।

१५ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार। लघौर देव नामक एक कल्पित हिन्दू राजा था जिसे अमीर हमजा ने जीतकर अपना मित्र बनाया था। अमीर हमजा के दास्तान में यह बड़े डील-डौल का और बड़ा भारी वीर कहा गया है। परन्तु डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का मत इस सम्बन्ध में यह है कि जायसी ने हिन्दू राजा के लिए देव शब्द का प्रयोग बराबर किया है। वारंगल (प्राचीन एक शिला) के काकतीय राजा प्रताप रुद्रदेव (१२९६ १३२३ई०) को अमीर खुसरु बरनी एवं अन्य मुसलमान इतिहासकारों ने 'लुद्दरदेव' लिखा है। रुद्रदेव के नाम का यह अपभ्रंश रूप था। यही लुद्दरदेव लिघउर देव के रूप में 'किस्से अमीर हमजा' में शामिल कर लिये गये। रुद्रदेव अत्यन्त शक्तिशाली और गुणी राजा थे। (दे०—पदमावत संजीवनी व्याख्या डा० वा० श० अ०, द्वि० सं०, पृ० ८४५)।

१६ उल्लेख

१७ मध्यकाल में प्रसिद्धि थी कि कामरूप (असमप्रदेश) में लोना चमारी तंत्र मंत्र की जाननेवाली थी।

१८ रूपकातिशयोक्ति।उत्प्रेक्षा १९ उल्लेख २० उदाहरण।

आवृत्ति

नागपंथी एवं अन्य योगी तथा साधना स्थल

कजरी वन[1]—पदमावत १२०।६ ७[2] वही, १६३।६ ७[3], अ ४
वही ४६३।६[4] वही, ५०८।दोहा ८।२।२१[5] ।

गोरखनाथ -मृगावती ८८।५ और दोहा[6] वही, १६०।३[7], प्र २ म ६
वही ३०३।दो० २७।१३[8] पदमावत ३०३ दो० २७।१३[9], मधु उ १=१२
मालती १७२।दोहा[10] वही, २६१।५[11] माधवानल कामकंदला
(हि० प्र० गा० बा० म०) पृ० २०५ पृ० १६[12] ज्ञानदीप
छन्द १६०[13] वही छन्द २८०[14] वही छन्द २६२[15] चन्द्रावती
(पूर्वार्द्ध) मुद्रित, पृ० ४३ मार्गिन मण्ड, ८।२ ३[16] ।

गोरखपंथ—चन्दायन (प० ला० गु०) १७४।१ २[17] प्र २ उ १=३
मृगावती ४८।५ दोहा[18] वही १०४।५ और दोहा[19] ।

गोरखभेष चन्दायन (प० ला० गु०) १७४।१ २[20] मधु प्र २, उ १=३
मालती १७२।दोहा[21] वही २६१।५[22] ।

---

१ कजरी वन—एक वन जहाँ सिद्धों का निवास है। ऋषिकेश से बदरिकाश्रम तक का वन प्रदेश महाभारत (वन पर्व अ० १४६।७५ ७६) में कदली वन कहा गया है। यह भी कहा गया है कि वहाँ केवल सिद्धों की गति होती थी। (बिना सिद्धगति वीरगनिरत्न न विद्यते)। कदलीवन का ही लोक में कजरी वन हो गया। (द० पदमावत संजीवनी व्याख्या द्वि० सं०, १४८ और ६२५)।

२ उदाहरण ३ उत्प्रेक्षा।उदाहरण, ४ ५ उदाहरण, ६ रूपक, ७ उल्लेख ८ ६ रूपकातिशयोक्ति, १० प्रतीक।उपमा, ११ प्रतीक, १२ उपमा।

१३ एहि दुप मा अति चमकत माथा जोगि तो जोगि मछिन्दरनाथा।
जो भोगी तो राजा कोइ भरथरि नाही दूसर होइ।
कवनेहुँ फर कीन्ह एह भेषू, गोरखनाथ की समु सपेषू।
करहु खोज यह साज सो नाग चोज मनाज निहारत जाग॥
(मंजूषा से राजकुंवर जब बाहर निकाला गया तब उसके रूप का वर्णन)
(उपमा/संदेह)

१४ संदेह (द० गोपीचन्द ८) १५ व्यतिरेक

१६ जोग मोर औ गुरु तुम्हारा जाइहि भूल जासि ठग मारा।
जाकी चितवन भय बहाया नाथ मुछन्दर गोरखनाथा॥ (अत्युक्ति)

१७ प्रतीक २८ उल्लेख, १६ प्रतीक, २० उल्लेख, २१ २२ प्रतीक।

	आवृत्ति
चौरासी सिद्ध[1]—२६४।दोहा २५।८[2]	उ १
जान्धर नाथ—पदमावत, ३६१।६[3]	अ १
नौ नाथ—पदमावत, २६४।दो० २५।८[4]	उ १
मत्स्येन्द्रनाथ—पदमावत, १६०।३[5] वही, २३८।४[6], इंद्रावती (पूर्वार्द्ध) मुद्रित पृ० ४३, मालिन खंड, ४।२ ३[7]।	अ १, उ २=३
योग	प्र ६
	अ १५
	उ ७
	२८

१ चौरासी सिद्ध सिद्ध सम्प्रदाय के चौरासी गुरु। 'सुधाकर चंद्रिका', पृ० ६०२ पर एक सूची दी हुई है जिसमें चौरासी सिद्धों के नाम चौरासी आसन मुद्रा में हैं। देखिए— नाथ सम्प्रदाय ह० प्र० द्वि०, पृ० २४ २७।

२ उल्लेख, ३ उदाहरण

नाथ सम्प्रदाय के नौ प्रमुख आचार्य। इनके नामों की कई सूचियाँ मिलती हैं (दे० श्री शशिभूषणदास गुप्त 'आब्सक्योर रिलीजस कल्ट्स' पृ० २३६-२४१, दे० 'नाथ-सम्प्रदाय' डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ० २७ ३७)। नवों नाथों की सूची में आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ जालंधरनाथ गोरखनाथ के नाम तो सर्वसम्मत हैं। चौरंगीनाथ कृष्णपादनाथ, गाहिनीनाथ चर्पटनाथ, निवृत्तिनाथ आदि नाम भी हैं। (दे० 'पदमावत' संजीवनी व्याख्या, द्वि० सं०, पृ० ३०२)।

४ ६ उल्लेख, ७ अत्युक्ति (दे० गोरखनाथ)।

परिशिष्ट—२

लोकप्रिय प्रेमाख्यानों के नायक-नायिकाओं के प्रयोग

हिंदी सूफी कवियों ने मध्यकाल में लोकप्रिय कई प्रेमाख्यानों के नायक-नायिकाओं को तथा 'पंचतंत्र' 'कथा सरित्सागर' में वर्णित एवं और प्रचलित कथाओं का भी प्रतीक, अलंकार, दृष्टांत तथा उल्लेख के रूप में प्रयोग किया। उनके संदर्भ और प्रमाण-स्वरूप यहाँ दिए जा रहे हैं :

इंदुवदन कँवलावती—कथा कौतूहली हस्त० पत्र १५ छंद १ छंद सवैया ६[1]।

छिताई[2]—पदमावत ४६२।१[3] वही ४६३।७[4] वही ... ३ ५००।७[5]।

परमरूप—कनकावती[6]—कथा कौतूहली हस्त० पत्र १५ छंद १ छंद सवैया ६[7]।

---

१ रूपरास नद इंदुवदन कहात आमा ... दुप ... आन कँवलावती।
कहाँ रहा बीनी मधुकर मधुमालती के कहा कहा कीनीं धौं कुंवर मिरगावती।।
कतो दुप दम्पी पुरंदर कलावत काज कस के परमरूप पाइ कनकावती।
कंचन तें कुंदन ज्वाला की परख महँ लह बिन दुपु ... न भावती।।
(दृष्टांत)

२ छिताई देवगिरि के राजा की कन्या थी। दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने देवगिरि पर चढ़ाई की। राजा गढ़ छोड़कर भाग गया। अलाउद्दीन उसकी रानी और लड़की छिताई को अपने साथ दिल्ली ले गया। छिताई के सम्बन्ध में अवधी में 'छिताई वार्त्ता' काव्य लिखा गया है। जान कवि ने भी 'कथा छीता' में इसी कथा को लिया है।

३-५ उल्लेख

६ जान कवि ने कथा कनकावती में इसी कथा को लिया है।

७ दृष्टांत।

	आवृत्ति
पुरदर—कलावती[1]—मदभ वही[2]।	द १।
बसन्त—सेऊ—पदमावत, ७३।दोहा ६।१,[3] हस जवाहिर प० १६५ छद ३६८।७[4]।	अ ?
मधुकर मधुमालती—माधवानल-कामकदला (हि० प्रे० गा० का० स०) पृ० २०८।प० २०-२१[5], वही, प० २१८, प० १८-१६[6] कथा कौतूहली, पत्र १५, सवया ६[7] वही पत्र ४, चौ० २०[8], कथा लल मजनू हस्त० पत्र ३१, छन्द ६७[9] कथा मुभटराइ, पत्र ४ छद १७[10] अनुराग बासुरी प० १४७[11] छद २४।४।	प्र १, अ ५, द १=७
मनोहर मधुमालती[12]—पदमावत २ ३।६[13], चित्रावली, पृ० १२ छद ३०।५ ७[14], हस जवाहिर पृ० ११७ छद ३२२।३ ५[15]।	अ २ द १ =३

१ जान कवि ने कथा कलावती म इसी प्रेमाख्यान को आधार बनाया है।
२ दृष्टान्त ३ उपमा,
४ योगी अभी न काहू देखा न्यो सा वह बावर लेखा।
जहि विधि सउ बसन्त ओ खोवा तस तोय खोय चहत पुनि रोवा॥ (उदाहरण)
५ उदाहरण ६ अप्रस्तुत प्रशसा, ७ दृष्टान्त,
८ जबहि बन आयो चित कुवर, बहुरि मालती ताकी भँवर। (प्रतीक)
(मधुमालती) (मधुकर)
९ लल मजनू जग मैं अमर निवह्यो हित ज्या मालति भवर। (उदाहरण)
१० रूप भैंप कै रीझ्यो कँवर जसैं मालति ऊपर भँवर। (उदाहरण)
११ उदाहरण
१२ कथा के लिए देखिए मभनकृत मधुमालती (स० डॉ० माताप्रसाद गुप्त), 'मधुमालती पर श्री व्रजरत्नदास का लेख, हिंदुस्तानी, अप्रल १६३८ पृ० २६२, 'मभन कृत मधुमालती' श्री चन्द्रबली पाडे का लख, 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका कार्तिक १६६५, पृ० २५१ २६४। डा० माताप्रसाद गुप्त का 'मधु मालती सम्बन्धी लेख भी देखिए— नागरी प्रचारिणी पत्रिका' हीरक जयती अक। प्रस्तुत प्रबध का अध्याय २ भी देखिए, ३१ दृष्टान्त,
१४ मगावती मन रूप बसेरा राजकुवर भयो प्रेम अहेरा।
सिहल पदुमावति मो रूपा प्रेम किया है चितउर भूपा।
मधुमालति होइ रूप देखावा प्रेम मनोहर होइ तह आवा। (रूपक)
१५ पूरब दश के योगिन देखा कहा मनोहर मालत लखा।
दखन दश के आए भिखारी शीश धुना जो विरह विचारी॥
भई य कला मनोहर ताहीं, परो रूप दसा कहि ठाहा। (उदाहरण)

आवृत्ति

माधवानल कामकन्दला—मिरगावत (हस्तलिखित, दिल्ली वाली प्रति प्रतिलिपि श्री उदयशंकर शास्त्री के पास) छन्द २ ५[1], मृगावती (पं० ला० गु०) १७१।१२ (उपर्युक्त का पाठांतर मात्र), वही २३२।२[2] पदमावत, २००।६ ७[3], ज्ञानदीप छंद १६४[4]। अ ४

रतनसेन पदमावती—माधवानल कामकन्दला (हिं० प्रे० गा० का० सं०) पृ० ८ छन्द १६[5], चित्रावली पृ० १३, छन्द ३०।६[6] वही पृ० १९५[7]। अ ३

राजकुंवर मनावती—पद्मावत २२३।८[8], चित्रावली पृ० १३ छन्द ३०।५[9], कथा कौतूहली हस्त० पत्र १५ छन्द सवैया ६[9]। अ १ द २ = ३

राजकुंवर रूपावती—अनुराग बाँसुरी पृ० १४७ छंद २४।५[11]। अ १

रूपकला (दिया द्वीप की रानी) और राजा (सरनद्वीप का राजा) हंस जवाहिर पृ० ६६ छंद २७२।५[12]। दृ १

विक्रम-स्वप्नावती[13]—पदमावत २३३।३[14]। दृ १

---

१ मिरगावत सुनि जिउ रहमाई कौंला जन माधवानल पाई।
बिहसा नाउँ सुनत मिरगावत नस जन भेंटी कामावत ॥
कहसि जाउ अब नगर मझारी मकहुँ चाहु कोउ कहै हमारी। (उत्प्रेक्षा)

२ ३ उदाहरण

४ कामकदला पाइस माधो जस राधा नदलालहिं साधो। (उदाहरण)

५ राजा रतनसेनि नहि भयऊ, पदमावति लगि सिंघल गयऊ। (उदाहरण)

६ रूपक (दे० इसी परिशिष्ट में मनोहर मालती कथा।

७ सुनत बैन चित्रावलि जागी देखि परेवा के पाँ लागी।
कहिसि कि ऐ हीरामन सुआ, रतन लागि कस कौतुक हुआ ॥ (अप्रस्तुतप्रशंसा)

८ दृष्टांत ९ रूपक (देखिए इसी परिशिष्ट की मनोहर-मालती कथा।)

१० दृष्टांत (देखिए इसी परिशिष्ट की इंदुवदन-कवलावती कथा),

११ कुंवर होइ कोऊ बरागी एहि रूपान्ति कुंवरि के लागी। (रूपक)

१२ दिया दीप रानी रूपकला सरनदीप कहँ वह नप मिला। (दृष्टांत)

१३ सिंहासन बत्तीसी में पाचवी पुतली लीलावती के द्वारा विक्रमादित्य और स्वप्नावती की कथा कही गयी है। वह कहती है कि सिंहावती की प्राप्ति के लिए विक्रम ने बहुत कष्ट सहा। सिंहावती का पाठ यहा स्वप्नावती (पाठांतर चम्पावती भी) मिलता है। राजा विकरमाजीत और सपनावत की कथा लोक में अब भी प्रचलित है। (दे० पदमावत की एक अप्राप्त लोककथा—सपनावती श्री अगरचन्द नाहटा सम्मेलन-पत्रिका भाग ४३ सं० २ चैत्र २०१३, पृ० ८० ८६, १४ दृष्टांत,

		आवृत्ति
सदयवच्छ मुग्धावती[1]—पदमावत, २३३।४[2] ।		द १
सरसुर-प्रेमावती[3]—पदमावत, २३३।७[4] ।		द १
	योग	प्र १
		अ १८
		द ११
		उ ३
		३३

'पचतन्त्र', 'कथासरित्सागर' तथा लोक की कुछ कथाओं का प्रयोग

राजकुमारी का राजकुमार से विवाह और बदर द्वारा योगी को काटना[5]—पदमावत २२०।दोहा २३।४[6], ज्ञानदीप — द २

व्याघ्र का अपनी परछाई देखकर कुएँ मे धसना (पचतन्त्र की कथा)—इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त०, प० ११२[8] । — द १

सत्तर सिर तीन सौ मन और एक सौ पाँववाला कौन ?—इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) मुद्रित मालिन खण्ड, प० ४४, छन्द ७।दोहा[9] । — उ १

१ सुदयवच्छ की कहानी कभी अत्यन्त लोकप्रिय थी । 'सन्देश रासक (अद्दहमाण) म इसका उल्लेख आया है (कहवा ठाई सुदयवच्छ कत्थ व नल चरिउ, ४३) । सुदयवच्छ और रानी सावलिंगा की कहानी आज भी भोजपुरी प्रदेश बिहार और गुजरात के गाँवो म कही-सुनी जाती है । यह सारगा-सदावृज' की कहानी के नाम से प्रसिद्ध है। सुदयवच्छ-सावलिंगा की कथा के लिए देखिए श्री अगरचद नाहटा का लेख— राजस्थान भारती' अप्रल १९५० । - २ दृष्टात ।

३ सरसुर और प्रेमावती की कथा का पता अभी तक नही चल पाया है । (दे० हिन्दी प्रेमगाथा और मलिक मुहम्मद जायसी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १७ अक १ पृ० ६१ पर प्रकाशित, श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी का लेख ।)

४ दृष्टात,

५ कथा सरित्सागर, लबक ३, तरग १ श्लोक ३० ५३ म यह कथा आयी है । और भी देखिए— पदमावत सजीवनी व्याख्या, द्वि० स०, प० २५२ ३,

६ दृष्टात

७ जोगिहि जातिहि काट्यो बदर, लज्जित गोरखनाथ मुछदर । (दृष्टात)

८ गव सो व्याघ्र आपनो छाहीं परा देखि क कूएँ माही ।
रावन गयउ गव सा मारा सका एसा हनिवत जारा । (दृष्टात)

९ सत्तर सिर मन तीन स पाँव एक म जाहि ।
प्रेमी को दुख देत सो, प्रेम अर्थ यह आहि ॥ दोहा ६।७॥ १

आवृत्ति

सिंह का मजूषा (पिंजड़) म बन्द हो जाना[1]—पद्मावत ५६।७[2] वही ५७६।४[3]। अ २

सुग्गा (सुक) को मारकर राजा का पछताना—मधुमालती, ३०।३[4]। अ १

हाथी का बहेलिए के बंधन मे पड़ना—चूहों द्वारा उसका उद्धार[5] पदमावत, ६२१।४[6]। द १

ढोला बनजारे की कथा जिसकी पत्नी उसे मारकर अपने यार के साथ भाग गयी—हंस जवाहिर पृ० १५६ छन्द ४३७/५[7]। अ १

योग अ ४
द ४
उ १

६

---

१ तुलना कीजिए—सूरसागर द्वितीय स्कन्ध पद २६ पंक्ति ५ स। उसम भी इस कथा का संकेत।

एक ब्राह्मण ने दया करके एक सिंह को जो शिकारियो द्वारा पिंजरे म बन्द कर दिया गया था निकाल दिया। सिंह उस खाने दौड़ा। ब्राह्मण न पूछा—क्या भलाई का बदला बुराई है? सिंह ने कहा—अपने भक्ष्य को नही छोड़ना चाहिए।' निर्णय करने क लिए उन्होंने पंच नियुक्त किया। अन्त म एक गीदड़ पंच हुआ। उसने कहा कि तुम दोनो जिस दशा म थे उसी दशा म हो जाओ, तो मैं तुम्हारे मामले को ठीक से समझूँ। सिंह पिंजड़ म चला गया। गीदड़ के संकेत पर ब्राह्मण न पिंजरे का दरवाजा बन्द कर लिया। इस प्रकार सिंह को छल के बदले छल मिला और दुबारा पिंजरे म बन्द होना पड़ा।

२ ४ उदाहरण

५ यह कथा पंचतन्त्र की एक कथा पर आधारित है। किसी प्रदेश म बहुत-से चूहे बिल बनाकर रहते थ। वहाँ स हाथियों का एक झुंड ताल पर पानी पीने के लिए निकला। बहुत से चूहे उनके पैरों म कुचल गए। जो बचे उन्होंने एक उपाय सोचा और जाकर हाथियों के राजा स कहा—आप हम पर दया कीजिए तो हम भी किसी दिन आपकी सेवा करेंगे। ताल पर जाने के लिए कोई दूसरा मार्ग चुन लें। हाथियों के राजा ने यह बात मान ली। एक राजा न उन्हीं दिनों अपने बहेलियों को हाथी पकड़ने का आदेश दे रखा था। उन लोगों ने हाथियों के राजा को उसके झुण्ड के साथ पकड़ लिया और मोटे रस्सों से जकड़ कर पेड़ से बाँध दिया। हाथियों के राजा ने चूहों के पास संदेश भेजकर उन्हें बुलवाया और बंधन स मुक्ति पायी। (दे० पदमावत संजीवनी व्याख्या, पृ० ६७६)। ६ दृष्टांत ७ उदाहरण।

परिशिष्ट ४

शामी पौराणिक और निजधरी आख्यानों तथा पात्रों आदि के प्रयोग

हिन्दी सूफी कवियों में जिनमें से नल-दमन के रचयिता सूरदास लखनवी के अतिरिक्त सभी कवि मुसलमान थे अपने प्रेमाख्यानक काव्यों में भारतीय पौराणिक तथा निजधरी आख्यानों एवं पात्रों आदि का ही अधिक प्रयोग किया। शामी पौराणिक तथा निजधरी आख्यानों एवं पात्रों का प्रयोग उन्होंने अपेक्षाकृत बहुत कम किया। यहां तक कि 'यूसुफ-जुलेखा'-जैसी शामी पौराणिक कहानी के आधार पर काव्य रचना करनेवाले शेख निसार ने शामी पौराणिक तथा निजधरी आख्यानों एवं पात्रों का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया। या तो उस कवि ने भारतीय पौराणिक तथा निजधरी आख्यानों का प्रयोग भी न के बराबर किया फिर भी उसने 'विश्वकर्मा' और 'राहु केतु' का अलंकार के रूप में ३-३ बार, 'वासुकि' का अलंकार के रूप में २ बार 'मनोज' 'रमा' 'उर्वशी', 'रम्भा' और 'सनक' का अलंकार के रूप में १-१ बार प्रयोग किया है।

शामी पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों का प्रयोग कम करने और भारतीय पौराणिक आख्यानों तथा पात्रों का प्रयोग अधिक करने के पीछे सूफी कवियों की प्रवृत्ति हिन्दू लोक भावना का समादर करने की तो थी ही परन्तु लोक प्रचलित आख्यानों तथा पात्रों के प्रयोग द्वारा अपनी बात को अधिक बोधगम्य तथा ग्राह्य बनाने की भी था। काव्य रूढ़ि के पालन का आग्रह भी एक कारण रहा होगा।

शामी पौराणिक तथा निजधरी आख्यानों एवं पात्रों आदि के प्रयोग की एक सारिणी यहां दी जा रही है

शामी पौराणिक एवं निजधरी आख्यान

(१) अजम का देश, जो तपस्वी के शाप के कारण उजड़ गया—

हंस जवाहिर, ४२६।३ ४[1]—नगरसेर के राजा मनोपति द १

---

१ तपसी शाप बरस कर मीरा गयो हिराय न काहू हीरा।
तपसी शाप अजम कर देशू, रहा न कोउ तहँ शाह नरेशू॥ (दृष्टांत)

आवर्ति

राय द्वारा हंस और उसके साथियों को बंदी बना लेने पर यागीनाथ महत आकर उसे समझाता है कि इन तपस्वियों को छोड़ दे, अन्यथा इनके क्रोध से तेरा नाश हो जाएगा।

(२) इसकन्दर (सिकन्दर) का अमृत के लिए कजरी (कदली) वन जाना—न पाना अग्नि के पर्वत में उसका जल मरना[1]—

पदमावत ४८७।दोहा ४१।२१[2]—राघव चेतन द्वारा अलाउद्दीन से पद्मावती के सौन्दर्य-वर्णन के प्रसंग में यह उल्लेख करना कि जिन रत्नों को समुद्र से स्कन्दर (सिकन्दर) भी न प्राप्त कर सका उन पाँच रत्नों (हंस अमृतवाला रत्न पारस शार्दूल शावक और स्यन) को रत्नसेन ने समुद्र से प्राप्त कर लिया। अ ३ द १=४

१ इसकन्दर=सिकन्दर। मिस्र देश के थीब्स नगर का देवता अमन पहले कृषि-सम्पत्ति का अधिष्ठाता था। मेष उसका वाहन था। ईसा-पूर्व दो हजार वर्ष पहले, वही मिस्र का राष्ट्रीय देवता सूर्य का प्रतिरूप अमन रा हो गया। सीवा नामक स्थान में उसका बड़ा मंदिर था। चौथी शती ई० पू० में सिकन्दर ने वहाँ जाकर उसके दर्शन किये। कहा जाता है कि मंदिर के धर्म-गुरुओं ने सिकन्दर को अमन-पुत्र कहकर उसका स्वागत किया। तब से सिकन्दर के मस्तक पर मेष शृंग का अलंकरण बनाया जाने लगा जैसा उसके सिक्कों पर और मथुरा में प्राप्त कुषाणकालीन बुद्ध मस्तकों में दिखाया गया है। (दे० पदमावत संजीवनी व्याख्या द्वि० सं० टिप्पणी पृ० १४)।

कथा है कि सिकन्दर अमृत की खोज में था। उसकी मित्रता ख्वाजा खिज्र से हो गई। ख्वाजा उसे जलमात नामक अंधकार के लोक में ले गया। उसी को यहा जायसी ने कजली वन या कजरी वन कहा है। वहाँ जीवन के जल का सोता बताया जाता था किंतु सिकन्दर उसका पान न कर सका। जायसी के अनुसार वहीं अग्नि के पहाड़ में जलकर उसने प्राण दे दिया। (दे० शिरेफकृत जायसी के पदमावत का अंग्रेजी अनुवाद १।१३।३ प० १० पर टिप्पणी ३१)।

यहाँ कवि ने सिकन्दर की कथा के अंधकार लोक से कजली वन को मिला दिया है। महाभारत के वनपर्व के अनुसार हरिद्वार से बद्रीनाथ तक का हिमालय प्रदेश कदलीवन कहलाता था जो सिद्धों का निवास-स्थान था। गोरखनाथ, गोपीचन्द आदि सिद्ध-साधकों के लिए वह आदर्श स्थान माना जाने लगा था। कहते हैं कि अंधकार लोक जिसकी समता कदली वन से की गयी है में पहुँचने के लिए सिकन्दर ने अपने प्राण दे दिये और वह शव के रूप में लदा या लेटा हुआ चला गया। (दे० पद्मावत संजीवनी टीका द्वि० सं०, पृ० ६२५)।

२ व्यतिरेक

आवृत्ति

वही, ४६३।१-६[1]—अलाउद्दीन का दूत सरजा जब पद्मिनी का दान की बात रतनसेन से कहता है तब रतनसेन सिकन्दर का उदाहरण देकर उसे उत्तर देता है।

वही, ५०६।दोहा, ४२।२१[2], इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध), हस्त०, पृ० १८३[3]—अलाउद्दीन की सेना के प्रयाण के समय उठी धूल की तुलना सिकन्दर के कदली वन जाने और वहाँ के अँधकार से।

(३) इसकन्दर (सिकन्दर) का नौशाबा के हाथों से छूट निकलना—[4]

पदमावत, ६२१।२ ३[5]—बादल और गोरा राजा रतनसेन अ १ को छुड़ाने का उपाय सोचने लगे। वे पछताए कि अलाउद्दीन हाथ में आकर निकल गया! अलाउद्दीन ने अपने को इसकन्दर-मरि (सिकन्दर के समान) प्रसिद्ध किया था। अत यहाँ पद्मिनी के हाथ से उसके छूट निकलने की तुलना नौशाबा के हाथ से सिकन्दर के छूट निकलने से की गयी है।

(४) खलील पगम्बर को काफिरों द्वारा चिता में फेंक देना—खुदा की मेहर से जलती आग का फुलवारी हो जाना—[6]

चित्रावली, ३०१।४[7]—कुँवर सुजान जब अधा हो गया द २ तब वह भगवान से उसी तरह प्रार्थना करने लगा जिस तरह पैगम्बर खलील ने की थी।

हंस जवाहिर ११।४[8]—कवि कासिमशाह दरियावादी

---

१ दृष्टांत २ उपमा

३ हौं मैं इसकन्दर नरनाहा चले निडर अधियारी माहाँ। (रूपक।उपमा)

४ नौशाबा परियों की रानी थी। इसकन्दर (सिकन्दर) उसके वश में आ गया था। फारसी के सूफी कवि निजामी कृत सिकन्दरनामा के अनुसार नौशाबा बुद देश की अविवाहिता रानी थी जिसके यहाँ सिकन्दर भेष बदलकर दूत के रूप में गया था। रानी ने सिकन्दर को पहचान कर भी छोड़ दिया। बाद में सिकन्दर ने उसे अपना अधीन मित्र बनाया (दे० पद्मावत संजीवनी व्याख्या द्वि० सं० पृ० ८३०)।

५ उदाहरण।उपमा

६ हदीस में लिखा है कि खलील पगम्बर को काफिरों ने चिता में फूक दिया था परन्तु खुदा ने उनके लिए चिता को बाग और अंगारों को फूल बना दिया था।

७ अगिन जरत जे तहीं सँभारा
किए ताहि फुलवारि अँगारा। (दृष्टांत)

८ जो खलील पुनि शरन तुम्हारी-जरत आग कीनी फुलवारी। (दृष्टांत)

आवृत्ति

द्वारा हंस-जवाहिर काव्य के आरम्भ में ईश्वर-स्तुति और उस प्रसंग में खलीफ़ा का दृष्टांत देना।

(५) दिलाराम के कारण मेहरशाह का वियोगी होकर योगी बनना—

हंस-जवाहिर २०८।२ ५[1]—पपीहा पक्षी का हंस का जवाहिर के प्रेम-पथ पर एकाग्रचित्त होकर चलने के लिए उपदेश। द १

(६) नूह के द्वारा महाप्रलय के समय समुद्र को पार करने के लिए नाव बनाना—

हंस जवाहिर ११।२ ३[2]—कवि कासिमशाह द्वारा ईश्वर स्तुति। द १

(७) मंसूर (मंसूर हल्लाज) का सूली पर चढ़ना[3]—

पद्मावत १२४।४[4]—हीरामन तोते द्वारा राजा रतनसेन का प्रेम निष्ठा का उपदेश। प्र २ अ १=३

वही, २६०।६[5]—रतनसेन को मारने के लिए तुरही बजी। वह मंसूर की तरह सूली को देखकर हँस पड़ा। मंसूर शहादत का प्रतीक बन गया है।

इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध) मुद्रित पृ० १५८, मोती खण्ड ३।१ २[6]—कुँवर जब मोती निकालने चला तब देशवासियों ने शुभ कामना की कि इस सच्चे प्रेमी को मोती अवश्य मिल जाय।

---

१ जिन सतपथ प्रेम वह खेला सो जग छाड़ के भया अकेला।
लैलि काज जस मजनू कीना तन मन खोय प्रान नहिं दीना॥
औ फरिहाद जो परबत काटा शीरी काज सो दी हू लनाटा।
महरशाह जो भयो बियोगी दिलाराम के कारन योगी॥ (दृष्टांत)

२ तुम जल ऊपर देश बसावा तुमहीं ऊपर शब्द उठावा।
नोह बनी जो वाहित पयरा, तुम खेवक परलौ तब फेरा॥ (दृष्टांत)

३ मंसूर—प्रसिद्ध सूफी संत जो अनलहक (साऽहं) का उपदेश करने के कारण सूली पर चढ़ा दिया गया था।

४ ५ प्रतीक,

६ जाकों प्रीत मित्र की पूरी भा मनसूर चला वह सूरी।
प्रीतम जाको चीरा हीया दीन्हा जोत हिया मा दीया॥ (उपमा)

आवृत्ति

(८) मूसा[1] द्वारा तूर पर्वत पर ईश्वर का दर्शन—

चित्रावली २६०।५ ६[2]—चित्रावली ने दूत परेवा के हाथ कुँवर सुजान के पास अपनी सहिदानी के रूप में एक दर्पण भेजा। द २

हंस-जवाहिर पृ० ५ छंद ११।६[3]—कवि द्वारा ईश्वर की स्तुति।

(९) यूनुस का मछली के मुह में जा पड़ना—भगवान की कृपा से वहाँ भी सुखी होना—

हंस जवाहिर, पृ० ५, छंद ११।५[4]—कवि द्वारा ईश्वर स्तुति के प्रसंग में यूनुस का स्मरण। द १

(१०) यूसुफ को उसके भाइयों द्वारा कुएँ में फेंकना—ईश्वर-कृपा से उसका उसमें से निकलना—उसके अंध बाप को पुनः नेत्र ज्योति प्राप्त होना—[5]

चित्रावली, ३०१।१ ३[6], इंद्रावती (पूर्वार्द्ध), पृ० १५६ द २

---

१ मूसक—मूसा। हजरत मूसा (मोजेज)। यह यहूदियों के एक पैगम्बर थे, जिन्हें तूर पर्वत पर ईश्वर के दर्शन हुए थे।

२ दरपन चपु ठहराइहि तोरा, बिगसि देखु तब दरसन मोरा।
एकहि बार जो सनमुख देखा होइ तूर पर मूसक लेखा॥ (दृष्टांत)

३ मूसा पंथ नेर मुख दीना पार भया सो तुम कहँ पहिना। (दृष्टांत)

४ यूनुस पड मीन मुख माहि तोरे भजन भयो सुख ताहा। (दृष्टांत)

५ यूसुफ को उसके भाइयों ने कुएँ में डाल दिया था और अपने बाप से जाकर कह दिया था कि यूसुफ को भेड़िया खा गया। उनका बाप शोक में अंधा हो गया। यूसुफ को एक कारवा के सरदार ने कुएँ में से निकलवाया और मिस्र में ले जाकर बेच दिया। वहाँ भाग्यवश यूसुफ राजा हो गया। कनान में अकाल पड़ने पर उसके भाई मिस्र गए। वहाँ यूसुफ ने अन्न देकर उनकी प्राण-रक्षा की। चलते समय अपना एक वस्त्र उनको दिया और कहा कि इसे अपने बाप को दे देना। भाइयों ने जब कपड़ा अपने अंध बाप को दिया तब वह उस कपड़े को मुह पर डालते ही पुनः देखने लगा। (विशेष द्रष्टव्य—इस प्रबंध के अध्याय ५ में यूसुफ जुलेखा की कथा।)

६ मैं जब ही जिय सौंरा तोही तही मया करि काढे मोही।
कूप माहि जे सुमिरन साजा, काढि दिये तैं देस के राजा॥
प्रेम बिछोह अंध जेहि कीन्हे बहुरि मिलाइ जोति तेहि दीन्ह। (दृष्टांत)

आरम्भि

द्वारा हंस जवाहिर काव्य क आरम्भ म ईश्वर-स्तुति और उस प्रसग म नूराम का दृष्टांत देना।

(५) विसाराम क कारण महरनाह का वियोगी होकर योगी बनना —

हंस-जवाहिर २०८।२ ४[1]—पत्रांश पर्या का हंस का जवा द १ हिर के प्रेम-पथ पर न्यौछावित होकर चलन क लिए उपमा।

(६) नूह क द्वारा महाप्रलय क समय समुद्र को पार करने के लिए नाव बनाना—

हंस जवाहिर ११।२ [2]—कवि कासिमशाह द्वारा ईश्वर द १ स्तुति।

(७) मसूर (मसूर हल्लाज) का सूली पर चढ़ना[3]—

पद्मावत, १२४।४ [4]—हीरामन तोता द्वारा राजा रतन प्र २ अ १=३ सेन का प्रेम निष्ठा का उपमा।

वही २६०।६[5]—रतनसेन की मारने क लिए तुरही बजी। वह मसूर की तरह सूली को देखकर हस पड़ा। मसूर शहादत का प्रतीक बन गया है।

चित्रावली (पूर्वार्द्ध) मुद्रित पृ० १५८ मोती खण्ड, ३।१ २[6]—कुवर जब मोती निकालने चला तब दशकों न शुभ कामना की कि इस सच्चे प्रेमी को मोती अवश्य मिल जाय।

---

१ जिन सतपथ प्रेम वह खेला सो जग छोड क भयो अकेला।
लैनि काज जस मजनूं कीना तन मन खोय प्रान नहि दीना ॥
औ फरिहाद जो परबत काटा सीरी काज सो दी ह सनाटा।
महरशाह जो भयो बियोगी चित्राराम क कारन योगी ॥ (दृष्टांत)

२ तुम जल ऊपर देश बसावा तुमही ऊपर शैल उठावा।
नोह बनी जो बाहिन पयरा तुम सवक परलो तब फेरा ॥ (दृष्टांत)

३ मसूर—प्रसिद्ध सूफी सत जो अनलहक (सोऽह) का उपदेश करन के कारण सूली पर चढ़ा दिया गया था।

४ ५ प्रतीक

६ जाकों प्रीत मित्र की पूरी सो मनसूर धन्य वह सूरी।
प्रीतम जाको चीरा हीया दोन्हा जोत हिया मा दीया ॥ (उपमा)

आवृत्ति

(८) मूसा[1] द्वारा तूर पर्वत पर ईश्वर का दर्शन—

चित्रावली २६०।५ ६[2]—चित्रावली ने दूत परेवा के हाथ कुवर सुजान क पास अपनी सहिदानी के रूप म एक दर्पण भेजा। द २

हंस-जवाहिर, पृ० ५ छंद ११।६[3]—कवि द्वारा ईश्वर की स्तुति।

(९) यूनुस का मछली के मुह में आ पड़ना—भगवान की कृपा से वहाँ भी सुखी होना—

हंस जवाहिर, प० ५, छन्द ११।५[4]—कवि द्वारा ईश्वर-स्तुति के प्रसग म यूनुस का स्मरण। द १

(१०) यूसुफ को उसके भाइयों द्वारा कुए में फेंकना—ईश्वर-कृपा से उसका उसमे से निकलना—उसके अधे बाप को पुन नेत्र-ज्योति प्राप्त होना—[5]

चित्रावली, ३०१।१ ३[6], इंद्रावती (पूर्वार्द्ध) प० १५८ द २

---

१ मूसक—मूसा। हजरत मूसा (मोजेज)। यह यहूदियों के एक पैगम्बर थे जिन्हें तूर पर्वत पर ईश्वर के दर्शन हुए थे।

२ स्वपन वपु ठहराइहि तोरा, विगसि देखु तब दरसन मोरा।
एकहि बार जो सनमुख देखा होइ तूर पर मूसक लेखा॥ (दृष्टांत)

३ मूसा पथ नैर मुख दीन्हा पार भया सो तुम कहँ चीन्हा। (दृष्टांत)

४ यूनुस पड मीन मुख माहा तोरे भजन भयो सुख ताहा। (दृष्टांत)

५ यूसुफ को उसके भाइयो ने कुएँ मे डाल दिया था और अपने बाप से जाकर कह दिया था कि यूसुफ को भेड़िया खा गया। उनका बाप शोक मे अंधा हो गया। यूसुफ को एक कारवा के सरदार ने कुए म स निकलवाया और मिस्र मे ले जाकर बेच दिया। वहा भाग्यवश यूसुफ राजा हो गया। कनान म अकाल पडने पर उसके भाई मिस्र गए। वहाँ यूसुफ ने अन्न देकर उनकी प्राण रक्षा की। चलते समय अपना एक वस्त्र उनको दिया और कहा कि इसे अपने बाप को दे देना। भाइयो ने जब कपडा अपने अंधे बाप को दिया तब वह उस कपडे को मुह पर डालते ही पुन देखने लगा। (विशेष द्रष्टव्य—इस प्रबध के अध्याय ५ म यूसुफ-जुलेखा की कथा।)

६ मैं जब हीं जिय सौंरा तोहीं तहीं मया करि काढ़े मोही।
कूप माहि जे सुमिरन साजा, काढ़ि दिये तै देस के राजा॥
प्रेम विछोह अंध जेहि कीन्हे बहुरि मिलाइ जोति तेहि दीन्ह। (दृष्टांत)

आवृत्ति

मोती खण्ड ३।दोहा १८।७[1]—कुँवर सुजान जब अंधा हो गया, तब वह भगवान से प्रार्थना करने लगा।

(११) यूसुफ का कैदखाने में पड़ना—ईश्वर-कृपा से उसका मिस्र का सुलतान होना—

हंस जवाहिर पृ० ५ छन्द ११।७[2]—कवि कासिमशाह द्वारा ईश्वर-स्तुति के प्रसंग में यूसुफ और उसके पिता का दृष्टांत कथन करना। — दृ १

(१२) लैला मजनूँ का प्रगाढ़ प्रेम—लैला के चले जाने पर मजनूँ का बौराना—लैला के लिए मजनूँ का प्राण देना—

नल दमन १३८।७[3]—नल का दमयन्ती के प्रति प्रेम इतना तीव्र था कि उसने दमयन्ती के हृदय में भी प्रेम की आग सुलगा दी। लैला प्रेमिका का प्रतीक और मजनूँ प्रेमी का प्रतीक। — प्र २ अ १, दृ २=५

हंस-जवाहिर, पृ० १९९, छन्द ५४८।७[4]—जवाहिर को समुद्र के मध्य से हर लिया गया। जागने पर हंस व्याकुल हुआ और जवाहिर के वियोग में पागल सा हो गया। उसकी स्थिति की तुलना मजनूँ की स्थिति से।

वही पृ० ७६ छन्द २०२।२ ३[5]—पपीहा पक्षी द्वारा हंस से कहना कि तुम मजनूँ की भाँति जवाहिर के प्रेम में एकाग्रचित्त बनो।

(१३) सुलेमान की अँगूठी[6] जिसके प्रभाव से जिनों का उसके वश में होना—

---

१ जो चाहै सोई कर करता जाका नाउँ, डारि कूप मो अंत कहँ देइ सिंघासन ठाउँ। (दृष्टांत)

२ यूसुफ पड़े कोठ अँधियारे तुमही मिसर के पाट बैठारे। (दृष्टांत)

३ नल दृग जो रकत चलावा वहाँ मजनूँ के नैनहिं आवा। (दृष्टांत।प्रतीक)

४ बावर भा जानो विष खाई, लैला गई मजनूँ बौराई। (प्रतीक।उत्प्रेक्षा अलंकार)

५ दृष्टान्त (दे० दिलाराम के कारण मेहरशाह का योगी बनना)

६ सुलेमान की अँगूठी कई रत्नों के मेल से बनी हुई थी और ईश्वर की महिमा वाचक मंत्र उस पर उत्कीर्ण थे। उस जादुई अँगूठी के प्रभाव से सुलेमान ने जिनों को अपने वश में कर रखा था। इसी से उसे अतुल धन और शक्ति प्राप्त हुई थी (दे० पदमावत संजीवनी टीका द्वि० सं० पृ० १४)। सुलेमान के पास जो तिलस्मी अँगूठी थी उसमें चार रत्न जड़े थे जो वायु पक्षी पृथिवी और

आवृत्ति

पदमावत, १३।६[1]—कवि जायसी द्वारा शाहेवक्त शेरशाह की प्रशंसा करना। अ १

(१४) सुलेमान द्वारा सख्र जिन पर चढाई करके उसे अपनी सेवा मे ले लेना—

पद्मावत ४६४।३[2]—रतनसेन के यहा से दूत के लौट आने पर अलाउद्दीन का कथन। प्र १ अ १ द १=३

वही, ५६६।४[3]—अलाउद्दीन का कथन रतनसेन से चित्तौड गढ म।

वही, ५७७।१[4]—रतनसेन के अलाउद्दीन क बधन म पड जाने से उसके सहायक राजाओ का साहस टूट गया।

(१५) शीरीं के लिए फरहाद का पहाड काटना—

हस जवाहिर पृ० ७६, छन्द २०८।२ ४[5]—पपीहा पक्षी द्वारा हस को जवाहिर के प्रेम-पथ पर एकाग्र चित्त होकर चलन का उपदेश। द १

(१६) हसन हुसन की रक्षा—कुएँ में मकडी का जाला तनने से

इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्तलिखित पृ० १०७[6]—महाबली के पिता प्रेमसिंह न जब हसराज से महाबली की रक्षा के लिए कहा तब हसराज ने हसन-हुसन की रक्षा मकडी के जाले के कारण होनेवाली बात कही। द १

जीवों के प्रतिनिधि थे। उन पर क्रमश य मत्र खुद थे—(१) ईश्वर की ही महिमा और शक्ति है, (२) सारा ससार उस ईश्वर की ही प्रशसा करता है, (३) स्वग और पृथिवी ईश्वर के वश मे हैं (४) ईश्वर एक है। इस अगूठी के प्रभाव स वह जिनो (देवो) को तावे के गोल कुम्हडों म बन्द कर लेता था। उसने सब जिनो या देवो को अपने वश म कर लिया था। सख्र नाम का जिन उसका विरोधी हो गया। सुलेमान ने उस बदी बना लिया। इसी जिन न सुलेमान का शेबा देश की बिलकिस नाम की रानी का राज्य प्राप्त कराया। यह रानी सूय की पूजा करती थी। सुलेमान न उस जीतकर अपनी स्त्री बना लिया। (पद्मावत के शिरेफ कृत अग्रेजी अनुवाद में सुलेमान की अगूठी क विषय म यह कथा दी हुई है। देखिए—पदमावत सजीवनी व्याख्या द्वि० स० पृ० ७४६ ५०)।

१ अत्युक्ति २ दृष्टात, ३ अर्थापत्ति ४ प्रतीक,

५ दृष्टात (दे० इसी परिशिष्ट म लला मजनूं की कथा)

६ हस कहा रछक है सोई आकर सिरजा है सब कोई।
रिपु सो कूवा बीच बचाव, झाला मकरी मेजि तनाव ॥ (दृष्टात)

आवृत्ति

(१७) हातिमताई[1] की दानशीलता

पद्मावत १४५।७[2]— राजा रतनसेन का उद्योगाधिपति = १
गणपति म सवाद । प्रेम और दान की महिमा का वर्णन ।

योग	=	प्र ५
		अ ८
		द १८
		३१

शामी पौराणिक तथा निजधरी आख्याना का प्रयोग-स्वरूप—
एक दृष्टि म

प्र=प्रतीक अ=अलकार, द=दृष्टान्त उ=उल्लेख
कथा म स्या—इसी परिशिष्ट म शामी आख्यानो का दिया गया क्रम ।

कथा सख्या	प्रेमाख्यानक काव्यो में प्रयोग	योग प्रतीक—अलकार दृष्टान्त—उल्लेख	आवृत्ति
१	हस जवाहिर (द १)	द १	१
२	पदमावत (अ २ द १) इन्द्रावती (अ १)	अ ३ द १	४
३	पद्मावत (अ १)	अ १	१
४	चित्रावली (द १) हस-जवाहिर (द १)	द २	२
५	हस जवाहिर (अ १ द १)	अ १, द १	२
६	हस जवाहिर (द १)	द १	१
७	पदमावत (प्र १)	प्र १	१
८	चित्रावली (द १) हस-जवाहिर (द १)	द २	२
९	हस-जवाहिर (द १)	द १	१
१०	चित्रावली (द १) इन्द्रावती (द १)	द २	२
११	हस जवाहिर (द १)	द १	१
१२	नल-दमन (प्र १ द १), हस-जवाहिर (प्र २)	प्र ३, द १	४

१ मुसलमानी धर्म-गाथा के अनुसार हातिम यमन देश का एक वीर और दानी था जिसने अनेक कष्ट सहकर मित्र के हितार्थ सात प्रश्नो का समाधान किया था।

२ दृष्टात ।

कथा संख्या	प्रेमाख्यानक काव्यों मे प्रयोग	योग प्रतीक—अलकार दृष्टात—उल्लेख	आवृत्ति
१३	पदमावत (अ १)	अ १	१
१४	पदमावत (प्र १, अ १, द १)	प्र १ अ १, द १	३
१५	हस जवाहिर (द १)	द १	१
१६	इन्द्रावती (द १)	द १	१
१७	पदमावत (द १)	द १	१
		प्र ५, अ ७, द १७	२६

शामी पौराणिक एव निजधरी पात्र तथा पर्वत

अयूब[1]—पदमावत, ६३५।३[2]। अ १

अली[3]—पदमावत, ६३५।१ २[4]। उ १

इसकदर (सिकन्दर) जुलकरनन (जुलकरीं)—पदमावत, १३।५-६,[5] वही, ४८७।दोहा ४१।२१[6] वही, ४६३।१ २,[7] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त०, पृ० १८३,[8] वही पृ० १८४[9]। अ ५

उमर[10]—पदमावत, १५।३[11]। अ-१

---

१ अयूब—बाइबिल म इन्हें जॉब कहा गया है (हिब्रू म ईयोव')। ये अत्यन्त धर्मात्मा थे। शतान ने सन्देह किया और उस इनकी परीक्षा लेने की अनुमति मिली। हज़रत अयूब पर अनेक विपत्तियाँ आईं उनकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गयी, शरीर भी व्याधिग्रस्त हो गया, परन्तु उन्होने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव न छोड़ा। अत म उनके दिन फिरे। अयूब साधुता और धम परायणता के साथ कष्ट सहन के उपमान हैं। (दे० 'पदमावत सजीवनी व्याख्या', द्वि० स०, पृ० ८५५)।

२ व्यतिरेक

३ अली पगम्बर मुहम्मद साहब के चचेरे भाई और दामाद थे। वे मुसलमानो के चौथे खलीफ़ा भी थे (६५६ ६६१ हिजरी)। वे वीरता के उपमान बन गए हैं।

४ उल्लेख ५ तृतीय तुल्ययोगिता, ६ व्यतिरेक, ७ उपमा, ८ रूपक

६ है मा से इसकन्दर नाऊँ, सनमुख गोद देहि मोहि ठाऊँ। (उपमा)

१० मुहम्मद साहब के बाद हुए चार खलीफ़ाओ म से एक। य अपन न्याय के लिए प्रसिद्ध थे। (प्रसग रूपमती के दपण का उसके वर्धे से कथन)

११ उपमा।

	आवृत्ति
(१७) हातिमताई[1] की दानशीलता	
पद्मावत १४५।७[2]—राजा रत्नसेन का उद्योगाधिपति गणपति में संवाद। प्रेम और दान की महिमा का वर्णन।	द १
योग =	प्र ५
	अ ८
	दृ १८
	३१

नाना पौराणिक तथा निजधरी आख्यानों का प्रयोग-स्वरूप—
एक दृष्टि में

प्र=प्रतीक अ=अलंकार दृ=दृष्टांत उ=उल्लेख
कथा संख्या—इसी परिशिष्ट में नाना आख्यानों का दिया गया क्रम।

कथा संख्या	प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रयोग	योग प्रतीक—अलंकार दृष्टान्त—उल्लेख	आवृत्ति
१	हंस जवाहिर (द १)	दृ १	१
२	पदमावत (अ २ द १) इन्द्रावती (अ १)	अ ३ द १	४
३	पदमावत (अ १)	अ १	१
४	चित्रावली (द १) हंस-जवाहिर (द १)	दृ २	२
५	हंस जवाहिर (अ १ द १)	अ १ द १	२
६	हंस जवाहिर (दृ १)	द १	१
७	पदमावत (प्र १)	प्र १	१
८	चित्रावली (दृ १) हंस-जवाहिर (द १)	द २	२
९	हंस जवाहिर (द १)	दृ १	१
१०	चित्रावली (द १) इन्द्रावती (द १)	द २	२
११	हंस जवाहिर (द १)	द १	१
१२	नल दमन (प्र १ द १) हंस-जवाहिर (प्र २)	प्र ३ दृ १	४

१ मुसलमानी धर्म-गाथा के अनुसार हातिम यमन देश का एक वीर और दानी था जिसने अनेक कष्ट सहकर मित्र के हितार्थ सात प्रश्नों का समाधान किया था।

२ दृष्टांत।

क्या संख्या	प्रेमाख्यानक काव्यों मे प्रयोग	योग प्रतीक—अलकार दृष्टांत—उल्लेख	आवृत्ति
१३	पदमावत (अ १)	अ १	१
१४	पदमावत (प्र १, अ १, द १)	प्र १, अ १, द १	३
१५	हुस-जवाहिर (द १)	द १	१
१६	इन्द्रावती (द १)	द १	१
१७	पदमावत (द १)	द १	१
		प्र ५, अ ७, द १७	२६

नामी पौराणिक एव निजधरी पात्र तथा पर्वत

अयूब[1]—पदमावत, ६३५।३[2] । अ १

अली[3]—पदमावत, ६३५।१ २[4] । उ १

इसकदर (सिकन्दर) जुलकरनन (जुलकरों)—पदमावत अ ५
१३।५ ६,[5] वही, ४८७।दोहा ४।१२१ [6] वही, ४६३।१ २,[7] इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध) हस्त०, पृ० १८३ [8] वही पृ० १८४[9] ।

उमर[10] —पदमावत, १५।२[11] । अ १

---

१ अयूब—बाइबिल म इन्ह जॉब कहा गया है (हिब्रू म 'ईयोब) । ये अत्यन्त धर्मात्मा थ । शैतान ने सन्देह किया और उसे इनकी परीक्षा लेने की अनुमति मिली। हजरत अयूब पर अनेक विपत्तियाँ आई उनकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गयी, शरीर भी व्याधिग्रस्त हो गया, परन्तु उन्होंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव न छोड़ा । अत म उनके दिन फिरे । अयूब साधुता और धम परायणता क साथ कष्ट सहन के उपमान हैं । (दे० पदमावत सजीवनी व्याख्या', हि० स०, पृ० ८५५) ।

२ व्यतिरेक

३ अली पगम्बर मुहम्मद साहब के चचेरे भाई और दामाद थे । वे मुसलमानो के चौथे खलीफा भी थ (६५६ ६६१ हिजरी) । वे वीरता क उपमान बन गए हैं ।

४ उल्लख ५ ततीय तुल्ययोगिता ६ व्यतिरेक, ७ उपमा, ८ रूपक

९ है मो से इसकदर नाऊँ, सनमुख गोद दहि मोहि ठाऊँ। (उपमा)

१० मुहम्मद साहब के बाद हुए चार खलीफाओं म से एक । य अपने न्याय के लिए प्रसिद्ध थे । (प्रसग रूपमती के दपण का उसके वर्षों से कथन)

११ उपमा ।

	आवृत्ति
कहुबाद—हंस जवाहिर पृ० १८१ छन्द ३८७।दोहा[1]।	द १
जुलकरनन (जुलकरी)[2]—हंस जवाहिर, ३८७।दोहा[3] वही पृ० २१८, छन्द ६०।१७[4]।	अ १ द १ = २
तूर पर्वत—चित्रावली २६०।५[5]।	द १
नौशरवाँ[6]—पद्मावत १५।२[7]।	अ १
मीर हमजा—[8]पदमावत ६३५।२[9]।	उ १
मेहर और माह (प्रेमी युगल)—हंस-जवाहिर पृ० ११७ छन्द १२२।६७[10]।	द १
सुलेमान—पद्मावत, ४६४।३[11] कथा पुहुप बरिणा हस्त०	[प्र २

---

१ कहुबाद औ जुलकरनन चढ़ न सके दल जोर।
तहूँ बिचार हा कहा चढ़ा चहूँ तेहि ओर ॥ (दृष्टांत)

२ जुलकरीं का फारसी रूप जुल्-करनन अर्थात् दो सींगों वाला, यह सिकन्दर की उपाधि थी।

३ दृष्टांत

४ जैसे ज्वाल करन बस भयऊ औसर गाढ़ि ब्याह करि लयऊ। (उदाहरण)

५ दृष्टांत (देखिए मूसा द्वारा तूर पर्वत पर ईश्वर-दर्शन)

६ नौशरवाँ—प्रसिद्ध ईरानी सम्राट (५३१ ५७५ हि०)। वह अत्यन्त न्यायकारी था। इसी से उसका विरुद आदिल (न्यायकारी) हुआ।

७ व्यतिरेक (तृतीय तुल्ययोगिता भी)

८ मीर (अमीर) हमजा मुहम्मद साहब के चाचा थे जिनकी वीरता की बहुत-सी कल्पित कहानियाँ पीछे से जोड़ी गयीं। सोलहवीं शती में दास्तान अमीर हमजा की बहुत प्रसिद्धि थी। अकबर ने उस पर आधारित चौदह सौ चित्र कपड़े पर बनवाये थे जिनमें से सौ से कुछ ऊपर अभी तक बच गए हैं। इन चित्रों का बनना हुमायूँ के समय से ही शुरू हो गया था। इससे ज्ञात होता है कि शेरशाह के समय अमीर हमजा का किस्सा खूब प्रचलित था। दे० 'आखिरी कलाम (जायसी) ८।४ ('बल हमजा कर अस सभारा जो बरियार उठा तेहि मारा।) दे० 'पदमावत संजीवनी व्याख्या' द्वि० सं० पृ० ८५४)

९ उल्लेख

१० आय पहुँच देश के योगी देख बिरह न अधिक वियोगी।
कहा कि को यह दई नाना, मेहर भयो लखि माह भुलाना ॥ (दृष्टांत)

११ प्रतीक

आवर्ति

त्रगु १४। छंद ८८[1]।

हातिमताई—पदमावत, १७।२[2], वही, १४५।७[3], १३।३,[4] नल-दमन, १७।६ और दोहा[5]।   अ ३, द १=४

योग	प्र २
	अ १२
	द ५
	छ २
	२१

---

१ मात कहत कर सुता बखान, मारयौ देव कौं न गति हानि।
असौ और न माता जायौ, कहा सुलभा फिरि जगु आयौ।।
(प्रसग पुरुषोत्तम कुवर की बडाई) सुनेमान वीरता का प्रतीक। (प्रतीक)

२ व्यतिरेक   ३ दृष्टात   ४ व्यतिरेक (तृतीय तुल्ययोगिता भी)

५ जिन दानन हातिम जग जाना, दीन्ह साह मगन तें दाना।
साहजहाँ दातार इर, घर पतार दुराइ।
दधि मुक्ता तऊ ना बच, देइ कढाइ लुटाइ।।दो० १७।। (व्यतिरेक)

परिशिष्ट ५

सहायक पुस्तक एवं पत्र-पत्रिका-सूची

१ अनुराग बाँसुरी सम्पादक—पं० चन्द्रबली पाण्डेय और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रका०—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग, द्वितीय सं०, १९५० ई०।

२ अपभ्रंश काव्य परम्परा और विद्यापति डा० अम्बादत्त पंत (शोध प्रबन्ध टंकित)।

३ अपभ्रंश साहित्य डा०—हरिवंश कोछड़ प्रका० भारती साहित्य मंदिर दिल्ली प्र० सं० १९५६ ई०।

४ अष्टादश पुराण-दर्पण पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र प्रका० श्री वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई।

५ इन्द्रावती (पूर्वार्द्ध मुद्रित) सम्पा०—बाबू श्यामसुन्दर दास प्रका० नागरी प्रचारिणी सभा काशी प्र० सं०, १९०६ ई०।

इन्द्रावती (उत्तरार्द्ध-हस्तलिखित) नूरमुहम्मद प्राप्ति स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय ना० प्र० सभा काशी।

६ इस्लामी बँगला साहित्य डा० सुकुमार सेन।

७ ईरान के सूफी कवि श्री बाँकेबिहारी तथा कन्हैयालाल प्रका०—भारती भंडार लीडर प्रेस इलाहाबाद प्र० सं० १९९६।

८ उत्तरी भारत की संत परम्परा आ० परशुराम चतुर्वेदी, प्र० सं०, २००८।

९ ओल्ड टेस्टामेंट (पुरानी बाइबिल)।

१० कथा कनकावती (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति स्थान—हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग।

११ कथा कलन्दर की (जान कवि) हस्तलिखित ,,

१२ कथा कंवलावती (जान कवि) हस्तलिखित ,, ,,

१३ कथा कवलावती (जान कवि) ,,

१४ कथा कामरानी व पीतमदास (जान कवि) ,,

१५ कथा कामलता (जान कवि) 'हिन्दुस्तानी पत्रिका भाग १५ अक ३ १६४५ मे सम्पूर्ण प्रकाशित।
१६ कथा कुलवती (जानकवि) हस्त० प्राप्ति-स्थान—हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
१७ कबीर डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी ग्र० र० का० बम्बई।
१८ कथा कौतूहली (जान कवि) हस्त० प्राप्ति-स्थान—हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
१९ खिज्र खा-देवलदेवी (जान कवि) '
२० ग्रथ लैला मजनू—(जान कवि) हस्तलिखित '
२१ चन्द्रसेन-सीनतिघाल (जान कवि) ' '
२२ चदायन सपा०—डा० विश्वनाथ प्रसाद प्रका० क० मु० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा प्र० स० १९६१ ई०।
२३ चन्दायन सपादक डा० परमेश्वरीलाल गुप्त प्रका०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई प्रथम सस्करण १९६४।
२४ चित्ररेखा (जायसीकृत) सपादक श्री शिवसहाय पाठक, प्रका० हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी प्र० स० १९५९।
२५ चित्रावली (उसमानकृत) सम्पा० जगन्मोहन वर्मा नागरी प्रचारिणी सभा काशी १९१° ई०।
२६ छविसागर (जानकवि) हस्तलिखित प्राप्ति-स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
२७ छीता (जान कवि हस्तलिखित, प्राप्ति स्थान
२८ जायसी के परवर्ती सूफी कवि और काव्य डॉ० सरला शुक्ल प्रका० लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ प्र० स० सम्वत २०१३ वि०।
२९ जायसी ग्रन्थावली सम्पा०—डा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० स० १९५१ ई०।
३० जैन साहित्य और इतिहास नाथूराम प्रेमी—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, कार्यालय बम्बई द्वितीय स० अक्टूबर १९५६।
३१ ढोला मारूरा दूहा सम्पा०—सवश्री रामसिंह-सूर्यकरण पारीक और नरोत्तम स्वामी द्वितीय स० २०११ वि०।
३२ तमीम असारी (जान कवि) हस्त० प्राप्ति-स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
३३ तसव्वुफ अथवा सूफीमत प० चन्द्रबली पाण्डेय सरस्वती मदिर जतनबर, बनारस, द्वितीय स० १९४८ ई०।
३४ तर्जुमा कुरान शरीफ अहमद बशीर श्री प्रभाकर साहित्यालोक रानी कटरा लखनऊ १९५६ ई०।
३५ दक्खिनी का पद्य और गद्य श्रीराम शर्मा हिन्दी प्रचारक सभा हैदराबाद, प्रथम सस्करण, २५ जून, १९५४।
३६ दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा महापडित राहुल साकृत्यायन बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना प्र० स०, १९५९ इ०।
३७ द्विवेदी-अभिनन्दन ग्रन्थ प्रका०—नागरी प्रचारिणी सभा काशी स० १९९०।

३८ नल चम्पू त्रिविक्रम भट्ट निर्णय सागर प्रेस बम्बई तृतीय संस्करण १९२१।
३९ नल दमन सूरदास लखनवी सपा० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल और श्री दौलतराम जुयाल प्रका० क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय आगरा।
४० नल दमयती (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
४१ नाथ सम्प्रदाय डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी।
४२ निरमल दे (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति-स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी।
४३ नैषधीय चरितम (श्री हर्ष) टीकाकार— प० शिवदत्त शर्मा निर्णय सागर प्रेस बम्बई सप्तम संस्करण १९३३ ई०।
४४ पद्मावत का काव्य सौन्दर्य श्री शिवसहाय पाठक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई ४ प्र० स० सितम्बर १९५६।
४५ पद्मावत मूल और संजीवनी व्याख्या डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन चिरगाव (झासी) प्र० स० स० २०१२ और द्वि० स० २००१ वि०।
४६ पुराण दिग्दर्शन प० माधवाचार्य शास्त्री (श्री विद्याविवर्द्धन पुस्तकालय, नवलगढ़ (राजस्थान) से प्राप्त।
४७ पुराण कथा-कौमुदी प० रघुनाथदत्त वधु नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९६२ ई०।
४८ पुराण दर्पण श्री कालूराम शास्त्री प्रका०—श्री कृष्ण प्रेस अमराधा कानपुर द्वितीय संस्करण १९८६ वि०।
४९ पुष्पवरिषा (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति स्थान हिन्दुस्तानी एकेडमी।
५० पृथ्वीराज रासो (पदमावती समय) महाकवि चंद स० हरिहरनाथ टंडन यूनिवर्सिटी बुक डिपो कॉलेज रोड आगरा।
५१ पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ श्री ब्रजविलास श्रीवास्तव राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम स० १९५५ ई०।
५२ पौराणिकता का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव (शोध प्रबंध टंकित प्रति) डा० इन्द्रावती सिन्हा आगरा विश्वविद्यालय पुस्तकालय में सुरक्षित।
५३ फारसी साहित्य का इतिहास डा० रजी असगर हिकमत
५४ बलकिया बिरही (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति स्थान हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग
५५ बादीनामा (जान कवि) हस्तलिखित
५६ बुधिसागर या मधुकर मालती (जान कवि) हस्तलिखित
५७ ब्रज की लोक कथाओं के अभिप्रायों का अध्ययन डा० मालिनी सरीन (शोध प्रबंध) अप्रकाशित कलकत्ता विश्वविद्यालय पुस्तकालय में सुरक्षित।

५८ ब्रजलोक-साहित्य का अध्ययन डा० सत्येन्द्र प्रका० साहित्य रत्न भंडार, आगरा, तृतीय संस्करण १९६० ई०।

५९ भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा पं० परशुराम चतुर्वेदी राजकमल प्रका० दिल्ली प्रथम सं० १९५६ ई०।

६० भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य (सं० १००० १९०२ तक) डा० हरिकान्त श्रीवास्तव हिन्दी प्रचारक, पुस्तकालय, वाराणसी प्र० सं० नवम्बर १९५५ ई०।

६१ भोजपुरी लोक-कथा डा० सत्यव्रत सिन्हा प्रका० हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग, प्र० सं०, १९५२ ई०।

६२ मध्यकालीन प्रेम-साधना पं० परशुराम चतुर्वेदी साहित्य भवन लि० प्रयाग, प्र० सं० १९५२ ई०।

६३ मध्ययुगीन प्रेमाख्यान डा० श्याममनोहर पाण्डेय, मित्र प्रकाशन प्रा० लि० इलाहाबाद प्र० सं० सन् १९६३।

६४ मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्त्विक अध्ययन डा० सत्येन्द्र प्रका० विनोद पुस्तक मंदिर आगरा प्र० सं० १९६२ ई०।

६५ मधुमालती (मंझन मधन) सपा० डा० माताप्रसाद गुप्त मित्र प्रकाशन प्रा० लि० इलाहाबाद राज संस्करण १९६० ई०।

६६ मधुमालती (मधनकृत) सपा०—डा० शिवगोपाल मिश्र हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय काशी प्र० सं०।

६७ मलिक मुहम्मद जायसी डॉ० कमल कुलश्रेष्ठ इंडियन प्रेस, प्रयाग, १९४७।

६८ माधवानल कामकंदला (शेख आलम) संपादक श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी और डॉ० गुलाबराय हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग।

६९ माधवानल-कामकंदला—(छोटा प्रति हस्तलिखित नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्राप्त।

७० माधवानल कामकन्दला (बड़ी प्रति) श्री उदयशंकर शास्त्री से प्राप्त।

७१ माधवानल-कामकन्दला चउपई (कुशल लाभ)।

७२ माधवानल कामकन्दला प्रबन्ध (गणपति) गायकवाड ओरियंटल सिरीज, बड़ौदा।

७३ मुनतखब अल-तवारीख (भाग १) अब्दुल्कादिर बदायूंनी सम्पा० मौलवी अहमद अली अंग्रेजी अनु० जार्ज एम० ए० रैंकिंग, बिब्लिओथिका इण्डिका सिरीज, १८९७ ई०।

७४ मृगावती (कुतुबन) सम्पा० डा० शिवगोपाल मिश्र, प्रका० हिन्दी सा० सं०, प्रयाग प्र० सं० शाके १८८५।

७५ मृगावती (कुतुबन) दिल्ली वाली प्रति प्रतिलिपि श्री उदयशंकर शास्त्री के पास उपलब्ध।

७६ मोहिनी (आन कवि) हस्तलिखित प्राप्ति-स्थान, हिन्दुस्तानी एकेडेमी।

७७ यूसुफ-जुलेखा (शेख निसार) सम्पा० श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी और डॉ० गुलाब राय (हिन्दी प्रेमगाथा काव्य संग्रह में संकलित) प्रका० हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।
७८ रतनमंजरी (जान कवि) हस्त० हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग में प्राप्त।
७९ रतनावती (जान कवि) (हस्तलिखित)
८० राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज (भाग १) सम्पा० डा० मोतीलाल मेनारिया हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर प्र० स० १९६२।
८१ (भाग २) सम्पा० श्री अगरचन्द नाहटा प्रथम संस्करण १९६७।
८२ राजस्थानी भाषा और साहित्य (१५०० १६५० वि०) डॉ० हीरालाल माहेश्वरी आधुनिक पुस्तक भंडार कलकत्ता ७, प्र०स० १९६० ई०।
८३ रामचन्द्रिका (भाग १ २) स० लाला भगवान दीन रामनारायणलाल पब्लिशर और बुकसेलर स० २००६ या १९५२ ई०।
८४ रामचरित मानस (गोस्वामी तुलसीदास) प्रका० गीताप्रेस गोरखपुर।
८५ रामचरित मानस की अन्तर्कथाओं का आलोचनात्मक अध्ययन डा० वागीश दत्त पाण्डेय टंकित प्रति आगरा विश्वविद्यालय पुस्तकालय में सुरक्षित।
८६ रूपमंजरी (जान कवि) हस्तलिखित प्राप्ति-स्थान हि० एकेडेमी प्रयाग।
८७ लोक साहित्य विज्ञान डा० सत्येन्द्र प्रका० शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी प्रा० लि० आगरा प्र० स० १९६२ ई०।
८८ लोरकहा (मुल्ला दाऊद) सम्पा०—डा० मातAप्रसाद गुप्त क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ आगरा, प्रथम संस्करण १९६१।
८९ विद्यापति की पदावली स० श्री रामवृक्ष बेनीपुरी प्रका० पुस्तक भंडार लहेरिया सराय, पटना द्वितीय संस्करण।
९० कथा सतवती (जान कवि) हस्त० प्राप्ति स्थान हिन्दुस्तानी एकेडमी।
९१ संक्षिप्त अलंकार मंजरी सेठ कन्हैयालाल पोद्दार हि० सा० स० प्रयाग सप्तम स० सम्वत् २०१२।
९२ सीलवती (जान कवि) हस्त० प्राप्ति स्थान हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग।
९३ सुभटराइ (जान कवि) हस्तलिखित
९४ सूफीज्म एन एकाउंट आव दि मिस्टिक्स आव इस्लाम ए० जे० आरबरी पब्लिशर्स जार्ज एलन एण्ड अनविन लि० रस्किन हाउस म्यूजियम स्ट्रीट लंदन प्र० स० १९५० ई०।
९५ सूफी काव्य विमर्श डा० श्याममनोहर पाण्डेय विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
९६ सूफी काव्य संग्रह सम्पा० प० परशुराम चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग प्र० स० १९५१ ई०।

९७ सूफीमत और हिंदी साहित्य डा० विमलकुमार जन आत्माराम एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली ६ प्र० स०, १९५५ ई०।
९८ सूफीमत साधना और साहित्य श्री रामपूजन तिवारी ज्ञानमडल लि०, बनारस प्र० स० सम्वत २०१३।
९९ सूफ़ी महाकवि जायसी डॉ० जयन्व प्रका० भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ, प्र० स० १९५७ ई०।
१०० सूर और उनका साहित्य डॉ० हरवश लाल शमा भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ द्वि० स सम्वत २०१५।
१०१ सूर सागर (भाग १) सम्पा० आ० नन्ददुलारे वाजपयी नागरी प्रचारिणी सभा काशी प्र० स० सवत २००५ वि०।
१०२ सूरसागर (भाग २) सम्पा० आ० नन्ददुलारे वाजपयी ना० प्र० सभा काशी द्वि० स० २०१२ वि०।
१०३ हम-जवाहिर (कवि कासिमशाह) प्रका०—राजा रामकुमार प्रेस बुकडिपो लखनऊ, १९५२ ई०।
१०४ हिंदी काव्य म अन्योक्ति डॉ० स सारचन्द्र राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्र० स०, १९६० ई०।
१०५ हिन्दी काव्य धारा म प्रेम प्रवाह प० परशुराम चतुर्वेदी।
१०६ हिंदी की काव्य शलियो का विकास डॉ० हरदव वाहरी भारती प्रेस प्रका०, प्रयाग प्र० स० १९५७।
१०७ हिंदी पर फारसी का प्रभाव प० अम्बिकापसाद वाजपयी प्र० स०।
१०८ हिन्दी प्रेम-गाथा काव्य-स ग्रह सम्पा० —श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी और डॉ० गुलाबराय हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग द्वि० स शोधित सस्करण।
१०९ हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य डा० कमल कुलश्रेष्ठ, प्र० स०, १९५३ ई०।
११० हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास डॉ० शम्भूनाथ सिंह हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी प्रथमावृत्ति नवम्बर १९५६ ई०।
१११ हिंदी साहित्य उसका उदभव और विकास डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स दिल्ली प्र० स०, १९५५ ई०।
११२ हिंदी साहित्य का आदिकाल डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी बिहार राष्ट्र भाषा परिषद पटना ६ त० स० १९६१ ई०।
११३ हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (स० ७५० १७००) डॉ० रामकुमार वर्मा प्रथम स० १९३८ ई०।
११४ हिंदी साहित्य का इतिहास आचाय रामचन्द्र शुक्ल नागरी प्रचारिणी सभा काशी परिवर्द्धित एव स शोधित सस्करण स० १९९९।
११५ हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास (प्रथम भाग) हिन्दी साहित्य की पीठिका सम्पा०—डॉ० राजवली पाण्डेय नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्र० स० २०१४ वि०।

११६ हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (षोडश भाग) सम्पा० — महापण्डित राहुल सांकृत्यायन और डॉ० कृष्णचन्द्र उपाध्याय प्र० सं०।
११७ हिन्दी साहित्य की भूमिका डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग गिरगाँव बम्बई प्र० सं० १९४० ई०।
११८ हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यान पं० परशुराम चतुर्वेदी प्रका० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग गिरगाँव बम्बई प्र० सं० १९६०।
११९ हिन्दी विद्यापीठ ग्रन्थ वीथिका (संख्या १) क० मुं० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ प्रकाशन आगरा।
१२० पानमान (राग नबी) सं० श्री उदयशंकर शास्त्री (सम्पादक)। डॉ० श्याम मनोहर पाण्डेय के सौजन्य से अवलोकनार्थ प्राप्त।

सहायक पत्र पत्रिकाएँ

नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी)

आख्यानक काव्य श्री सत्यजीवन वर्मा भाग ७ अंक ३ सं० १९८३ पृ० २८७।
आलम और उनका समय श्री शिवनाथप्रसाद मिश्र वर्ष ५० सं० २००२।
आलम की दुनिया श्री शिवनाथप्रसाद मिश्र वर्ष ५२ सं० २००४ पृ० १०६।
कवि शेख निसारकृत यूसुफ जुलेखा श्री सत्यजीवन वर्मा भाग ११ सं० १९८७ पृ० ४४५।
कवि सूरदासकृत नल दमन काव्य डॉ० मोतीचन्द्र वर्ष ४३ सं० १९९५ पृ० १२१।
जायसी का जीवन वृत्त पं० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १४ सं० १९९० पृ० ३८३।
तसव्वुफ अथवा सूफीमत का क्रमिक विकास पं० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १६ सं० १९९२ पृ० ४४३।
तसव्वुफ का प्रभाव और दलबन्दी पं० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १८ सं० १९९४।
नई जायसी ग्रन्थावली तथा पद्मावत का लिपि और रचना काल श्री चाल्स नदिदर वर्ष ५७ सं० २००६, पृ० २३१।
पद्मावत की कहानी और जायसी का अध्यात्मवाद श्री पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल द्विवेदी अ० ग्र० ना० प्र० स० काशी, १९९० वि०।
पद्मावत की लिपि तथा रचना काल पं० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १२ सं० १९८८।
पद्मावत की लिपि तथा रचनाकाल पं० चन्द्रबली पाण्डेय, भाग १ सं० १९८९।
पद्मावत का सिंहल द्वीप म० म० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा भाग १३ सं० १९८९।
प्रेम चिनगारी श्री अख्तर हुसैन निजामी वर्ष ५७ सं० २००६, पृ० ४०।
मझनकृत मधुमालती पं० चन्द्रबली पाण्डेय वर्ष ४३ सं० १९९५ पृ० २५५।
मलिक मंझन और उनकी मधुमालती श्री गोपालचन्द्र सिंह वर्ष ५० अंक १-२ सं० २००२

मलिक मुहम्मद जायसी का जीवन चरित श्री सयद आले मुहम्मद महर जायसी वष ४५ स० १९६७, पृ० ४३।

सूफियो की आस्था तथा साधन प० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १७ स० १९९३।

हिन्दी म प्रेमगाथा साहित्य और मलिक मुहम्मद जायसी श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी भाग १४, स० १९९० पृ० ४७।

हिन्दी साहित्य का पूवमध्यकाल श्री रामचन्द्र शुक्ल भाग ६, स० १९८५ पृ० २०९।

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य म आलोचना और अनुसधान श्री गोपाल राय वष ६४ स० २०१६ अक ३ ८।

सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग)

जायसी का प्रेम पथ डा० माताप्रसाद गुप्त भाग ३४ २००४ वि०।

मधुमालती के पूव हिन्दी का सूफी प्रेमाख्यानक साहित्य श्री श्याममनोहर पाण्डेय, भाग ४६ स० १ पौष फाल्गुन १९८१ शक स०।

मौलाना दाऊदकृत चन्दायन डा० परमेश्वरीलाल गुप्त भाग ४८, अक १ पौष फाल्गुन १८८२ शक स० पृ० ३ १३।

बारहमासा की परपरा और पद्मावत डा० श्याममनोहर पाडेय भाग ४७, अक १ पौष फाल्गुन १८८२ शक स० १ पृ० ३७ ४३।

हिन्दुस्तानी' (प्रयाग)

जायसी और प्रेम तत्व प० परशुराम चतुर्वेदी भाग ४, अक ३ जुलाई १९३४।

मझनकृत मधुमालती श्री ब्रजरत्नदास भाग ८, अक २ अप्रल १९३८।

कवि जान श्री कमल कुलश्रेष्ठ जनवरी माच १९४५ पृ० १७ २३।

मझन के गुरु शेख मुहम्मद गौस श्री श्याममनोहर पाण्डेय भाग २०, अक ३, जुलाई सितम्बर १९५९ ई०।

जायसी की प्रेम साधना श्री श्याममनोहर पाण्डेय भाग २०, अक २, अप्रल जून, १९५९।

कविवर जान का सबसे बडा ग्रथ—बुद्धिसागर श्री अगरचन्द नाहटा वष १६, अक १, १९४६।

जान कवि और उनकी रचनाए श्री रामकिशोर मौय भाग २४, अक ४, अक्टूबर दिसम्बर १९६२।

त्रिपथगा (लखनऊ)

मझन का जीवन-वृत्त श्री श्याममनोहर पाडेय जुलाई १९५९।

राजस्थान भारती (बीकानेर)

कविवर जान और उनके ग्रथ श्री अगरचन्द नाहटा वष १ अक १।

समालोचक (सौन्दयशास्त्र विशषाक) आगरा

सूफी कवियो की सौन्दर्यानुभूति श्री उदयशकर शास्त्री जुलाई अगस्त, १९५८।

११६ हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (षोडश भाग) सम्पा० — महापंडित राहुल सांकृत्यायन और डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय प्र० स० ।
११७ हिन्दी साहित्य की भूमिका डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग गिरगाँव बम्बई प्र० सं० १९४० ई० ।
११८ हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यान प० परशुराम चतुर्वेदी प्रका० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग गिरगाँव बम्बई प्र० स० १९६[illegible] ।
११९ हिन्दी [illegible] (संख्या १) क० मु० हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विद्यापीठ प्रकाशन आगरा ।
१२० ज्ञानदीप (शेख नबी) स० श्री [illegible] शास्त्री (प्रयाग) । डॉ० श्याम मनोहर पाण्डेय के सौजन्य से अवलोकनार्थ प्राप्त ।

सहायक पत्र पत्रिकाएँ

नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी)

आख्यानक काव्य श्री सत्यजीवन वर्मा भाग [illegible] अंक [illegible] सं० १९८२ पृ० २८३ ।
आलम और उनका समय श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र वर्ष ५० सं० २००[illegible] ।
आलम की कृतियाँ श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र वर्ष ५२ सं० २००४ पृ० १०८ ।
कवि मंझन विरचित मधुमालती [illegible] श्री सत्यजीवन वर्मा भाग ११ सं० १९८७ पृ० ४४५ ।
कवि [illegible] डा० मोतीचन्द्र वर्ष ६३ सं० १९९५ पृ० १[illegible] ।
जायसी का जीवन वृत्त प० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १४ सं० १९९० पृ० ३८ ।
तसव्वुफ अथवा सूफीमत का क्रमिक विकास प० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १६ सं० १९९२ पृ० ४४[illegible] ।
तसव्वुफ का प्रभाव और दक्खिनी प० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १८, सं० १९९४ ।
नए जायसी ग्रन्थावली तथा पद्मावत की लिपि और रचना काल श्री चाल्स नपियर वर्ष ५७, सं० २००९ पृ० ३१ ।
पद्मावत की कहानी और जायसी का अध्यात्मवाद श्री पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल द्विवेदी अ० ग्र० ना० प्र० स० काशी १९९० वि० ।
पद्मावत की लिपि तथा रचना-काल प० चन्द्रबली पाण्डेय भाग १२ सं० १९८८ ।
पद्मावत की लिपि तथा रचनाकाल प० चन्द्रबली पाण्डेय, भाग १३ सं० १९८९ ।
पद्मावत का सिंहल द्वीप म० म० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा भाग १३ सं० १९८९ ।
प्रेम चिनगारी श्री अन्तर [illegible] निजामी वर्ष ५७ सं० २००९ पृ० ४० ।
मंझनकृत मधुमालती प० चन्द्रबली पाण्डेय वर्ष [illegible] सं० १९९५ पृ० २५५ ।
मलिक मंझन और उनकी मधुमालती श्री गोपालचन्द्र सिन्हा वर्ष ५० अंक १२ सं० २००२

मलिक मुहम्मद जायसी का जीवन चरित श्री स मद आल मुहम्मद मेहर जायसी वष ४५, स० १६६७ प० ४३।

सूफिया की आस्था तथा साधन प० च द्रबली पाण्डेय भाग १७ स० १६६३।

हिन्दी म प्रेमगाथा साहित्य और मलिक मुहम्मद जायसी श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी भाग १४, स० १६६० पृ० ४७०।

हिन्दी साहित्य का पूवमध्यकाल श्री रामचद्र शुक्ल भाग ६ स० १६८५ पृ० २०६।

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य म आलोचना और अनुसधान श्री गोपाल राय वष ६४, स० २०१६ अक ३ ४।

सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग)

जायसी का प्रेम पथ डॉ० माताप्रसाद गुप्त भाग ३४ २००४ वि०।

मधुमालती के पूव हिन्दी का सूफी प्रमाख्यानक साहित्य श्री श्याममनोहर पाण्डेय भाग ४६ स० १ पौष फाल्गुन १८८१ शक स०।

मौलाना दाऊदकृत च दायन डा० परमेश्वरीलाल गुप्त भाग ४८ अक १ पौष फाल्गुन १८८२ शक स० प० ३ १२।

बारहमासा की परपरा और पदमावत डा० श्याममनोहर पाडेय भाग ४७, अक १, पौष फाल्गुन १८८२ शक स० १ प० ३७ ४३।

हिन्दुस्तानी (प्रयाग)

जायसी और प्रेम तत्व प० परशुराम चतुर्वेदी भाग ४, अक ३ जुलाइ १६३४।

मझनकृत मधुमालती' श्री व्रजरत्नदास भाग ८ अक २ अप्रल १६३८।

कवि जान श्री कमल कुलश्रेष्ठ जनवरी माच, १६४५ पृ० १७ २३।

मझन के गुरु शेख मुहम्मद गौस श्री श्याममनोहर पाण्डय भाग २०, अक ३ जुलाई सितम्बर, १६५६ ई०।

जायसी की प्रेम साधना श्री श्याममनोहर पाण्डेय भाग २०, अक २, अप्रैल जून १६५६।

कविवर जान का सबस बडा ग्रथ—बुद्धिसागर श्री अगरच द नाहटा वष १६, अक १, १६४६।

जान कवि और उनकी रचनाए श्री रामकिशोर मौय भाग २८ अक ४ अक्टूबर दिसम्बर, १६६७।

त्रिपथगा (लखनऊ)

मझन का जीवन-वृत्त श्री श्याममनोहर पाडेय जुलाई १६५६।

राजस्थान भारती (बीकानेर)

कविवर जान और उनके ग्रथ श्री अगरचद नाहटा वष १ अक १।

समालोचक (सौन्दयशास्त्र विशेषाक) आगरा

सफी कविता की सौन्दर्यानुभूति श्री रमाकान्त शर्मा जुलाई-अगस्त, १६५८।

आलोचना (दिल्ली)

पदमावत का पाठ और आईन ए अकबरी डॉ० माताप्रसाद गुप्त जुलाई ५८।

मधा-पथ (लखनऊ)

लोक-कथात्मक प्रमाख्यानो का विकास श्री नित्यानन्द दिसम्बर जनवरी १९५६ ५७।

नई धारा (पटना)

सूफियों का रहस्यवाद श्री रामपूजन तिवारी नवम्बर, १९५०।

हिन्दी अनुशीलन (इलाहाबाद)

सूफियों की अलकार-योजना डॉ० ओमप्रकाश वष ३ अक २ १९५० ई०।

पदमावत का रचना-काल श्री गोपाल राय वष ११ अक २, १९५८।

जायसी म सम्बद्ध तिथियों का पुनरवीक्षण श्री गोपाल राय जुलाई सितम्बर १९५८।

साहित्य (पटना)

सूफी काव्य की परम्परा और सामान्य विशेषताएँ श्री गोपाल राय अप्रल १९५८।

सूफी कवि तथा उनक काव्य निर्माण-सम्बन्धी तिथियों का अध्ययन श्री गोपाल राय अक्टूबर १९५६।

साहित्य-सन्देश (आगरा)

प्रेम-परगास (बरकतुल्लाह प्रेमी) श्री हरिशकर शर्मा मई १९४५।

आदि पदमावती श्री दशरथ शर्मा दिसम्बर १९५१।

सूफीमत म सन्त साहित्य के तत्व श्री रामपूजन तिवारी (सन्त साहित्य विशेषाक) जुलाई अगस्त १९५८।

पदमावत की सजीवनी टीका श्री अम्बाप्रसाद सुमन अक्टूबर १९५५।

पदमावत-परिशीलन डा नगेन्द्र जून १९५६।

सूफी काव्य ग्रथो की परम्परा-समानता श्री देवेन्द्र दीपक नवम्बर १९५७।

पदमावत म फारसीपन और भारतीयता का समन्वय श्री शिवनन्दनप्रसाद जून, १९५८।

सूफीमत और प्रमाख्यानक काव्य-परम्परा श्री चन्द्रशखर प्रसाद नवम्बर १९६३।

परिषद पत्रिका (पटना)

सूफी प्रेमाख्यानो की प्रमुख प्रवत्तियाँ प० परशुराम चतुर्वेदी वष १ अक ४ जनवरी १९६२।